अभिनव प्राकृत-व्याकरण

[ध्वनि-परिवर्तन, सन्धि, सुबन्त, स्त्रीप्रत्यय, कारक, समास, तद्धित, तिङन्त, कृदन्त, नामधातु सम्बन्धी अनुशासनों के साथ धातु कोश; शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी प्रभृति विभिन्न प्राकृतों के विशिष्टानुशासनों एवं भाषावैज्ञानिक सिद्धान्तों से समन्वित]

डा० नेमिचन्द्र शास्त्री

ज्योतिषाचार्य, न्यायतीर्थ, एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी और प्राकृत एवं जैनोलॉजी), पी-एच०डी०, गोल्डमेडलिस्ट

संस्कृत एवं प्राकृत विभाग, एच० डी० जैन कालेज, आरा

(मगध विश्वविद्यालय)

तारा पब्लिकेशन्स

कमच्छा, वाराणसी

१९६३

प्रथम संस्करण १९६३
मूल्य पन्द्रह रुपये

तारा प्रिन्टिंग वर्क्स, वाराणसी

प्राच्य भारतीय भाषाओं एवं उनके वाङ्मय

के

पारङ्गत विद्वान्

समादरणीय

डा० हीरालालजी जैन

एम०ए०, एल-एल०बी०, डी०लिट०

को

सादर

—श्रद्धावनत

नेमिचन्द्र शास्त्री

विषय-सूची

अध्याय ३

अध्याय ५

अध्याय ६

अध्याय ७

अध्याय ८

अध्याय ९

अध्याय १०

अध्याय ११

प्रस्तावना

भाषा-परिज्ञान के लिए व्याकरण ज्ञान की नितान्त आवश्यकता है। जब किसी भी भाषा के वाङ्मय की विशाल राशि संचित हो जाती है, तो उसकी विधिवत् व्यवस्था के लिए व्याकरण ग्रन्थ लिखे जाते हैं। प्राकृत के जनभाषा होने से आरम्भ में इसका कोई व्याकरण नहीं लिखा गया। वर्तमान में प्राकृत भाषा के अनुशासन सम्बन्धी जितने व्याकरण ग्रन्थ उपलब्ध हैं, वे सभी संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं। आश्चर्य यह है कि जब पालि भाषा का व्याकरण पालि में लिखा हुआ उपलब्ध है, तब प्राकृत भाषा का व्याकरण प्राकृत में ही लिखा हुआ क्यों नहीं उपलब्ध है? अर्धमागधी के आगमिक ग्रन्थों में शब्दानुशासन सम्बन्धी जितनी सामग्री पायी जाती है, उससे यह अनुमान लगाना सहज है कि प्राकृत भाषा का व्याकरण प्राकृत में लिखा हुआ अवश्य था, पर आज वह कालकवलित हो चुका है। यहाँ उपलब्ध फुटकर सामग्री पर विचार करना आवश्यक है।

प्राकृत भाषा में प्राकृत व्याकरण के सिद्धान्त

आयारांग में (द्वि० ४, १ सू० ३३६) तीन वचन-लिंग-काल-पुरुष का विवेचन किया गया है। ठाणांग (अष्टम) में आठ कारकों का निरूपण पाया जाता है। इन सारी बातों के अतिरिक्त अनेक नये तथ्य अनुयोगद्वार सूत्र में विस्तारपूर्वक वर्णित हैं।

इस ग्रन्थ में समस्त शब्दराशि को निम्न पांच भागों में विभक्त किया है।[1]

१—नामिक—सुबन्तों का ग्रहण नाम में किया है। जितने भी प्रकार के संज्ञा शब्द हैं वे नामिक के द्वारा अभिहित किये गये हैं। यथा अस्सो, अस्से=अश्वः आदि।

२—नैपातिक—अव्ययों को निपातन से सिद्ध माना है। अतः अव्यय तथा अव्ययों के समान निपातन से सिद्ध अन्य देशी शब्द नैपातिक कहे गये हैं। यथा—

खु, अदुंतो, जइ, जहा आदि।

३—आख्यातिक—धातु से निष्पन्न क्रियारूपों की गणना आख्यातिक में की है। यथा—

धावइ, गच्छइ आदि।

४—औपसर्गिक—उपसर्गों के संयोग से निष्पन्न शब्दों को औपसर्गिक कहा गया है। यथा—परि, अणु, अव आदि उपसर्गों के संयोग से निष्पन्न अणुभवइ प्रभृति पद।

१—वंचणामे पंचविहे पएणत्ते, तं जहा—(१) नामिकं, (२) नैपातिकं, (३) आख्यातिकं, (४) औपसर्गिकं, (५) मिश्रम्। —अणुओगदार सुत्तं १२५ सूत्र

५—मिश्र—मिश्र शब्दावली के अन्तर्गत इस प्रकार के शब्दों की गणना की गयी है, जिन्हें हम समास, कृदन्त और तद्धित के पद कह सकते हैं। इस कोटि के शब्दों के उदाहरणों में 'संयत' पद प्रस्तुत किया है। वस्तुत विशेषण शब्दों को मिश्र कहना अधिक तर्कसंगत है।

नाम शब्दों की निष्पत्तियाँ चार प्रकार से वर्णित हैं। आगम, लोप, प्रकृतिभाव और विकार।[1]

१. वर्णागम—वर्णागम कई प्रकार से होता है। वर्णागम भाषाविकास में सहायक होता है। इस वर्णागम का कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं है। दुर्गाचार्य ने निरुक्त का लक्षण बतलाते हुए वर्णागम, वर्णविपर्यय (Metathesis) वर्णविकार (Change of Syllable) वर्णनाश (Elision of Syllable) और अर्थ के अनुसार धातु के रूप की कल्पना करना—इन छः सिद्धान्तों को परिगणित किया है। अनुओदार सुत्त में इसका उदाहरण कुण्डानि आया है।

२ लोप—भाषा के विकास को प्रस्तुत करनेवाला दूसरा सिद्धान्त लोप है। प्रयत्न लाघव की दृष्टिसे इस सिद्धान्त का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वर्णलोप के भी कई भेद होते हैं—आदि वर्णलोप, मध्यलोप और अन्त्य वर्णलोप। यहाँ पर पटो + अत्र = पटोऽत्र, घटो + अत्र = घटोत्र उदाहरण उपस्थित किये गये हैं।

३. प्रकृति भाव में दोनों पद ज्यों के त्यों रह जाते हैं, उनमें संयोग होने पर भी विकार उत्पन्न नहीं होता। यथा—माले + इमे = माले इमे, पहइमौ आदि।

४. वर्णविकार—दो पदों के संयोग होने पर उनमें विकृति होना अथवा ध्वनि-परिवर्तन के सिद्धान्तों के अनुसार वर्णों में विकार का उत्पन्न होना वर्णविकार है। यथा—

वधू > वहू, गुफा > गुहा, दधि + इदं = दधीदं, नदी + इह = नदीह।

नाम—पदों के स्त्रीलिङ्ग, पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग की अपेक्षा से तीन भेद होते हैं। आकारान्त, इकारान्त, उकारान्त और ओकारान्त शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं। स्त्रीलिङ्ग शब्दों में ओकारान्त शब्द नहीं होते। नपुंसक लिङ्ग शब्दों में अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त शब्द ही परिगणित हैं। यथा—

त पुण णामं तिविहिं इत्थी पुरिसं णपुंसगं चेव।
एएसिं तिण्हं पि अंतम्मि अ परूवणं वोच्छं॥१॥

तत्थ पुरिसस्स अंता आ इ-उ ओ हवंति चत्तारि।
ते चेव इत्थिआओ हवंति ओकार परिहीणा॥२॥

---

[1]. चउणामे चउव्विहे पण्णत्ते। त जहा—(१) आगमेणं (२) लोवेणं (३) पयईए, (४) विगारेणं। —अनु ओगदार सुत्तं १२४ सू०।

अंतिम-इंतिअ-उंतिअ अंताउ णपुंसगस्स बोद्धव्वा ।
एतेसि तिण्हं पि अ वोच्छामि निदंसणे एत्तो ॥३॥
आगारंतो 'राया' ईगारंतो गिरी अ सिहरी अ ।
उगारंतो विण्हू दुमो अ अंताउ पुरिसाणं ॥४॥
आगारंता माला ईगारंता 'सिरी' अ 'लच्छी' अ ।
ऊगारंता 'जंबू' 'वहू' अ अंताउ इत्थीणं ॥५॥
अंकारंतं 'धन्नं' इंकारंतं नपुंसगं 'अत्थि' ।
उंकारंत पीलुं 'महुं' च अंता णपुंसाणं ॥६॥
—अणुओगदार सुत्त, ब्यावर संस्करण सं० २०१० सूत्र १२१ ।

इसी ग्रन्थ में भावनाम के चार भेद किये हैं—समास, तद्धित, धातु और निरुक्त। समास के सात भेद बतलाये हैं[1]—द्वन्द्व, बहुव्रीहि, कर्मधारय, द्विगु, तत्पुरुष, अव्ययीभाव और एकशेष। यथा—

दंदे अ बहुव्वीहि, कम्मधारय दिग्गु अ ।
तप्पुरिस अव्वईभावे, एक्कसेसे अ सत्तमे ॥१॥

बहुव्रीहि का उदाहरण देते हुए लिखा है—फुल्ला इमंमि गिरिम्मि कुडयकयंबा सो इमो गिरीफुल्लिय कुडुयकयंबो ।

कर्मधारय—धवलो वसहो = धवलवसहो, किण्हो मियो = किण्हमियो ।

द्विगु—तिण्णि कडुगाणि = तिकडुगं, तिण्णि महुराणि = तिमहुरं, तिण्णि गुणाणि = तिगुणं, सत्त गया = सत्तगयं, नवतुरंगा = नवतुरंगं ।

तत्पुरुष—तित्थे कागो = तित्थकागो, वणे हत्थी = वणहत्थी, वणे मयूरो = वणमयूरो, वणे वराहो = वणवराहो, वणे महिसो = वणमहिसो ।

अव्ययीभाव—अणुगामं, अणुणइयं, अणुचरियं ।

एकशेष—जहा एगो पुरिसो तहा बहवे पुरिसा, जहा एगो करिसावणो तहा बहवे करिसावणा जहा एगो साली तहा बहवे साली ।

तद्धित के आठ भेद बतलाये हैं[2]—

१. कर्म नाम—तणहारए, कट्ठहारए, पत्तहारए, कोलालिए ।
२. शिल्प नाम—तंतुवाए, पट्टकारे, उंबकारे, छत्तकारे, दंतकारे ।
३. सिलोक नाम—समणे, माहणे, सव्वातिही ।
४. संयोग नाम—रण्णो, ससुरए, रण्णो जामाउए, रण्णो साले ।
५. समीप नाम—गिरिसमीवे णयरं गिरिणयरं, वेन्नायडं ।

---

१. अणुओगदारसुत्तं—सूत्र १३० । २. वही सूत्र १३० ।

६. समूह नाम—तरंगवइकारे, मलयवइकारे।

७. ईश्वरीय नाम—स्वाम्यर्थक—राईसरे, तलवरे, इब्भे, सेट्ठी।

८. अपत्य नाम—अरिहंतमाया, चक्कवट्टिमाया, रायमाया।

कम्मे सिप्पसिलाए संजोग समीवओ अ संजूहो।
इस्सरिअ अवच्चेण य तद्धितणामं तु अट्ठविहं ॥

यद्यपि उपर्युक्त सन्दर्भ तद्धितान्त नामों के वर्णन के समय आया है, तो भी तद्धित प्रकरण पर इससे प्रकाश पड़ता है। इन्हें कर्मार्थक, शिल्पार्थक, संयोगार्थक, समूहार्थक, अपत्यार्थक आदि रूप में ग्रहण करना चाहिए।

इस ग्रन्थ में आठों विभक्तियों का उल्लेख है तथा ये विभक्तियाँ किस किस अर्थ में होती हैं, इसका भी निर्देश किया गया है।

निद्देसे पढमा होइ, बित्तिया उवएसणे।
तइया करणम्मि कया, चउत्थी संपयावणे ॥१॥
पंचमी अ अवायाणे, छट्ठी सस्सामिवायणे।
सत्तमी सण्णिहाणत्थे, अट्ठमाऽऽमंतणी भवे ॥२॥

—अणुओगदार सुत्त, सू० १२८।

अर्थात्—निर्देश—क्रिया या फल कर्ता में रहने पर प्रथमा विभक्ति होती है। यथा—स, इमो, अहं आदि प्रथमान्त रूप हैं। उपदेश में—क्रिया के द्वारा कर्त्ता जिसको सिद्ध करना चाहता है, द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—भण कुणसु इमं व तं व आदि। करण अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है। यथा तेण कयं, मए वा कयं आदि। सम्प्रदान में चतुर्थी और अपादान में पंचमी विभक्ति होती है। स्वामि-स्वामित्व भाव में षष्ठी, सन्निधानार्थ—अधिकरणार्थ में सप्तमी और आमन्त्रण—सम्बोधन में अष्टमी विभक्ति होती है।

इस प्रकार प्राकृत भाषा में लिखित शब्दानुशासन सम्बन्धी सिद्धान्त पाये जाते हैं।

संस्कृत भाषा में लिखित प्राकृत व्याकरण

संस्कृत भाषा में लिखे गये प्राकृत भाषा के अनेक शब्दानुशासन उपलब्ध हैं। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र एसा ग्रन्थ है, जिसके १७ वें अध्याय में विभिन्न भाषाओं का निरूपण करते हुए ६-२३ वें पद्य तक प्राकृत व्याकरण के सिद्धान्त बतलाये हैं और ३२वें अध्याय में उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। पर भरत के ये अनुशासन सम्बन्धी सिद्धान्त इतने संक्षिप्त और अस्फुट हैं कि इनका उल्लेखमात्र इतिहास के लिए ही उपयोगी है।

प्राकृतलक्षण

कुछ विद्वान् पाणिनि का प्राकृतलक्षण नाम का प्राकृत व्याकरण बतलाते हैं। डा० पिशल ने भी अपने प्राकृत व्याकरण में इस ओर संकेत किया है, पर यह ग्रन्थ न

तो आजतक उपलब्ध ही हुआ है और न इसके होने का ही कोई सबल प्रमाण मिला है। उपलब्ध शब्दानुशासनों में वररुचि के प्राकृतप्रकाश को कुछ विद्वान् प्राचीन मानते हैं और कुछ चण्डकृत प्राकृतलक्षण को। प्राकृतलक्षण संक्षिप्त रचना है। इसमें प्राकृत सामान्य का जो अनुशासन किया गया है, वह प्राकृत अशोक की धर्मलिपियों की भाषा और वररुचि द्वारा प्राकृतप्रकाश में अनुशासित प्राकृत के बीच की प्रतीत होती है। इस शब्दानुशासन के मत से मध्यवर्ती अल्पप्राण व्यञ्जनों का लोप नहीं होता है, वे वर्तमान रहते हैं। वर्ग के प्रथम वर्णों में केवल क और तृतीय वर्णों में ग के लोप का विधान मिलता है। मध्यवर्ती च, ट, त, और प वर्ण ज्यों के त्यों रह जाते हैं। भाषा की यह प्रवृत्ति महाकवि अश्वघोष और भास के नाटकों में पायी जाती है। अत प्राकृतलक्षण का रचनाकाल ईस्वी सन् द्वितीय-तृतीय शती मानने में कोई बाधा नहीं आती है।

इस ग्रन्थ में कुल सूत्र ९९ या १०३ हैं और चार पादों में विभक्त हैं। आरम्भ मे प्राकृत शब्दों के तीन रूप—*तद्भव, तत्सम और देशज* बतलाये हैं। तीनों लिङ्ग और विभक्तियों का विधान संस्कृत के समान ही पाया जाता है। प्रथम पाद के ५वें सूत्र से अन्तिम ३५वें सूत्र तक संज्ञाओं और सर्वनामों के विभक्तिरूपों का निरूपण किया है। द्वितीयपाद के २९ सूत्रों में स्वर परिवर्तन, शब्दादेशों एव अव्ययों का कथन किया गया है। पूर्वकालिक क्रिया के रूपों में तु, त्ता, च, ट, तु, तूण, ओ एव प्पि प्रत्ययों को जोड़ने का नियमन किया हैं। तृतीय पाद के ३५ सूत्रों में व्यञ्जनपरिवर्तन के नियम दिये गये हैं। चतुर्थ पाद मे केवल चार सूत्र ही हैं, इनमें अपभ्रंश का लक्षण, अधोरेफ का लोप न होना, पैशाची की प्रवृत्तियाँ, मागधी की प्रवृत्ति र् और स् के स्थान पर ल् और श् का आदेश एवं शौरसेनी में त् के स्थान पर विकल्प से द् का आदेश किया गया है।

प्राकृतप्रकाश

चण्ड के उत्तरवर्ती समस्त प्राकृत वैयाकरणों ने रचनाशैली और विषयानुक्रम की दृष्टि से प्राकृतलक्षण का अनुकरण किया है। चण्ड के पश्चात् प्राकृत शब्दानुशासकों में वररुचि का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है। प्राकृतमंजरी की भूमिका में वररुचि का गोत्र नाम कात्यायन कहा गया है। डा० पिशल ने अनुमान किया था कि प्रसिद्ध वार्तिककार कात्यायन और वररुचि दोनों एक व्यक्ति हैं, किन्तु इस कथन की पुष्टि के लिए एक भी सबल प्रमाण उपलब्ध नहीं है। एक वररुचि कालिदास के समकालीन भी माने जाते हैं, जो विक्रमादित्य के नवरत्नों मे से एक थे। प्रस्तुत प्राकृतप्रकाश चण्ड के पीछे का है, इसमें कोई सन्देह नहीं। प्राकृत भाषा का शृङ्गार काव्य के लिए प्रयोग ईस्वी सन् की प्रारम्भिक शतियों के पहले ही होने लगा था। हाल कवि ने गाथासप्तशती

में .८४ प्राकृत कवियों की रचनाओं का संकलन किया है। याकोबी का मत है कि महाराष्ट्री प्राकृत का व्यापक प्रयोग ईस्वी तीसरी शताब्दी के पहले ही होने लगा था। अत. प्राकृतप्रकाश में वर्णित अनुशासन पर्याप्त प्राचीन है अतएव वररुचि को कालिदास का समकालीन मानना अनुचित नहीं है।

प्राकृत प्रकाश में कुल ५०९ सूत्र हैं। भामहवृत्ति के अनुसार ४८७ और चन्द्रिका टीका के अनुसार ५०९ सूत्र उपलब्ध हैं। प्राकृतप्रकाश की चार प्राचीन टीकाएँ उपलब्ध हैं—

१. मनोरमा—इस टीका के रचयिता भामह हैं।

२. प्राकृतमञ्जरी—इस टीका के रचयिता कात्यायन नामक विद्वान् हैं।

३. प्राकृतसंजीवनी—यह टीका वसन्तराज द्वारा लिखित है।

४. सुबोधिनी—यह टीका सदानन्द द्वारा विरचित है और नवम परिच्छेद के नवम सूत्र की समाप्ति के साथ समाप्त हुई है।

इस ग्रन्थ में बारह परिच्छेद हैं। प्रथम परिच्छेद में स्वर विकार एवं स्वरपरिवर्तन के नियमों का निरूपण किया गया है। विशिष्ट-विशिष्ट शब्दों में स्वरसम्बन्धी जो विकार उत्पन्न होते हैं, उनका ४४ सूत्रों में विवेचन किया गया है। दूसरे परिच्छेद का आरम्भ मध्यवर्ती व्यञ्जनों के लोप से होता है। मध्य में आनेवाले क, ग, च, ज, त, द, प, य और व का लोप विधान किया है। तीसरे सूत्र से विशेष, विशेष शब्दों के असंयुक्त व्यञ्जनों के लोप एवं उनके स्थान पर विशेष व्यञ्जनों के आदेश का नियमन किया गया है। यह प्रकरण अन्तिम ४७वें सूत्र तक चला है। तीसरे परिच्छेद में संयुक्त व्यञ्जनों के लोप, विकार एवं परिवर्तनों का निरूपण है। इस परिच्छेद में ६६ सूत्र हैं और सभी सूत्र विशिष्ट-विशिष्ट शब्दों में संयुक्त व्यञ्जनों के परिवर्तन का निर्देश करते हैं। चौथे परिच्छेद में ३३ सूत्र हैं, इनमें संकीर्णविधि—निश्चित शब्दों के अनुशासन वर्णित हैं। इस परिच्छेद में अनुकारी, विकारी और देशी इन तीनों प्रकार के शब्दों का अनुशासन आया है। पाचवें परिच्छेद के ४७ सूत्रों में लिङ्ग और विभक्ति-आदेश वर्णित है। छठव परिच्छद मे ६४ सूत्र हैं, इन सूत्रों में सर्वनामविधि का निरूपण है अर्थात् सर्वनाम शब्दों के रूप एवं उनके विभक्ति प्रत्यय निर्दिष्ट किये गये हैं। सप्तम परिच्छेद मे तिङन्त विधि है, धातुरूपों का अनुशासन संक्षेप में लिखा गया है। इसमें कुल ३४ सूत्र हैं। अष्टम परिच्छेद में धात्वादेश निरूपित है। इसमें कुल ७१ सूत्र हैं। संस्कृत की किस धातु के स्थान पर प्राकृत में कौन सी धातु का आदेश होता है, इसका विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। प्राकृत भाषा का यह धात्वादेश सम्बन्धी प्रकरण बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। नौवाँ परिच्छेद निपात का है। इसमें अव्ययों के अर्थ और प्रयोग दिये गये हैं। इस परिच्छेद में १८ सूत्र हैं। दसवें परिच्छेद में पैशाची भाषा का अनुशासन है। इसमें १४ सूत्र हैं। ग्यारहवें परिच्छेद में मागधी

प्राकृत का अनुशासन वर्णित है। इसमें कुल १७ सूत्र हैं। बारहवाँ परिच्छेद शौरसेनी प्राकृत के नियमन का है। इसमें ३२ सूत्र हैं और इनमें शौरसेनी प्राकृत की विशेषताएँ वर्णित हैं। तुलनात्मक दृष्टि से विचार करने पर अवगत होता है कि वररुचि ने चण्ड का अनुसरण किया है। चण्ड द्वारा निरूपित विषयों का विस्तार अवश्य इस ग्रन्थ में पाया जाता है। अतः शैली और विषय विस्तार के लिये वररुचि पर चण्ड का ऋण मान लेना अनुचित नहीं कहा जायगा।

इस सत्य से कोई इंकार नहीं कर सकता है कि भाषा ज्ञान की दृष्टि से वररुचि का प्राकृतप्रकाश बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। संस्कृत भाषा की ध्वनियों में किस प्रकार के ध्वनि-परिवर्तन होने से प्राकृत भाषा के शब्दरूप गठित हैं, इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। उपयोगिता की दृष्टि से यह ग्रन्थ प्राकृत अध्येताओं के लिये ग्राह्य है।

सिद्धहेम शब्दानुशासन

इस व्याकरण में सात अध्याय संस्कृत शब्दानुशासन पर हैं और आठवें अध्याय में प्राकृत भाषा का अनुशासन लिखा गया है। यह प्राकृत व्याकरण उपलब्ध समस्त प्राकृत व्याकरणों में सबसे अधिक पूर्ण और व्यवस्थित है। इसके ४ पाद हैं। प्रथम पाद में २७१ सूत्र हैं। इनमें सन्धि, व्यञ्जनान्त शब्द, अनुस्वार, लिङ्ग, विसर्ग, स्वर व्यत्यय और व्यञ्जन-व्यत्यय का विवेचन किया गया है। द्वितीय पाद के २१८ सूत्रों में संयुक्त व्यञ्जनों के परिवर्तन, समीकरण, स्वरभक्ति, वर्णविपर्यय, शब्दादेश, तद्धित, निपात और अव्ययों का निरूपण है। तृतीय पाद में १८२ सूत्र हैं, जिनमें कारक विभक्तियों तथा क्रियारचनासम्बन्धी नियमों का कथन किया गया है। चौथे पाद में ४४८ सूत्र हैं। आरम्भ के २५९ सूत्रों में धात्वादेश और आगे क्रमशः शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिका पैशाची और अपभ्रंश भाषाओं की विशेष प्रवृत्तियों का निरूपण किया गया है। अन्तिम दो सूत्रों में यह भी बतलाया गया है कि प्राकृत में उक्त लक्षणों का व्यत्यय भी पाया जाता है तथा जो बात यहाँ नहीं बतलायी हैं, उसे संस्कृतवत् सिद्ध समझना चाहिए। सूत्रों के अतिरिक्त वृत्ति भी स्वयं हेम की लिखी है। इस वृत्ति में सूत्र गत लक्षणों को बड़ी विशदता से उदाहरण देकर समझाया गया है।

आचार्य हेम ने प्राकृत शब्दों का अनुशासन संस्कृत शब्दों के रूपों को आदर्श मानकर किया है। हेम के मत से प्राकृत शब्द तीन प्रकार के हैं—तत्सम, तद्भव और देशी। तत्सम और देशी शब्दों को छोड़ शेष तद्भव शब्दों का अनुशासन इस व्याकरण द्वारा किया गया है।

आचार्य हेम ने 'आर्षम्' ८।१।३ सूत्र में आर्ष प्राकृत का नामोल्लेख किया है और बतलाया है कि 'आर्षं प्राकृतं बहुलं भवति, तदपि यथास्थानं दर्शयिष्यामः।

आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते" अर्थात् अधिक प्राचीन प्राकृत आर्ष—आगमिक प्राकृत में प्राकृत के नियम विकल्प से प्रवृत्त होते हैं।

हेम का प्राकृत व्याकरण रचना शैली और विषयानुक्रम के लिए प्राकृतलक्षण और प्राकृतप्रकाश का आभारी है। पर हेम ने विषय विस्तार में बड़ी पटुता दिखलायी है। अनेक नये नियमों का भी निरूपण किया है। ग्रन्थन शैली भी हेम की चण्ड और वररुचि की अपेक्षा परिष्कृत है। चूलिका पैशाची और अपभ्रंश का अनुशासन हेम का अपना है। अपभ्रंश भाषा का नियमन ११८ सूत्रों में स्वतन्त्र रूप से किया है। उदाहरणों में अपभ्रंश के पूरे दोहे उद्धृत कर नष्ट होते हुए विशाल साहित्य का सरक्षण किया है। इसमें सन्देह नहीं कि आचार्य हेम के समय में प्राकृत भाषा का बहुत अधिक विकास हो गया था और उसका विशाल साहित्य विद्यमान था। अतः उन्होंने व्याकरण की प्राचीन परम्परा को अपनाकर भी अनेक नये अनुशासन उपस्थित किये हैं।

त्रिविक्रमदेव का प्राकृत शब्दानुशासन

जिस प्रकार आचार्य हेम ने सर्वाङ्गपूर्ण प्राकृत शब्दानुशासन लिखा है, उसी प्रकार त्रिविक्रमदेव ने भी। इनकी स्वोपज्ञवृत्ति और सूत्र दोनों ही उपलब्ध हैं। इस शब्दानुशासन में तीन अध्याय और प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद हैं, इस प्रकार कुल बारह पादों में यह शब्दानुशासन पूर्ण हुआ है। इसमें कुल सूत्र १०३६ हैं। त्रिविक्रमदेव ने हेम के सूत्रों में ही कुछ फेर-फार करके अपने सूत्रों की रचना की है। विषयानुक्रम हेम का ही है। द, दि, स और ग आदि संज्ञाएँ त्रिविक्रम की नयी हैं, पर इन संज्ञाओं से विषयनिरूपण में सरलता की अपेक्षा जटिलता ही उत्पन्न हो गयी है। इस व्याकरण में देशी शब्दों का वर्गीकरण कर हेम की अपेक्षा एक नयी दिशा की सूचना दी है। यद्यपि अपभ्रंश के उदाहरण हेम के ही हैं, पर संस्कृत छाया देकर इन्होंने अपभ्रंश के दोहों को समझने में पूरा सौकर्य प्रदर्शित किया है।

त्रिविक्रम ने अनेकार्थक शब्द भी दिये हैं। इन शब्दों के अवलोकन से तात्कालिक भाषा की प्रवृत्तियों का परिज्ञान तो होता ही है, पर इनसे अनेक सांस्कृतिक बातों पर भी प्रकाश पड़ता है। यह प्रकरण हेम की अपेक्षा विशिष्ट है इनका यह कार्य शब्द शासक का न होकर अर्थशासक का हो गया है।

षड्भाषाचन्द्रिका

लक्ष्मीधर ने त्रिविक्रमदेव के सूत्रों का प्रकरणानुसारी संकलन कर अपनी नयी वृत्ति लिखी है। इस संकलन का नाम ही षड्भाषाचन्द्रिका है। इस संकलन में सिद्धान्तकौमुदी का क्रम रखा गया है। उदाहरण सेतुबन्ध, गउडवहो, गाहासत्तसई, कर्पूरमंजरी आदि ग्रन्थों से दिये गये हैं। लक्ष्मीधर ने लिखा है—

वृत्तिं त्रैविक्रमीं गूढां व्याचिख्यासन्ति ये बुधाः।
षड्भाषाचन्द्रिका तैस्तद् व्याख्यारूपा विलोक्यताम् ॥

अर्थात्—जो विद्वान् त्रिविक्रम की गूढ वृत्ति को समझना और समझाना चाहते हैं, वे उसकी व्याख्यारूप षड्भाषाचन्द्रिका को देखें।

प्राकृत भाषा की जानकारी प्राप्त करने के लिए षड्भाषाचन्द्रिका अधिक उपयोगी है। इसकी तुलना हम भट्टोजिदीक्षित की सिद्धान्तकौमुदी से कर सकते हैं।

प्राकृतरूपावतार

त्रिविक्रमदेव के सूत्रों को ही लघुसिद्धान्त कौमुदी के ढंग पर संकलितकर सिंहराज ने प्राकृतरूपावतार नामक व्याकरण ग्रन्थ लिखा है। इसमें संक्षेप में सन्धि, शब्दरूप, धातुरूप, समास, तद्धित आदि का विचार किया है। व्यावहारिक दृष्टि से आशुबोध कराने के लिए यह व्याकरण उपयोगी है। हम सिंहराज की तुलना वरदाचार्य से कर सकते हैं।

प्राकृतसर्वस्व

मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्व एक महत्त्वपूर्ण व्याकरण है। इसका रचनाकाल १९ वीं शती है। मार्कण्डेय ने प्राकृत भाषा के भाषा, विभाषा, अपभ्रंश और पैशाची—ये चार भेद किये हैं। भाषा के महाराष्ट्री, शौरसेनी, प्राच्या, अवन्ती और मागधी; विभाषा के शाकारी, चाण्डाली, शाबरी, आभीरिकी और शाक्की; अपभ्रंश के नागर, ब्राचड और उपनागर एवं पैशाची के कैकयी, शौरसेनी और पांचाली आदि भेद किये हैं।

मार्कण्डेय ने आरम्भ के आठ पादों म महाराष्ट्री प्राकृत के नियम बतलाये हैं। इन नियमों का आधार प्राय. वररुचि का प्राकृतप्रकाश ही है। ९ वें पाद में शौरसेनी के नियम दिये गये हैं। दसवें पाद में प्राच्या भाषा का नियमन किया गया है। ११ वें अवन्ती और वाह्लीकी का वर्णन है। १२ वें में मागधी के नियम बतलाये गये हैं, इनमें अर्धमागधी का भी उल्लेख है। ९ से १२ तक के पादों का भाषाविवेचन नाम का एक अलग खण्ड माना जा सकता है। १३ वें से १६ वें पाद तक विभाषा का नियमन किया है। १७वें और १८वें में अपभ्रंश भाषा का तथा १९वें और २०वें पाद में पैशाची भाषा के नियम दिये हैं। शौरसेनी के बाद अपभ्रंश भाषा का नियमन करना बहुत ही तर्कसंगत है।

ऐसा लगता है कि हेम ने जहाँ पश्चिमीय प्राकृत भाषा की प्रवृत्तियों का अनुशासन उपस्थित किया है, वहाँ मार्कण्डेय ने पूर्वीय प्राकृत की प्रवृत्तियों का नियमन प्रदर्शित किया है।

इन व्याकरण ग्रन्थों के अतिरिक्त रामतर्कवागीश का 'प्राकृतकल्पतरु' शुभचन्द्र का शब्दचिन्तामणि, शेषकृष्ण का प्राकृत चन्द्रिका और अप्पय दीक्षित का 'प्राकृत-मणिदीप' भी अच्छे ग्रन्थ हैं।

आधुनिक प्राकृत व्याकरणों में ए० सी० वुल्नर का 'इण्ट्रोडक्शन टु प्राकृत' (१९३६ सन्), दिनेशचन्द्र सरकार का 'ए ग्रामर ऑव दि प्राकृत लैंग्वेज (१९४३ सन्), ए० एन० घाटगे का 'एन इण्ट्रोडक्शन टु अर्धमागधी' (१९४० सन्), होएफर का 'डे प्राकृत डिआलेक्टो लिब्रि दुओ' (बर्लिन १८३६ सन्), लास्सन का 'इन्स्टीट्यूत्सीओनेस लिंगुआए प्राकृतिकाए' (बौन ई० १८३९), कौवे का 'ए शोर्ट इण्ट्रोडक्शन टु दे ऑर्डिनरी प्राकृत ऑव द संस्कृत ड्रामाज् विथ ए लिस्ट ऑव कॉमन् इरेगुलर प्राकृत वर्डस्' (लन्दन ई० १८७५) हुपीवेश का 'ए प्राकृत ग्रामर विथ इंगलिश ट्रान्सलेशन (कलकत्ता ई० १८८३) रिचर्ड पिशल का 'प्राकृत भाषाओं का व्याकरण' (पटना ई० १९५८) पं० बेचरदास दोशी का 'प्राकृत व्याकरण' (अहमदाबाद ई० १९२९); डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल का 'प्राकृत विमर्श' (१९५३ ई०) आदि उपयोगी ग्रन्थ हैं। इन्हीं प्राचीन और नवीन ग्रन्थों से सामग्री ग्रहण कर 'अभिनव प्राकृत व्याकरण' लिखा गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ

उपर्युक्त व्याकरण ग्रन्थों के रहने पर भी सर्वाङ्गपूर्ण प्राकृत व्याकरण की आवश्यकता बनी हुई थी, ऐसा एक भी प्राकृत व्याकरण नहीं, जिसका अध्ययन कर जिज्ञासु व्याकरण सम्बन्धी समस्त अनुशासनों को अवगत कर सके। हाँ, दस-पाँच ग्रन्थों को मिलाकर अध्ययन करने पर भले ही विषय की पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सके, पर एक ग्रन्थ के अध्ययन से यह संभव नहीं है। अतएव संस्कृत व्याकरण 'सिद्धान्त कौमुदी' की शैली के आधार पर प्रस्तुत व्याकरण ग्रन्थ लिखा गया है। इस ग्रन्थ में निम्न विशेष दृष्टिकोण उपलब्ध होंगे :—

(१) सन्धि और समास के उदाहरणों में विभिन्न प्राकृत भाषाओं के पदों को रखा गया है। इनके अवलोकन से इस प्रकार की आशंका का होना स्वाभाविक है कि सामान्य प्राकृत से लेखक का क्या अभिप्राय है? उदाहरणों में अनेकरूपता रहने से सन्धि और समास के नियम किस प्राकृत भाषा के हैं? इस आशंका के निराकरण हेतु हमारा यही निवेदन है कि सन्धि और समास के नियम सभी प्राकृतों में समान हैं। जो नियम महाराष्ट्री प्राकृत में लागू होते हैं, वे ही अर्धमागधी या अन्य प्राकृत भाषाओं में भी। अतः सन्धिप्रकरण और समासप्रकरण में महाराष्ट्री, अर्धमागधी और शौरसेनी के उदाहरण मिलेंगे। यतः विभिन्न प्राकृतों के अनुशासन में ध्वनि और वर्णविकार सम्बन्धी अन्तर ही सबसे प्रधान है। कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय सम्बन्धी

विशेषताएँ भी पायी जाती हैं। शेष बातें समस्त प्राकृतों में प्रायः समान रहती हैं। उदाहरणार्थ दीर्घसन्धि जिन परिस्थितियों में महाराष्ट्री प्राकृत में होती है उन्हीं परिस्थितियों में अर्धमागधी भाषा में भी। अतएव सामान्य प्राकृत से महाराष्ट्री प्राकृत का ग्रहण होने पर भी सन्धि, समास और स्त्रीप्रत्यय प्रकरण के उदाहरणों में समान नियमों से अनुशासित होनेवाले अर्धमागधी और महाराष्ट्री भाषाओं के उदाहरण संकलित हैं।

(२) पद, वाक्य, सन्धि, समास, स्त्री प्रत्यय, कृत, तद्धित आदि की परिभाषाएँ दी गयी हैं। इन परिभाषाओं में संस्कृत व्याकरण सरणि की गन्ध पायी जा सकती है। पर इस तथ्य को सदा ध्यान में रखना चाहिए कि किसी भी प्राच्य भाषा के अनुशासन प्रसंग में उक्त परिभाषाएँ वे ही रहेंगी, जो संस्कृत में हैं। यतः संस्कृत व्याकरण का सर्वाधिक प्रभाव अन्य भारतीय भाषाओं के व्याकरण ग्रन्थों पर है।

(३) स्त्रीप्रत्यय और कारक के नियम संस्कृत व्याकरण के आधार पर ही प्रस्तुत व्याकरण में निबद्ध किये गये हैं। प्रत्ययों के रूप भी संस्कृत व्याकरण के समान ही हैं।

(४) जितने प्राकृत व्याकरण उपलब्ध हैं, उनसे सभी कोई व्यक्ति अनुशासन सम्बन्धी नियमों की जानकारी प्राप्त कर सकता है, जब संस्कृत व्याकरण की जानकारी हो। संस्कृत व्याकरण की जितनी अच्छी जानकारी रहेगी, उक्त व्याकरण ग्रन्थों से प्राकृत भाषा सम्बन्धी अनुशासनों को उतने ही व्यापक और गम्भीर रूप में अवगत कर सकेगा। पर इस व्याकरण में इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि कोई भी व्यक्ति अन्य भाषा के व्याकरण को जाने बिना भी मात्र इस व्याकरण ग्रन्थ के अध्ययन से प्राकृत भाषा के अनुशासन सम्बन्धी समस्त नियमों को जान जाये।

(५) इस व्याकरण में स्त्रीप्रत्यय, कारक, शब्दरूप, धातुरूप, कृदन्त, तद्धित एवं धातुकोष विस्तृत रूप में दिये गये हैं। ये प्रकरण इतने व्यापक रूप में अन्य किसी व्याकरण ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं हो सकेंगे।

(६) शौरसेनी, जैन शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, जैन महाराष्ट्री, पैशाची, चूलिका पैशाची एवं अपभ्रंश भाषा का अनुशासन भी दिया गया है, जिससे महाराष्ट्री के सिवा अन्य भाषाओं की प्रवृत्तियों की जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है।

(७) पाद टिप्पणियों में हेम, वररुचि और त्रिविक्रम के सूत्र भी दिये गये हैं, जिससे अनुशासन सम्बन्धी नियमों को हृदयंगम करने में सरलता रहेगी।

(८) परिशिष्टों में उदाहरण शब्दानुक्रमणिका के साथ विभिन्न प्रयोगसूचियाँ दी गयी हैं, जिनसे पाठकों को प्राकृत भाषा के अध्ययन में सरलता प्राप्त होगी।

(९) इस शब्दानुशासन में एक विशेषता और उपलब्ध होगी कि जिस विषय को उठाया है, उसका अनुशासन सभी दृष्टिकोणों से पूर्णरूपेण उपस्थित किया है। जहाँ

तक हमारा विश्वास है इस एक व्याकरण के अध्ययन के उपरान्त अन्य व्याकरणों की जानकारी की अपेक्षा नहीं रहेगी। मध्यकालीन आर्यभाषाओं की प्रमुख प्रवृत्तियों के साथ आधुनिक आर्यभाषाओं की उत्पत्ति के बीज सिद्धान्तों को भी जाना जा सकेगा।

(१०) भाषाविज्ञान के अनेक सिद्धान्त भी इस व्याकरण में समाविष्ट हैं। स्वर-लोप, व्यञ्जनलोप, स्वरागम, व्यञ्जनागम, स्वर-व्यञ्जन-विपर्यय, समीकरण, विषमीकरण, घोषीकरण, अघोषीकरण, अभिश्रुति, अपश्रुति और स्वरभक्ति के नियम इसमें अन्तर्हित हैं। अत. भाषाविज्ञान के अध्ययनार्थियों के लिए इस व्याकरण की उपयोगिता कम नहीं है।

आभार

इस व्याकरण को लिखने की प्रेरणा श्री भाई विनयशंकर जी, तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी एवं मित्रवर डा० राममोहनदास जी एम० ए०, पी-एच० डी० आरा से प्राप्त हुई है। आप दोनों के आग्रह से यह कृति एक वर्ष में लिखकर पूर्ण की गयी है, अत: मैं उक्त दोनों भाइयों के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ।

आदरणीय डा० एन. टाटिया, निर्देशक प्राकृत जैन विद्यापीठ, मुजफ्फरपुर ने विषयसम्बन्धी सुझाव दिये हैं, जिनके लिए उनका आभारी हूँ। उदाहरणानुक्रमणिका एवं प्रयोगसूची तैयार करने में प्रिय शिष्य श्री सुरेन्द्रकुमार जैन ने अथक श्रम किया है, अत: उन्हें हृदय से आशीर्वाद देता हूँ। भाई प्रो० राजारामजी तथा स्वामी द्वारिकानाथ शास्त्री, व्याकरण-पालि-बौद्धदर्शनाचार्य, वाराणसी से प्रूफ-संशोधन में सहयोग प्राप्त होता रहा है, अत उनके प्रति भी आभारी हूँ।

उन समस्त ग्रन्थकारों का भी आभारी हूँ, जिनकी रचनाओं के अध्ययन से प्रस्तुत प्राकृत व्याकरण सम्बन्धी सामग्री ग्रहण की गयी है।

भूलों का रहना स्वाभाविक है, अत: त्रुटियों के लिए क्षमायाचना करता हूँ।

एच० डी० जैन कालेज, आरा
(मगध विश्वविद्यालय)
श्रावण, वीर नि० सं० २४८६

नेमिचन्द्र शास्त्री

अभिनव प्राकृत-व्याकरण

पहला अध्याय

वर्ण-विचार और संज्ञाएँ

भाषा की मूल ध्वनियों तथा उन ध्वनियों के प्रतीक स्वरूप लिखित चिह्नों को वर्ण कहते हैं। प्राकृत की वर्णमाला संस्कृत की अपेक्षा कुछ भिन्न है। ऋ, ऌ, ऐ और औ स्वर प्राकृत में ग्रहण नहीं किये गये हैं। व्यंजनों में श, ष और स इन तीन वर्णों में से केवल स का ही प्रयोग मिलता है। न का प्रयोग विकल्प से होता है। अतः प्राकृत की वर्णमाला में निम्न वर्ण पाये जाते हैं।

स्वर—जिन वर्णों के उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता अपेक्षित नहीं होती, वे स्वर कहलाते हैं। प्राकृत में स्वर दो प्रकार के हैं—ह्रस्व और दीर्घ।

अ, इ, उ, ए, ओ (ह्रस्व)।

आ, ई, ऊ, ऐ, औ (दीर्घ)।

व्यंजन—जिन वर्णों के उच्चारण करने में स्वर वर्णों की सहायता लेनी पड़ती है, वे व्यंजन कहलाते हैं। प्राकृत में व्यंजनों की संख्या ३२ है।

क	ख	ग	घ	ङ	(कवर्ग)
च	छ	ज	झ	ञ	(चवर्ग)
ट	ठ	ड	ढ	ण	(टवर्ग)
त	थ	द	ध	न	(तवर्ग)
प	फ	ब	भ	म	(पवर्ग)
	य	र	ल	व	(अन्तःस्थ)
			स	ह	(ऊष्माक्षर)
				~	(अनुस्वार)

अनुस्वार को भी व्यजन माना गया है, यतः अनुस्वार म् या न् का रूपान्तर है। प्राकृत में विसर्ग की स्थिति नहीं है। विसर्ग सर्वदा ओ या ए स्वर में परिवर्तित हो जाता है। असंयुक्त अवस्था में ङ और ञ का व्यवहार भी नहीं पाया जाता है। अतः व्यंजन ३० हैं।

वर्णों के उच्चारण

कण्ठ्य—अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ और ह का उच्चारण स्थान कंठ है। अतः ये वर्ण कंठ्य कहलाते हैं।

तालव्य—इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ और य का उच्चारण स्थान तालु है, अतः ये वर्ण तालव्य कहलाते हैं।

मूर्धन्य—ट, ठ, ड, ढ, ण और र का उच्चारण स्थान मूर्धा है, अतः ये वर्ण मूर्धन्य कहलाते हैं।

दन्त्य—त, थ, द, ध, न, ल और स का उच्चारण स्थान दन्त है, अतः ये वर्ण दन्त्य कहलाते हैं।

ओष्ठ्य—उ, ऊ, प, फ, ब, भ और म का उच्चारण स्थान ओष्ठ है, अतः ये वर्ण ओष्ठ्य कहलाते हैं।

अनुनासिक—ञ, म, ङ, ण, न और म का उच्चारण स्थान नासिका है, अतः ये वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं।

ऐ और ए का कण्ठ तालु, औ और ओ का कंठ-ओष्ठ, वकार का दन्तोष्ठ और अनुस्वार का नासिका उच्चारण स्थान है।

प्रयत्न विचार

वर्णोच्चारण के लिए ध्वनियंत्र को जो आयास करना पड़ता है, उसे प्रयत्न कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है—आभ्यन्तर और बाह्य।

वर्णोच्चारण के पूर्व हृदय में जो आयास—प्रयत्न होता है, उसे आभ्यन्तर और मुख से वर्ण निकलते समय जो आयास करना पड़ता है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। आभ्यन्तर प्रयत्न का अनुभव बोलनेवाले को ही होता है, किन्तु बाह्य का अनुभव श्रोता भी करते हैं।

आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है—स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत और संवृत।

क से म पर्यन्त वर्णों का स्पृष्ट, य, र, ल और व का ईषत्स्पृष्ट, स और ह का ईषद्विवृत और स्वरों का विवृत प्रयत्न होता है। ह्रस्व अकार का प्रयोगावस्था—परिनिष्ठित सिद्धरूप, में संवृत प्रयत्न होता है; किन्तु प्रक्रिया दशा—साधनावस्था, में विवृत प्रयत्न ही रहता है।

बाह्य प्रयत्न ग्यारह प्रकार का है—विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय कण्ठ का विराम हो, उन्हें विवार, जिनके उच्चारण में कंठ का विराम न हो, उन्हें संवार, जिनका उच्चारण करते समय श्वास

चलती रहे, उन्हें श्वास; जिनका उच्चारण नाद से हो, उन्हें नाद; जिन वर्णों का उच्चारण करते समय गूँज हो, उन्हें घोष, जिनके उच्चारण में गूँज न हो, उन्हें अघोष, जिनके उच्चारण में प्राणवायु का अल्प उपयोग हो, उन्हें अल्पप्राण एवं जिनके उच्चारण में प्राण-वायु का अधिक उपयोग हो, उन्हें महाप्राण कहते हैं।

क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ और स का विवार, श्वास और अघोष प्रयत्न है।

ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व और ह का संवार, नाद और घोष प्रयत्न है।

वर्गों के प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण तथा य, र, ल, व का अल्पप्राण प्रयत्न है[1]।

वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ वर्ण तथा स और ह का महाप्राण प्रयत्न है[2]।

क से म पर्यन्त पचीस वर्ण स्पर्श कहलाते हैं[3]। इनके उच्चारण में जीभ का अगला, पिछला या मध्यभाग कंठ, तालु प्रभृति स्थानों का स्पर्श करता है। अतः ये वर्ण स्पर्श वर्ण कहलाते हैं।

य, र, ल और व ये चार वर्ण अन्तस्थ कहलाते हैं[4]। इनके अन्तःस्थ कहलाने का कारण यह है कि ये चारों स्पर्श और ऊष्म के मध्यवर्ती हैं।

स और ह ऊष्म वर्ण हैं। इन वर्णों के उच्चारण में अधिक वायु निकलती है, अतः ये ऊष्म कहलाते हैं।

अनुस्वार की अयोगवाह संज्ञा है।

क से म पर्यन्त जिन वर्णों को स्पर्श कहा गया है, उनके उच्चारण के लिए आने-वाला श्वास स्वरतन्त्रियों के प्रभाव से घोष या अघोष होकर आता है। अत इन पाँचों में प्रत्येक के मोटे-मोटे दो भेद हो गये—(१) घोष स्पर्श और (२) अघोष स्पर्श। अघोष स्पर्श के भी प्राणत्व के आधार पर दो भेद हैं—(१) अघोष अल्पप्राण स्पर्श और (२) अघोष महाप्राण स्पर्श। घोष स्पर्श के तीन भेद हैं—(१) घोष अल्पप्राण स्पर्श (२) घोष महाप्राण स्पर्श और (३) घोष अनुनासिक। घोष अनुनासिकों के उच्चारण में कौवा (कण्ठपिटक) बीच में रहता है, जिसके फलस्वरूप थोड़ी श्वास मुँह और नाक दोनों से निकलती है। अनुनासिक वर्णों के अतिरिक्त अन्य स्पर्शों के उच्चारण में कौवा नासिकाविवर को बन्द किये रहता है, अत श्वास केवल मुँह से निकलती है।

---

१. वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमा यरलवाश्चाल्पप्राणाः।

२. वर्गाणां द्वितीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राणाः।

३. कादयो मावसानाः स्पर्शाः।

४. यणोऽन्तःस्थाः।

इस प्रकार कण्ठ्य, मूर्धन्य, तालव्य, दन्त्य और ओष्ठ्य इन पाँचों स्पर्श वर्गों में से प्रत्येक वर्ग के निम्न पाँच भेद होते हैं—

१. अघोष अल्पप्राण—क, त, प आदि।

२. अघोष महाप्राण—ख, थ, फ आदि।

३. घोष अल्पप्राण—ग, द, ब आदि।

४. घोष महाप्राण—घ, ध, भ आदि।

५. अनुनासिक या घोष अल्पप्राण अनुनासिक—ङ, न, म आदि।

स्व संज्ञा—जिस वर्ण का जिस वर्ण के साथ तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न एक हो, वह वर्ण स्व या सवर्ण संज्ञक होता है।[1]

विभक्ति संज्ञाएँ—सु आदि विभक्तियों में अन्त्य इत्संज्ञक वर्ण के साथ उच्चरित आदि वर्ण अपने तथा मध्यवर्ती वर्णों का भी बोधक होता है। जैसे प्रथमा विभक्ति में सु और जस् की सस् संज्ञा, द्वितीया विभक्ति में अम् और शस् की अस् संज्ञा, तृतीया विभक्ति में टा और भिस् की टास् संज्ञा, चतुर्थी विभक्ति में ङे और भ्यस् की ङेस् संज्ञा, पंचमी में ङसि और भ्यस् की ङसिस् संज्ञा, षष्ठी में ङस् और आम् की ङम् संज्ञा एवं सप्तमी में ङि और सुप् की ङिप् संज्ञा होती है।[2]

ह्र संज्ञा[3]—ह्रस्व वर्णों की "ह्र" संज्ञा होती है।

दि संज्ञा[4]—दीर्घ वर्णों की "दि" संज्ञा होती है।

स संज्ञा[5]—समास की "स" संज्ञा होती है।

शु संज्ञा[6]—श, ष और स की "शु" संज्ञा होती है।

ञु संज्ञा[7]—आदि वर्ण की "ञु" संज्ञा होती है। यथा "ञोः कञ्चुक—" इत्यादि में ञु शब्द से आदि वर्ण का बोध होता है।

स्तु संज्ञा[8]—दो संयुक्त व्यञ्जनों की "स्तु" संज्ञा होती है।

ग संज्ञा[9]—गणप्रधान जो आदि शब्द होता है, उसकी "ग" संज्ञा होती है। जैसे—'क्लीबे गुणगाः' में गुणगा शब्द गुणादि का बोधक है।

पु संज्ञा[10]—शब्द के द्वितीय वर्ण की "पु" संज्ञा होती है।

तु संज्ञा[11]—विकल्प विधान की "तु" संज्ञा होती है।

बहुल संज्ञा[1]—विकल्प की "बहुल" संज्ञा भी होती है।

रिन् संज्ञा[2]—रेफ की "रिन्" संज्ञा होती है।

लुक् संज्ञा—लोप की "लुक्" संज्ञा होती है।

उद्वृत्त स्वर संज्ञा[3]—व्यंजन सहित स्वर से व्यंजन का लोप हो जाने पर जो स्वर शेष रह जाता है, उसकी "उद्वृत्त स्वर" संज्ञा होती है।

दूसरा अध्याय

सन्धि विचार

प्राकृत भाषा का व्याकरण प्राकृत में ही लिखा हुआ उपलब्ध नहीं होता है। जितने भी प्राकृत वैयाकरण हैं, उन्होंने संस्कृत शब्दों में विकार के नियमों का निरूपण कर प्राकृत शब्दों की निष्पत्ति दिखलायी है। अतः यहाँ सन्धि के उन्हीं नियमों का विवेचन किया जायगा, जिनका प्रयोग प्राकृत साहित्य में पाया जाता है।

सन्धि—जब किसी शब्द में दो वर्ण निकट आने पर मिल जाते हैं, तो उनके मेल से उत्पन्न होनेवाले विकार को सन्धि कहते हैं।

संयोग और सन्धि में इतना भेद है कि जहाँ वर्ण अपने स्वरूप से बिना किसी विकार के मिलते हैं, उसे संयोग और जहाँ विकृत होकर उनके स्थान में कोई आदेश होने से मिलते हैं, उसे सन्धि कहते हैं।

समास और सन्धि में यह अन्तर है कि समास में प्रायः दो या अधिक पद विभक्तियों का त्याग कर मिलते हैं, पर सन्धि में विभक्तियों सहित पदों का संयोग होता है। संक्षेप में वर्णविकार सन्धि है और शब्दविकार समास।

प्राकृत में सन्धि की व्यवस्था विकल्प से होती है, नित्य नहीं। सन्धि के तीन भेद हैं—स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि और अव्यय सन्धि।

स्वर सन्धि—दो अत्यन्त निकट स्वरों के मिलने से जो ध्वनि में विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे—मगह + अहिवई = मगहाहिवई (मगधाधिपति.)।

व्यञ्जन सन्धि—व्यंजन वर्ण के साथ व्यंजन या स्वर वर्ण के मिलने से जो विकार होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं, जैसे—उसभम् + अजियं = उसभमजियं (ऋषभम् + अजितम्)। प्राकृत में विसर्ग सन्धि का कोई स्थान नहीं है, क्योंकि विसर्ग के स्थान पर ओ या ए हो जाता है।

अव्यय सन्धि—संस्कृत में इस नाम की कोई सन्धि नहीं है, पर प्राकृत में अनेक अव्यय पदों में यह सन्धि पायी जाती है। यह सन्धि दो अव्यय पदों में होती है। यथा—किं + अपि किं पि। इसमें सन्देह नहीं कि प्राकृत में अव्यय और निपात का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यही कारण है कि इस सन्धि को अलग मानना पड़ता है।

स्वर सन्धि

प्राकृत में प्रधानतः चार प्रकार की स्वर सन्धियाँ पायी जाती हैं—दीर्घ, गुण, ह्रस्व-दीर्घ और प्रकृतिभाव या सन्धि-निषेध। वृद्धि सन्धि के भी विकृत रूप मिलते हैं।

(१) दीर्घ सन्धि[1]—ह्रस्व या दीर्घ अ, इ और उ से उनका सवर्ण स्वर परे रहे तो दोनों के स्थान में सवर्ण दीर्घ होता है। उदाहरण—

(क) अ + अ = आ—दंड + अहीसो = दंडाहीसो, दंड अहीसो (दंडाधीशः)
अ + आ = आ—विसम + आयवो = विसमायवो, विसम आयवो (विषमातपः)
आ + अ = आ—रमा + अहीणो = रमाहीणो, रमा अहीणो (रमाधीनः)
आ + आ = आ—रमा + आरामो = रमारामो, रमा आरामो (रमारामः)
ण + अहिअइ = णाहिअइ
ण + आगअ = णागअ (नागतः)
ण + आलवइ = णालवइ (नालपति)
न + अभिजाणइ = नाभिजाणइ (नाभिजानाति)
न + अइदूर = नाइदूर (नातिदूरम्)
ण + अलंकिदा = णालंकिदा (नालंकृता)
धम्मकहा + अवसान = धम्मकहावसान (धर्मकथावसानम्)
महा + आक्कंद = महाक्कंद, महाआक्कंद (महाक्रन्दः)
बहु + उदग = बहूदग, बहुउदग (बहूदकम्)
कअ + अवराह = कआवराह (कृतापराध)
आरक्ख + अधिकते = आरक्खाधिकते (आरक्षाधिकृतम्)
जेण + अहं = जेणाहं (येनाहं)
महाराअ + अधिराओ = महाराआधिराओ (महाराजाधिराजः)
इह + अडवीए = इहाडवीए (इहाटव्याम्)
सहस्स + अतिरेक = सहस्सातिरेक (सहस्रातिरेकः)
इंगिय + आगार = इंगियागार (इंगिताकार)
किलेस + अणल = किलेसाणल (क्लेशानलः)
दूदिअल + अवमाण = दूदिअलावमाण (द्यूतकरावमानम्)
अह + अवरा = अहावरा (अथापरा)
सास + अणल = सासाणल (श्वासानलः)

---

१. समानानां तेन दीर्घः १।२।१ हे०।

इस सन्धि के निषेध—

अइरेग + अट्ठवास = अइरेगअट्ठवास (अतिरेकाष्टवर्षः)
सयल + अत्थमियजियलोअ = सयल अत्थमियजियलोअ (सकलास्तमित-जीवलोकः)
सव्व + अत्थेसु = सव्व अत्थेसु (सर्वार्थेषु)
सेलग जक्ख + आरुहण = सेलग जक्खआरुहण (शैलक यक्षारोहणम्)
ण + आणामि = ण आणामि (न जानामि)
ण + आणासि = ण आणासि (न जानासि)
ण + आणीयदि = ण आणीयदि (न ज्ञायते)
अ + आणंतेण = अ आणंतेण (अजानता)
अ + आणिअ = अ आणिअ (अज्ञात्वा)

विशेष—

प्राकृत में प्रथम पद के अ और अण के स्थान पर ण आदेश होता है। यथा—
अ + अणसहिआलोअ = णसहिआलोअ (असोढालोकः)
अ + अणसहिअ पडिबोह = णसहिअपडिबोह (असोढप्रतिबोधः)
अ + अणपहुप्पंत = णपहुप्पंत, णपहुत्त (अप्रभवत्)

(ख) इ + इ = ई—मुणि + इणो = मुणीणो, मुणिइणो (मुनीनः)
इ + ई = ई—मुणि + ईसरो = मुणीसरो, मुणि ईसरो (मुनीश्वरः)
दहि + ईसरो = दहीसरो, दहि ईसरो (दधीश्वरः)
ई + इ = ई—गामणी + इइहासो = गामणीइहासो, गामणी इइहासो (ग्रामणीतिहासः)

ई + ई = ई—गामणी + ईसरो = गामणीसरो, गामणी ईसरो (ग्रामणीश्वरः)
पुहवी + ईस = पुहवीस (पृथिवीशः)

(ग) उ + उ = ऊ—भाणु + उवज्झाओ = भाणूवज्झाओ, भाणु उवज्झाओ (भानूपाध्यायः)

साउ + उअयं = साऊअयं, साउउअयं (स्वादूदकम्)
उ + ऊ = ऊ—साहु + ऊसवो = साहूसवो, साहु ऊसवो (साधूत्सवः)
ऊ + उ = ऊ—बहू + उअरं = बहूअरं, बहू उअरं (वधूदरम्)
ऊ + ऊ = ऊ—वणेरू + ऊसिअं = वणेरूसिअं, वणेरू ऊसिअं (वधेरूच्छ्रितम्)

(२) गुण सन्धि[1] — अ या आ वर्ण से परे ह्रस्व या दीर्घ इ और उ वर्ण हों तो पूर्व पर के स्थान में एक गुण आदेश होता है। उदाहरण—

(क) अ + इ = ए—वास + इसी[2] = वासेसी, वास इसी (व्यासर्षिः)
आ + इ = ए—रामा + इअरो = रामेअरो, रामा इअरो (रामेतरः)
अ + ई = ए—वासर + ईसरो = वासरेसरो, वासर ईसरो (वासरेश्वरः)
आ + ई = ए—विलआ + ईसो = विलयेसो, विलयाईसो (वनितेशः)

(ख) अ + उ = ओ—गूढ + उअरं = गूढोअरं, गूढ उअरं (गूढोदरम्)
आ + उ = ओ—रमा + उअचिअं = रमोवचिअं, रमाउवचिअं (रमोपचितम्)

अ + ऊ = ओ—सास + ऊसासा = सासोसासा, सासऊसासा (श्वासोच्छ्वासो)

आ + ऊ = ओ—विज्जुला + ऊसुंभिअं = विज्जुलोसुंभिअं, विज्जुला-ऊसुंभिअं (विद्युदुल्लसितम्)

गुण सन्धि के अन्य उदाहरण

दिसा + इभ = दिसेभ
संदट्ठ + इभमोत्तिअ = संदट्ठेभमोत्तिअ (संदष्टेभमौक्तिकः)
पाअड + उरु = पाअडोरु (प्रकटोरुः)
सामा + उअअं = सामोअअं (श्यामोदरम्)
गिरि लुलिअ + उअहि = गिरिलुलिओअहि (गिरिलुलितोदधि)
महा + इसि = महेसि (महर्षिः)
राअ + इसि = राएसि (राजर्षिः)
सव्व + उउअ = सव्वोउअ (सर्वर्तुकः)
णिच्च + उउअ = णिच्चोउअ (नित्यर्तुकः)
करिअर + उरु = करिअरोरु (करिभोरु)
अण + उउअ = अणोउअ (अनृतुकः)

---

१. अवर्णस्येवर्णादिनैदोदरल् ११७१६ हे०।

२. पदयोः सन्धिर्वा ८।१।५—संस्कृतोक्तः सन्धिः सर्वः प्राकृते पदयोर्व्यवस्थित-विभाषया भवति।

अपवाद—सन्धि निषेध

पढमसमय + उवसंत = पढमसमयउवसंत (प्रथमसमयोपशान्तः)
आयरिय + उवज्झाय = आयरिय उवज्झाय (आचार्योपाध्यायः)
हेट्ठिम + उवरिय = हेट्ठिमउवरिय (अधस्तोपरि)
कंठसुत्त + उरत्थ = कंठसुत्तउरत्थ (कंठसूत्रोरस्थः)
अप्प + उदय = अप्पउदय (अल्पोदकम्)
दीवदिसा + उदहीणं = दीवदिसा उदहीणं (द्वीपदिगुदधीनाम्)

सन्धि अभाव—

महा + उदग = महाउदग (महोदकम्)
ईहामिग + उसभ = ईहामिगउसभ (ईहामृगर्षभः)
खग्ग + उसभ = खग्गउसभ (खंगर्षभः)
पवयण + उवघोयग = पवयणउवघोयग (प्रवचनोपघातकः)
संजम + उवघाय = संजमउवघाय (संयमोपघात)
वसंतुस्सव + उवायण = वसंतुस्सवउवायण (वसन्तोत्सवोपायन)

(३) विकृत वृद्धि सन्धि—

१—ए, ओ से पहले, किन्तु उन ए, ओ से पहले नहीं जो संस्कृत ऐ और औ से निकले हों, अ और आ का लोप हो जाता है। अर्थात् मूल ए और ओ से परे अ और आ का लोप होता है। उदाहरण—

गाम + एणी = गामेणी
पव + एला = पवेला
खुड्डग + एगावलि = खुड्डगेगावलि
फुल्ल + एला = फुल्लेला
जाल + ओलि = जालोलि (ज्वालावलि)
वण + ओलि = वणोलि (वनावलिः)
वाअ + ओलि = वाओलि (वातावलि)
पहा + ओलि = पहोलि (प्रभावलिः)
उदअ + ओल्ल = उदओल्ल (उदकार्द्रः)
वासेण + ओल्ल = वासेणोल्ल (वर्षार्द्र)
माला + ओहड = मालोहड (मालापहृतः)
मट्टिअ + ओलित्त = मट्टिओलित्त (मृत्तिकावलिप्तः)

जल + ओह = जलोह (जलौघ:)
संठाण + ओसप्पिणी = संठाणोसप्पिणी (संस्थानावसर्पिणी)
गुड + ओदन = गुडोदन (गुडौदनम्)
कररुह + ओरंप = कररुहोरंप
वाअंदोलण + ओणविअ = वाअंदोलणोणविअ (वातान्दोलनावनमित)
खंधुक्ख + एव = खंधुक्खेव (स्कन्धोत्क्षेप)
पातुक्ख + एव = पातुक्खेव (पादोत्क्षेप:)

(४) ह्रस्व दीर्घ विधान सन्धि[1]—प्राकृत में सामासिक पदों में ह्रस्व का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व होता है। इस ह्रस्व या दीर्घ के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। यह ह्रस्व स्वर का दीर्घ और दीर्घ स्वर का ह्रस्व विधान कभी बहुल—विकल्प से और कभी नित्य होता है। यथा—

ह्रस्व स्वर का दीर्घ—

अन्त + वेई = अन्तावेई (अन्तर्वेदि)
सत्त + वीसा = सत्तावीसा (सप्तविंशति:)
पइ + हरं = पईहरं, पइहरं (पतिगृहम्)
वारि + मई = वारीमई, वारिमई (वारिमती)
भुअ + यंतं = भुआयंतं, भुअयंतं (भुजायन्त्रम्)
वेलु + वणं = वेलूवणं, वेलुवणं (वेणुवनम्)

दीर्घ स्वर का ह्रस्व—

जउँणा + यडं = जउँणयडं, जउँणायडं (यमुनातटम्)
नई + सोत्तं = नइसोत्तं, नईसोत्तं (नदीस्रोत:)
मणा + सिला = मणसिला, मणासिला (मन:शिला)
गोरी + हरं = गोरिहरं, गोरीहरं (गौरीगृहम्)
वहू + मुहं = वहुमुहं, वहूमुहं (वधूमुखम्)
सिला + खलिअं = सिलखलिअं, सिलाखलिअं (शिलास्खलितम्)

(५) प्रकृतिभाव सन्धि—सन्धि कार्य के न होने को प्रकृति-भाव कहते हैं। प्राकृत में संस्कृत की अपेक्षा सन्धि निषेध अधिक मात्रा में पाया जाता है। अत: यहाँ इस सन्धि के आवश्यक नियमों का विवेचन किया जायगा।

---

१. दीर्घह्रस्वौ मिथो वृत्तौ ८।१।४—वृत्तौ समासे स्वराणां दीर्घह्रस्वौ बहुलं भवत:। मिथ: परस्परम्। तत्र ह्रस्वस्य दीर्घ: ।

(१) इ और उ का विजातीय स्वर के साथ सन्धि कार्य नहीं होता।[1] जैसे—

पहावलि + अरुणो = पहावलिअरुणो (प्रभावल्यरुणः)

बहु + अवऊढो = बहुअवऊढो (बध्वाऽवगूढः)

न वेरिवग्गे वि + अवयासो = न वेरिवग्गे वि अवयासो (न वैरिवर्गेऽप्यवकाशः)

दणु + इन्दरुहिरलित्तो = दणुइन्दरुहिरलित्तो (दनुजेन्द्ररुधिरलिप्तः)

वि + अ = विअ (इव)

महु + इँ = महुइँ (मधूनि)

वन्दामि + अज्जवइरं = वन्दामि अज्जवइरं

(२) ए और ओ के आगे यदि कोई स्वर वर्ण हो तो उनमें सन्धि नहीं होती है।[2] यथा—

रुक्खादो + आअओ = रुक्खादो आअओ (वृक्षादागतः)

वणे + अडइ = वणेअडइ (वनेऽटति)

लच्छीए + आणंदो = लच्छीएआणंदो (लक्ष्म्या आनन्दः)

देवीए + एत्थ = देवीएएत्थ (देव्या अत्र)

एओ + एत्थ = एओएत्थ (एकोऽत्र)

बहुआइनहुल्लिहणे + आबन्धतीएँ कञ्चुअं अंगे = बहुआइनहुल्लिहणे आबन्धतीएँ कञ्चुअं अंगे (बध्वा नखोल्लेखने आबध्नत्या कञ्चुकमङ्गे)

तं चेव मलिअ विरदण्ड विरसमालक्खिमो + एण्हि = तं चेव मलिअविरदण्ड विरसमालक्खिमो एण्हि (तदेव मृदितविरदण्डविरसमालक्षयामः इदानीम्)

अहो + अच्छरिअं = अहो अच्छरिअं (अहो आश्चर्यम्)

(३) उद्वृत्त स्वर का किसी भी स्वर के साथ सन्धि कार्य नहीं होता।[3] यथा—

निसा + अरो = निसा अरो (निशाचरः)—यहाँ चर शब्द के च का लोप होने से अ स्वर उद्वृत्त है।

गन्ध + उडि = गन्ध उडि (गन्धकुटीम्)—'कु' में क व्यञ्जन का लोप होने से उ उद्वृत्त है।

निसि + अरो = निसि अरो (निशिचर.)—'च' का लोप होने से अ स्वर उद्वृत्त है।

रयणी + अरो = रयणी अरो (रजनीचरः)

मणु + अत्तं = मणु अत्तं (मनुजत्वं)—'ज' का लोप होने पर अ उद्वृत्त है।

---

१. न युवर्णस्यास्वे ८।१।६. इवर्णस्य उवर्णस्य च अस्वे वर्णे परे सन्धिर्न भवति। हे०।

२. एदोतोः स्वरे ८।१।७ एकार-ओकारयोः परे सन्धिर्न भवति। हे०।

३. स्वरस्योद्वृत्ते ८।१।८. स्वरस्य उद्वृत्ते स्वरे परे संधिर्न भवति। हे०।

एग + इंदिय = एगिंदिय (एकेन्द्रियः)
सोअ + इंदिय = सोइंदिय (श्रोत्रेन्द्रियम्)
घाण + इंदिय = घाणिंदिय (घ्राणेन्द्रियम्)
जिभ + इंदिय = जिभिंदिय (जिह्वेन्द्रियम्)
फास + इंदिय = फासिंदिय (स्पर्शनेन्द्रियम्)
तद्दिअस + इंदु = तद्दिअसिंदु (तद्दिवसेन्दुः)
राअ + ईसर = राईसर (राजेश्वरः)
कण्ण + उप्पल = कण्णुप्पल (कर्णोत्पलम्)
णील + उप्पल = णीलुप्पल (नीलोत्पलम्)
णह + उप्पल = णहुप्पल (नखोत्पलम्)
रयण + उज्जल = रयणुज्जल (रत्नोज्ज्वलम्)
पव्वद + उम्मूलिदं = पव्वदुम्मूलिदं (पर्वतोन्मूलितम्)
कअ + ऊसासा = कऊसासा (कृतोच्छ्वासः)
गमण + ऊसुअ = गमणूसुअ (गमनोत्सुकः)
एग + ऊण = एगूण (एकोनः)
पंच + ऊण = पंचूण (पञ्चोनः)
भाग + ऊण = भागूण (भागोनः)
महा + ऊसव = महूसव (महोत्सवः)
वसंत + ऊसव = वसंतूसव (वसन्तोत्सवः)
देव + इड्ढि = देविड्ढि (देवर्द्धिः)
उत्तम + इड्ढि = उत्तमिड्ढि (उत्तमर्द्धिः)
महा + इड्ढिय = महिड्ढिय (महर्द्धिकः)
विसेस + उवओगो = विसेसुवओगो (विशेषोपयोगः)

व्यंजन सन्धि

प्राकृत में व्यंजन सन्धि का विस्तृत प्रयोग नहीं मिलता है; यतः प्रायः अन्तिम हलन्त व्यंजन का लोप हो जाता है। व्यञ्जन का विकारमात्र अनुनासिक वर्णों में ही उपलब्ध होता है। इस सन्धि का प्रमुख नियमों सहित विवेचन किया जाता है।

(१) अ के बाद आये हुए संस्कृत विसर्ग के स्थान में उस पूर्व "अ" के साथ ओ हो जाता है[1]। यथा—

---

१. अतो डो विसर्गस्य ८।१।३७ संस्कृतलक्षणोत्पन्नस्यातः परस्य विसर्गस्य स्थाने डो इत्यादेशो भवति। हे०।

अग्रत:>अग्गओ
अन्त + विस्तम्भ.>अन्तोवीसंभो
पुरत >पुरओ
मन: + शिला>मणोसिला।
सर्वत:>सव्वओ।
मार्गत:>मग्गओ।
भवत:>भवओ।
भवन्त:>भवन्तो।
सन्त:>सन्तो।
कुत.>कुदो।

(२) पद के अन्त में रहने वाले मकार का अनुस्वार होता है।[1] जैसे—

गिरिम्>गिरिं
जलम्>जलं
फलम्>फलं
वृक्षम्>वच्छं

(३) मकार से परे स्वर रहने पर विकल्प से अनुस्वार होता है।[2] यथा—

उसभम् + अजिअं = उसभमजिअं, उसभंअजियं (ऋषभमजितम्)
यम् + आहु = यमाहु, यं आहु
धणम् + एव = धणमेव, धणं एव (धनमेव)

(४) बहुलाधिकार रहने से हलन्त अन्त्य व्यञ्जन का भी मकार होकर अनुस्वार हो जाता है।[3] यथा—

साक्षात्>सक्खं
यत्>जं
तत्>तं
विष्वक्>वीसुं
पृथक्>पिहं
सम्यक>सम्मं

---

१. मोनुस्वार ८।१।२३. अन्त्यमकारस्यानुस्वारो भवति। हे०।
२. वा स्वरे मश्च ८।१।२४. अन्त्यमकारस्य स्वरे परेनुस्वारो वा भवति। हे०।
३. बहुलाधिकाराद् अन्यस्यापि व्यञ्जनस्य मकार. ८।१।२४ सूत्र की वृत्ति। हे०।

(५) ङ्, ञ्, ण् और न् के स्थान में पश्चात् व्यंजन होने से सर्वत्र अनुस्वार हो जाता है।[1] उदाहरण—

ङ—पङ्क्ति>पंति, पंती; पराङ्मुखः>परंमुहो।
ञ—कञ्चुकः>कंचुओ; लाञ्छनम्>लंछणं।
ण—षण्मुखः>छंमुहो; उत्कण्ठा>उक्कंठा।
न—विन्ध्यः>विंझो, सन्ध्या>संझा।

(६) शौरसेनी प्राकृत में इ और ए के परे रहने से अन्त्य म के स्थान पर विकल्प से 'ण' आदेश होता है। जैसे—

युक्तम् + इदम् = जुत्तं + इणं = जुत्तमिणं, जुत्तंणिणं, जुत्तं इणं।
सदृशम् + इदम् = सरिसम् + इणं = सरिसमिणं, सरिसंणिणं, सरिसं इणं।
किम् + एतत् = किं + एअं = किमेअं—किणेदं, किमेदं।
एवम् + एतत् = एवं + एअं = एवमेअं, एवंणेदं, एवमेदं।

(७) अनुस्वार के पश्चात् कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग के अक्षर होने से क्रम से अनुस्वार को ङ्, ञ्, ण्, न् और म् विकल्प से होते हैं।[2] यथा—

क— पं + को = पङ्को, पंको (पङ्कः)
ख— सं + खो = सङ्खो, संखो (शंखः)
ग— अं + गणं = अङ्गणं, अंगणं (अङ्गनम्)
घ— लं + घणं = लङ्घणं, लंघणं (लङ्घनम्)
च— कं + चुओ = कञ्चुओ, कंचुओ (कञ्चुकः)
छ— लं + छणं = लञ्छणं, लंछणं (लाञ्छनम्)
ज— अं + जिअं = अञ्जिअं, अंजिअं (अञ्जितम्)
झ— सं + झा = सञ्झा, संझा (संध्या)
ट— कं + टओ = कण्टओ, कंटओ (कण्टकः)
ठ— उ + कंठा = उक्कण्ठा, उक्कंठा (उत्कण्ठा)
ड— कं + डं = कण्डं, कंडं (काण्डम्)
ढ— सं + ढो = सण्ढो, संढो (षण्ढः)
त— अं + तरं = अन्तरं, अंतरं (अन्तरम्)
थ— पं + थो = पन्थो, पंथो (पन्थाः)

---

१. ङ-ञ-ण-नो व्यञ्जने ८।१।२५. ङ ञ, ण, न इत्येतेषां स्थाने व्यञ्जने परे अनुस्वारो भवति। हे०।

२. वर्गेऽन्त्यो वा ८।१।३०. अनुस्वारस्य वर्गे परे प्रत्यासत्तेस्तस्यैव वर्गस्यान्त्यो वा भवति। हे०।

द— चं + दो = चन्दो, चंदो (चन्द्र.)

ध— बं + धवो = बन्धवो, बंधवो (बान्धवः)

प— कं + पइ = कम्पइ, कंपइ (कम्पते)

फ— बं + फइ = बम्फइ, बंफइ (वम्फते)

ब— कलं + बो = कलम्बो, कलंबो (कम्ब.)

भ— आरं + भो = आरम्भो, आरंभो (आरम्भ.)

(८) प्राकृत में कितने ही शब्दों के प्रयोगानुसार पहले, दूसरे या तीसरे वर्ण पर अनुस्वार का आगम होता है।[१] यह अनुस्वारागम भी सन्धि कार्य के अन्तर्गत है। उदाहरण :—

प्रथम स्वर के ऊपर अनुस्वार—

अंसु (अश्रु) = अंसुं

तंस (त्र्यस्रम्) = तंसं

वंक (वक्रम्) = वंकं

मसू (श्मश्रु) = मंसू

पुछं (पुच्छम्) = पुंछं

गुछं (गुच्छम्) = गुंछं

मुडं (मूर्द्धा) = मुंडं

फसो (स्पर्शः) = फंसो

बुधो (बुध्नः) = बुंधो

ककोडो (कर्कोटः) = कंकोडो

दसणं (दर्शनम्) = दंसणं

विछिओ (वृश्चिकः) = विंछिओ

गिठी या गुठी (गृष्टिः) = गिंठि या गुंठी

मज्जारो (मार्जारः) = मंजारो, मज्जारो

द्वितीय स्वर के ऊपर अनुस्वारागम—

इह = इहं

पडसुआ = पडंसुआ (प्रतिश्रुत्)

मणसी (मनस्वी) = मणंसी।

मणसिणी (मनस्विनी) = मणंसिणी।

मणसिला (मनःशिला) = मणंसिला, मणासिला

---

१. वक्रादावन्तः ८।१।२६ हे०। वक्र, त्र्यस्र, वयस्य, अश्रु, श्मश्रु, पुच्छ, अतिमुक्तक, गृष्टि, मनस्विनी, स्पर्श, श्रुत, प्रतिश्रुत, निवसन और दर्शन प्रभृति शब्द वक्रादि गण पठित हैं। संस्कृत में यह गण आकृति गण कहलाता है।

वयसो (वयस्यः) = वयंसो
पडिसुदं (प्रतिश्रुतम्) = पडिंसुदं ।

तृतीय स्वर के ऊपर अनुस्वारागम—

अणिउतयं (अतिमुक्तकम्) = अणिउंतय, अइमुंतयं, अइमुत्तयं
उवरि (उपरि) = उवरिं
अहिमुको (अभियुक्तः) = अहिमुंको

(९) जिन शब्दों के अन्त्य व्यंजन का लोप होता है उनके अन्त्य स्वर के ऊपर अनुस्वार का आगम होता है। जैसे—पृथक् = पिहं—इस उदाहरण में अन्त्य व्यंजन क् का लोप हुआ है और पृ में संयुक्त ऋकार के स्थान पर इकारादेश हुआ है, तथा 'थ' के स्थान पर 'ह' हो जाने से 'पिह' बना है। पश्चात् उपर्युक्त नियमानुसार अनुस्वार का आगम हो गया है।

(१०) जहाँ स्यादि पदों की द्विरुक्ति हुई हो, वहाँ दो पदों के बीच में 'म्' विकल्प से आ जाता है। यथा—

एक + एकं = एकमेकं, एकेकं (एकैकम्)
एक + एकेण = एकमेकेण, एकेकेण (एकैकेन)
अंग + अंगम्मि = अंगमंगम्मि, अंगअंगम्मि (अङ्गे, अङ्गे)

(११) उण एवं स्यादि के ण और सु के आगे विकल्प से अनुस्वार का आगम होता है।[1] यथा—

काउण (कृत्वा) = काउणं, काउण
काउआण = काउआणं, काउआण
कालेण (कालेन) = कालेणं, कालेण
वच्छेण (वृक्षेण) = वच्छेणं, वच्छेण
वच्छेसु (वृक्षेषु) = वच्छेसुं, वच्छेसु
तेण = (तेन) तेणं, तेण

(१२) प्राकृत में अनुस्वारागम जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही अनुस्वार लोप भी। अत व्यंजन सन्धि कार्य के अन्तर्गत अनुस्वार लोप का प्रकरण भी आया है। यहाँ कुछ नियमों का निरूपण किया जायगा।

(१३) संस्कृत के विंशति, त्रिंशत्, संस्कृत, संस्कार और संस्तुत शब्दों के अनुस्वार का लोप होता है।[2]

---

१. क्त्वा-स्यादेर्ण-स्वोर्वा ८।१।२७. क्त्वायाः स्यादीनां च यो णसू तयोरनुस्वारोऽन्तो वा भवति। हे०।

२. विंशत्यादेर्लुक् ८।१।२८. विंशत्यादीनाम् अनुस्वारस्य लुग् भवति। हे०।

विंशतिः = वीसा
त्रिंशत् = तीसा
संस्कृतम् = सक्अं
संस्कारः = सक्कारो
संस्तुतम् = सत्थुअ

(१४) मांसादिगण के शब्दों में अनुस्वार का लुक् विकल्प से होता है।[1] जैसे—

(क) प्रथम स्वर के आगे अनुस्वार का लोप—

मासं, मंसं (मांसम्)
मासलं, मंसलं (मांसलम्)
कि, किं (किम्)
कासं, कंसं (कांस्यम्)
सीहो, सिंघो (सिंह)
पासू, पंसू (पांसु—शुः)

(ख) द्वितीय स्वर के आगे अनुस्वार का लोप—

कह, कहं (कथम्)
एव, एवं (एवम्)
नूण, नूणं (नूनम्)

(ग) तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का लोप—

इआणि, इआणिं (इदानीम्)
संमुह, समुहं (सम्मुखम्)
किंसुअ, किंसुअं (किंशुकम्)

अव्यय सन्धि

अव्यय पदों में सन्धिकार्य करने को अव्यय सन्धि कहा गया है। यद्यपि यह सन्धि भी स्वर सन्धि के अन्तर्गत ही है, तो भी विस्तार से विचार करने के लिए इस सन्धि का पृथक् उल्लेख किया गया है। यहाँ अव्यय सन्धि के नियमों का विवेचन किया जाता है।

(१) पद से परे आये हुए अपि अव्यय के अ का लोप विकल्प से होता है। लोप होने के बाद अपि का प् यदि स्वर से परे हो तो उसका व हो जाता है।[2] यथा—

केण + अपि = केणवि, केणावि (केनापि)
कहं + अपि = कहंपि कहमवि (कथमपि)

---

१. मांसादेर्वा ८।१।२९. मांसादीनामनुस्वारस्य लुग् वा भवति। हे०।
२. पदादपेर्वा ८।१।४१. पदात् परस्य अपेरव्ययस्यादेर्लुग् वा भवति। हे०।

किं + अपि = किंपि, किमवि (किमपि)

तं + अपि = तंपि, तमवि (तदपि)

(२) पद से उत्तर में रहनेवाले इति अव्यय के आदि इकार का लोप विकल्प से होता है और स्वर के परे रहनेवाले तकार को द्वित्व होता है।[1] यथा—

किं + इति = किंति (किमिति)

जं + इति = जंति (यदिति)

दिट्ठं + इति = दिट्ठंति (दृष्टमिति)

न जुत्तं + इति = न जुत्तंति (न युक्तमिति)

स्वर से परे रहने पर तकार को द्वित्व—

तहा + इति = तहात्ति, तहत्ति (तथेति)

पिओ + इति = पिओत्ति, पिउत्ति (प्रियइति)

पुरिसो + इति = पुरिसोत्ति, पुरिसुत्ति (पुरुषइति)

(३) *त्यद् आदि सर्वनामों से पर में रहनेवाले अव्ययों तथा अव्ययों से पर में* रहनेवाले त्यदादि के आदि-स्वर का विकल्प से लोप होता है।[2]

एस + इमो = एसमो (एषोऽयम्)

अम्हे + एत्थ = अम्हेत्थ (वयमत्र)

जइ + एत्थ = जइत्थ (यद्यत्र)

जइ + अहं = जइहं (यद्यहं)

जइ + इमा = जइमा (यदीयम्)

अम्हे + एव्व = अम्हेव्व (वयमेव)

अपवाद—पद से पर में इ के न रहने पर इकार का लोप नहीं होता और न तकार को द्वित्व ही होता है। यथा—

'इअ विज्झ-गुहानिलयाए' में इअ—इति के इकार का लोप नहीं हुआ और न तकार को द्वित्व ही हुआ है। इति शब्द जब किसी वाक्य के आदि में प्रयुक्त होता है, तो तकारवाले इकार को अकार हो जाता है। जैसे—'इति यत् प्रियावसाने' संस्कृत वाक्य के स्थान पर 'इअ जंपि अवसाणे' हो जाता है।

———

1. इतेः स्वरात् तश्च द्विः ८।१।४२. पदात् परस्य इतेरादेर्लुग् भवति स्वरात् परश्च तकारो द्विर्भवति। हे०।

2. त्यदाद्यव्ययात् तत्स्वरस्य लुक् ८।१।४०. त्यदादेरव्ययाच्च परस्य तयोरेव त्यदाद्यव्यययोरादेः स्वरस्य बहुलं लुग् भवति। हे०।

तीसरा अध्याय

वर्ण विकृति

प्राकृत शब्दावलि को जानने के पूर्व संस्कृत वर्णों में होनेवाली उस विकृति को भी जान लेना आवश्यक है, जिसके आधार पर प्राकृत शब्दराशि खड़ी की जा सकती है। यहाँ वर्ण विकृति के साधारण और आवश्यक नियमों का विवेचन किया जाता है।

(१) विजातीय—भिन्न वर्गवाले संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग प्राकृत में नहीं होता। अतः प्रायः पूर्ववर्ती व्यंजन का लोप होकर शेष को द्वित्व कर देते हैं।[१] उदाहरण—

उत्कण्ठा = उक्कंठा—इस उदाहरण में विजातीय त् और क् का संयोग है, अतः पूर्ववर्ती त् का लोपकर शेष क को द्वित्व कर दिया है। ण् का अनुस्वार हो जाने से 'उक्कंठा' शब्द बना है।

नक्तंचर. = णक्कंचरो—यहाँ भी त् + क् में से त् का लोप हो गया है और क् को द्वित्व हो गया है।

याज्ञवल्क्येन = जण्णवक्केण—में ज् + ञ् = ज्ञ में से ज् का लोपकर ञ् + ण् को द्वित्व कर दिया तथा ल् + क् + य् = ल्क्य में से विजातीय वर्ग ल् + य् का लोपकर शेष क् को द्वित्व कर दिया है।

शक्र. > सक्को—र + क्—में र् का लोप और क् को द्वित्व।
धर्म: > धम्मो—र् + म् में से र् का लोप और म् को द्वित्व।
विक्लव > विक्कवो—क् + ल् में से ल् का लोप और क् को द्वित्व।
उल्का > उक्का—ल् + क् में ल् का लोप और क् को द्वित्व।
पक्वम् > पक्कं, पिक्कं—व् + क् में से व् का लोप और क् को द्वित्व।
खड्ग > खग्गो—ड् + ग् में से ड् का लोप और ग् को द्वित्व।
अग्नीन् > अग्गिणी—ग् + न् में से न् का लोप और ग् को द्वित्व।
योग्य: > जोग्गो—ग् + य् में से य् का लोप और ग् को द्वित्व।

---

१. क-ग-ट-ड-त-द-प-श-ष-स-≍क-≍पामूर्ध्वं लुक् ८।२।७७. एषां संयुक्तवर्णसंबन्धिनामूर्ध्वं स्थितानां लुग् भवति। हे०।
अनादौ शेषादेशयोर्द्वित्वम् ८।२।८९ पदस्यानादौ वर्तमानस्य शेषस्यादेशस्य च द्वित्वं भवति। हे०।

कचग्रहः > कअग्गहो—ग् + र् में से र् का लोप और ग् को द्वित्व।
मार्गः > मग्गो—र् + ग् में से र् का लोप और ग् को द्वित्व।
वल्गा > वग्गा—ल् + ग् में से ल् का लोप और ग् को द्वित्व।
सप्तविंशतिः > सत्तावीसा—प् + त् में से प् का लोप और त् को द्वित्व।
कर्णपुरम् > कण्णउरं—र् + ण् में से र् का लोप और ण् को द्वित्व।
मित्रम् > मित्त—त् + र् में से र् का लोप और त् को द्वित्व।
कर्म > कम्म—र् + म् में से र् का लोप और म् को द्वित्व।
चर्म > चम्म—र् + म् में से र् का लोप और म् को द्वित्व।
उत्सवः > उस्सवो—त् + स् में से त् का लोप और स् को द्वित्व।
उत्पलम् > उप्पलं—त् + प् में से त् का लोप और प् को द्वित्व।
उद्गति > उग्गइ—द् + ग् में से द् का लोप और ग् को द्वित्व।
अभिग्रहः > अहिग्गहो—ग् + र् में से र् का लोप और ग् को द्वित्व।
भुक्तं > भुत्तं—क् का लोप हुआ और त् को द्वित्व।
मुद्ग > मुग्ग—द् का लोप और ग् को द्वित्व।
दुग्धम् > दुद्धं—ग् का लोप और ध् को द्वित्व।
कद्फलम् > कप्फलं—द् का लोप और फ् को द्वित्व।
षड्जः > सज्जो—ड् का लोप और ज् को द्वित्व।
सुप्तः > सुत्तो—प् का लोप और त् को द्वित्व।
गुप्तः > गुत्तो—प् का लोप और त् को द्वित्व।
निश्चलः > णिच्चलो—श् का लोप और च् को द्वित्व।
गोष्ठी > गोट्ठी—ष् का लोप और ठ् को द्वित्व।
षष्ठः > छट्ठो—ष् का लोप और ठ् को द्वित्व।
निष्ठुरः > निट्ठुरो—ष् का लोप और ठ् को द्वित्व।
स्खलितः + खलिओ—स् का लोप।
स्नेहः > नेहो—स् का लोप।
अन्तःपातः > अन्तप्पाओ—विसर्ग का लोप और प् को द्वित्व।

अपवाद—ह्न, ण्ह, न्ह, म्ह, ल्ह और ह्र।

(४) वर्ग के पाँचवें अक्षरों का अपने वर्ग के अक्षरों के साथ भी कहीं-कहीं संयोग देखा जाता है। यथा—

अङ्कः > अङ्को, अंको—ङ् + क् का संयोग है।
अङ्गारः > इङ्गालो।
तालवृन्तम् > तालवेण्टं।

वञ्चनीयम् > वञ्चणीयम् ।
स्पन्दनम् > फन्दनं ।
उदुम्बरं > उम्बरं ।

(३) शब्दों के अन्त में रहनेवाले हलन्त व्यंजन का सर्वत्र लोप होता है।[1] जैसे—

जाव < यावत्—अन्तिम हलन्त व्यंजन त् का लोप हुआ है।
ताव < तावत् ,, ,,
जसो < यशस्—हलन्त स् का लोप हुआ है।
णह < नभस् ,, ,,
सिर < शिरस् ,, ,,
तम < तमस् ,, ,,

(४) श्रत् और उत् इन दोनों शब्दों के अन्त्य व्यंजन का लोप नहीं होता।[2] यथा—

सद्धा < श्रद्धा—श्रत् के अन्तिम हलन्त व्यंजन त् का लोप नहीं हुआ है।
उण्णय < उन्नयम्—उत् के अन्तिम हलन्त व्यंजन त् का लोप नहीं हुआ है।

(५) निर् और दुर् के अन्तिम व्यंजन र् का लोप विकल्प से होता है।[3] जैसे—
निस्सहं, नीसह < निर् + सहम्—यहाँ निर् के र् का लोप विकल्प से हुआ है।
दुस्सहो, दूसहो < दुस्सह —दुर के र् का लोप होने पर दूसहो और लोपाभाव में दुस्सहो शब्द बनता है।

(६) स्वर वर्ण के पर में रहने पर अन्तर्, निर् और दुर् के अन्त्य व्यंजन का लोप नहीं होता।[4] जैसे—

अन्तरप्पा < अन्तरात्मा—अन्तर् के र् का लोप नहीं हुआ है।
अन्तरिदा < अन्तरिता ,, ,,
णिरुत्तर < निरुत्तरम्—निर् के र् का लोप नहीं हुआ है।
णिराबाधं < निराबाधम् ,, ,,
निरवसेसं < निरवशेषम् ,, ,,

---

१. अन्त्यव्यञ्जनस्य ८।१।११. शब्दानां यद् अन्त्यव्यञ्जनं तस्य लुग् भवति। हे०।
२. न श्रदुदोः ८।१।१२. श्रद् उद् इत्येतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य लुग् न भवति। हे०।
३ निर्दुरोर्वा ८।१।१३ निर् दुर् इत्येतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य वा लुग् भवति। हे०।
४. स्वरेऽन्तरश्च ८।१।१४ अन्तरो निर्दुरोश्चान्त्यव्यञ्जनस्य स्वरे परे लुग् न भवति। हे०

दुरुत्तरं < दुरुत्तरम्—दुर् के र् का लोप नहीं हुआ है।
दुरागदं < दुरागतम् " "
दुरवगाहं < दुरवगाहम् " "

विशेष—कहीं-कहीं निर् के रेफ का लोप देखा जाता है।[1] जैसे—
अन्तोवरि < अन्तर् + उपरि—यहाँ अन्तर् के रेफ का लोप हुआ है।
णिउक्कण्ठं < निरुत्कण्ठम्—निर् के रेफ का लोप हुआ है।

(७) विद्युत् शब्द को छोड़कर स्त्रीलिंग में वर्तमान सभी व्यंजनान्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का आत्व होता है।[2] ईषत्स्पृष्टतर होनेवाली[3] यश्रुति के अनुसार आ के स्थान पर या भी हो जाता है। जैसे—सरिया, सरिआ < सरित्—अन्तिम हलन्त व्यञ्जन त् का लोप न होकर उसके स्थान पर आ हो गया है।

संपया, संपआ < संपद्—अन्तिम हलन्त व्यञ्जन का लोप न होकर उसके स्थान पर आ हो गया है।

वाया, वाआ < वाक् " " "
अच्छरा < अप्सरस् " " "
पडिवया, पडिवआ < प्रतिपद् " " "
वाआच्छलं < वाक्छलम्—क् के स्थान पर आ हुआ है।
वाआविहवो < वाग्विभवः—ग् के स्थान पर आ हुआ है।
विशेष—विद्युत् शब्द का प्राकृत में विज्जू होता है।[4]

(८) स्त्रीलिंग में वर्तमान रेफान्त शब्दों के अन्तिम र् को रा आदेश होता है।[5] जैसे—
गिरा < गिर् (गीः) हलन्त व्यंजन र् के स्थान पर रा हो गया है।
धुरा < धुर् (धूः)— " " "
पुरा < पुर् (पूः)— " " "
महुअमहुरगिरा < मधूकमधुरगिरः— " "

(९) क्षुध् शब्द के अन्त्य व्यंजन का 'हा' आदेश होता है।[6] यथा—

---

१. क्वचिद् भवत्यपि ८।१।१४ की वृत्ति हे०।
२. स्त्रियामादविद्युतः ८।१।१५. स्त्रियां वर्तमानस्य शब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य आत्वं भवति विद्युच्छब्दं वर्जयित्वा। हे०।
३. बहुलाधिकाराद् ईषत्स्पृष्टतरयश्रुतिरपि—८।१।१५ की वृत्ति। हे०।
४. अविद्युत इति किम्—उपर्युक्त सूत्र की वृत्ति।
५. रो रा ८।१।१६. स्त्रियां वर्तमानस्यान्त्यस्य रेफस्य रा इत्यादेशो भवति। आत्वापवाद। हे०
६. क्षुधो हा ८।१।१७. क्षुध् शब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य हादेशो भवति। हे०।

छुहा < क्षुत् या क्षुध्—अन्त्य व्यञ्जन त् या ध् के स्थान पर 'हा' हुआ है।

(१०) शरत् प्रभृति शब्दों के अन्तिम हलन्त्य व्यञ्जन के स्थान पर अ आदेश होता है।[1] यथा—

सरअ[2] < शरत्—त् के स्थान पर अ हुआ है।

भिसअ < भिषक्—क् के स्थान पर अ हुआ है।

(११) दिक् और प्रावृष् शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों के स्थान में स आदेश होता है।[3] जैसे—

दिसा < दिक्— क् के स्थान पर स आदेश हुआ है।

पाउसो < प्रावृट्—ट् के स्थान पर स आदेश हुआ है।

(१२) आयुष् और अप्सरस् के अन्त्य व्यञ्जनों का विकल्प से स आदेश होता है।[4] यथा—

दीहाउसो, दीहाऊ < दीर्घायुस्, दीर्घायुः।

अच्छरसा, अच्छरा < अप्सरस्, अप्सराः।

(१३) ककुभ् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन को ह आदेश होता है।[5] जैसे—

कउहा < ककुभ्, ककुप्—भ् के स्थान में ह हुआ है।

(१४) धनुष् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन के स्थान में विकल्प से ह आदेश होता है।[6] यथा—

धणुहं, धणू < धनुष्, धनुः—ष् के स्थान पर विकल्प से ह हुआ है।

विकल्पाभाव पक्ष में ष् का लोप हो गया है और पूर्व स्वर को दीर्घ कर दिया है।

(१५) म् के अतिरिक्त अन्य व्यञ्जनों के स्थान पर भी विकल्प से अनुस्वार होता है।[7] यथा—

सक्खं < साक्षात्—त् के स्थान पर अनुस्वार हुआ है।

जं < यत्—त् के स्थान पर अनुस्वार।

तं < तत्— ,, ,,

---

१. शरदादेरत् ८।१।१८. शरदादेरन्त्यव्यञ्जनस्य अत् भवति। हे०।

२. शरदो दः ४।१०. शरच्छब्दस्यान्त्यहलो दो भवति। यथा-सरदो—वर०।

३. दिक्प्रावृषोः सः ८।१।१९. एतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य सो भवति। हे०।

४. आयुरप्सरसोर्वा ८।१।२०. एतयोरन्त्यव्यञ्जनस्य सो वा भवति। हे०।

५. ककुभो हः ८।१।२१. ककुभ् शब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य हो भवति। हे०।

६. धनुषो वा ८।१।२२. धनु शब्दस्यान्त्यव्यञ्जनस्य हो वा भवति। हे०।

७. बहुलाधिकाराद् अन्यस्यापि व्यञ्जनस्य मकारः। ८।१।२४ सूत्र की वृत्ति–हे०।

वीसुं < विष्वक्—क् के स्थान पर अनुस्वार होता है।

पिहं < पृथक्— " "

सम्मं < सम्यक्— " "

(१६) व्यञ्जन वर्णों के पर में रहने पर, ङ्, ण् और न् के स्थान में अनुस्वार होता है।[1] जैसे—

पंती < पङ्क्तिः

परंमुहो < पराङ्मुखः

कंचुओ < कञ्चुकः

(१७) माल्य शब्द और स्थाधातु के पूर्व में रहने वाले निर् और प्रति के स्थान में विकल्प से ओत् और परि का आदेश होता है।[2] जैसे—

ओमल्लं, ओमालं, निम्मल्लं < निर्माल्यम्—निर् के स्थान में ओत् होने से ओमल्लं या ओमालं होता है और ओ के अभाव में निम्मल्लं बनता है।

परिट्ठा, पइट्ठा < प्रतिष्ठा—प्रति के स्थान में परि आदेश होने से परिट्ठा और परि आदेश के अभाव में पइट्ठा रूप बनता है।

परिट्ठिअं, पइट्ठिअं < प्रतिष्ठितम्—परि आदेश होने से परिट्ठिअं और परि आदेश के अभाव में पइट्ठिअं रूप बनता है।

(१८) जिन श्, ष् और स् से पूर्व अथवा पर में रहने वाले य्, र्, व्, श्, ष्, और स् वर्णों का प्राकृत के नियमानुसार लोप हुआ हो उन शकार, षकार और सकारों के आदि स्वर को दीर्घ होता है।[3] उदाहरण—

पासइ = पस्सइ < पश्यति—'पश्यति' के य का लोप होने से स् को द्वित्व होता है। समीकरण की क्रिया द्वारा अन्तिम व्यञ्जन त् का लोप होने से स्वर इ शेष रहता है और स् का लोप होने से इस नियम द्वारा दीर्घ हो गया है।

कासवो < कस्सवो = काश्यपः—य का लोप और दीर्घ।

वीसमइ < विश्राम्यति—र् का लोप और दीर्घ।

वीसामो < विश्रामः— " "

मीसं < मिश्रम्— " "

---

१. ङ-ञ-ण-नो व्यञ्जने ८।१।२५. ङ, ञ, ण, न इत्येतेषां स्थाने व्यञ्जने परे अनुस्वारो भवति। हे०।

२. निर्-प्रती ओत्-परी माल्य-स्थोर्वा ८।१।३८. निर् प्रति इत्येतौ माल्यशब्दे स्थाधातौ च परे यथासंख्यं ओत् परि इत्येतौ रूपौ वा भवतः। हे०।

३. लुप्त-य-र-व-श-ष-सां श-ष-सां दीर्घः ८।१।४३. प्राकृतलक्षणवशाल्लुप्ता याद्या उपरि अधो वा येषां शकारषकारसकाराणां तेषामादेः स्वरस्य दीर्घो भवति। हे०।

संफासो < संफरसो = संस्पर्शः—र् का लोप और स् को द्वित्व, पश्चात्
स् लुक् और दीर्घ ।
आसो < अस्सो = अश्वः—व् लोप, द्वित्व, सलोप और दीर्घ ।
वीससइ < विस्ससइ = विश्वसिति— " "
वीसासो < विस्सासो = विश्वासः— " "
दूसासणो < दुश्शासनः—श् का लोप और दीर्घ
मणासिला < मनःशिला— " "
सीसो < सिस्सो = शिष्यः—य् लोप, द्वित्व, स् लोप और दीर्घ ।
पूसो < पुस्सो = पुष्यः— " " " "
मणूसो < मणुस्सो = मनुष्य— " " " "
कासओ < कस्सओ = कर्षकः—र् लोप, द्वित्व, स् लोप और दीर्घ ।
वासा < वस्सा = वर्षा— " " " "
वासो < वस्सो = वर्षः— " " " "
वीसाणो < विस्साण = विषाण—व लोप " "
वीसुं < विस्सुं = विष्वक्—व् लोप, उत्व, स को द्वित्व, स् लोप और दीर्घ ।
निसित्तो < निस्सित्तो = निषिक्तः – ष् लोप, द्वित्व, स् लोप और दीर्घ ।
सासं < सस्सं = सस्यम्—य लोप, द्वित्व, स् लोप और दीर्घ ।
कासइ < कस्सइ = कस्यचित्— " " "
ऊसो = उस्सो > उस्र.—र् लोप, स् द्वित्व; स् लोप और दीर्घ ।
वीसंभो = विस्संभो > विस्रंभः—व लोप, " "
विकासरो = विकस्सरो > विकस्वरः— " " "
नीसो = निस्सो < निःस्व.— " " "
नीसहो < निस्सहः—स लोप और दीर्घ

(१९) समृद्ध्यादि गण के शब्दों में आदि अकार को विकल्प से दीर्घ होता है।[1] उदाहरण—

सामिद्धी, समिद्धी < समृद्धिः ।
पाअडं, पअडं < प्रकटम् ।

---

१. अतः समृद्धयादौ वा ८।१।४४. समृद्धि इत्येवमादिषु शब्देषु आदेरकारस्य दीर्घो वा भवति । समृद्धि गण के शब्द निम्न हैं—

समृद्धि प्रतिसिद्धिश्च प्रसिद्धिः प्रकट तथा ।
प्रसुप्तश्च प्रतिस्पर्द्धी प्रतिपच्च मनस्विनी ॥
अभिजाति. सदृक्षरच समृद्धयादिरयं गण. । —कल्पलतिका

पासिद्धी, पसिद्धी < प्रसिद्धिः ।
पाडिवआ, पडिवआ < प्रतिपदा ।
पासुत्तं, पसुत्तं < प्रसुप्तम् ।
पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी < प्रतिसिद्धि ।
सारिच्छो, सरिच्छो < सदृक्ष ।
माणंसी, मणंसी < मनस्वी ।
माणंसिनी, मणंसिनी < मनस्विनी ।
आहिआई, अहिआई < अभियाति ।
पारोहो, परोहो < प्ररोहः ।
पावासू, पवासू < प्रवासी ।
पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी < प्रतिस्पर्द्धी ।

विशेष—प्राकृत प्रकाश में इस गण को आकृतिगण माना गया है।[1] हेमचन्द्र[2] ने भी आकृतिगण होने से निम्न शब्दों की भी निष्पत्ति बतलायी है।

आफंसो < अस्पर्शः
पारकेरं, पारक्कं < परकीयम् ।
पावयणं < प्रवचनम् ।
चाउरन्त < चतुरन्तम् ।

(२०) दक्षिण शब्द में आदि अकार को ह के पर में रहने पर दीर्घ होता है।[3] जैसे—

दाहिणो = दक्षिणः—क्ष के स्थान पर ह होने से दीर्घ हुआ है। क्ष के स्थान पर ह नहीं होने पर 'दक्षिण' का दक्खिणो यह रूप बनता है।

(२१) स्वप्न आदि शब्दों में आदि अ का इकार होता है।[4] उदाहरण—

सिविणो, सिमिणो, सुमिणो < स्वप्न. ।
इसि < ईषत् ।
वेडिसो < वेतस
विलिअं < व्यलीकम् ।
विअणं < व्यजनम् ।

---

१. आ समृद्ध्यादिषु वा १।२ —आकृतिगणोऽयम् । वर० ।

२. आकृतिगणोऽयम् तेन अस्पर्शः, आफंसो-इत्यादि ८।१।४४ सूत्र की वृत्ति हे० ।

३. दक्षिणे हे ८।१।४५. दक्षिणशब्दे आदेरतो हे परे दीर्घो भवति ।

४. इः स्वप्नादौ ८।१।४६. स्वप्न इत्येवमादिषु आदेरस्य इत्वं भवति । हे० ।
इदीषत्पक्वस्वप्नवेतसव्यजनमृदङ्गाङ्गारेषु १।३ वर० ।

मुइंगो < मृदङ्गः।
किविणो < कृपणः।
उत्तिमो < उत्तमः।
मिरिअं < मरिचम्।
दिण्णं < दत्तम्।

(२२) पक्व, अङ्गार और ललाट शब्द को विकल्प से इकार होता है।[1] जैसे—
पिक्कं, पक्कं < पक्वम्
इंगालो, अङ्गारो < अङ्गारः
णिडालं, णडालं < ललाटम्

(२३) मध्यम और कतम शब्द में द्वितीय अकार के स्थान पर इत्व होता है।[2] जैसे—
मज्झिमो < मध्यमः
कइमो < कतमः

(२४) सप्तपर्ण शब्द में द्वितीय अकार के स्थान पर विकल्प से इत्व होता है।[3] यथा—
छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो < सप्तपर्णः

(२५) हर शब्द में आदि अकार के स्थान पर विकल्प से ईकार होता है।[4] यथा—
हीरो, हरो < हरः

(२६) ध्वनि और विष्व शब्द में अकार के स्थान पर उकार होता है।[5] जैसे—
झुणी < ध्वनि.—ध् के स्थान पर झ् हुआ है और व का सम्प्रसारण होने से उ हुआ है।
वीसुं < विष्वम्—यहाँ पर भी व् का संप्रसारण हुआ है।

(२७) चन्द्र और खण्डित शब्दों में आदि अकार का विकल्प से णकार सहित उत्व होता है।[6] यथा—

---

१. पक्वाङ्गार-ललाटे वा ८।१।४७. एष्वादेरत इत्वं वा भवति। हे०।
२. मध्यमकतमे द्वितीयस्य ८।१।४८. मध्यमशब्दे कतमशब्दे च द्वितीयस्यात इत्वं भवति। हे०।
३. सप्तपर्णे वा ८।१।४९. सप्तपर्णे द्वितीयस्यात इत्वं वा भवति। हे०।
४. ईर्हरे वा ८।१।५१. हरशब्दे आदेरत ईर्वा भवति। हे०।
५. ध्वनि विष्वचोरुः ८।१।५२. अनयोरादेरस्य उत्वं भवति। हे०।
६. चन्द्रखण्डितेणा वा ८।१।५३. अनयोरादेरस्य णकारेण सहितस्य उत्वं वा भवति। हे०।

वुन्द्रं,वन्द्रं < वन्द्रं—अकार के स्थान पर न् (ण्) सहित उत्व हुआ है।
खुड्डिओ, खण्डिओ < खण्डितः—   ,,   ,,

(२८) गवय शब्द में वकार के अकार के स्थान पर उत्व होता है।[1] जैसे—
गउओ, गउआ < गवयः।

(२९) प्रथम शब्द में पकार और थकार के स्थान पर युगपत् और क्रमशः उकार होता है[2]। जैसे—

पुढुमं, पुढमं, पढुमं, पढमं < प्रथमम्

(३०) अभिज्ञ आदि शब्दों में णत्व करने पर ज्ञ के आकार का उत्व होता है।[3] जैसे—

अहिण्णू < अभिज्ञ.
सव्वण्णू < सर्वज्ञ—शौरसेनी में सव्वण्णो और पैशाची में सव्वञ्ञो।
आगमण्णू < आगमज्ञः।
विशेष—णत्वाभाव में अहिज्जो < अभिज्ञ., सव्वज्जो < सर्वज्ञ होते हैं।

(३१) शय्या आदि शब्दों में आदि अकार का एकार आदेश होता है।[4] जैसे—सेज्जा < शय्या—अकार का एकार और य्या का ज्जा।

सुंदेरं < सुन्दरम्—दकारोत्तर अकार का एकार।
उक्केरो < उत्करः—त का लोप और क को द्वित्व तथा अ को एकार।
तेरहो < त्रयोदशः—त के र का लोप, अकार को एकार तथा दश के स्थान में रहा।
अच्छेरं < आश्चर्यम्—पूर्ववर्ती आ को ह्रस्व कर दिया और श्च के अ को एकार तथा श्च के स्थान पर च्छ।
पेरंतं < पर्यन्तम्—अकार को एकार।
वेल्ली < वल्लि —   ,

१. गवये वः ८।१।५४. गवयशब्दे वकाराकारस्य उत्वं भवति। हे०।

२. प्रथमे पथोर्वा ८।१।५५. प्रथमशब्दे पकारथकारयोरकारस्य युगपत् क्रमेण च उकारो वा भवति। हे०।

३. ज्ञो णत्वेभिज्ञादौ ८।१।५६. अभिज्ञ एवं प्रकारेषु ज्ञस्य णत्वे कृते ज्ञस्यैव अत उत्वं भवति। हे०।

४. एच्छय्यादौ ८।१।५७. शय्यादिषु आदेरस्य एत्वं भवति। हे०। शय्यात्रयोदशाश्चर्यं पर्यन्तोत्करवल्लय.। सौन्दर्यं चेति शय्यादिगणः. शेषस्तु पूर्ववत्।

गेंडुअं < कन्दुकम्—क के स्थान पर ग और अकार को एत्व, हस्व द के स्थान पर मूर्धन्य ड, क का लोप और स्वर शेष।

एत्थ < अत्र—अ को एत्व तथा त्र का त्थ।

(३२) ब्रह्मचर्य शब्द में चकारोत्तरवर्ती अ के स्थान पर एत्व होता है।[1] जैसे—

बम्हचेरं < ब्रह्मचर्यम्।

(३३) अन्तर शब्द में तकारोत्तरवर्ती अकार के स्थान पर एत्व होता है।[2] जैसे—

अन्तेउरं < अन्तःपुरं। अन्तेआरी < अन्तश्चारी।

कहीं अन्तर शब्द में तकारोत्तरवर्ती अकार को एत्व नहीं होता है।[3] जैसे—

अन्तग्गयं < अन्तर्गतम्।

अन्तो-वीसम्भनिवेसिआणं < अन्तर्विश्रम्भनिवेशितानाम्।

(३४) पद्म शब्द के आदि के अकार के स्थान पर ओत्व होता है।[4] जैसे—

पोम्मं, पउमं < पद्मम्।

(३५) नमस्कार और परस्पर शब्द में द्वितीय अकार के स्थान पर ओत्व होता है।[5] यथा—

नमोक्कारो < नमस्कारः ; परोप्परं < परस्परम्।

(३६) अर्पि धातु में आदि के अ को विकल्प से ओ होता है।[6] जैसे—

ओप्पेइ, अप्पेइ < अर्पयति—ओत्व के अभाव में एत्व होता है।

ओप्पिअं, अप्पिअं < अर्पितम्।

(३७) स्वप् धातु में आदि के अ के स्थान पर ओत् और उत् आदेश होते हैं।[7] जैसे सोवइ, सुवइ < स्वपिति।

(३८) नञ् के बाद में आनेवाले पुनर् शब्द के अ के स्थान में आ और आइ विकल्प से आदेश होते हैं।[8] जैसे—

---

१. ब्रह्मचर्ये चः ८।१।५९. ब्रह्मचर्यशब्दे चस्य अत एत्वं भवति। हे०।

२. तोन्तरि ८।१।६०. अन्तरशब्दे तस्य अत एत्वं भवति। हे०।

३. क्वचिन्न भवति। हे०।

४. ओत्पद्मे ८।१।६१. पद्म शब्दे आदेरत ओत्वं भवति। हे०।

५. नमस्कार-परस्परे द्वितीयस्य ८।१।६२. अनयोर्द्वितीयस्य अत ओत्वं भवति। हे०।

६. वार्पौ ८।१।६३. अर्पयतौ धातौ आदेरस्य ओत्वं वा भवति। हे०।

७. स्वपावुच्च ८।१।६४. स्वपितौ धातौ आदेरस्य ओत् उत् च भवति। हे०।

८. नात्पुनर्यादाई वा ८।१।६५. नञः परे पुनः शब्दे आदेरस्य आ आइ इत्यादेशौ वा भवतः। हे०।

ण उणा < न पुनः—आ आदेश हुआ है।

ण उणाई < न पुनः—आइ आदेश हुआ है।

ण उण < न पुनः—विकल्प भाव पक्ष में।

(३९) अव्ययों में और उत्खात, चामर, कालक, स्थापित, प्रतिस्थापित, संस्थापित, प्राकृत, तालवृन्त, हालिक, नाराच, बलाका, कुमार, खादित, ब्राह्मण एवं पूर्वाह्न शब्दों में आदि आकार का अकार विकल्प से होता है।[1] मज्जारो माज्जारो < मार्जारः

मरलो, मरालो < मरालः	पत्थरो, पत्थारो < प्रस्तारः
पहरो, पहारो < प्रहारः	जह, जहा < यथा
तह, तहा < तथा	अहव, अहवा < अथवा
उक्खअं, उक्खाअं < उत्खातम्	चमरं, चामरं < चामरम्
कलओ, कालओ < कालकः	ठविअं, ठाविअं < स्थापितम्
परिठविअं, परिठाविअं < प्रतिष्ठापितम्	संठविअं, संठाविअं < संस्थापितम्
पउअं, पाउअं < प्राकृतम्	तलवेण्टं, तालवेण्टं < तालवृन्तम्
हलिओ, हालिओ < हालिकः	णराओ, णाराओ < नाराचः
वलआ, वलाआ < बलाका	कुमरो, कुमारो < कुमारः
खइअं, खाइअं < खादितम्	बम्हणो, बाम्हणो < ब्राह्मणः
पुव्वण्हो, पुव्वाण्हो < पूर्वाह्णः	दवग्गी, दावग्गी < दवाग्निः
चाडू, चडू < चाटुः	

(४०) घञ् को निमित्त मानकर जहाँ आ रूप वृद्धि हुई हो, उस आदि आकार का विकल्प से अत्व होता है।[2] जैसे—

पवहो, पवाहो < प्रवाहः	पअरो, पआरो < प्रकारः
पत्थवो, पत्थावो < प्रस्तावः	

अपवाद—कुछ घञन्त शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता। जैसे—

राओ < रागः

(४१) मांस आदि शब्दों में अनुस्वार रहने पर आदि आकार का अत्व होता है।[3] जैसे—

---

१. वाव्ययोत्खातादावदातः ८।१।६८. अव्ययेषु उत्खातादिषु च शब्देषु आदेराकारस्य अद् वा भवति। हे०।

२. घञ् वृद्धेर्वा ८।१।६८ घञ् निमित्तो यो वृद्धिरूप आकारस्तस्यादिभूतस्य अद् वा भवति। हे०।

३. मांसादिष्वनुस्वारे ८।१।७०. मांसप्रकारेषु अनुस्वारे सति आदेरातः अद् भवति। हे०।

मंसं < मांसम् पंसू < पांसुः
पंसणो < पांसनः कंसं < कांसम्
कंसिओ < कांसिकः वंसिओ < वांसिकः
संसिद्धिओ < सांसिद्धिकः संजत्तिओ < सांयात्रिकः

(४२) श्यामाक में मकार के आकार को अत् होता है।[1] यथा—

सामओ < श्यामाकः

(४३) महाराष्ट्र शब्द में आदि के आकार को अत् होता है।[2] यथा—

मरहट्ठं, मरहट्ठो < महाराष्ट्रः—यहाँ वर्ण विपर्यय भी हुआ है।

(४४) सदा आदि शब्दों में विकल्प से आकार के स्थान पर इकार आदेश होता है।[3] उदाहरण—

सइ, सआ < सदा—द्वितीय रूप विकल्पाभाव पक्ष का है।

तइ, तआ < तदा— „ „

जइ, जआ < यदा—य के स्थान पर ज होता है।

णिसिअरो, णिसाअरो < निशाचरः—द्वितीय रूप विकल्पाभाव का है।

(४५) यदि आर्या शब्द श्वश्रु (सास) के अर्थ में प्रयुक्त हो तो 'र्य' के पूर्ववर्ती आकार के स्थान में ऊ होता है।[4] जैसे—

अज्जू < आर्या—सास के अर्थ में; अज्जा < आर्या—श्रेष्ठ अर्थ में

(४६) आचार्य शब्द में चकारोत्तरवर्ती आकार के स्थान पर इत्व और अत्व होता है।[5] यथा—

आइरिओ, आयरिओ < आचार्यः

(४७) स्त्यान और खल्वाट शब्द में आदि आकार के स्थान पर ईकार आदेश होता है।[6] जैसे—

ठीणं, थीणं, थिण्णं < स्त्यानम्—स्त के स्थान में थ और थ के स्थान में विकल्प ठ हुआ है।

खल्लीडो < खल्वाटः

---

१. श्यामाके मः ८।१।७१. श्यामाके मस्य आतः अद् भवति। हे०।
२. महाराष्ट्रे ८।१।६६. महाराष्ट्रशब्दे आदेराकारस्य अद् भवति। हे०।
३. इः सदादौ वा ८।१।७२. सदादिषु शब्देषु आत इत्वं वा भवति। हे०
४. आर्यायां र्यः श्वश्र्वाम् ८।१।७७. आर्याशब्दे श्वश्र्वां वाच्यायां र्यस्यात ऊर्भवति। हे०।
५. आचार्ये चोच्च ८।१।७३. आचार्यशब्दे चस्य आत इत्वं अत्वं च भवति। हे०।
६. ईः स्त्यान खल्वाटे ८।१।७४. स्त्यानखल्वाटयोरादेरात ईर्भवति। हे०।

(४८) आसार शब्द में आदि आकार के स्थान पर विकल्प से ऊद् होता है।[1] जैसे—

ऊसारो, आसारो < आसार:

(४९) द्वार शब्द में आकार के स्थान में विकल्प से एद् होता है।[2] यथा—

देरं, दुआरं, दारं, वारं < द्वारम्—प्रथम को छोड़, शेष विकल्पाभाव पक्ष के रूप हैं।

(५०) पारापत शब्द में रकारोत्तरवर्ती आकार के स्थान में एद् होता है।[3] यथा—

पारेवओ, पारावओ < पारापतः

(५१) आर्द्र शब्द में आदि के आत् के स्थान पर विकल्प से उकार और ओकार होते हैं।[4] यथा—

उल्लं, ओल्लं, अल्लं, अद्दं < आर्द्रम्—उत्तरवर्ती रूप विकल्पाभाव पक्ष के हैं।

(५२) आली शब्द में पंक्तिवाची अर्थ होने पर आकार को ओकार होता है।[5] जैसे—

ओली < आली, पंक्तिवाची अर्थ न होने पर आली-सखी ही रहता है।

(५३) संयोग से अव्यवहित पूर्ववर्ती दीर्घ का कभी-कभी ह्रस्व रूप हो जाता है।[6] यथा—

अंबं < आम्रम् | तंबं < ताम्रम्
विरहग्गी < विरहाग्निः | अस्सं < आस्यम्
मुनिंदो < मुनीन्द्रः | तित्थं < तीर्थम्
गुरुल्लावा < गुरूल्लापा | चुण्णो < चूर्णः
नरिंदो < नरेन्द्रः | मिलिच्छो < म्लेच्छः
अहरुट्ठं < अधरोष्ठम् | नीलुप्पलं < नीलोत्पलम्

विशेष—संयोग नहीं रहने से आयासं, ईसरो, ऊसवो आदि शब्दों में उक्त नियम की प्रवृत्ति नहीं होती।

---

१. ऊद्वासारे ८।१।७६. आसारशब्दे आदेरात ऊद् वा भवति। हे०।
२. द्वारे वा ८।१।७९. द्वारशब्दे आत एद् वा भवति। हे०।
३. पारापते रो वा ८।१।८०. पारापतशब्दे रस्थस्यात एद् वा भवति। हे०।
४. उदोद्वार्द्रे ८।१।८२. आर्द्रशब्दे आदेरात ऊद् ओच्च वा भवतः। हे०।
५. ओदाल्यां पंक्तौ ८।१।८३. आलीशब्दे पंक्तिवाचिनि आत ओत्वं भवति। हे०
६. ह्रस्वः संयोगे ८।१।८४. दीर्घस्य यथादर्शनं संयोगे परे ह्रस्वो भवति। हे०।

(५४) आदि इकार का संयोग के पर में रहने पर विकल्प से एकार होता है।[1] यथा—

पेण्डं, पिण्डं < पिण्डम्—द्वितीय रूप विकल्पाभाव पक्ष का है।
णेद्दा, णिद्दा < निद्रा— „ „
सेंदूरं, सिंदूरं < सिन्दूरम्— „ „
धम्मेलं, धम्मिलं < धम्मिल्लम्— „ „
वेण्हू, विण्हू < विष्णुः— „ „
पेट्ठं, पिट्ठं < पृष्ठम्— „ „
चेण्हं, चिण्हं < चिह्नम्— „ „
वेल्लं, विल्लं < विल्वम्— „ „

विशेष—शौरसेनी में पिण्डादि शब्दों में एत्व नहीं होता। अत पिण्डं, णिद्दा और धम्मिलं ये ही रूप पाये जाते हैं।

(५५) पथि, पृथिवी, प्रतिश्रुत्, मूषिक, हरिद्रा और विभीतक में आदि इकार के स्थान पर अकार होता है।[2] उदाहरण—

पहो < पथि
पुहई, पुढवी < पृथिवी—ह के स्थान पर ढ होने से पुढवी रूप बना है।
पडंसुआ < प्रतिश्रुत्
मूसओ < मूषिक
हलद्दी, हलद्दा < हरिद्रा—हरिद्रा शब्द में रेफ का ल होता है।
बहेडओ < विभीतकः—'वि' की ई के स्थान पर अ हुआ है।

विशेष—कुछ वैयाकरणों के मत में हरिद्रा शब्द में ईकार के स्थान पर अकार नहीं होता है। अतः हलिद्दी, हलिद्दा ये रूप बनते हैं।

(५६) वदर शब्द में दकार सहित अकार के स्थान पर ओकार होता है।[3] यथा—
बोरं < वदरम्—वदरोत्तर अकार और दकार के स्थान पर ओकार हुआ है।

(५७) लवण और नवमल्लिका शब्द में वकार सहित आदि अकार को ओकार होता है[4]। यथा—
लोणं < लवणं
णोमल्लिआ < नवमल्लिका

---

१. इत एद्वा ८।१।८५. आदेरिकारस्य संयोगे परे एकारो वा भवति। हे०।
२. पथि-पृथिवी-प्रतिश्रुन्मूषिक-हरिद्रा-विभीतकेष्वत् ८।१।८८। हे०।
३. ओ बदरे देन १।६. वर०।
४. लवणनवमल्लिकयोर्वेन १।७. वर०।

(५८) मयूर और मयूख शब्द में 'यू' के सहित आदि वर्णस्थ अकार को विकल्प से ओकार होता है।[1] उदाहरण—

मोरो, मऊरो < मयूरः—यू सहित मकारोत्तर अकार को ओकार हुआ है। विकल्पाभाव पक्ष में यकार का लोप होने से मऊरो बना है।

मोहो, मऊहो < मयूखः— „ „

(५९) चतुर्थी और चतुर्दशी शब्द में 'तु' के सहित आदि अकार को विकल्प से ओकार होता है।[2] यथा—

चोत्थी, चउत्थी < चतुर्थी—तु सहित चकारोत्तर अकार को ओ हुआ है और रेफ का लोप होने से थ को द्वित्व तथा पूर्ववर्ती थ् को त् हुआ है।

चोद्दसी, चउद्दसी < चतुर्दशी—तु सहित चकारोत्तर अकार को ओ हुआ है और रेफ का लोप होने से द को द्वित्व हुआ है।

(६०) इक्षु और वृश्चिक शब्द के इकार को उकार होता है।[3] यथा—उच्छू < इक्षुः—क्ष के स्थान पर छादेश, छ को द्वित्व, पूर्ववर्ती छ् को च् किया है तथा इस सूत्र से इकार को उकार हुआ है।

विच्छुओ < वृश्चिकः—ऋकार को इकार, श्च के स्थान पर च्छ और इकार के स्थान पर उकार हुआ है।

(६१) जब इति शब्द किसी वाक्य के आदि में प्रयुक्त होता है, तब तकारवाले इकार का अकार हो जाता है।[4] जैसे—

इअ जं, पिआवसाणे < इति यावत् प्रियावसाने—इति के स्थान पर इअ हुआ है।

इअ विअसिअ कुसुमसरो < इति विकसितकुसुमशरः— „ „

इअ उअह अण्णह वअणं < इति पश्यतान्यथा वचनम्— „ „

विशेष—इति शब्द के वाक्यादि में प्रयुक्त नहीं रहने पर अत्व नहीं होता। जैसे—

पिओत्ति < प्रिय इति—वाक्य के आदि में इति शब्द के न आने से इअ नहीं हुआ, बल्कि इ का लोप होकर त् को द्वित्व हो गया है।

पुरिसोत्ति < पुरुष इति— „ „ „

(६२) जहाँ निर् के रेफ का लोप होता है, वहाँ नि के इकार का ईकार हो जाता है।[5] जैसे—

---

१. मयूरमयूखयोर्वा वा १।८. वर०।

२. चतुर्थी चतुर्दश्योस्तुना १।९. वर०।

३. उदिक्षुवृश्चिकयोः १।१५। वर०।

४. इतौ तो वाक्यादौ ८।१।९१। हे०।

५. लुकि निरः ८।१।९३. निर् उपसर्गस्य रेफलोपे सति इत ईकारो भवति। हे०।

णीसहो < निस्सहः—निर् के र् का लोप होने से नि, णि को दीर्घ हो गया है।

णीसासो < निःश्वास — " " "

विशेष—रेफ का लोप नहीं होने पर ईकार नहीं होता। जैसे—

णिरओ < निरयः—रेफ का लोप न होने से णि को दीर्घ नहीं हुआ है।

णिस्सहो < निस्सह — " " "

(६३) द्विशब्द और नि उपसर्ग के इकार का उ आदेश होता है। कहीं-कहीं यह नियम लागू भी नहीं होता और कहीं विकल्प से उत्व और ओत्व होता है।[1] उदाहरण—

दुवाई, दुवे < द्वौ—द्वि शब्द में नित्य उत्व हुआ है।

दुवअणं < द्विवचनम्— " "

दुउणो, दिउणो < द्विगुणः—विकल्प से उत्व होने पर दुउणो और विकल्पाभाव पक्ष में दिउणो।

दुइओ, दिउओ < द्वितीयः—विकल्पाभाव पक्ष में दिउओ बनता है।

दिओ < द्विजः—द्विशब्द के विषय में नियम की अप्रवृति।

दिरओ < द्विरद— " "

दोवअणम् < द्विवचनम्—द्वि शब्द को ओत्व हुआ है।

णुमज्जइ < निमज्जति—नि उपसर्ग के इकार को उत्व।

णुमण्णो < निमग्न — " "

णिवडइ < निपतति—नि उपसर्ग के विषय में नियम की अप्रवृत्ति।

(६४) कृञ् धातु के प्रयोग में द्विधा शब्द के इकार का ओत्व और उत्व होता है।[2] जैसे—

दोहाकअं < द्विधा कृतम्—ओकार हुआ है।

दुहाकअं < द्विधा कृतम्—उकार हुआ है।

दोहा किज्जइ < द्विधा क्रियते—ओकार हुआ है।

दुहा-किज्जइ < द्विधा क्रियते—उकार हुआ है।

विशेष—कृञ् का प्रयोग नहीं रहने से दिहा-गर्स < द्विधागतम् में यह नियम लागू नहीं होता। कहीं-कहीं केवल (कृञ् रहित) द्विधा में भी उत्व पाया जाता है। यथा—

---

१. द्विन्योरुत् ८।१।९४. द्विशब्दे नावुपसर्गे च इत उद् भवति। हे०।

२. ओच्च द्विधाकृगः ८।१।९७. द्विधाशब्दे कृग्धातोः प्रयोगे इत ओत्वं चकारादुत्वं च भवति। हे०।

दुहा वि सो सुर-वहु-सत्थो = द्विधापि स सुरवधूसार्थः

(६९) पानीय गण के शब्दों में दीर्घ ईकार के स्थान में ह्रस्व इकार होता है।[1] जैसे—

पाणिअं < पानीयम्—बहुल अधिकार होने से पाणीअं भी होता है।
अलिअं < अलीकम्— ,, ,, अलीअं भी होता है
जिअइ < जीवति— ,, ,, जीअइ ,,
जिअउ < जीवतु— ,, ,, जीअउ ,,
विलिअं < व्रीडितम्— ,, ,, विलीअं ,,
करिसो < करीषः ,, ,, करीसो ,,
सिरिसो < शिरीषः— ,, ,, सिरीसो ,,
दुइअं < द्वितीयम्— ,, ,, दुईअं ,,
तइअं < तृतीयम्— ,, ,, तईअं ,,
गहिरं < गभीरम्— ,, ,, गहीरं ,,
उवणिअं < उपनीतम्— ,, ,, उवणीअं ,,
आणिअं < आनीतम्— ,, ,, आणीअं ,,
पलिविअं < प्रदीपितम्— ,, ,, पलीविअं ,,
ओसिअन्तो < अवसीदन्— ,, ,, ओसीअन्तो ,,
पसिअ < प्रसीद ,, ,, पसीअ ,,
गहिअं < गृहीतम्— ,, ,, गहीअं ,,
वम्मिओ < वल्मीकः— ,, ,, वम्मीओ ,,
तयाणिं < तदानीम् ,, ,, तयाणीं ,,

---

1. पानीयादिष्वित् ८।१।१०१. पानीयादिषु शब्देषु ईत इद् भवति। हे०।

'कल्पलतिका' के अनुसार पानीयगण में निम्नलिखित शब्द हैं—

पानीयव्रीडितालीकद्वितीयं च तृतीयकम्।
यथागृहीतमानीतं गम्भीरञ्च करीषवत्॥
इदानीं च तदानीं च पानीयादिगणे यथा।

'प्राकृत मञ्जरी' के अनुसार—पानीयव्रीडितालीकद्वितीयकरीषकाः।
गम्भीरञ्च तदानीञ्च पानीयादिरयं गणः॥

'प्राकृत प्रकाश' में उपनीत, आनीत, जीवति, जीवतु, प्रदीपित, प्रसीद, शिरीष, गृहीत, वल्मीक और अवसीदन् शब्दों का उल्लेख नहीं है।

(६६) जीर्ण शब्द में, ईकार और उकार दोनों होते हैं।[1] यथा—

जुण्णो, जिण्णो < जीर्णः

(६७) हीन और विहीन शब्दों में ईकार और ऊकार होते हैं।[2] जैसे—

हूणो, हीणो < हीन ; विहूणो, विहीणो < विहीनः

(६८) तीर्थ शब्द के ईकार का ऊकार तब होता है, जब कि उसके आगे का र्थ ह हो गया हो।[3] यथा—

तूहं < तीर्थम्—र्थ के स्थान में ह हुआ है और ईकार को ऊकार।

तित्थं < तीर्थम्—र्थ के स्थान में ह नहीं होने से ऊकार का अभाव है।

(६९) पीयूष, आपीड, बिभीतक, कीदृश और ईदृश शब्दों में ईकार को एकार होता है।[4] जैसे—

पेऊसं < पीयूषम्

आमेलो < आपीडः—पकार को मकार और ईकार को एकार तथा ड को ल।

बहेडओ < विभीतक.— केरिसो < कीदृशः

एरिसो < ईदृश.

(७०) नीड और पीठ शब्दों में ईकार को विकल्प से एत्व होता है।[5] जैसे—

नेडं, नीडं < नीडम् पेढं, पीढं < पीठम्—ठ को ढ हुआ है।

(७१) मुकुलादिगण के शब्दों में आदि उकार के स्थान में अकार आदेश होता है।[6] जैसे—

मउलं < मुकुलम्—क का लोप होकर उकार शेष है।

गरुई < गुर्वी—व् के स्थान पर उ हुआ है और र् तथा ई पृथक् हो गये हैं।

मउडं < मुकुटम्—का का लोप और ट के स्थान पर ड हुआ है।

जहुट्ठिलो, जहिट्ठिलो < युधिष्ठिर—य के स्थान पर ज, इकार के स्थान पर उत्व।

---

१. उज्जीर्णे ८।१।१०२. जीर्णशब्दे ईत उद् भवति। हे०।

२. रे ऊर्हीन-विहीने वा ८।१।१०३. अनयोरीत ऊत्वं वा भवति। हे०।

३. तीर्थे हे ८।१।१०४. तीर्थशब्दे हे सति ईत उत्व भवति। हे०।

४. एत्पीयूषापीड बिभीतक-कीदृशेदृशे ८।१।१०५. एषु ईत एत्वं भवति। हे०।

५. नीड-पीठे वा ८।१।१०६. अनयोरीत एत्व वा भवति। हे०।

६. उतो मुकुलादिष्वत् ८।१।१०७. मुकुल इत्येवमादिषु शब्देषु आदेरुतोऽत्वं भवति। हे०।

मुकुटं मुकुल गुर्वी सुकुमारो युधिष्ठिर ।

अगुरुपरि शब्दौ च मुकुटादिरयं गणः। प्राकृतमंजरी।

प्राकृत प्रकाश में इसे मुकुटादिगण कहा है।

सोअमल्लं < सौकुमार्यम्—र्य के स्थान पर ल, लकार का द्वित्व, क का लोप और शेष उकार के स्थान पर अ।

गलोई < गुडूची—गकारोत्तरवर्ती उकार के स्थान पर अ, ड के स्थान पर ल, ऊकार का ओ और च् का लोप।

विशेष—कहीं-कहीं प्रथम उकार का आकार भी होता है। यथा—

विद्दाओ < विद्रुतः—द्र् में से रेफ का लोप और द को द्वित्व तथा उकार को आ हुआ है।

(७२) यदि गुरु शब्द के आगे स्वार्थ में क प्रत्यय किया गया हो, तो उस गुरु शब्द के आदि उकार को विकल्प से अ आदेश होता है।[1] जैसे—

गरुओ, गुरुओ < गुरुकः

स्वार्थिक क के अभाव में गुरुओ (गुरुकः) होता है।

(७३) भ्रुकुटी शब्द में उकार के स्थान पर इकार होता है।[2] जैसे—

भिउडि < भ्रुकुटी—भ्रु के रेफ का लोप और उकार के स्थान पर इत्व, क का लोप तथा ट के स्थान पर ड।

(७४) पुरुष शब्द में रु के उकार को इत्व होता है।[3] जैसे—

पुरिसो < पुरुषः—रु के स्थान पर रि हुआ है।

पउरिसं < पौरषम्— पौ के स्थान पर प + उ , र के स्थान पर रि।

(७५) क्षुत शब्द में आदि के उकार को ईत्व होता है।[4] यथा—

छीअं < क्षुतम्—क्षु के स्थान पर छी और त का लोप।

(७६) सुभग और मुसल शब्दों में उकार को विकल्प से ऊत्व होता है।[5] यथा-

सूहओ, सुहओ < सुभग.—सु के स्थान पर सू, भ के स्थान पर ह और ग का लोप।

मूसलं, मुसलं < मुसलम्—विकल्पाभाव पक्ष में मुसलं।

(७७) उत्साह और उच्छन्न शब्दों को छोड़कर इसी प्रकार के अन्य शब्दों में त्स और च्छ के पर में रहने पर पूर्व के आदि उकार का दीर्घ ऊकार होता है।[6] जैसे-

---

१. गुर्वौ के वा ८।१।१०९.। हे०।
२. इर्भ्रुकुटौ ८।१।११०.। हे०।
३. पुरुषे रोः ८।१।१११.। हे०।
४. ईः क्षुते ८।१।११२.। हे०।
५. ऊत्सुभग मुसले वा ८।१।११३.। हे०।
६. अनुत्साहोत्सन्ने त्सच्छे ८।१।११४.। हे०।

ऊसुओ < उत्सुकः—उ के स्थान पर ऊ, त् का लोप तथा क का लोप और विसर्ग को ओत्व।

ऊसुवो < उत्सवः— „ „ ष का लोप और विसर्ग को ओत्व।

ऊसित्तो < उत्सिक्तः—उ के स्थान पर ऊ त् का लोप और संयुक्त क्त में से क् का लोप तथा अवशेष त् को द्वित्व।

ऊच्छुओ < उच्छुकः—उ के स्थान में ऊत्व और क का लोप, विसर्ग को ओत्व।

विशेष—उच्छाहो < उत्साह—यहाँ दीर्घ ऊकार नहीं हुआ है।

उच्छण्णो < उच्छन्न— „ „ „

(७८) दुर् उपसर्ग के रेफ का लोप हो जाने पर ह्रस्व उ का दीर्घ ऊ विकल्प से होता है।[६] जैसे—

दूसहो, दुसहो < दुस्सहः—दूसरा रूप विकल्पाभाव पक्ष का है।

दूहवो, दुहवो < दुर्भगः— „ „

(७९) संयुक्त अक्षरों के पर में रहने पर पूर्ववर्ती प्रथम उकार का ओकार होता है।[१] जैसे—

तोण्डं < तुण्डम्—उकार के स्थान पर ओकार हुआ है।

मोण्डं < मुण्डम्— „ „ „

पोक्खरं < पुष्करम्—पु में रहनेवाले उकार के स्थान पर ओकार तथा ष्क के स्थान पर क्ख।

कोट्टिमं < कुट्टिमम्—उकार के स्थान पर ओकार।

पोत्थअं < पुस्तकम्—उकार के स्थान पर ओकार तथा स्त के स्थान पर त्थ और क का लोप, शेष अ।

लोद्धओ < लुब्धकः—उकार के स्थान पर ओत्व, ब् का लोप और ध को द्वित्व।

मोत्ता < मुक्ता—उकार के स्थान पर ओकार, संयुक्त क् का लोप और त् को द्वित्व।

---

६. लुंकि दुरो वा ८।१।११५। हे०।

१. ओत्संयोगे ८।१।११५. हे०

तुण्डादिगण के शब्द—

तुण्डकुट्टिमकुद्दालमुक्तामुद्गरलुब्धकाः।

पुस्तकश्चैवमन्येऽपि कुम्भीकुन्तलपुष्कराः॥ कल्पलतिका

भिंगारो < भृंगार:—भृ की ऋ के स्थान पर इ।

किसो < कृश:—कृ की ऋ के स्थान पर इ।

विञ्चुओ < वृश्चिक:—वृ की ऋ के स्थान पर इ और श्च के स्थान पर ञ्च तथा इकार को उकार।

विंहिओ < वृंहित.—वृ की ऋ के स्थान पर वि।

तिप्पं < तृप्तम्—तृ की ऋ के स्थान पर इ, त का लोप और प को द्वित्व।

किच्चं < कृत्यम्—कृ की ऋ के स्थान पर इ और त्य के स्थान पर च।

हिअं < हृतम्—हृ की ऋ के स्थान पर इ, त का लोप तथा अ स्वर शेष।

वित्तं < वृत्तम्—वृ की ऋ के स्थान पर इकार।

वित्ती < वृत्तिः—वृ की ऋ के स्थान पर इकार और त्ति को दीर्घादेश।

विसी < वृषि:—वृ की ऋ के स्थान पर इकार और षि को दीर्घ तथा दन्त्य।

सइ < सकृत्—कृ की ऋ के स्थान पर इ तथा अन्तिम हलन्त व्यंजन त् का लोप।

हिअअं < हृदयम्—हृ की ऋ के स्थान पर इकार, द् और य का लोप और स्वर शेष।

दिट्ठी < दृष्टि:—दृ की ऋ के स्थान पर इत्व तथा संयुक्त ष का लोप और ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ।

गिट्ठी < गृष्टि.—गृ की " " "

भिंगो < भृंग:—भृ की ऋ के स्थान पर इकार।

सियालो < शृगाल.—शृ की ऋ के स्थान पर इत्व, ग का लोप और स्वर शेष।

विड्ढी < वृद्धि:—वृ की ऋ के स्थान पर इकार, दन्त्य के स्थान पर मूर्द्धन्य वर्ण और दीर्घ।

घिणा < घृणा—घृ की ऋ के स्थान पर इकार।

किच्छं < कृच्छ्रम्—कृ की ऋ के स्थान पर इकार।

निवो < नृप —नृ की ऋ के स्थान पर इकार और प को व।

विहा < स्पृहा—संयुक्त स् का लोप, पृ की ऋ के स्थान पर इ और प को व।

गिड्ढी < गृद्धिः—गृ की ऋ के स्थान पर इ और दन्त्य वर्णों का मूर्धन्य।

किसरो < कृसर:—कृ की ऋ के स्थान पर इ।

घिई < धृति —धृ की ऋ के स्थान पर इ, तकार का लोप और स्वर शेष।

किवाणं < कृपाणम्—कृ की ऋ के स्थान पर इ और त का लोप, स्वर शेष।

वाहित्तं < व्याहृतम्—व्या के स्थान पर वा, हृ की ऋ के स्थान पर इकार।

इसी < ऋषि:—ऋ के स्थान पर इ और षि के स्थान पर दीर्घ सी।

वितिण्हो < वितृष्ण —तृ की ऋ के स्थान पर इ और ष्ण के स्थान पर ण्ह।

मिट्ठं < मृष्टम्—मृ की ऋ के स्थान पर इकार।

सिट्ठं < सृष्टम्—सृ की ऋ के स्थान पर इ तथा संयुक्त सकार का लोप, ट को द्वित्व।

पित्थी < पृथ्वी—पृ की ऋ के स्थान पर इ तथा थ्वी के स्थान पर त्थी।

समिद्धी < समृद्धिः—मृ की ऋ के स्थान पर इकार और ह्रस्व को दीर्घ।

किवो < कृपः—कृ की ऋ के स्थान पर इ और प का व।

उक्किट्ठं < उत्कृष्टम्—कृ की ऋ के स्थान पर उत्व, त् का लोप और क् को द्वित्व, ष् का लोप तथा ट को द्वित्व।

विकल्प से इत्व—

विसो, वसो < वृषः

किण्हो, कण्हो < कृष्णः

महिविट्ठं < महीपृष्टम्—यहाँ उत्तरपद रहने से पृष्ठ शब्द में विकल्प से इत्व नहीं हुआ।

(८२) ऋतु प्रभृति शब्दों में आदि ऋकार को उत्व होता है। उदाहरण[1]—

उदू < ऋतुः—ऋकार के स्थान पर उ और त के स्थान पर द।

पउत्ती < प्रवृत्तिः—प्र के स्थान पर प, व का लोप और ऋ के स्थान पर उ तथा ति को दीर्घ।

परामुट्ठो < परामृष्टः—मृ की ऋ के स्थान पर उकार, ष् का लोप, ट को द्वित्व और द्वितीय ट् को ठ।

पाउसो < प्रावृट्—प्र का प, व का लोप, ऋ के स्थान पर उ और ट् को स

परहुओ < परभृतः—भृ की ऋ के स्थान पर उत्व, भ के स्थान पर हु।

णिव्वुअं, णिव्वुदं < निर्वृतम्—रेफ का लोप, व को द्वित्व, ऋ के स्थान पर उ, त का लोप और स्वरशेष।

उसहो < ऋषभः—ऋ के स्थान पर उ और भ के स्थान पर ह।

भाउओ < भ्रातृकः—भ्रा में से रेफ का लोप, तृ में त का लोप, ऋ के स्थान पर उ।

पहुदि < प्रभृति—प्र का प, भृ के स्थान पर हु और त के स्थान पर द।

संवुदं < संवृतम्—वृ की ऋ के स्थान पर उ तथा त को द।

वुड्ढो < वृद्धः—वृ की ऋ के स्थान पर उ तथा दन्त्यवर्णों को मूर्धन्य।

मुणालं < मृणालम्—मृ की ऋ के स्थान पर उ तथा ण के स्थान पर ढ।

पाहुडं < प्राभृतम्—प्र के स्थान पर प, भ के स्थान पर ह और त के स्थान पर ड।

---

१. उदृत्वादौ ८।१।१३१. ऋतु इत्यादिषु शब्देषु आदेऋत उद् भवति। हे०।

पुट्ठं < पृष्टम्—पृ की ऋ के स्थान पर उ, ष् का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ।

पुहइ, पुहवी < पृथिवी—पृ की ऋ के स्थान पर उ और थ के स्थान पर ह।

पाउअं < प्रावृतम्—प्रा के स्थान पर पा, वृ के व का लोप, ऋ के स्थान पर उ, त का लोप तथा विसर्ग को ओत्व।

भुई < भृतिः—भृ की ऋ के स्थान पर उ तथा तकार का लोप।

विउअं < विवृतम्—वृ के व का लोप, इसी के ऋ के स्थान पर उत्व।

वुंदावणं < वृन्दावनम्—वृ के ऋ के स्थान पर उत्व।

जामाउओ, जामादुओ < जामातृकः—तृ के तकार का लोप, ऋ के स्थान पर उ और क का लोप तथा स्वरशेष।

पिउओ < पितृकः—तृ के त का लोप, ऋ के स्थान पर उ और क का लोप, तथा ओत्व।

णिहुअं, णिहुदं < निभृतम्—भृ में भ के स्थान पर ह और ऋ के स्थान पर उ।

णिव्वुइ < निर्वृतिः—र्वृ में से रेफ का लोप, ऋ को उत्व तथा व को द्वित्व।

वुड्ढी < वृद्धिः—वृ के ऋ के स्थान पर उत्व और दन्त्य वर्णों को मूर्धन्य।

माउआ < मातृका—तृ के त का लोप, ऋ के स्थान पर उ और क का लोप, स्वरशेष।

णिउअं < निवृतम् = वृ के व का लोप, ऋ का उत्व तथा त का लोप, स्वरशेष।

वुत्तान्तो < वृत्तान्त —ऋ का उत्व।

उजू < ऋजुः – ऋ का उत्व।

पुहुवी < पृथिवी—पृ में ऋ के स्थान पर उत्व, थ का को ह आदेश।

वुंदं < वृन्दम्—वृ के ऋ के स्थान पर उत्व।

माऊ, मादु < मातृ—तृ में से तकार का लोप, ऋ के स्थान पर उत्व। तकार का लोप न होने पर द।

(८३) निवृत्त और वृन्दारक शब्द में ऋ के स्थान पर विकल्प से उत्व होता है।[1] यथा—

निवुत्तं, निअत्तं < निवृत्तम्—विकल्पाभाव पक्ष में ऋ के स्थान पर अ हुआ है।

वुन्दारया, वन्दारया < वृन्दारका— ,, ,,

(८४) वृषभ शब्द में ऋ के स्थान पर विकल्प से वकार सहित उत्व होता है।[2] यथा—

उसहो, वसहो = वृषभः—विकल्पाभाव पक्ष में ऋ के स्थान में अ हुआ है।

---

१. निवृत्त-वृन्दारके वा ८।१।१३२. । हे० । २. वृषभे वा वा ८।१।१३३. । हे० ।

(८५) समास आदि में जो पद प्रधान न होकर गौण होता है, उसके अन्तिम ऋ के स्थान में उकार आदेश होता है।[1] जैसे—

माउमंडलं, मादुमंडलं < मातृमण्डलम्—तकार का लोप न होने पर त का द हुआ है और ऋ के स्थान पर उकार।

माउहरं, मादुहरं < मातृगृहम् ,, ,,

पाउवणं < पितृवनम् तकार का लोप और ऋ के स्थान पर उकार।

(८६) गौण—अप्रधान मातृशब्द के ऋकार को विकल्प से इकार होता है।[2] जैसे-

माइ-हरं, माउ-हरं < मातृगृहम्

माइ-मंडलं, माउ-मंडलं, मादु-मंडलं < मातृमंडलम्

(८७) मृषा शब्द में ऋकार के स्थान पर उत्, ऊत् और ओत् होते हैं।[3] जैसे-

मुसा, मूसा, मोसा < मृषा

मुसा-वाओ, मूसा-वाओ, मोसा-वाओ < मृषावादः

(८८) वृष्ट, वृष्टि, पृथक्, मृदङ्ग और नप्तृक शब्दों में ऋकार के स्थान पर इकार और उकार होते हैं।[4] जैसे—

विट्ठो, वुट्ठो < वृष्टः   विट्ठी, वुट्ठी < वृष्टिः

पिहं, पुहं < पृथक्   मिइंगो, मुइंगो < मृदङ्गः

नत्तिओ, नत्तुओ < नप्तृकः

(८९) वृहस्पति शब्द में ऋकार के स्थान पर विकल्प से इकार और उकार होते हैं।[5] जैसे—

विहप्फई, वुहप्फइ, वहप्फई < वृहस्पतिः

(९०) वृन्त शब्द में ऋकार के स्थान पर इत्, एत् और ओत् होते हैं।[6] जैसे—

विण्टं, वेण्टं, वोण्टं < वृन्तम्

(९१) व्यञ्जन के सम्पर्क रहित—केवल ऋ के स्थान पर रि आदेश होता है। यह कहीं विकल्प से और कहीं नित्य होता है।[7] जैसे—

रिद्धी < ऋद्धिः   रिणं < ऋणम्

रिज्जू, उज्जू < ऋजुः   रिसहो, उसहो < वृषभः

---

१. गौणान्त्यस्य ८।१।१३४। हे०।   २. मातुरिद्वा ८।१।१३५। हे०।

३. उदूदोन्मृषि ८।१।१३६। हे०।

४. इदुतौ वृष्ट-वृष्टि-पृथङ्-मृदङ्ग-नप्तृके ८।१।१३७। हे०।

५. वा बृहस्पतौ ८।१।१३८। हे०।   ६. इदेदोद्वृन्ते ८।१।१३९। हे०।

७. रिः केवलस्य ८।१।१४०। हे०।

रिऊ, उदू < ऋतुः   रिसी, इसी = ऋषि.

रिद्धी < ऋद्धिः

(१२) जिस दृश् धातु के आगे क्त्, क्विप, टक् और सक् प्रत्यय आये हों, उसके ऋ का रि आदेश होता है।[1] जैसे—

एआरिसो < एतादृशः—त् का लोप स्वर शेष, द् का लोप और ऋ के स्थान पर 'रि'।

तारिसो < तादृशः—दृ में से द् का लोप और ऋ के स्थान पर रि।

सरिसो < सदृशः—   ,,   ,,

सरिच्छो < सदृक्षः   ,,   ,, क्ष के स्थान पर च्छ।

भवारिसो < भवादृशः— द् का लोप और ऋ के स्थान पर रि।

जारिसो < यादृशः—   ,,   ,,

केरिसो < कीदृशः—की के स्थान पर के और द् का लोप, ऋ के स्थान पर रि।

अम्हारिच्छो < अस्मादृक्षः—द् का लोप, ऋ के स्थान पर 'रि', क्ष के स्थान पर च्छ।

अन्नारिसो < अन्यादृश.—न्या के स्थान पर न्ना, द् का लोप, ऋ के स्थान पर 'रि'।

अम्हारिसो < अस्मादृशः—स्मा के स्थान पर म्हा, द् का लोप, ऋ के स्थान पर रि।

तुम्हारिसो < युष्मादृशः—ष्मा के स्थान पर म्हा, द् का लोप, ऋ के स्थान पर रि।

विशेष—शौरसेनी में उक्त शब्दों के रूप निम्नप्रकार होते हैं।

जादिसं < यादृशम्   तादिसं < तादृशम्

पैशाची में—जातिसं < यादृशम्   तातिसं < तादृशम्

अपभ्रंश में—जइसं < यादृशम्   तइसं < तादृशम्

(१३) किसी भी शब्द में आदि ऐकार का एकार होता है।[2] यथा—

सेलो = शैलः—श के स्थान पर स और ऐकार को एकार।

तेल्लुक्कं, तेलोक्कं < त्रैलोक्यम्—त्रै में से र् का लोप, ऐकार को एकार, य् का लोप और क को द्वित्व।

सेच्चं < शैत्यम्—ऐकार का एकार, त्य के स्थान पर च।

एरावणो < ऐरावत —ऐकार का एकार और त के स्थान पर ण।

---

१. दृशः क्विप्-टक्सकः ८।१।१४२. । हे०।

२. ऐत् एत् ८।१।१४८. । हे०।

केलासो < कैलाशः—ऐकार का एकार ।

केढवो < कैतवः—ऐकार का एकार और त के स्थान पर ढ ।

वेहव्वं < वैधव्यम्—ऐकार का एकार, ध के स्थान पर ह, और य लोप तथा व् को द्वित्व ।

(१४) दैत्यादि गण में ऐ के स्थान में अइ आदेश होता है। यह नियम ए का अपवाद है।[1] जैसे—

दइच्चं < दैत्यम्—ऐ के स्थान पर अइ, त्य के स्थान पर च्च ।

दइण्णं < दैन्यम्— „ „, न्य के स्थान पर ण्ण ।

अइसरिअं < ऐश्वर्यम्— „ „, व का लोप और र्यम् का रिअं ।

भइरवो < भैरवः—ऐकार का एकार

दइवअं < दैवतम्—ऐकार का एकार, त लोप और स्वरशेष ।

वइआलीओ < वैतालिकः—ऐकार का एकार, त लोप, स्वर शेष तथा क लोप और स्वर शेष ।

वइएसो < वैदेशः—ऐकार का अइ, द लोप और स्वर शेष ।

वइएहो < वैदेह— „ „

वइअब्भो < वैदर्भः—ऐकार का अइ, द लोप, स्वर शेष, रेफलोप और भ को द्वित्व, पूर्ववर्ती भ को ब ।

वइस्साणरो < वैश्वानरः—ऐकार का अइ, व लोप, स को द्वित्व, न को ण ।

कइअवं < कैतवम्—ऐकार का अइ, त लोप, स्वर शेष ।

वइसाहो < वैशाखः—ऐकार का अइ, ख के स्थान में ह ।

वइसालो < वैशाल—ऐकार का अइ ।

(१५) वैरादिगण में ऐकार के स्थान में विकल्प से अइ आदेश होता है।[2] यथा—

वइरं, वेरं < वैरम्—ऐकार के स्थान पर अइ, विकल्पाभाव में ए ।

कइलासो, केलासो < कैलाशः— „ „

कइरवं, केरवं < कैरवम्— „ „

---

१. अइर्दैत्यादौ च ८।१।१५१. हे० । दैत्यादि गण के शब्द—

दैत्यादौ वैश्यवैशाखवैशम्पायनरैववाः ।
स्वैरवैदेहवैदेशकैतववैपयिका अपि ।
दैत्यादिष्वपि विज्ञेयास्तथा वैदेशिकादयः ॥—पल्लवलतिका

२. वैरादौ वा ८।१।१५२. हे० । वैरादिगण के शब्द—

दैत्यः स्वैरं चैत्यं चैत्यवैदेहको च वैशाख ।
वैशिकभैरववैशम्पायनवैदेशिकाश्च दैत्यादि ॥—प्राकृत मंजरी

वइसवणो, वेसवणो < वैश्रवणः—ऐकार के स्थान पर अइ, श्र के र का लोप, अभाव पक्ष में ए।

वइसंपाअणो, वेसंपाअणो < वैशम्पायनः— „ „ य लोप और स्वरशेष।

वइआलिओ वेआलिओ < वैतालिक — „ „ क का लोप और स्वरशेष।

वइसिओ, वेसिओ < वैशिकः— „ „ „

चइत्तो, चेत्तो = चैत्र — „ „ त्र के र का लोप और त को द्वित्व।

(१६) शब्द के आदि औकार को ओकार आदेश होता है।[1] जैसे—

कोमुई < कौमुदी—औ के स्थान पर ओकार, द लोप और स्वरशेष।

जोव्वणं < यौवनम्—य के स्थान पर ज, औ का ओ और व को द्वित्व।

कोत्थुहो < कौस्तुभः—औकार का ओ, स्तु के स्थान पर त्थु और भ के स्थान पर ह।

सोहग्गं < सौभाग्यम्—औकार का ओ, भ के स्थान पर ह, य् लोप और ग को द्वित्व।

दोहग्गं < दौर्भाग्यम्— „ „ „

गोदमो < गौतमः—औकार का ओ और त का द।

कोसंबी < कौशाम्बी—औकार का ओ हुआ है।

कोंचो < क्रौञ्च — „ „

कोसिओ < कौशिकः— „ „ और क का लोप तथा स्वर शेष।

(१७) सौन्दर्यादिगण के शब्दों में औ के स्थान पर उत् आदेश होता है।[2] यथा—

सुन्देरं, सुंदरिअं < सौन्दर्यम्—औ के स्थान पर उ होने से।

सुंडो < शौण्डः—औ के स्थान पर उत् आदेश।

दुवारिओ < दौवारिकः—औ के स्थान पर उत् और क का लोप, स्वर शेष।

मुंजायणो < मौञ्जायन —औ के स्थान पर उत् आदेश।

सुगंधत्तणं < सौगन्ध्यम्—औ के स्थान पर उत् आदेश।

पुलोमी < पौलोमी— „ „

सुवण्णिओ < सौवर्णिकः— „ „

---

१. औत ओत् ८।१।१५९। हे०।

२. उत्सौन्दर्यादौ ८।१।१६०। हे०।

(९८) कौक्षेयक और पौरादिगण के शब्दों में औ के स्थान पर अउ आदेश होता है।[१] यथा—

कउक्खेअओ, कुक्खेअओ < कौक्षेयकः।

पउरो < पौरः		कउरवो < कौरवः

पउरिसं < पौरुषम्		सउहं < सौधम्

गउडो < गौडः		मउली < मौलिः

मउणं < मौनम्		सउरा < सौराः

कउला < कौला

(९९) अव और अप उपसर्गों के आदि स्वर का आगेवाले सस्वर व्यंजन के साथ विकल्प से ओत् होता है।[२] जैसे—

ओआसो, अवआसो < अवकाशः—अव के स्थान पर ओ और क का लोप, स्वर शेष।

ओसरइ, अवसरइ < अपसरति—अप के स्थान पर ओ, स का लोप और स्वर शेष।

ओहणं, अवहणं < अपघनम्—अप के स्थान पर ओ तथा घ के स्थान पर ह।

विशेष—निम्न रूपों में यह नियम लागू नहीं होता—

अवगअं < अपगतम्—प के स्थान पर व।

अवसदो < अपसदः— „ „

(१००) आगेवाले सस्वर व्यञ्जन के साथ उप के आदि स्वर के स्थान में विकल्प से ऊत् और ओत् आदेश होते हैं।[३] जैसे—

ऊहसिअं, ओहसिअं < उपहसितम्—उप के स्थान पर ऊ और ओ हुआ है।

ऊआसो, ओआसो < उपवासः—उप के स्थान पर ऊ और ओ, व का लोप और स्वर शेष।

इन सामान्य स्वरविकृति नियमों के पश्चात् व्यञ्जनविकृति के नियमों का निर्देश किया जाता है—

(१०१) स्वर से पर में रहनेवाले अनादिभूत तथा दूसरे किसी व्यञ्जन से

---

१. अउः पौरादौ च ८।१।१६२. हे०।
सौन्दर्यादिगण के शब्द—
सौन्दर्यं शौण्डिको दौवारिकः शौण्डौपरिष्ठम्।
कौक्षेयः पौरुषः पौलोमि मौञ्जीस्थापिकादयः ॥ —रत्नावलि।
पौरादिगण के शब्द—
पौरपौरुषमौनानि, गौडमौलिकौरवाः।
कौशल मौलिसौधौ च, पौरादिगणा मता। —रत्नमालिका।
२. अवापोते ८।१।१७२. हे०।
३. ऊच्चोपे ८।१।१७३. हे०।

संयोगरहित क, ग, च, ज, त, द, प, य और व वर्णों का प्रायः लोप होता है।[1]

उदाहरण—

क लोप—

लोओ < लोकः—क का लोप, स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

सअढं < शकटम्—क का लोप, स्वर शेष और ट के स्थान पर ढ।

मउलं < मुकुलं—मु के उ के स्थान पर अ, क का लोप और उ स्वर शेष।

णउलो < नकुलः—न का ण और क का लोप, स्वरशेष।

णोआ < नौका—न का ण और औ का ओ तथा क का लोप, स्वरशेष।

तित्थयरो < तीर्थंकरः—ती को ह्रस्व, रेफ का लोप, थ को द्वित्व, क लोप और स्वरशेष, य श्रुति।

ग लोप—

णओ < नगः—ग लोप, स्वरशेष।

णअरं, नयरं, णयरं < नगरम्—ग लोप और शेष स्वर के स्थान में य श्रुति।

मयंको < मृगाङ्कः—मृ का म, ग का लोप और शेष स्वर को य श्रुति।

साअरो, सायरो < सागरः—ग लोप और शेष स्वर को य श्रुति।

भाइरही < भागीरथी—ग लोप, स्वर शेष और थ के स्थान पर ह।

च लोप—

सई < शची—श को स और चकार का लोप, स्वर शेष।

कअग्गहो, कयग्गहो < कचग्रहः—च लोप, शेष स्वर को य श्रुति।

सूई < सूची—च लोप और स्वर शेष।

रोअदि < रोचते—च लोप और स्वर शेष।

उइदं < उचितम्—च लोप और स्वर शेष, त को द।

सूअं < सूचकम्।

ज लोप—

रअओ < रजकः—ज और क दोनों का लोप और स्वर शेष।

पआवई < प्रजापतिः—ज लोप, स्वर शेष और प के स्थान पर व।

गओ < गजः—ज लोप और स्वर शेष।

रअदं < रजतम्—ज का लोप, स्वर शेष और त के स्थान पर द।

त लोप—

विआणं < वितानम्—त लोप और स्वर शेष।

किअं < कृतम्—कृ में रहनेवाली ऋ के स्थान पर इ और त लोप, स्वर शेष।

रसाअलं < रसातलम्—त लोप और स्वर शेष।

---

१. क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लुक् ८।१।१७७. हे०।

रअणं, रयणं < रत्नम्—त लोप और स्वर शेष, स्वर शेष के स्थान में य श्रुति।

द लोप—

जइ < यदि—य को ज और द लोप।

नई < नदी—द लोप और स्वर शेष।

गआ < गदा— ,, ,,

मअणो < मदनः—,, ,,

वअणं < वदनम्—,, ,,

मओ < मदः— ,, ,,

प लोप—

रिऊ < रिपुः—प लोप और उ शेष तथा उकार को दीर्घ।

सुउरिसो < सुपुरुषः— ,,

कई < कपिः—प लोप और स्वर शेष।

विउलं < विपुलं—,, ,,

य लोप—

दआलू < दयालुः—य लोप, स्वर शेष और लु को दीर्घ।

णअणं < नयनम्— ,, ,,

विओओ < वियोगः—य और ग का लोप स्वर शेष।

वाउणा < वायुना—य लोप और स्वर शेष।

व लोप—

जीओ < जीवः—व लोप और स्वर शेष।

दिअहो < दिवसः—व लोप, स्वर शेष और स के स्थान पर ह।

लाअण्णं < लावण्यम्—व लोप, स्वर शेष, य लोप और ण को द्वित्व।

विओहो < विबोधः—व लोप, स्वर शेष और ध के स्थान पर ह।

वडआणलो < वडवानलः—व लोप, स्वर शेष।

विशेष—प्रायः शब्द का प्रयोग होने से कहीं-कहीं लोप नहीं होता। यथा—

सुकुसुमं < सुकुसुमम् पयागजलं < प्रयागजलम्।

पियगमणं < प्रियगमनम् सुगओ < सुगतः

अगरु < अगरु सचावं < सचापम्

समवाओ < समवायः

(क) स्वर से पर में नहीं रहने के कारण उक्त वर्णों का लोप नहीं हुआ—

संकरो < शंकरः णक्कंचरो < नक्तंचर.

धणंजओ < धनञ्जयः पुरंदरो < पुरन्दरः

संवरो < संवरः

(ग) निम्न शब्दों में संयुक्त होने के कारण लोप नहीं हुआ—

अग्घो < अर्घ: वग्गो < वर्ग:
अग्घो < अर्घ: मग्गो < मार्ग:

(ग) निम्न शब्दों में आद्यक्षर होने के कारण उक्त वर्णों का लोप नहीं हुआ—

कालो < काल: गंधो < गन्ध:
चोरो < चौर:—औकार के स्थान पर ओकार।
जारो < जार:
तरू < तरु:—रु के ह्रस्व उकार को दीर्घ हुआ है।
दवो < दव:
पावं < पापम्—द्वितीय प के स्थान पर व हुआ है।

(घ) समास में उत्तरपद के आदि का विकल्प से लोप होता है—

सहअरो, सहचरो < सहचर:
जलअरो, जलचरो < जलचर:
सहआरो, सहकारो < सहकार:

(ङ) कुछ विद्वानों के मत में क का लोप नहीं होता, बल्कि उसके स्थान पर ग होता है। जैसे—

एगत्तणं < एकत्वम् एगो < एक:
अमुगो < अमुक: आगारो < आकार:
आगरिसो < आकर्ष.

(च) कहीं कहीं आदि में आनेवाले कादि वर्णों का भी लोप देखा जाता है—

स उण < स पुनः
सो य, सो सोअ < स च—च का लोप होने पर शेष स्वर अ के स्थान में य श्रुति होने से च का य होता है।
इन्धं < चिह्नम्—आदि च का लोप और ह के स्थान पर ध।

(छ) आर्ष प्राकृत में च के स्थान पर ट पाया जाता है। यथा—

आउण्टणं < आकुञ्चनम्

(१०१) क, ग, च, ज, त, द, प, य और व का लोप होने पर अवशिष्ट स्वर अ या आ के स्थान में लघु प्रयत्नतर यकार का उच्चारण होता है।[1] यथा—

नयरं < नगरम्—ग का लोप होने पर अवशेष अ के स्थान पर य।
कयग्गहो < कचग्रहः—च का लोप होने पर अवशेष अ के स्थान पर य।
कायमणी < काचमणि:— " " "
रययं < रजतम्—ज और त का लोप होने पर अवशेष स्वर अ के स्थान में य।

---

१. अवर्णो यश्रुतिः. ८।१।१८०. हे०।

पयावई < प्रजापतिः—ज का लोप और अवशेष आ के स्थान में या, प का व और त का लोप, दीर्घ।

रसायलं < रसातलम्—त का लोप और अवशेष अ को य।

पायालं < पातालम्—त का लोप और अवशेष आ को या।

(१०३) असवर्ण से पर में अनादि प का लोप लुक् नहीं होता, बल्कि पकार को वकार होता है।[1] उदाहरण—

उवसग्गो < उपसर्गः—प का व, रेफ का लोप और ग को द्वित्व।

कवालो < कपालः—यहाँ प का लोप नहीं हुआ, उसके स्थान पर व हुआ है।

उल्लाओ < उल्लापः— " "

कवोलो < कपोलः— " "

महिवालो < महिपालः— " "

उवमा < उपमा— " "

पावं < पापम्—प का व हुआ है।

सवहो < शपथः—प का व तथा थ का ह हुआ है।

सावो < शापः—प का व हुआ है।

विशेष—(क) संयुक्त होने पर प का व नहीं होता। यथा—

विप्पो < विप्रः—प्र में प्+र्+अ का संयोग है अतः रेफ का लोप और प को द्वित्व।

सप्पो < सर्पः—रेफ का लोप और प को द्वित्व।

(ख) आदिस्थ होने पर प का न तो लोप होता है और न उसके स्थान में व ही होता है। यथा—

पई < पतिः—त का लोप तथा इकार को दीर्घ।

पंडिओ < पण्डितः—त का लोप और विसर्ग को ओत्व।

(१०४) आपीड शब्द में पकार को म होता है।[2] यथा—

आमेलो < आपीडः—प का म और ड को ल हुआ है।

(१०५) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि ख, घ, थ, ध और भ वर्णों के स्थान में प्रायः ह आदेश होता है।[3] वास्तविकता यह है कि इन व्यंजनों में ह संयुक्त है। जैसे—

ख = क्+ह्, घ = ग्+ह्, थ् = त्+ह्, ध = द्+ह्, फ = प्+ह्, भ् = ब्+ह्। अतः उक्त व्यञ्जनों में विजातीय का लोप होकर ह शेष रह जाता है। उदाहरण—

---

१. पो वः २।१५. वर०।

२. आपीडे मः २।१६. वर०।

३. ख-घ-थ-ध-भाम् ८।१।१८७. हे०।

मुहं <मुखम्—ख का ह हुआ है।
मुहो <मुखः—ख का ह हुआ है।
मेहला <मेखला—,, ,,
लिहइ <लिखति—,, और त् का लोप तथा इ शेष।
पमुहेण <प्रमुखेण—प्र के स्थान पर प और ख का ह हुआ है।।
सही <सखी—ख के स्थान पर ह।
अलिहिदा <अलिखिता—ख के स्थान पर ह और त के स्थान पर द।
मेहो <मेघः—घ के स्थान पर ह हुआ है।
जहणं <जघनम्—,, ,,
माहो <माघः— ,, ,,
लाहअं <लाघवम्—घ के स्थान पर ह और व का लोप तथा स्वर अ शेष।
लहु <लघुः—घ के स्थान पर ह।
नाहो <नाथः—थ के स्थान पर ह।
गाहा <गाथा— ,, ,,
मिहुणं <मिथुनम्—,, ,,
सवहो <शपथः—प के स्थान पर व और थ के स्थान पर ह।
कहेहि <कथय—थ के स्थान पर ह।
कहं <कथम्— ,, ,,
मणोरहो <मनोरथः—,, ,,
साहू <साधुः—ध के स्थान पर ह।
राहा <राधा— ,, ,,
बाहा <बाधा— ,, ,,
बहिरो <बधिरः—,, ,,
बाहइ <बाधते—ध के स्थान पर ह और विभक्ति चिह्न इ।
इंदहणू <इन्द्रधनुः—रेफ का लोप और ध के स्थान पर ह।
अहिअं <अधिकम्—ध के स्थान पर ह।
माहवीलदा <माधवीलता—ध के स्थान पर ह तथा त के स्थान पर द।
महुअर <मधुकरः—ध के स्थान पर ह तथा क का लोप, अ शेष।
सहा <सभा—भ के स्थान पर ह।
सहावो <स्वभावः—व का लोप और भ के स्थान पर ह।
णहं <नभः—भ के स्थान पर ह।
सोहइ <शोभते—भ के स्थान पर ह और विभक्ति चिह्न इ।
सोहणं <शोभनम्—भ के स्थान पर ह।

आहरणं <आभरणम्—भ के स्थान पर ह ।

दुल्लहो <दुर्लभ.—रेफ का लोप और ल को द्वित्व तथा भ के स्थान पर ह ।

विशेष—(क) स्वर से पर में नहीं रहने से—

संखो <शङ्खः—यहाँ ख स्वर से पर नहीं है, बल्कि अनुस्वार व्यञ्जन से परे है ।

संघो <सङ्घः— ,, घ ,, ,, ,, ,,

कंथा <कन्था— ,, थ ,, ,, ,, ,,

खंभो <स्तम्भः— ,, भ ,, ,, ,, ,,

(ख) उपर्युक्त वर्णों के असंयुक्त होने पर ह आदेश होता है, संयुक्त होने से नहीं । जैसे—

अक्खइ <अक्षति—ख के स्थान पर ह नहीं हुआ ।

अग्घइ <अर्घति—घ के स्थान पर ,,

कत्थइ <कथयति—थ के ,, ,,

बन्धइ <बन्धति—ध के ,, ,,

लब्भइ <लभते—भ के ,, ,,

(ग) गज्जइ घणो <गर्जति घनः—घ आदि में रहने से ह नहीं हुआ ।

गज्जन्ते खे मेहा <गर्जन्ते खे मेघाः—घ आदि ,, ,,

पखलो <प्रखलः—प्रायः कथन के कारण ह नहीं हुआ ।

पलंबघणो <प्रलम्बघनः— ,, ,,

अधीरो <अधीरः— ,, ,,

अधण्णो <अधन्यः— ,, ,,

जिणधम्मो <जिनधर्मः— ,, ,,

पणट्ठभओ <प्रनष्टभयः— ,, ,,

(१०६) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि ट, ठ और ड के स्थान में क्रमशः ड, ढ और ल आदेश होते हैं ।[1] उदाहरण—

मढो <मठः—ठ के स्थान में ढ हुआ है ।

सढो <शठः— ,, ,,

कमढो <कमठः— ,, ,,

कुढारो <कुठारः— ,, ,,

णडो <नटः—ट के स्थान में ड हुआ है ।

भडो <भटः— ,, ,,

---

१. ठो ढः ८।१।१९९; टो डः ८।१।१९५; डो लः ८।१।२०२. हे० ।

विडवो < विटप:—ट के स्थान पर ड और प के स्थान पर व।

घडो < घट:—ट के स्थान पर ड।

घडइ < घटते—ट के स्थान पर ड और विभक्ति चिह्न इ।

वलया-मुँहं < वडवामुखम्—ड के स्थान पर ल, व लोप और आ स्वर के स्थान पर य श्रुति तथा ख के स्थान पर ह।

गरुलो < गरुड:—ड के स्थान पर ल।

कीलइ < क्रीडति—रेफ का लोप, ड के स्थान पर ल और विभक्ति चिह्न इ।

तलायो < तडाग:—ड के स्थान पर ल, ग लोप और अ स्वर के स्थान में यश्रुति।

वलही < वडभि:—ड के स्थान में ल और भ के स्थान में ह तथा दीर्घ।

घंटा < घण्टा—स्वर से पर में ट के न होने से ट के स्थान में ड नहीं हुआ।

वेकुंठो < वैकुण्ठ:—स्वर से पर में ठ के न होने से ढ नहीं हुआ।

मोंडं < मुण्डम्—स्वर से पर में ड के न होने से ल नहीं हुआ।

कोंडं < कुण्डम्— ,, ,,

खट्टा < खट्वा—संयुक्त रहने के कारण ट का ड नहीं हुआ।

चिट्ठइ < तिष्ठति—संयुक्त रहने से ठ का ढ नहीं हुआ।

खड्गो < खड्ग:—संयुक्त रहने से ड का ल नहीं हुआ।

टक्को < टङ्क:—अनादि-आदि भिन्न होने से ट को ड नहीं हुआ।

ठाई < स्थायी— ,, ,, ठ को ढ ,,

डिंभो < डिम्भ:— ,, ,, ड को ल ,,

(१०७) ण्यन्त पट धातु में ट का ल आदेश विकल्प से होता है।[1] यथा—

चविला, चविडा < चपेटा—प के स्थान पर व और ट के स्थान में ल तथा विकल्पाभावपक्ष में ड।

फालेइ, फाडेइ < पाटयति—ट का ल तथा विकल्पाभाव में ड और विभक्ति चिह्न इ।

(१०८) सटा, शकट और कैटभ शब्द में ट को ढ होता है।[2] यथा—

सढा < सटा—ट के स्थान पर ढ।

सयढो < शकट:—क का लोप और अ स्वर के स्थान पर य श्रुति, तथा ट का ढ।

केढवो < कैटभ:—ऐकार का एकार और ट का ढ तथा भ का व 'कैटभे व:' २।२९. सूत्र से।

---

१. चपेटा-पाटौ वा ८।१।१९८। हे०।

२. सटा-शकट-कैटभे ढः ८।१।१९६. हे०।

(१०९) स्फटिक में टकार के स्थान पर ल होता है।[1] यथा—

फलिहो < स्फटिकः—ट का ल और क का ह।

(११०) प्रति उपसर्ग में तकार के स्थान में प्रायः डकार आदेश होता है।[2] जैसे—

पडिवण्णं < प्रतिपन्नम्—प्र के स्थान पर प, त के स्थान पर ड और प का व।

पडिहासो < प्रतिभासः—प्र के स्थान पर प, त के स्थान पर ड और भ के स्थान पर ह।

पडिहारो < प्रतिहारः—प्र को प और त को ड।

पाडिप्फद्धी < प्रतिस्पर्धी—त के स्थान पर ड, स्प के स्थान पर प्फ, रेफ का लोप और ध को द्वित्व।

पडिसारो < प्रतिसारः—त के स्थान पर ड।

पाडिसरो < प्रतिसरः—त के स्थान पर ड।

पडिसिद्धि < प्रतिसिद्धिः— " "

पडिनिअत्तं < प्रतिनिवृत्तम्—त के स्थान पर ड, व का लोप और ऋ के स्थान पर अ।

पडिमा < प्रतिमा—त के स्थान पर ड।

पडिवया < प्रतिपत्—त के स्थान पर ड, प को व और अन्त्य व्यंजन त् के स्थान पर आ तथा य श्रुति।

पडंसुआ < प्रतिश्रुत्—त के स्थान पर ड, रेफ का लोप और अन्तिम व्यंजन त् के स्थान में आ।

पडिकरइ < प्रतिकरोति—त के स्थान में ड, क्रियापद करइ।

पहुडि < प्रभृति—भ के स्थान पर ह, ऋ के स्थान में उकार और त का ड।

पाहुडं < प्राभृतम्—भ के स्थान में ह और त के स्थान में ड।

वावडो < व्यापृतः—व्या के स्थान में वा, प के स्थान में व और ऋ के स्थान में अ तथा त को ड।

पडाया < पताका—त को ड, क् का लोप और आ स्वर के स्थान में य श्रुति।

बहेडओ < बिभीतकः—भ के स्थान पर ह, ईकार को एकार, त को ड और क लोप तथा अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

हरडई < हरीतकी—त को ड, क का लोप और ई स्वर शेष।

---

१. स्फटिके लः ८।१।१९७. हे०।

२. प्रत्यादौ डः ८।१।२०६. हे०।

दुकडं < दुष्कृतम्—आर्ष में ष लोप, क को द्वित्व, ऋ को अ तथा त को ड ।

सुकडं < सुकृतम्—आर्ष में ऋ के स्थान पर अ और त का ड ।

आहडं < आहृतम्— ,, ,,

अवहडं < अवहृतम्— ,, ,,

पइसमयं < प्रतिसमयं—ति के स्थान पर ड नहीं हुआ और त का लोप हो जाने से इ स्वर शेष ।

पईवं < प्रतीपम्—त के स्थान पर ड नहीं हुआ, त् का लोप होने से ई शेष ।

संपइ < सम्प्रति—त लोप और इ स्वर शेष ।

पइट्ठाणं < प्रतिष्ठानम्—त् लोप और इकार शेष तथा ष्ठ में से ष का लोप ठ को द्वित्व ।

पइट्ठा < प्रतिष्ठा— ,, ,, ,,

पइण्णा < प्रतिज्ञा—त लोप और ज्ञ के स्थान पर ण्ण ।

(१११) ऋत्वादि गण के शब्दों में तकार का दकार होता है ।[1] जैसे—

उदू < ऋतुः—ऋ के स्थान पर उ और त के स्थान में द तथा उ को दीर्घ ।

रअदं < रजतम्—ज का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर शेष तथा त को द ।

आअदो < आगतः—ग का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर शेष तथा त को द ।

निव्वुदी < निर्वृतिः—रेफ का लोप, व को द्वित्व और ऋ के स्थान पर उ तथा त को द ।

आउदी < आवृत्तिः— व का लोप, ऋ के स्थान पर उ और त को द ।

संवुदी < संवृतिः—ऋ के स्थान पर उ तथा त को द ।

सुइदी < सुकृतिः—क का लोप, ऋ के स्थान पर इ और त को द एवं दीर्घ ।

आइदी < आकृतिः— ,, ,, ,,

हदो < हतः—त के स्थान पर द ।

संजदो < संयतः—य के स्थान पर ज और त के स्थान पर द ।

---

१. ऋत्वादिषु तो दः २।७ वर०; ऋत्वादि गण मे निम्न शब्द परिगणित है—

ऋतुः किरातो रजतश्च तात सुसंगतं सयत साम्प्रतश्च ।
सुसंस्कृतिप्रीतिसमानशब्दास्तथाकृतिनिर्वृतितुल्यमेतत् ।।
उपसर्गसमायुक्ते वृत्तिवृतौ वृतागतौ ।
ऋत्वादिगणे नेया अन्ये शिष्टानुसारतः ।।

विउदं<विवृतम्—व का लोप, ऋ के स्थान पर उ और त के स्थान में द।

संजादो<संयातः—य के स्थान पर ज और त को द।

संपदि<संप्रति—प्र के स्थान पर प और त को द।

पडिवद्दी<प्रतिपत्तिः—प्रति उपसर्ग की ति के स्थान पर डि, प को व और त को द तथा इकार को दीर्घ।

विशेष—त के स्थान पर द होना शौरसेनी की विशेषता है। साधारण प्राकृत में शब्दरूप निम्न प्रकार बनेंगे।

उऊ<ऋतुः—ऋ के स्थान पर उ और त का लोप तथा उ को दीर्घ।

रअअं<रजतम्—ज और त का लोप तथा इनके स्थान पर अ, अ स्वर शेष।

एअं<एतम्—त का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर शेष।

गओ<गतः—त का लोप और उसके स्थान पर अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

संपअं<साम्प्रतम्—म् का अनुस्वार, प्र के स्थान पर प और त का लोप, अ स्वर शेष।

जओ<यतः—य का ज और त का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

तओ<ततः—त का लोप, अ स्वर शेष और ओत्व।

कअं<कृतम्—त का लोप, अ स्वर शेष और म् का अनुस्वार।

हआसो<हताशः—त का लोप, अ स्वर शेष तथा श का स।

ताओ<तातः—त का लोप अ स्वर शेष और विसर्ग का ओत्व।

(११२) दंश और दह, प्रदीपि और दोह धातुओं के दकार के स्थान में क्रमशः ड, ल और वैकल्पिक ध आदेश होते हैं।[1] जैसे—

डसइ<दशति—द के स्थान पर ड, तालव्य श के स्थान पर दन्त्य स तथा तकार का लोप और इकार स्वर शेष।

डहइ<दहति—द के स्थान पर ड, त लोप और इ स्वर शेष।

पलीवेइ<प्रदीपयति—द के स्थान पर ल, प का व और य का संप्रसारण इ, गुण तथा त का लोप और इ स्वर शेष।

पलित्तं<प्रदीप्तम्—र का ल, ह्रस्व, प का लोप और त को द्वित्व।

धिप्पइ, दिप्पइ<दीप्यति—द के स्थान पर वैकल्पिक ध, य लोप और प को द्वित्व, त लोप और इ स्वर शेष।

---

१. दंश-दहोः ८।१।२१८. हे०। प्रदीपि-दोहदे लः ८।१।२२१. हे०। दीपौ धो वा ८।१।२२१. हे०।

(११३) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि न का ण आदेश होता है।[1] पर आदि में वर्तमान असंयुक्त न का विकल्प से ण आदेश होता है।[2] उदाहरण—

सअणं < शयनम्—य का लोप और अ स्वर शेष तथा स्वर से पर अनादि और असंयुक्त न का ण।

कणअं < कनकम्—स्वर से पर अनादि और असंयुक्त न का ण, क लोप और अ स्वर शेष।

वअणं < वचनम्—च लोप और अ स्वर शेष और न का ण।

माणुसो < मानुषः—न का ण और मूर्धन्य ष का दन्त्य स।

णरो, नरो < नरः—न के स्थान पर विकल्प से ण।

णई, नई < नदी—न के स्थान पर ण तथा द् का लोप और ई स्वर शेष।

(११४) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि फ के स्थान में कहीं भ, कहीं ह और कहीं दोनों—भ और ह होते हैं।[3] उदाहरण—

रेभ < रेफः—फ के स्थान पर भ।

सिभा < शिफा—तालव्य श के स्थान पर दन्त्य स और फ के स्थान पर भ।

मुत्ताहलं < मुक्ताफलम्—फ के स्थान पर ह।

सेभालिआ, सेहालिआ < शेफालिका—विकल्प से फ के स्थान पर भ और ह तथा क लोप और आ स्वर शेष।

सभरी, सहरी < सफरी—फ के स्थान में भ और ह।

सभलं, सहलं < सफलम्—फ के स्थान में भ और ह।

विशेष—

गुंफइ < गुम्फति—स्वर से पर में नहीं रहने के कारण फ का भ नहीं हुआ।

पुप्फं < पुष्पम्—संयुक्त रहने के कारण उक्त नियम लागू नहीं हुआ।

फणी < फनिः—आदि में होने से फ को भ या ह नहीं हुआ।

(११५) स्वर से पर में रहनेवाले असंयुक्त और अनादि प का विकल्प से व आदेश होता है।[4] जैसे—

अलावू, अलाऊ < अलाबू—ब के स्थान पर विकल्प से व और विकल्पाभाव-पक्ष में ब का लोप तथा ऊ शेष।

सवलो < सबलः—ब के स्थान पर व।

---

१. नो णः ८।१।२२८. हे०। २. वादौ ८।१।२२९ हे०।
३. फो भ-हौ ८।१।२३६. हे०। ४. पो वः ८।१।२३७. हे०।

(११६) बिसिनी शब्द के ब के स्थान पर भ आदेश होता है।[1] यथा भिसिणी < बिसिनी—ब के स्थान पर भ और न के स्थान पर ण।

(११७) कबन्ध शब्द में ब के स्थान पर म और य होते हैं।[2] यथा—

कमन्धो, कयन्धो < कबन्धः—ब के स्थान पर म होने से कमन्ध और य होने से कयन्ध रूप बना है।

(११८) विषम शब्द में म के स्थान पर विकल्प से ढ होता है।[3] यथा—

विसढो, विसमो < विषम —म के स्थान पर विकल्प से ढ हुआ है।

(११९) मन्मथ शब्द में म के स्थान पर विकल्प से व होता है।[4] यथा—

वम्महो < मन्मथः—म के स्थान व, संयुक्त न का लोप और म को द्वित्व तथा थ के स्थान पर ह।

(१२०) अभिमन्यु शब्द में म के स्थान पर व और म विकल्प से होते हैं।[5] यथा—

अहिवन्नू, अहिमन्नू < अभिमन्यु —भ के स्थान पर ह, म के स्थान पर विकल्प से व, विकल्पाभाव पक्ष में म तथा संयुक्त य का लोप और न को द्वित्व, दीर्घ।

(१२१) भ्रमर शब्द में म के स्थान पर विकल्प से स आदेश होता है।[6] यथा—

भसलो, भमरो < भ्रमर —संयुक्त रेफ का लोप, म के स्थान पर विकल्प से स और रेफ के स्थान पर लत्व।

(१२२) पद के आदि में य का ज आदेश होता है।[7] यथा—

जसो < यशः—य के स्थान पर ज और तालव्य श को दन्त्य स।

जमो < यमः—य के स्थान पर ज हुआ है।

जाइ < याति —य के स्थान पर ज और त का लोप, इ स्वर शेष।

विशेष—

अवयवो < अवयव —पद के आदि में न रहने के कारण उक्त नियम चरितार्थ नहीं हुआ।

संजमो < संयम —उपसर्ग युक्त होने से अनादि य का ज हुआ है।

संजोओ < संयोगः— " " "

अवजसो < अपयशः—प का व हुआ है और य का ज तथा तालव्य श का दन्त्य स।

---

१. बिसिन्यां भः ८।१।२३८. हे०। २. कबन्धे म-यौ ८।१।२३९. हे०।
३. विषमे मो ढो वा ८।१।२४१. हे०। ४. मन्मथे वः ८।१।२४२. हे०।
५. वाभिमन्यौ ८।१।२४३. हे०। ६. भ्रमरे सो वा ८।१।२४४. हे०।
७. आदेर्यो जः ८।१।२४५. हे०।

गाढ-जोव्वणा < गाढयौवना—कच्छपतिका के नियमानुसार सामान्यतः उत्तर-पदस्थ य का भी ज होता है।

अजोग्गो < अयोग्यः— " " "

अहाजाअं < यथाजातम्—आदि य का लोप हुआ है और अ स्वर शेष है, य के स्थान पर ह तथा त का लोप और अ स्वर शेष।

(१२३) तीय एवं कृत् प्रत्ययों के यकार के स्थान में द्विरुक्त ज (ज्ज) विकल्प से आदेश होता है।[1] यथा—

दीज्जो, दीओ < द्वितीयः—तीय प्रत्यय के यकार के स्थान पर ज्ज।

उत्तरिज्जं, उत्तरीअं < उत्तरीयः—य के स्थान पर ज्ज।

करणिज्जं, करणीअं < करणीयम्—अनीय प्रत्यय के य के स्थान पर विकल्पाभाव पक्ष में य का लोप और अ स्वर शेष।

रमणीज्जं, रमणीअं < रमणीयम्— " " "

विम्हयणिज्जं, विम्हयणीअं < विस्मयनीयम्— " "

जवणिज्जं, जवणीअं < यवनीयम्— " " "

विइज्जो, बीओ < द्वितीयः—तीय प्रत्यय के य के स्थान पर ज्ज।

पेज्जा, पेआ < पेया—यत् प्रत्यय के य के स्थान पर विकल्प से ज्ज, विकल्पाभावपक्ष में य का लोप और आ स्वर शेष।

(१२४) युष्मद् शब्द के य के स्थान में त आदेश होता है।[2] जैसे—

तुम्हारिसो < युष्मादृश —य के स्थान में त तथा ष्म के स्थान में म्ह तथा दृशः के स्थान पर रिसो हुआ है।

(१२५) यष्टि शब्द में य के स्थान पर ल आदेश होता है।[3] यथा—

लट्ठी < यष्टिः—य के स्थान पर ल और ष का लोप और ट को द्वित्व तथा ट को ठ।

वेणु-लट्ठी < वेणु-यष्टि " " "

उच्छु-लट्ठी < इक्षु-यष्टिः—इक्षु के स्थान पर उच्छु तथा शेष पूर्ववत्।

महु-लट्ठी < मधु-यष्टिः—ध के स्थान पर ह, य को ल और ष का लोप, ट को द्वित्व, उत्तरवर्ती के ट स्थान पर ठ तथा दीर्घ।

---

१. वोत्तरीयानीय-तीय-कृद्ये ज्जः ८।१।२४८. हे०।

२. युष्मद्यर्थपरे तः ८।१।२४६. हे०।

३. यष्ट्यां लः ८।१।२४७.। हे०।

(१२६) छविहीन अर्थ में छाया शब्द में यकार के स्थान पर विकल्प से हकार आदेश होता है।[1] यथा—

छाहा < छाया—या के स्थान पर हा।

वच्छस्सच्छाहा < वृक्षस्य छाया—य के स्थान पर ह।

मुहच्छाया < मुखच्छाया—कान्ति अर्थ होने से छाया शब्द के य को ह नहीं हुआ।

(१२७) हरिद्रादि गण के शब्दों में असंयुक्त र के स्थान में ल आदेश होता है।[2] उदाहरण—

हलिद्दी < हरिद्रा—र के स्थान पर ल और संयुक्त रेफ का लोप तथा द को द्वित्व और आकार को ईकार।

दलिद्दाइ < दरिद्राति—र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ का लोप और द को द्वित्व तथा त का लोप और इ स्वर शेष।

दलिद्दो < दरिद्रः—र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ और य का लोप तथा द को द्वित्व।

दालिद्दं < दारिद्र्यम्—र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ और य का लोप तथा द को द्वित्व।

हलिद्दो < हरिद्रः—र को ल और संयुक्त रेफ का लोप तथा द को द्वित्व।

जहुट्ठिलो < युधिष्ठिरः—य के स्थान पर ज, ध के स्थान पर ह, ष का लोप और ठ को द्वित्व और र को ल।

सिढिलो < शिथिरः—तालव्य श को दन्त्य स, थ के स्थान पर ढ और रेफ को ल।

मुहलो < मुखरः—ख के स्थान पर ह और र को ल।

चलणो < चरणः—र के स्थान पर ल।

वलुणो < वरुणः— " "

कलुणो < करुणः— " "

इंगालो < अंगारः—अ के स्थान पर इ और र को ल।

सक्कालो < सत्कारः—संयुक्त त का लोप और क को द्वित्व तथा रेफ को ल।

सोमालो < सुकुमारः—कु का लोप, उ को गुण और र को ल।

चिलाओ < किरातः—किरात शब्द में 'किराते चः' ८।१।१८३ से क को च हुआ है, र के स्थान पर ल।

---

१. छायायां होऽकान्तौ वा ८।१।२४९। हे०। २. हरिद्रादौ लः ८।१।२५४। हे०।

फलिहा < परिखा—र के स्थान पर ल, ख के स्थान पर ह।

फलिहो < परिघः—र के स्थान पर ल और घ के स्थान पर ह।

फालिहद्दो < पारिभद्र.—र के स्थान पर ल, भ को ह और संयुक्त र का लोप तथा द को द्वित्व।

काहलो < कातरः—त को ह और र को ल हुआ है।

लुक्को < रुग्णः—र के स्थान पर ल, ग्ण को क्क हुआ है।

अयद्दालं < अपद्वारम्—अप के स्थान पर अव, व् का लोप, द को द्वित्व और र को ल।

भसलो < भ्रमरः—संयुक्त रेफ का लोप, म के स्थान पर स और र को ल।

जढलं < जठरम्—र के स्थान पर ल और ठ को ढ होता है तथा यहाँ वर्ण-विपर्यय होने से जढलं हुआ है।

वढलो < वठरः—ठ को ढ तथा र को ल हुआ है।

निट्ठुलो < निष्ठुरः—ष् का लोप, ठ को द्वित्व तथा र को ल हुआ है।

(१२८) स्थूल शब्द के लकार को र होता है।[1] यथा—

थोरं < स्थूलम्—संयुक्त स का लोप और ल के स्थान पर र।

(१२९) लाहल, लाङ्गल और लाङ्गूल शब्दों में विकल्प से ल को ण आदेश होता है।[2] यथा—

णाहलो < लाहलः—ल के स्थान पर ण होता है।

णङ्गलं < लंगलम्— " "

णाङ्गूलं < लांगूलम्— " "

(१३०) ललाट शब्द में आदि ल को ण होता है।[3] यथा—

णिडालं, णडालं < ललाटम्—ल के स्थान पर ण, ट का ड और वर्णविपर्यय।

(१३१) स्वप्न और नीवी शब्द में व को विकल्प से म होता है।[4] यथा—

सिमिणो, सिविणो < स्वप्नः।

नीमी, नीवी < नीवी।

(१३२) संस्कृत वर्णमाला के श और ष के स्थान में प्राकृत में स आदेश होता है।[5] यथा—

---

१. स्थूले लो र ८।१।२५५, हे०।

२. लाहल-लाङ्गल-लाङ्गूले वादेर्णः ८।१।२५६, हे०।

३. ललाटे च ८।१।२५७, हे०।

४. स्वप्ननीव्योर्वा ८।१।२५९, हे०।

५. श-षो: स ८।१।२६०, हे०।

कुसो <कुशः—तालव्य श के स्थान पर दन्त्य स।

सेसो <शेषः—तालव्य और मूर्धन्य दोनों के स्थान पर दन्त्य स।

सद्दो <शब्दः—तालव्य श को दन्त्य स, संयुक्त ब् का लोप और द को द्वित्व।

निसंसो <नृशंसः—नकारोत्तर ऋ को इ और तालव्य श को दन्त्य स।

वंसो <वंश.—तालव्य श को दन्त्य स।

दस <दश— ,, ,,

सोहइ <शोभते—तालव्य श को दन्त्य स, भ के स्थान पर ह और विभक्ति चिह्न इ।

सण्डो <षण्डः—मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

कसाओ <कषाय.— ,, ,,

विसेसो <विशेषः—दोनों ही श, ष को दन्त्य स।

(१३३) दशन् और पाषाण शब्दों में श और ष के स्थान पर विकल्प से ह होता है।[1] यथा—

दसमुहो, दहमुह <दशमुखः।

दहबलो, दसबलो <दशबलः।

दहरहो, दसरहो <दशरथः।

पहाणो <पाषाणः।

(१३४) अनुस्वार से पर में रहने वाले ह के स्थान में विकल्प से घ आदेश होता है।[2] यथा—

सिंघो, सीहो <सिंहः।

संघारो, संहारो <संहारः।

(१३५) व्याकरण, प्राकार और आगत शब्दों में क, ग और स्वर का विकल्प से लोप होता है।[3]

वारणं, वायरणं <व्याकरणम्—प्रथम रूप व्य का सर्वांशहारी लोप होने से बनता है और द्वितीय में अ स्वर शेष तथा इसके स्थान पर य।

पारो, पयारो <प्राकारः— ,, ,, ,,

आओ, आगओ <आगतः—प्रथम रूप ग का सर्वांशहारी लोप होने से और द्वितीय लोप न होने से बनता है।

---

१. दश-पाषाणे हः ८।१।२६२. हे०।

२. हो घोनुस्वारात् ८।१।२६४. हे०।

३. व्याकरण-प्राकारागते कगोः ८।१।२६८. हे०।

उक्का < उल्का—संयुक्तादि ल लुक् और क को द्वित्व।

वक्कलं < वल्कलम् ,, ,, ,,

सण्हं < श्लक्ष्णम्—संयुक्तान्त्य ल लुक् और द्वित्वाभाव।

विक्कवो < विक्लवः—संयुक्तान्त्य ल लुक् और क को द्वित्व।

सद्दो < शब्दः—संयुक्तादि ब लुक् और द को द्वित्व।

अद्दो < अब्दः— ,, ,,

पिक्कं < पक्वम्—संयुक्तान्त्य व लुक् और क को द्वित्व, पकारोत्तर अ को इकार।

धत्थं < ध्वस्तम्—संयुक्तान्त्य लुक्, ध को द्वित्वाभाव, स्त में संयुक्तादि स् लोप और त को द्वित्व, उत्तरवर्ती त को थ।

अक्को < अर्कः—रेफ का लोप और क को द्वित्व।

वग्गो < वर्गः—संयुक्तादि र लुक् और ग को द्वित्व।

चग्गं < चर्गम्—संयुक्तादि र लुक् और ग को द्वित्व।

गहो < ग्रहः—संयुक्तान्त्य र लुक् और द्वित्वाभाव।

रत्ती < रात्रिः—संयुक्तान्त्य र् लुक् और त को द्वित्व।

चंदो, चंद्रो < चन्द्रः—संयुक्तान्त्य रेफ का लोप और द्वित्वाभाव; मतान्तर से

अप्पज्जो, अप्पण्णू < अल्पज्ञ —संयुक्तादि ल लुक्, प द्वित्व, ज्ञ के ञ का लोप और ज द्वित्व; ञ् लोपाभावपक्ष में ण द्वित्व और अकार को ऊकार।

अहिज्जो, अहिण्णू < अभिज्ञः—भ को ह, ञ् लोप, ज को द्वित्व, विकल्पाभाव पक्ष में ण को द्वित्व, अकार को ऊकार।

जाणं, णाणं < ज्ञानम्—ञ लोप और ज शेष, नकार को णत्व, विकल्पाभाव में ज्ञ के स्थान पर ण।

दइवज्जो, दइवण्णू < दैवज्ञः—ऐ के स्थान पर अइ, ञ लोप और ज को द्वित्व।

इंगिअज्जो, इंगिअण्णू < इंगितज्ञः—त लोप और अ स्वर शेष, ञ लोप, ज द्वित्व।

मणोज्जं, मणोण्णं < मनोज्ञम्—ञ् लोप और ज को द्वित्व।

पज्जा, पण्णा < प्रज्ञा—ञ लोप, ज को द्वित्व, विकल्पाभाव पक्ष में ज लोप और ण को द्वित्व।

अज्जा, अण्णा < आज्ञा— ,, ,,

संजा, सण्णा < संज्ञा—ञ लोप और ज शेष, स्वर से पर न होने से द्वित्वाभाव; विकल्पाभाव पक्ष में ज लोप और अवशेष ण को द्वित्व।

(१४२) वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ वर्णों के द्वित्व होने पर द्वितीय वर्ण के पूर्व उसी वर्ग के प्रथम और तृतीय अक्षर हो जाते हैं।[1] यथा—

वक्खाणं < व्याख्यानम्—य लोप, शेष ख को द्वित्व तथा पूर्ववर्ती ख को क।

अग्घो < अर्घः—संयुक्त रेफ का लोप, घ को द्वित्व और पूर्ववर्ती घ को ग।

(१४३) दीर्घ स्वर एवं अनुस्वार से पर में रहनेवाले संयुक्त शेष व्यञ्जन का द्वित्व नहीं होता।[2] जैसे—

ईसरो < ईश्वरः—संयुक्तान्त्य व का लोप और पूर्ववर्ती दीर्घ स्वर होने से स को द्वित्व का अभाव।

लासं < लास्यम्—संयुक्तान्त्य य का लोप, पूर्व में दीर्घ स्वर होने से द्वित्वाभाव।

संकंतो < संक्रान्तः—संयुक्तान्त्य र का लोप, पूर्व में अनुस्वार रहने से द्वित्वाभाव।

संझा < सन्ध्या—संयुक्तान्त्य य का लोप,

---

१. द्वितीय तुर्ययोरुपरि पूर्वः ८।२।९०. हे०।

२. न दीर्घानुस्वारात् ८।२।९२. हे०।

(१४४) रेफ और हकार को द्वित्व नहीं होता है।[1] यथा—

सुंदेरं < सौन्दर्यम्—संयुक्तादि य का लोप होने पर रेफ को द्वित्व नहीं हुआ।

बम्हचेरं < ब्रह्मचर्यम्— " " "

धीरं < धैर्यम्— " " "

विहलो < विह्वलः—संयुक्तान्त्य व का लोप और ह को द्वित्वाभाव।

कहावणो < कार्षापणः—संयुक्तादि रेफ का लोप, ष के स्थान पर ह और ह को द्वित्वाभाव तथा प को व।

(१४५) समासान्त पदों में पूर्वोक्त नियम की प्रवृत्ति विकल्प से होती है।[2] यथा—

नइ-ग्गामो, नइ-गामो < नदी-ग्रामः—द लोप, ई स्वर शेष, संयुक्तान्त्य रेफ का लोप और विकल्प से ग को द्वित्व।

कुसुमप्पयरो, कुसुम-पयरो < कुसुम प्रकरः—रेफ का लुक् होने पर प को विकल्प से द्वित्व।

देव-त्थुई, देव-थुई < देव-स्तुतिः—स लोप, त को विकल्प से द्वित्व, द्वितीय त के स्थान पर थ।

तेल्लोकं, तेलोकं < त्रैलोक्यम्—र लोप, ल को विकल्प से द्वित्व।

आणालक्खम्भो, आणाल-खम्भो < आलानस्तम्भः—समास होने से विकल्प से द्वित्व एवं वर्णव्यत्यय।

मलय-सिहरक्खण्डं, मलय-सिहर-खण्डं < मलयशिखरखण्डम्—समास में विकल्प से ख को द्वित्व।

पम्मुकं, पमुकं < प्रमुक्तम्—समास होने से म को विकल्प से द्वित्व हुआ है।

(१४६) तैलादिगण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों के निर्णयानुसार कहीं अनन्त्य और अन्त्य व्यञ्जनों को द्वित्व होता है।[3] उदाहरण—

तेल्लं[4] < तैलम्—अन्त्य व्यञ्जन ल को द्वित्व।

---

१. र-होः ८।२।९३. हे०।

२. समासे वा ८।२।९७. हे०।

३. तैलादौ ८।२।९८. हे०।

४. प्राकृत प्रकाश में तैलादिगण के बदले नीडादि गण का उल्लेख मिलता है। 'नीडादिषु' ३।५२ में इस गण के शब्दों का नियमन किया है। 'कल्पलतिका' में नीडादिगण के शब्द निम्न बतलाये गये हैं—

नीडव्याहृतमण्डूकस्रोतांसि प्रेमयौवने।
ऋजुः स्थूलं तथा तैलं त्रैलोक्यं च गणो यथा॥

मंडुक्को < मंडूकः—अन्त्य व्यञ्जन क को द्वित्व।

उज्जू < ऋजु—अन्त्य व्यञ्जन ज को द्वित्व।

सोत्तम् < स्रोतम्—अन्त्य व्यञ्जन त को द्वित्व।

पेम्मं < प्रेमम्—अन्त्य व्यञ्जन म को द्वित्व।

विड्डा < व्रीडा—अन्त्य व्यञ्जन ड को द्वित्व।

जोव्वणं < यौवनम्—अनन्त्य—मध्य व्यञ्जन व को द्वित्व।

बहुत्तं < बहुत्वम्—अन्त्य व्यञ्जन त को द्वित्व।

(१४६) सेवादिगण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों के मतानुसार कहीं अन्त्य और कहीं अनन्त्य व्यञ्जनों को विकल्प से द्वित्व होता है।[1]

उदाहरण—

सेव्वा < सेवा—अन्त्य व्यञ्जन व को द्वित्व।

विहित्तो, विहिओ < विहित.—अन्त्य व्यञ्जन त को विकल्प से द्वित्व। विकल्पाभाव में त लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

कोउहल्लं, कोउहलं < कौतूहलम्—अन्त्य व्यञ्जन ल को द्वित्व।

वाउल्लो, वाउलो < व्याकुलः—संयुक्तान्त्य य का लोप, क का लोप, उ स्वर शेष और विकल्प से ल को द्वित्व।

नेड्डं, नीडं, नेडं < नीडम्—अन्त्य व्यञ्जन ड को विकल्प से द्वित्व।

नक्खा, नहा < नखाः—अन्त्य व्यञ्जन ख को विकल्प से द्वित्व।

माउक्कं, माउअं < मृदुकम्—ऋ को आ, द् का लोप, शेष ऋ के स्थान पर उत्व और विकल्प से क को द्वित्व।

एक्को, एओ < एकः—अन्त्य व्यञ्जन क को द्वित्व, विकल्पाभावपक्ष में क का लोप अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

थुल्लो, थोरो < स्थूलः—संयुक्तादि स् का लोप, ल को द्वित्व।

हुत्तं- हूअं < हुतम्—त को द्वित्व, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप, अ स्वर शेष।

---

१. सेवादौ वा ८।२।९९ हे०। सेवादि गण मे निम्न शब्द परिगणित हैं—

सेवा कौतूहलं दैवं विहितं मखजानुनी।
पिवादयः नखा शब्दा एतादाद्या मयार्थका ॥
त्रैलोक्यं कर्णिकारश्च वेश्या मूर्जश्च दुःखितम्।
रात्रिविश्वासनिश्वासा मनोऽस्तेश्वररश्मयः ॥
दीर्घेक शिवतूष्णीर मित्रपुण्यादिदुर्लभाः।
दुष्करोनिष्कृप.नर्मकरेश्वासपरस्परम्।
नायकाद्यास्तथा शब्दा. सेवादिगणसम्मताः ॥ कल्पलतिका ॥

दइव्वं, दइवं < दैवम्—अन्त्य व्यञ्जन व को विकल्प से द्वित्व।

तुण्हिक्को, तुण्हिओ < तूष्णीकः—ष्ण के स्थान पर ण्ह और अन्त्य व्यञ्जन क को विकल्प से द्वित्व।

मुक्को, मूओ < मूकः—अन्त्य व्यञ्जन क को विकल्प से द्वित्व, द्वित्वाभाव में क का लोप और अ स्वर शेष।

थण्णू, थाणू < स्थाणुः—स्था के स्थान पर थ तथा अन्त्य व्यंजन को द्वित्व।

थिण्णं, थीणं < स्त्यानम्—स्त्या के स्थान पर थी, अन्त्य व्यंजन ण को द्वित्व।

अम्हक्केरं, अम्हकेरं < अस्मदीयम्—अन्त्य व्यंजन क को विकल्प से द्वित्व।

तं च्चेअ, तं चेअ < तं चैव—अनन्त्य-आदि व्यंजन च को द्वित्व, व का लोप और अ स्वर शेष।

सो च्चिअ, सो चिअ < सो चेव " " "

(१४७) क्ष के स्थान पर ख आदेश होता है, किन्तु कुछ स्थानों में छ और झ भी आदेश होते हैं।[1] यथा—

खओ < क्षयः—क्ष के स्थान पर ख, य लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

लक्खणं < लक्षणम्—क्ष के स्थान पर ख, ख को द्वित्व और पूर्व के ख को क।

खीणं, छीणं < क्षीणम्—क्ष के स्थान पर ख होने से खीणं, छ होने से छीणं और झ होने से झीणं रूप बनता है।

झिज्जइ < क्षीयते—क्ष के स्थान पर झ, त लोप और य का ज तथा द्वित्व।

(१४८) अक्ष्यादि गण के शब्दों में क्ष के स्थान पर ख न होकर छ आदेश होता है। आदि में क्ष का छ और मध्य या अन्त्य क्ष के स्थान में च्छ होता है।[1] यथा—

अच्छी < अक्षि—क्ष के स्थान पर च्छ आदेश हुआ है।

उच्छू < इक्षुः—इ के स्थान पर उ और क्ष के स्थान पर च्छ हुआ है तथा दीर्घ।

मच्छिआ < मक्षिका—क्ष के स्थान पर च्छ और क लोप तथा आ स्वर शेष।

सरिच्छो < सदृक्षः—द् लोप और ऋ के स्थान पर रि तथा क्ष को च्छ हुआ है।

छेत्तं < क्षेत्रम्—क्ष को छ तथा त्र में से र लोप और त को द्वित्व।

छुहा < क्षुधा—क्ष को छ और ध को ह हुआ है।

दच्छो < दक्षः—क्ष को च्छ हुआ है।

कुच्छी < कुक्षिः— " "

वच्छं < वक्षम्— " "

छुण्णो < क्षुण्ण,—क्ष के स्थान पर छ हुआ है।

कच्छा < कक्षा—क्ष के स्थान पर च्छ हुआ है।

छारो < क्षार —क्ष के स्थान पर छ हुआ है।

कुच्छेअयं < कौक्षेयकं—क्ष के स्थान पर च्छ और य लोप तथा अ स्वर शेष।

छुरो < क्षुर.—क्ष को छ हुआ है।

उच्छा < उक्षन्—क्ष को च्छ हुआ है।

छयं < क्षतम्—क्ष को छ हुआ है।

सारिच्छं < सादृश्यम्—क्ष के स्थान पर च्छ।

(१४९) उत्सव अर्थ के वाचक छ शब्द में क्ष के स्थान पर छ आदेश होता है।[1] यथा—

छणो < क्षणः—उत्सव अर्थ होने से क्ष के स्थान पर छ हुआ है।

खणो < क्षणः—समय वाचक होने से क्ष के स्थान ख हुआ है।

(१५०) पृथ्वी अर्थ होने पर क्षमा शब्द मे क्ष के स्थान पर छ आदेश होता है।[2] यथा—

छमा < क्षमा—पृथ्वी अर्थ होने से क्ष के स्थान पर छ।

खमा < क्षमा—माफी माँगना अर्थ होने से क्ष के स्थान में ख।

(१५१) ऋक्ष शब्द में क्ष के स्थान पर छ विकल्प से होता है।[3] यथा—

रिच्छं, रिक्खं < ऋक्षम्—ऋ के स्थान पर रि, क्ष के स्थान पर च्छ तथा विकल्पाभाव पक्ष मे क्ख हुआ है।

(१५२) संयुक्त क्म और ड्म के स्थान में प आदेश होता है।[4] यथा—

रुप्पं, रुप्पिणी < रुक्मम् , रुक्मिणी—क्म के स्थान पर प्प आदेश हुआ है।

कुप्पलं < कुड्मलम्—ड्म के स्थान पर प्प आदेश हुआ है।

---

१. क्षणः उत्सवे ८।२।२०. हे०। २. क्षमायां कौ ८।२।१८. हे०।

३. ऋक्षे वा ८।२।१९. हे०। ४. ड्मक्मोः ८।२।५२. हे०।

(१५३) ष्क और स्क के स्थान में ख आदेश होता है, यदि उन संयुक्ताक्षरों से घटित शब्द द्वारा किसी संज्ञा की प्रतीति होती हो।[1] यथा—

पोक्खरं < पुष्करम्—ष्क के स्थान पर क्ख हुआ है।

पोक्खरिणी < पुष्करिणी ,, ,,

खंधो < स्कन्धः—स्क के स्थान पर ख।

खंधावारो < स्कन्धावारः—स्क के स्थान पर ख।

अवक्खंदो < अवस्कन्दः—स्क के स्थान पर क्ख हुआ है।

दुक्करं < दुष्करम्—संज्ञा न होने से ष्क के स्थान पर ख आदेश नहीं हुआ, किन्तु संयुक्त ष का लोप और क को द्वित्व।

निक्कामं < निष्कामम्— ,, ,, ,,

सक्कयं < संस्कृतम्—संज्ञा न होने से स्कृ के स्थान पर क्ख नहीं हुआ, किन्तु स् का लोप और कृ को द्वित्व।

निक्कंपं < निष्कम्पम्—ष्क के स्थान पर ख नहीं हुआ किन्तु ष् लोप, क को द्वित्व।

निक्कओ < निष्कृत—ष्कृ के स्थान पर क्ख नहीं हुआ, किन्तु ष् का लोप, क को द्वित्व, ऋ का अ।

नमोक्कारो < नमस्कारः—स्क को क, अ को ओ, स लोप और क को द्वित्व।

सक्कारो < सत्कारः—त् लोप और क को द्वित्व।

तक्करो < तस्करः—स्क के स्थान पर ख नहीं, स लोप और क को द्वित्व।

(१५४) उष्ट्र, इष्ट और संदष्ट शब्द के ष्ट को छोड़कर अन्य ष्ट के स्थान में ठ आदेश होता है।[2] यथा—

छट्ठी < षष्ठि—ष के स्थान पर छ और ष्ठ के स्थान पर ठ तथा द्वित्व, पूर्व ठ के स्थान पर ट एवं इकार को दीर्घ।

मुट्ठी < मुष्टि—ष्ट के स्थान पर ट्ठ और इकार को दीर्घ।

दिट्ठी < दृष्टिः—दृ में रहनेवाले ऋ के स्थान पर इकार; ष्ट के स्थान में ट्ठ और इकार को दीर्घ।

सिट्ठी < श्रेष्टि—संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श के स्थान पर दन्त्य स, एकार को इकार तथा ष्ट को ट्ठ और इकार को दीर्घ।

---

१. ष्क-स्कयोर्नाम्नि ८।२।४. हे०।

२. ष्टस्यानुष्ट्रेष्टासंदष्टे ८।२।३४—हे०

पुट्ठो < पृष्ठः—पृ में रहनेवाली ऋ के स्थान पर उकार और ष्ठ के स्थान पर ट्ठ, विसर्ग को ओत्व ।

कट्ठं < कष्टम्—ष्ट के स्थान पर ट्ठ ।

सुरट्ठो < सुराष्ट्रः—रा को ह्रस्व, ष्ट के स्थान पर ट्ठ, रेफ का लोप और विसर्ग को ओत्व ।

इट्ठो < इष्टः—ष्ट को ट्ठ, विसर्ग को ओत्व ।

अणिट्ठं < अनिष्टम्—न को ण, ष्ट के स्थान पर ट्ठ ।

उट्टो < उष्ट्रः—ष्ट के ष् का लोप और ट को द्वित्व ।

संदट्टो < संदष्टः—द में रहनेवाली ऋ के स्थान पर अ, ष् का लोप और ट को द्वित्व ।

(१९५) चैत्य शब्द के त्य को छोड़कर अन्य त्य के स्थान में च आदेश होता है।[1] जैसे—

सच्चं < सत्यम् – त्य के स्थान पर च्च हुआ है ।

पच्चओ < प्रत्ययः—त्य के स्थान पर च्च और य लोप और अ स्वर शेष, ओत्व ।

णिच्चं, निच्चं < नित्यम्—न के स्थान पर वैकल्पिक ण और त्य को च्च ।

पच्चच्छं < प्रत्यक्षम्—त्य को च्च और क्ष के स्थान पर च्छ ।

(१९६) प्रत्यूष शब्द में त्य को च और ष को विकल्प से ह होता है ।[2] जैसे—

पच्चूहो, पच्चूसो < प्रत्यूषः—त्य को च्च और ष को ह ।

(१९७) कुछ स्थलों में त्व, थ्व, द्व और ध्व के स्थान में क्रमशः च, छ, ज और झ आदेश होते हैं ।[3] यथा—

भोच्चा < भुक्त्वा—त्व के स्थान पर च्च और क का लोप ।

णच्चा < ज्ञात्वा—त्व के स्थान पर च्च ।

सोच्चा < श्रुत्वा —रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, उकार को ओत्व और त्व को च्च ।

पिच्छी < पृथ्वी—थ्व को च्छ हुआ है और पृ की ऋ को इकार ।

विज्जं < विद्वान्—द्वा के स्थान पर ज्ज और न को अनुस्वार ।

बुज्झा < बुद्ध्वा—ध्व के स्थान पर ज्झ हुआ है ।

---

१. त्यो चैत्ये ८।२।१३. हे० ।

२. प्रत्यूषे षश्च हो वा ८।२।१४. हे० ।

३. त्व थ्व द्व-ध्वां च-छ-ज-झाः क्वचित् ८।२।१५. हे० ।

जज्जो < जय्य:—य्य के स्थान पर ज्ज।
सेज्जा < शय्या— „ „
भज्जा < भार्य्या—र्य्या के स्थान पर ज्ज।
कज्जं < कार्य्यम्— „ „
वज्जं < वर्य्यम्—र्य्य के स्थान में ज्ज।
पज्जाओ < पर्य्याय— „
पज्जन्तं < पर्यन्तम्— „

विशेष—शौरसेनी में र्य्य के स्थान पर य्य भी पाया जाता है।

(१६१) ध्य के स्थान में झ एवं म्न और ज्ञ के स्थान में ण आदेश होते हैं।[1] यथा—

झाणं < ध्यानम्—ध्य के स्थान पर झ आदेश
उवज्झाओ < उपाध्याय:—प का व, ध्य का झ, य लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।
सज्झाओ < स्वाध्याय—ध्य के स्थान पर ज्झ।
मज्झं < मध्यं— „ „
अज्झाओ < अध्याय:— „ „ तथा य लोप अ स्वर शेष और ओत्व।
णिण्णं < निम्नम्—म्न के स्थान पर ण्ण।
पज्जुण्णो < प्रद्युम्न—प्र के स्थान पर प, द्यु के स्थान पर ज्जु और म्न के स्थान पर ण्णो।
णाणं < ज्ञानम्—ज्ञ के स्थान पर ण्ण आदेश।
संण्णा < संज्ञा— „ „
पण्णा < प्रज्ञा— „ „
विण्णाणं < विज्ञानम्— „ „ और न के स्थान पर ण।

(१६२) समस्त और स्तम्ब शब्द के स्त को छोड़कर अन्य स्त के स्थान में थ आदेश होता है[2]। यथा—

हत्थो < हस्त:—स्त के स्थान पर त्थ आदेश हुआ है।
थोत्तं < स्तोत्रम्—स्तो के स्थान पर थ तथा त्र में संयुक्त त + र में से र का लोप और त को द्वित्व।

---

१. साध्वस ध्य-ह्यां झः ८।२।२६. हे० तथा म्नज्ञोर्णः ८।२।४२. हे०।
२. स्तस्य थोऽसमस्त-स्तम्बे ८।२।४५. हे०।

पुव्वण्हो < पूर्वाह्ण—संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व, ह्ण के स्थान में ण्ह।
अवरण्हो < अपराह्ण—अप के स्थान पर अव और ह्ण के स्थान में ण्ह।

(१६६) संयुक्त श्म, ष्म, स्म और ह्म के स्थान में म्ह आदेश होता।[1]
उदाहरण—

कम्हारो < काश्मीरः—श्म के स्थान पर म्ह आदेश और ईकार का आकार।
पम्हाइं < पक्ष्म—क्ष्मन् में से संयुक्त क् का लोप और ष्म के स्थान पर म्ह।
कुम्हाणो < कुश्मानः—श्म के स्थान पर म्ह और न को णत्व।
कम्हारा < कश्मीराः—श्म के स्थान पर म्ह और ईकार के स्थान पर आकार।
गिम्हो < ग्रीष्मः—ष्म के स्थान पर म्ह और विसर्ग को ओत्व।
उम्हा < ऊष्मा—ऊकार को उ और ष्म के स्थान पर म्ह।
अम्हारिसो < अस्मादृश —स्म के स्थान पर म्ह और दृशः के स्थान पर रिसो।
विम्हओ < विस्मयः—स्म के स्थान पर म्ह और म लोप, अ स्वर शेष और ओत्व।

बम्हा < ब्रह्मा—संयुक्त रेफ का लोप, ह्म के स्थान पर म्ह आदेश।
सुम्हा < सुह्मा—ह्म के स्थान में म्ह आदेश।
बंभणो, बम्हणो < ब्राह्मण —संयुक्त रेफ का लोप, ह्म के स्थान में म्ह और विकल्पाभाव में बंभ होता है।
बंभचेरं, बम्हचेरं < ब्रह्मचर्यम्—ह्म के स्थान पर म्ह तथा चर्यम् का चेरं।
रस्सी < रश्मिः—उक्त नियम लागू न होने से म लोप और स को द्वित्व।
सरो < स्मर —उक्त नियम लागू न होने से म लोप।

(१६७) संयुक्त ह्य के स्थान पर झ आदेश होता है।[2] यथा—

सज्झो < सह्यः—ह्य के स्थान पर झ।
मज्झं < मह्यम्— ,, ,,
गुज्झं < गुह्यम्— ,, ,,

(१६८) संयुक्त ह्ल के स्थान में ल्ह आदेश होता है।[3] जैसे—

कल्हारं < कह्लारम्—संयुक्त ह्ल के स्थान में ल्ह आदेश।
पल्हाओ < प्रह्लादः—संयुक्त रेफ का लोप, ह्ल के स्थान में ल्ह और द का लोप, अ स्वर शेष तथा ओत्व।

---

१. पक्ष्म-श्म-ष्म-स्म ह्मां म्हः ८।२।७४. हे०।
२. ह्ये ह्यो. ८।२।१२४. हे०। ३. ह्लो ल्हः ८।२।७६. हे०।

थोअं < स्तोकम्—स्तो के स्थान पर थो, क लोप और अ स्वर शेष।

पत्थरो < प्रस्तरः—स्त के स्थान पर त्थ, विसर्ग को ओत्व।

थुई < स्तुतिः—स्तु के स्थान पर थु और त का लोप, इकार को दीर्घ।

समत्तं < समस्तम्—स्त संयुक्त में से आदि वर्ण स् का लोप और त् को द्वित्व।

तंबो < स्तम्बः—आदि संयुक्त स् का लोप, म् को अनुस्वार और विसर्ग को ओत्व।

(१६३) संयुक्त न्म के स्थान में म आदेश होता है।[1] तथा—

जम्मो < जन्म—न्म को म्म आदेश।

मम्महो < मन्मथः—न्म के स्थान पर म्म और थ के स्थान पर ह, विसर्ग को ओत्व।

(१६४) ष्प और स्प के स्थान में फ आदेश होता है।[2] जैसे—

पुप्फं < पुष्पम्—ष्प के स्थान पर प्फ आदेश।

सप्फं < शष्पम्— ,, ,,

निप्फेसो < निष्पेषः ,, ,,

फंदणं < स्पन्दनम्—स्प के स्थान में फ आदेश और न को णत्व।

पडिप्फद्धी < प्रतिस्पर्धी—स्प के स्थान पर प्फ, संयुक्त रेफ का लोप। प्रति को पडि।

फंसो < स्पर्शः—स्प के स्थान पर फ, संयुक्त रेफ का लोप, ओत्व और अकारण अनुस्वार।

(१६५) संयुक्त श्न, ष्ण, स्न, ह्न, और सूक्ष्म शब्द के क्ष्म के स्थान में ण्ह आदेश होता है।[3] उदाहरण—

विण्हू < विष्णुः—ष्ण के स्थान पर ण्ह तथा उकार को दीर्घ।

कण्हो < कृष्णः—कृ में रहनेवाली ऋ के स्थान पर अ और ष्ण को ण्ह।

उण्हीसं < उष्णीषम्—ष्ण के स्थान में ण्ह, मूर्धन्य ष को सत्व।

जोण्हा < ज्योत्स्ना—संयुक्तान्त्य य का लोप और त्स्ना के स्थान पर ण्हा।

ण्हाऊ < स्नायुः—स्न के स्थान पर ण्ह, यकार का लोप और ऊ स्वर शेष तथा दीर्घ।

ण्हाणं < स्नानम्—स्न के स्थान में ण्ह और न को णत्व।

वण्ही < वह्निः—ह्न के स्थान में ण्ह तथा ह्रस्व इकार को दीर्घ।

जण्हू < जह्नुः— ,, ,, तथा ह्रस्व उकार को दीर्घ।

---

१. न्मो मः ८।२।६१. हे०। २. ष्प-स्पयोः फः ८।२।५३. हे०।

३. सूक्ष्म-श्न-ष्ण-स्न-ह्न-ह्ण-क्ष्णां ण्हः ८।२।७५. हे०।

सुवे कअं < श्वः कृतम्—श् और व् का पृथक्करण, श को स, उत्व।

सुवे जना < स्वे जनाः—स् और व् का पृथक्करण एवं उत्व।

(१६२) ज्या शब्द में पृथक्करण और अन्त्य व्यंजन से पूर्व ईकार होता है।[1] यथा—

जीआ < ज्या—ज और या का पृथक्करण, ईत्व और य लोप तथा आ स्वर शेष।

---

१. ज्यायामीत् ८।२।११५ हे०।

चौथा अध्याय

वर्ण-परिवर्तन

वर्ण विकृति अध्याय में वर्ण परिवर्तन (स्वर और व्यंजनों का परिवर्तन) दिखलाया गया है, पर वह इतना वैयक्तिक और शास्त्रीय है, जिससे प्राकृतभाषा की शब्दावली को अवगत करने में जिज्ञासुओं को आयास करना होगा। अतः इस अध्याय में सरलता-पूर्वक ध्वनि-परिवर्तन के नियमों का सोदाहरण विवेचन किया जायगा। तथ्य यह है कि संस्कृत ध्वनियों में परिवर्तन कर प्राकृत शब्द गढ़े जाते हैं। अतः प्राकृत भाषा के वैयाकरणों ने प्राकृत की शब्दावली संस्कृत को प्रकृति—मूल शब्द मानकर सिद्ध की है।

स्वर-परिवर्तन

(१) संस्कृत की अ ध्वनि प्राकृत में आ, इ, ई, उ, ए, ओ, अइ और आइ में परिवर्तित हो जाती है। उदाहरण—

(क) अ = आ—संस्कृत की अ ध्वनि का विकल्प से आ में परिवर्तन।

आहिआई, अहिआई <अभियाति—अ को विकल्प से दीर्घ, मध्य और अन्त्य य तथा त का लोप, अ और इ स्वर शेष, दीर्घ।

आफंसो, अफंसो <अस्पर्शः—अ को विकल्प से दीर्घ, संयुक्त स का लोप, प को फ, संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

चाउरंतं, चउरंतं <चतुरन्तम्—चकारोत्तर अ को दीर्घ, त लोप, उ शेष।

दाहिणो, दक्खिणो <दक्षिणः—दकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, क्ष को विकल्प से ह, विकल्पाभावपक्ष में क्ख।

पारकेरं, परकेरं <परकीयम्—पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, कीयं के स्थान पर केरं।

पारक्कं परक्कं <परकीयम्—पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, कीयं को क्कं।

पुणा, पुण <पुनः—न को ण एवं विकल्प से दीर्घ।

पायडं पयडं <प्रकटम्—प्र के संयुक्त र का लोप, पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, क लोप, अस्वर और य श्रुति, ट को ड।

पाडिवआ, पडिवआ <प्रतिपत्—प्र के संयुक्त र का लोप, पकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, प का व और त् का आ।

पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी < प्रतिसिद्धिः—प्र के संयुक्त रेफ का लोप और अ को विकल्प से दीर्घ, अन्तिम इकार को दीर्घ।

पाडिफद्दी, पडिफद्दी < प्रतिस्पर्धी—प्र के संयुक्त रेफ का लोप, अ को विकल्प से दीर्घ, स लोप और प को फ तथा संयुक्त रेफ का लोप, ध को द्वित्व और पूर्व को द।

पावयणं, पवयणं < प्रवचनम्—प्र के संयुक्त रेफ का लोप, अ को विकल्प से दीर्घ, च लोप और स्वर को य श्रुति, न को ण।

पारोहो, परोहो < प्ररोहः—प्र के संयुक्त रेफ का लोप और अ को विकल्प से दीर्घ।

पावासू, पवासू < प्रवासी— ,, ,, ,,

पासिद्धी, पसिद्धी < प्रसिद्धिः— ,, ,, ,,

पासुत्तो पसुत्तो < प्रसुप्तः— ,, ,, ,, संयुक्त प लोप और त को द्वित्व।

माणंसी, मणंसी < मनस्वी—मकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, न को ण, अनुस्वार और संयुक्त व का लोप।

माणंसिणी, मणंसिणी < मनस्विनी ,, ,, ,,

सामिद्धी, समिद्धी < समृद्धिः—सकारोत्तर अ को विकल्प से दीर्घ, मकारोत्तर ऋ को इ और इकार को ईकार।

सारिच्छो, सरिच्छो < सदृक्षः—सकारोत्तर अ को दीर्घ और दृक्षः के स्थान पर रिच्छो।

(ख) अ = इ संस्कृत की अ ध्वनि का इ में परिवर्तन।

इसि < ईषत्—दीर्घ ईकार को ह्रस्व इकार, षकारोत्तर अ को इकार और अन्तिम हलन्त्य व्यंजन त् का लोप।

उत्तिमो < उत्तमः—तकारोत्तर अकार को इकार और विसर्ग का ओत्व।

कइमो < कतमः—तकारोत्तर अकार को इकार और विसर्ग को ओत्व।

किविणो < कृपणः—कृ में रहनेवाली ऋ को इ, प को व और अकार को इकार, विसर्ग को ओत्व।

दिण्णं < दत्तं—दकारोत्तर अकार को इत्व तथा त्त के स्थान पर ण्णं।

मिरिअं < मरिचम्—मकारोत्तर अकार को इकार, च का लोप और अ स्वर शेष।

मज्झिमो < मध्यमः—संयुक्त य का लोप, ध के स्थान पर झ, द्वित्व और पूर्ववर्ती झ को ज् तथा अ को इकार।

मुइंगो < मृदङ्गः—मृ में रहनेवाली ऋ के स्थान पर उ, द लोप और अ स्वर के स्थान पर इत्व।

चेडिसो < चेतसः—त को ड और अकार के स्थान पर इत्व।

विअणं < व्यजनम्—संयुक्त य का लोप और अ को इत्व, ज लोप तथा अ स्वर शेष।

विलीअं < व्यलीकम्—संयुक्त य का लोप और अ को इत्व, क लोप और अ स्वर शेष।

सिविणो < स्वप्नः—स्व का पृथक्करण, अ को इत्व तथा न को णत्व, विसर्ग का ओत्व।

इंगारो, अंगारो < अङ्गार—विकल्प से अ के स्थान पर इत्व।

पिक्कं, पक्कं < पक्वम्—पकारोत्तर अकार को विकल्प से इत्व, संयुक्त व का लोप और क को द्वित्व।

णिडालं, णडालं < ललाटम्—लकारोत्तर अ को विकल्प से इत्व, ट को ड।

छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो < सप्तपर्णः—सप्त के स्थान पर छत्त, अकार को इत्व, प को व तथा संयुक्त रेफ का लोप, ण को द्वित्व एवं विसर्ग का ओत्व।

(ग) अ = ई—शब्द के आदि में रहनेवाली संस्कृत की अ ध्वनि ई में परिवर्तित हो जाती है।

हीरो, हरो < हरः—हकारोत्तर अकार को ईत्व।

(घ) अ = उ—संस्कृत की अ ध्वनि का उ ध्वनि में परिवर्तन अर्थात् संप्रसारण।

गउओ < गवय—वकारोत्तर अ के स्थान पर उ और य लोप, अ शेष, विसर्ग को ओत्व।

गउआ < गवयाः—वकारोत्तर अ के स्थान पर उ, य लोप और स्वर शेष, स्त्रीलिंग।

झुणी < ध्वनिः—संयुक्त व का लोप, ध को झ, अकार को उत्व, न को ण।

वीसुं < विष्वक्—संयुक्त व लोप, अ को उत्व।

तुरिअं < त्वरितम्—संयुक्त व लोप, अ को उत्व।

सुअइ, सुवइ < स्वपिति—संयुक्त व लोप, अ को उत्व।

खुडिओ, खंडिओ < खण्डितः—विकल्प से खकारोत्तर अकार को उ, त लोप और अ स्वर शेष।

चुडं, चंडं < चण्डम्—चकारोत्तर अकार को वैकल्पिक उ।

पुढम, पढुमं, पुढुमं, पढमं < प्रथमम्—विकल्प से पकारोत्तर अकार को उ थकारोत्तर अकार को क्रमशः दोनों अकार को उ तथा थ के स्थान पर ढ।

(ङ) अ = ऊ—संस्कृत की अ ध्वनि का ऊ में परिवर्तन।

अहिण्णू < अभिज्ञ—भ के स्थान पर ह, ज्ञ के स्थान पर ण्णू तथा अ का ऊ।

आगमण्णु < आगमज्ञः—ज्ञ के स्थान पर ण्णु और अ को उत्व।

कयण्णू < कृतज्ञः—त का लोप, ज्ञ के स्थान पर ण और अ को उत्व।

विण्णू < विज्ञ.—ज्ञ को ण्ण और अ को उत्व।

सव्वण्णू < सर्वज्ञः—संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व, ज्ञ को ण्ण तथा अ को उत्व।

(च) अ = ए—संस्कृत की अ ध्वनि का प्राकृत में एकार परिवर्तन होता है।

एत्थ < अत्र—अ के स्थान पर ए, त्र के स्थान पर त्थ।

अंतेउरं < अन्त.पुरम्—तकारोत्तर अकार को एकार, पकार का लोप और उ स्वर शेष।

अंतेआरी < अन्तरचारी—तकारोत्तर अकार को एकार, चकार लोप और आ स्वर शेष।

गेंदुअं < कन्दुकम्—क के स्थान पर ग तथा अकार को एकार और क लोप, अ स्वर शेष।

बम्हचेरं < ब्रह्मचर्यम्—संयुक्त रेफ का लोप, ह्म के स्थान पर म्ह, चकारोत्तर अकार को एकार, संयुक्त य का लोप।

सेज्जा < शय्या—तालव्य श को दन्त्य स, अकार को एकार और य को ज।

सुंदेरं < सौन्दर्यम्—सकारोत्तर औकार को उकार, दकारोत्तर अ को एकार और संयुक्त य का लोप।

अच्छेरं, अच्छरिअं < आश्चर्यम्—श्च के स्थान पर च्छ तथा विकल्प से अकार को एकार।

उक्केरो, उक्करो < उत्करः—संयुक्त त का लोप, क को द्वित्व और ककारोत्तर अकार को एकार।

पेरंतो, पज्जंतो < पर्यन्तः—पकारोत्तर अकार को विकल्प से एकार, विकल्पाभाव में र्य के स्थान पर ज्ज।

वेल्ली, वल्ली < वल्ली—वकारोत्तर अकार को विकल्प से एकार।

(छ) अ = ओ—संस्कृत की अ ध्वनि प्राकृत में ओ रूप में परिवर्तित होती है।

नमोक्कारो < नमस्कारः—मकारोत्तर अकार को ओकार, संयुक्त स का लोप और क को द्वित्व।

परोप्परं < परस्परम्—रकारोत्तर अकार को ओकार, संयुक्त स का लोप और प को द्वित्व।

ओप्पेइ, अप्पेइ < अर्पयति—अ को विकल्प से ओ, संयुक्त रेफ का लोप, प को द्वित्व और य को एत्व तथा त लोप और इ स्वर शेष।

सोवइ, सुवइ < स्वपिति—संयुक्त व् का लोप, पश्चात् सकारोत्तर अकार को ओकार, प को व और विभक्ति चिह्न इ।

ओप्पिअं, अप्पिअं < अर्पितम्—विकल्प से अकार को ओकार, रेफ का लोप और प को द्वित्व, त लोप और अ स्वर शेष।

पोम्मं < पद्मम्—पकारोत्तर अकार को ओकार, द्म के स्थान पर म्म।

(ज) अ अइ—संस्कृत के मय प्रत्ययान्त शब्दों में विकल्प से मकारोत्तर अकार को प्राकृत में अइ होता है।

जलमइअं, जलमअं < जलमयम्—मकारोत्तर अकार के स्थान पर विकल्प से अइ, य लोप और अ स्वर शेष।

विसमइअं, विसमअं < विषमयम्—मकारोत्तर अकार के स्थान पर विकल्प से अइ, य लोप और अ स्वर शेष।

दुहमइअं, दुहमअं < दुःखमयम्—ख के स्थान पर ह, मकारोत्तर अकार के स्थान पर विकल्प से अइ, य लोप, अ स्वर शेष तथा अ के स्थान पर यश्रुति।

सुहमइअं, सुहमअं < सुखमयम्— „ „ „

(झ) अ = आइ—संस्कृत की अ ध्वनि प्राकृत में आइ भी होती है।

उणाइ, न उणो < न पुनः—प का लोप, उ स्वर शेष तथा नकारोत्तर अकार को विकल्प से आइ।

पुणाइ, पुणो < पुनः— „ „ „

(२) संस्कृत की आ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, ई, उ, ऊ, ए और ओ में परिवर्तित हो जाती है।

(क) आ = अ—संस्कृत की आ ध्वनि निम्नलिखित शब्दों में अ रूप में परिवर्तित हो जाती है।

आयरिओ < आचार्यः—च लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति, चा में रहनेवाले आ को अ, र्य को रिओ।

कंसिओ < कांसिकः—कां के स्थान पर कं आकार को अकार।

कंसं < कांस्यम्— „ „ „ संयुक्त य लोप।

पंडवो < पाण्डवः—पा के स्थान पर प।

पंसणो < पांसनः— „ „

पंसू < पांसुः— „ „

मरहट्ठो < महाराष्ट्रः—हा और रा के स्थान पर ह, र तथा वर्णव्यत्यय, संयुक्त ष और रेफ का लोप, ट को द्वित्व।

मंसं < मांसम्—मां के आकार को अकार।

वंसियो—शांशिकः—शां के आकार को अकार, तालव्य श को दन्त्य स, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

सामओ < श्यामाक —संयुक्त श्य का लोप, मा के आकार को अकार, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

संजत्तिओ < सांयत्रिकः—सां के स्थान पर सं, य को ज, संयुक्त रेफ का लोप त को द्वित्व, क लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

ससिद्धिओ < सांसिद्धिकः—सां के स्थान पर स, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

उक्खयं, उक्खायं < उत्खातम्—संयुक्त त का लोप, ख को द्वित्व, पूर्ववर्ती क को ख तथा विकल्प से खा को ख, त लोप, अ स्वर शेष, य श्रुति।

पुव्वण्हो, पुव्वाण्हो < पूर्वाह्णः—संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व, आ को विकल्प से अ।

कलओ, कालओ—कालक.—का में रहनेवाले आ को विकल्प से अ, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

कुमरो, कुमारो—कुमारः—मा में रहनेवाले आ को विकल्प से अ।

खइरं, खाइरं < खादिरम्—खा के स्थान पर विकल्प से ख, द लोप और इ स्वर शेष।

चमरो, चामरो < चामरः—चा को विकल्प से च।

तलवेंटं, तालवेंटं < तालवृन्तम्—ता को विकल्प से त तथा वृन्तम् को वेंटं।

नराओ, नाराओ < नाराच.—विकल्प से ना को न, च लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

पययं, पायय < प्राकृतम्—संयुक्त रेफ का लोप, आ को विकल्प से अ, त लोप, स्वर शेष तथा यश्रुति।

बलया, बलाया < बलाका—ला के स्थान पर विकल्प से ल, क लोप, आ स्वर शेष और यश्रुति।

बम्हणो, बाम्हणो < ब्राह्मणः—संयुक्त रेफ का लोप, आ को विकल्प से अ, ह्म को म्ह।

ठविओ, ठाविओ < स्थापितः—संयुक्त स का लोप, थ को ठ तथा आकार को विकल्प से अकार, प को व, त लोप, अ स्वर शेष, ओत्व।

परिट्ठविओ, परिट्ठाविओ < परिष्ठापितः—ठा को विकल्प से ठ।

संठविओ, संठाविओ < संस्थापितः—संयुक्त स का लोप, था को विकल्प से थ और थ के स्थान पर ठ।

हलिओ, हालिओ < हालिकः—हा के स्थान पर विकल्प से ह, क लोप, स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

अहव, अहवा < अथवा—थ के स्थान पर ह और वा को विकल्प से व।

तह, तहा < तथा—थ के स्थान पर ह और था में रहनेवाले आकार को विकल्प से अकार।

जह, जहा < यथा— ,, ,, ,,

व, वा < वा—वा में रहने वाले आकार को विकल्प से व।

ह, हा < हा—हा ,, ,,

(ख) आ = इ—संस्कृत की आ ध्वनि निम्नलिखित शब्दों में इ के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

आइरिओ, आयरिओ < आचार्यः—च का लोप, आ स्वर शेष और इस आ के स्थान पर विकल्प से ह्रस्व।

कुप्पिसो, कुप्पासो < कूर्पासः—ऊकार के स्थान पर उकार, संयुक्त रेफ का लोप और प को द्वित्व तथा आकार को विकल्प से इकार।

निसिअरो, निसाअरो < निशाकरः—तालव्य श को दन्त्य स तथा सा में रहने वाले आ को विकल्प से इकार, क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

(ग) आ = ई—निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की आ ध्वनि ई में परिवर्तित होती है।

सल्लीडो < सल्लाटः—संयुक्त व का लोप, ल को द्वित्व और आकार को ईकार तथा ट को ड, विसर्ग को ओत्व।

ठीणं, थीणं < स्त्यानम्—संयुक्त स का लोप, स्य के स्थान में थ और थ को ठ तथा आकार को ईकार, न को ण।

(घ) आ = उ

उल्लं < आर्द्रम्—आ के स्थान पर उ, र्द्र को ल्ल।

सुण्हा < सास्ना—सा में रहने वाले आ को उकार और स्ना के स्थान पर ण्हा।

थुवओ < स्तावकः—स्त के स्थान पर थ और आकार को उकार, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

(ङ) आ = ऊ

अज्जू < आर्या—सास् अर्थ होने से र्य के स्थान पर ज्ज और आकार को ऊकार।

ऊसारो, आसारो < आसारः—आ के स्थान पर विकल्प से ऊ।

(च) आ = ए—निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की आ ध्वनि ए में परिवर्तित होती है।

गेज्झं < ग्राह्यम्—संयुक्त रेफ का लोप, आकार को एकार, ह्य के स्थान पर ज्झ।

असहेज्जो, असहज्जो < असह्यः—ह्य के स्थान पर विकल्प से हे और य्य को ज्ज, विसर्ग को ओत्व।

एत्तिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं < एतावन्मात्रम्—एतावन् के स्थान पर एत्तिअ, मा के स्थान पर विकल्प से मे, संयुक्त रेफ का लोप, त को द्वित्व।

भोअणमेत्तं, भोअणमत्त < भोजनमात्रम्—ज का लोप और अ स्वर शेष, मा के स्थान पर मे, संयुक्त रेफ का लोप, त को द्वित्व।

देर, दार < द्वारम्—संयुक्त व का लोप, आकार को विकल्प से एकार।

पारेवओ, पारावओ < पारावतः—रा में रहने वाले आ के स्थान पर विकल्प से ए, प के स्थान पर व, त लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

पच्छेकम्मं, पच्छाकम्म < पश्चात्कर्म—पश्चात् के स्थान पर पच्छा और आकार को विकल्प से एकार।

(छ) आ = ओ

ओल्लं < आर्द्रम्—आ के स्थान पर ओ, र्द्र के स्थान पर ल्ल।

ओली < आली—आ के स्थान पर ओ।

(३) संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, उ, ए और ओ के रूप में परिवर्तित होती है।

(क) इ = अ—निम्नलिखित शब्दों में इ ध्वनि प्राकृत में अ हो जाती है।

इअ < इति—तकार का लोप और इ स्वर शेष तथा इ के स्थान पर अ।

तित्तिरो < तित्तिरिः—रकार में रहने वाली इकार के स्थान पर अ ध्वनि।

पहो < पथिन्—थ के स्थान पर ह और इकार के स्थान पर अ, हलन्त्य अन्त्य व्यंजन का लोप।

पुहई < पृथिवी—पृ में रहने वाली ऋ के स्थान पर उ, थ के स्थान पर ह, इकार को अकार और व लोप, ई स्वर शेष।

पडसुआ < प्रतिश्रुत्—प्रति के स्थान पर पड संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स और त् को आ।

वहेडओ < विभीतकः—व में रहने वाली इ के स्थान पर अ, भ के स्थान पर ह, ई को ए, त के स्थान पर ड, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

मुसओ < मूषिकः—मूर्धन्य ष को दन्त्य स तथा इकार को अकार, क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

हलद्दा < हरिद्रा—र के स्थान पर ल, इकार को अकार और द्रा में से रेफ का लोप और द को द्वित्व।

इंगुअं, अंगुअं < इंगुदम्—इ के स्थान पर विकल्प से अ, द् लोप और अ स्वर शेष।

सिढिलं, सढिलं < शिथिलम्—तालव्य श का दन्त्य स, स में रहनेवाली इ के स्थान पर विकल्प से अ तथा थ को ढ।

पसिढिलं, पसढिलं < प्रशिथिलम्—संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, विकल्प से इ के स्थान पर अ, थ को ढ।

(ख) इ = ई—निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में ई हो जाती है।

जीहा < जिह्वा—जि में रहने वाली इ के स्थान पर ईकार, संयुक्त व का लोप।

वीसा < विंशति—विं में रहने वाली इकार के स्थान पर ईकार, अनुस्वार का लोप।

वीसा < त्रिंशत्—त्रिं में से संयुक्त रेफ का लोप, इकार को ईकार, अनुस्वार लोप।

सीहो < सिंहः—सिं में संयुक्त इकार को ईकार, अनुस्वार लोप।

नीसरई, निस्सरइ < निस्सरति—नि में रहनेवाली इकार को विकल्प से दीर्घ।

नीसहं, निस्सहं < निस्सहम्— ,, ,, ,,

(ग) इ = उ—निम्न शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में उ हो जाती है।

उच्छू < इक्षुः—इ के स्थान पर उ और क्षु के स्थान पर च्छू।

दु < द्वि—संयुक्त व का लोप और इकार को उकार।

दुविहो < द्विविधः—संयुक्त व का लोप और इकार को उकार तथा ध के स्थान पर ह, विसर्ग को ओत्व।

णु < नि—नि में रहने वाली इकार के स्थान पर उकार, न को ण।

दुआई < द्विजातिः—संयुक्त व का लोप और इकार के स्थान पर उकार, ज लोप और आ स्वर शेष, त लोप और इकार को दीर्घ।

नु < नि—इकार को उकार।

दुहा < द्विधा—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, ध को ह।

णुमज्जइ < निमज्जति—नि में रहनेवाली इ के स्थान पर उ और न को णत्व, त का लोप, इ स्वर शेष।

दुमत्तो < द्विमात्रः—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, मात्रः को मत्तो।

णुमन्नो < निमग्नः—नि में रहनेवाली इकार के स्थान पर उकार, संयुक्त ग का लोप और न को द्वित्व।

दुरेहो < द्विरेफः—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, फ को ह।

पावासु < प्रवासिन्—संयुक्त रेफ का लोप, प को दीर्घ, सि में रहनेवाली इ के स्थान पर उ।

गेज्झं < ग्राह्यम्—संयुक्त रेफ का लोप, आकार को एकार, ह्य के स्थान पर ज्झ।

असहेज्जो, असहज्जो < असह्याय्यः—ह्य के स्थान पर विकल्प से हे और य्य को ज्ज, विसर्ग को ओत्व।

एत्तिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं < एतावन्मात्रम्—एतावन् के स्थान पर एत्तिअ, मा के स्थान पर विकल्प से मे, संयुक्त रेफ का लोप, त को द्वित्व।

भोअणमेत्तं, भोअणमत्तं < भोजनमात्रम्—ज का लोप और अ स्वर शेष, मा के स्थान पर मे, संयुक्त रेफ का लोप, त को द्वित्व।

देरं, दारं < द्वारम्—संयुक्त व का लोप, आकार को विकल्प से एकार।

पारेवओ, पारावओ < पारापतः—रा में रहने वाले आ के स्थान पर विकल्प से ए, प के स्थान पर व, त लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

पच्छेकम्मं, पच्छाकम्मं < पश्चात्कर्म—पश्चात् के स्थान पर पच्छा और आकार को विकल्प से एकार।

(छ) आ = ओ

ओल्लं < आर्द्रम्—आ के स्थान पर ओ, र्द्र के स्थान पर ल्ल।

ओली < आली—आ के स्थान पर ओ।

(३) संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, उ, ए और ओ के रूप में परिवर्तित होती है।

(क) इ = अ—निम्नलिखित शब्दों में इ ध्वनि प्राकृत में अ हो जाती है।

इअ < इति—तकार का लोप और इ स्वर शेष तथा इ के स्थान पर अ।

तित्तिरो < तित्तिरिः—रकार में रहने वाली इकार के स्थान पर अ ध्वनि।

पहो < पथिन्—थ के स्थान पर ह और इकार के स्थान पर अ, हलन्त्य अन्त्य व्यंजन का लोप।

पुहई < पृथिवी—पृ में रहने वाली ऋ के स्थान पर उ, थि के स्थान पर हि इकार को अकार और व लोप, ई स्वर शेष।

पडंसुआ < प्रतिश्रुत्—प्रति के स्थान पर पड संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स और त् को आ।

वहेडओ < विभीतकः—व में रहने वाली इ के स्थान पर अ, भ के स्थान पर ह, ई को ए, त के स्थान पर ड, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

मुसओ < मूषिकः—मूर्धन्य ष को दन्त्य स तथा इकार को अकार, क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

हलद्दा < हरिद्रा—र के स्थान पर ल, इकार को अकार और द्रा में से रेफ का लोप और द को द्वित्व।

इंगुअं, अंगुअं < इंगुदम्—इ के स्थान पर विकल्प से अ, द लोप और अ स्वर शेष।

सिढिलं, सढिलं < शिथिलम्—तालव्य श का दन्त्य स, स में रहनेवाली इ के स्थान पर विकल्प से अ तथा थ को ढ।

पसिढिलं, पसढिलं < प्रशिथिलम्—संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, विकल्प से इ के स्थान पर अ, थ को ढ।

(ख) इ = ई—निम्नलिखित शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में ई हो जाती है।

जीहा < जिह्वा—जि में रहने वाली इ के स्थान पर ईकार, संयुक्त व का लोप।

वीसा < विंशति—वि में रहने वाली इकार के स्थान पर ईकार, अनुस्वार का लोप।

तीसा < त्रिंशत्—त्रि में से संयुक्त रेफ का लोप, इकार को ईकार, अनुस्वार लोप।

सीहो < सिंहः—सिं में संयुक्त इकार को ईकार, अनुस्वार लोप।

नीसरई, निस्सरइ < निस्सरति—नि में रहनेवाली इकार को विकल्प से दीर्घ।

नीसहं, निस्सहं < निस्सहम्— ,, ,, ,,

(ग) इ = उ—निम्न शब्दों में संस्कृत की इ ध्वनि प्राकृत में उ हो जाती है।

उच्छू < इक्षुः—इ के स्थान पर उ और क्षु के स्थान पर च्छू।

दु < द्वि—संयुक्त व का लोप और इकार को उकार।

दुविहो < द्विविधः—संयुक्त व का लोप और इकार को उकार तथा ध के स्थान पर ह, विसर्ग को ओत्व।

णु < नि—नि में रहने वाली इकार के स्थान पर उकार, न को ण।

दुआई < द्विजातिः—संयुक्त व का लोप और इकार के स्थान पर उकार, ज लोप और आ स्वर शेष, त लोप और इकार को दीर्घ।

नु < नि—इकार को उकार।

दुहा < द्विधा—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, ध को ह।

णुमज्जइ < निमज्जति—नि में रहनेवाली इ के स्थान पर उ और न को णत्व, त का लोप, इ स्वर शेष।

दुमत्तो < द्विमात्रः—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, मात्रः को मत्तो।

णुमन्नो < निमग्नः—नि में रहनेवाली इकार के स्थान पर उकार, संयुक्त ग का लोप और न को द्वित्व।

दुरेहो < द्विरेफः—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, फ को ह।

पावासु < प्रवासिन्—संयुक्त रेफ का लोप, प को दीर्घ, सि में रहनेवाली इ के स्थान पर उ।

दुवयणं < द्विवचनम्—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, च के स्थान पर य, न को णत्व।

पावासुओ < प्रवासिकः—संयुक्त रेफ का लोप, अ को दीर्घ, सि में रहने वाली इकार को उकार, क लोप और विसर्ग को ओत्व।

जहुट्ठिलो, जहिट्ठिलो < युधिष्ठिरः—य को ज, घ को ह तथा इकार के स्थान पर विकल्प से उकार, संयुक्त ष का लोप, ठ को द्वित्व, पूर्व ठ को ट और र को ल।

दुउणो, विउणो < द्विगुणः—संयुक्त व का लोप, इकार को उकार, ग लोप और उ स्वर शेष। विकल्प से द का लोप होने पर विउणो रूप बनेगा।

दुइओ, विइओ < द्वितीय.—संयुक्त व का लोप, इकार को उत्व, त लोप, ई शेष और ह्रस्व, य लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

(घ) इ = ए

मेरा > मिरा—मि में रहनेवाली इ को एकार।

केसुअं, किंसुअं < किंशुकम्—इकार को एकार, क लोप और अ स्वर शेष। इकार को एत्व न होने पर किंसुअं रूप बनता है।

(ङ) इ = ओ

दोवयणं < द्विवचनम्—संयुक्त व का लोप और इकार को ओत्व, मध्यवर्ती च लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति।

दोहा, दुहा < द्विधा—संयुक्त व का लोप, इकार को विकल्प से ओत्व, ध को ह।

(च) नि = ओ

ओज्झरो, निज्झरो < निर्झरः—निर्झर शब्द में विकल्प से नि के स्थान पर ओ होता है, तथा संयुक्त रेफ का लोप, झ को द्वित्व, पूर्ववर्ती झ को ज।

(४) संस्कृत की ई ध्वनि प्राकृत में अ, आ, इ, उ, ऊ और ए में परिवर्तित होती है।

ई = अ

हरडई < हरीतकी—री में की ई के स्थान पर अ, त को ड और क लोप तथा ई स्वर शेष।

ई = आ—

कम्हारा < कश्मीराः—श्म के स्थान पर म्ह तथा ईकार के स्थान पर आ।

इ = इ—निम्न शब्दों में संस्कृत की ई ध्वनि प्राकृत में इ हो जाती है।

ओसिअंतं < अवसीदत्—अव = ओ, सी के स्थान पर सि, दत् = अंतं।

आणिअं < आनीतम्—नी के स्थान पर ह्रस्व इकार होने से णि, त लोप और अ स्वर शेष।

विहूणो, विहीणो < विहीनः—हकारोत्तर ईकार को विकल्प से ऊकार तथा न को णत्व, विसर्ग को ओत्व।

हूणो, हीणो < हीनः— ,, ,, ,,

(च) ई = ए—संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों में ई ध्वनि को ए हो जाता है।

आमेलो < आपीडः—पकारोत्तर ईकार को एकार और ड को ल।

केरिसो < कीदृशः—ककारोत्तर ईकार को एकार, दृशः के स्थान पर रिसो।

एरिसो < ईदृशः—ई के स्थान पर एकार, दृशः के स्थान पर रिसो।

पेऊसं < पीयूषम्—पकारोत्तर ईकार को एत्व, य लोप और ऊ स्वर शेष, मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

वहेडओ < विभीतकः—इकार को अकार, भकारोत्तर ईकार को एकार, भ के स्थान पर ह, त को ड और क लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

नेडं, नीडं < नीडम्—नकारोत्तर ईकार को विकल्प से एकार।

पेढं, पीढं < पीठम्—पकारोत्तर ईकार को विकल्प से एकार तथा ठ को ढ।

(९) संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ इ, ई, ऊ और ओ में परिवर्तित हो जाती है।

उ = अ—निम्न लिखित शब्दों में संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ में परिवर्तित होती है।

अगरुं < अगुरुम्—गकारोत्तर उकार के स्थान पर अ।

गलोइ < गुडूची—गकारोत्तर उकार को अ, ड को ल और ऊ को ओ, चकार का लोप, ई स्वर शेष, पश्चात् ह्रस्व।

गरुई < —गुर्वी—गकारोत्तर उकार को अ, र्वी का उच्चारण अतः रुई।

मउडो < मुकुटः—मकारोत्तर उकार को अ, क लोप और ट को ड।

मउरं < मुकुरम्— ,, ,,

मउलो < मुकुलः— ,, ,,

मउलं < मुकुलम्— ,, ,,

सोअमल्लं < सौकुमार्यम्—औ को ओकार होने से सो, क का लोप और उसके स्थान में उ स्वर शेष, उकार को अ तथा मार्य का मल्लं।

अवरिं, उवरिं < उपरि—उ के स्थान पर विकल्प से अ, प को व।

गरुओ, गुरुओ < गुरुकः—गकारोत्तर उ के स्थान पर विकल्प से अ, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

(ग) उ = इ—संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों की उ ध्वनि का प्राकृत में इ हो जाता है।

पुरिसो < पुरुषः—रकारोत्तर उकार के स्थान पर इ, मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

पउरिसं < पौरुषम्—औ के स्थान पर ओ, पश्चात् अ+उ, रकारोत्तर उ को इत्व।

भिउडी < भ्रुकुटि:—संयुक्त रेफ का लोप, उकार को इकार, क लोप, उ स्वर शेष और ट को ड।

(ग) उ = ई

छीअं < क्षुतम्—क्ष के स्थान पर छ, उकार को ईकार, त लोप और अ स्वर शेष।

(घ) उ = ऊ

दूहवो, दुहओ < दुर्भग:—दकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊकार, संयुक्त रेफ का लोप, भ को ह और ग लोप, अ स्वर शेष तथा ओत्व।

मूसलं, मुसलं < मुसलम्—मकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊत्व।

दूसहो, दुस्सहो < दुस्सह:—दकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊत्व।

सूहवो, सुहओ < सुभग:—सकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊकार, भ को ह, ग लोप और अ स्वर शेष।

(ङ) उ = ओ

कोउहलं, कुऊहलं < कुतूहलम्—ककारोत्तर उकार को ओत्व, तकार का लोप, ऊ स्वर शेष तथा ऊ को विकल्प से ह्रस्व।

(६) संस्कृत की ऊ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, ई, उ, ए और ओ रूप में बदल जाती है।

(क) ऊ = अ—निम्न लिखित प्राकृत शब्दों में संस्कृत की ऊ ध्वनि विकल्प से अ में परिवर्तित होती है।

दुअल्लं दुऊलं < दुकूलम्—मध्यवर्ती क लोप, ऊ स्वर शेष और ऊ के स्थान पर विकल्प से अ।

सण्हं, सुण्हं < सूक्ष्मम्—सकारोत्तर ऊकार के स्थान पर विकल्प से अकार, क्ष्म के स्थान पर ण्ह।

(ख) ऊ = इ

निउरं, नुउरं < नूपुरम्—ऊकार के स्थान पर विकल्प से इकार, प का लोप उ शेष।

(ग) ऊ = ई—

उव्वीढं, उव्वूढं < उद्व्यूढम्—द् य् का लोप और व को द्वित्व और ऊकार को विकल्प से ईकार।

(घ) ऊ = उ—निम्न लिखित शब्दों में ऊकार के स्थान पर उत्व होता है।

कंडुअइ < कण्डूयते—ऊकार के स्थान पर उकार और यकार का लोप, अ स्वर शेष, विभक्ति चिह्न इ।

विहूणो, विहीणो < विहीनः—हकारोत्तर ईकार को विकल्प से उकार तथा न को णत्व, विसर्ग को ओत्व।

हूणो, हीणो < हीनः— „ „ „

(च) ई = ए—संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों में ई ध्वनि को ए हो जाता है।

आमेलो < आपीडः—पकारोत्तर ईकार को एकार और ड को ल।

केरिसो < कीदृशः—ककारोत्तर ईकार को एकार, दृश के स्थान पर रिसो।

एरिसो < ईदृशः—ई के स्थान पर एकार, दृशः के स्थान पर रिसो।

पेऊसं < पीयूषम्—पकारोत्तर ईकार को एत्व, य लोप और ऊ स्वर शेष, मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

वहेडओ < बिभीतक—इकार को अकार, भकारोत्तर ईकार को एकार, भ के स्थान पर ह, त को ड और क लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

नेडं, नीडं < नीडम्—नकारोत्तर ईकार को विकल्प से एकार।

पेढं, पीढं < पीठम्—पकारोत्तर ईकार को विकल्प से एकार तथा ठ को ढ।

(६) संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ इ, ई, ऊ और ओ में परिवर्तित हो जाती है।

उ = अ—निम्न लिखित शब्दों में संस्कृत की उ ध्वनि प्राकृत में अ में परिवर्तित होती है।

अगरुं < अगुरुम्— गकारोत्तर उकार के स्थान पर अ।

गलोइ < गुडूची—गकारोत्तर उकार को अ, ड को ल और ऊ को ओ, चकार का लोप, ई स्वर शेष, पश्चात् ह्रस्व।

गरुई < —गुर्वी—गकारोत्तर उकार को अ, र्वी का पृथक्करण अत रुई।

मउडो < मुकुट—मकारोत्तर उकार को अ, क लोप और ट को ड।

मउरं < मुकुरम्— „ „

मउलो < मुकुलः— „ „

मउल < मुकुलम्— „ „

सोअमल्लं < सौकुमार्यम्—औ को ओकार होने से सो, क का लोप और उसके स्थान में उ स्वर शेष, उकार को अ तथा मार्य का मल्लं।

अवरिं, उवरिं < उपरि—उ के स्थान पर विकल्प से अ, प को व।

गरुओ, गुरुओ < गुरुक.—गकारोत्तर उ के स्थान पर विकल्प से अ, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

(ख) उ = इ—संस्कृत के निम्न लिखित शब्दों की उ ध्वनि का प्राकृत में इ हो जाता है।

पुरिसो < पुरुष.—रकारोत्तर उकार के स्थान पर इ, मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

पउरिसं < पौरुषम्—औ के स्थान पर ओ, पश्चात् अ+उ, रकारोत्तर उ को ह्रस्व।

भिउडी < भ्रुकुटिः—संयुक्त रेफ का लोप, उकार को इकार, क लोप, उ स्वर शेष और ट को ड।

(ग) उ = ई

छीअं < क्षुतम्—क्ष के स्थान पर छ, उकार को ईकार, त लोप और अ स्वर शेष।

(घ) उ = ऊ

दूहवो, दुहओ < दुर्भगः—दकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊकार, संयुक्त रेफ का लोप, भ को ह और ग लोप, अ स्वर शेष तथा ओत्व।

मूसलं, मुसलं < मुसलम्—मकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊत्व।

दूसहो, दुस्सहो < दुस्सहः—दकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊत्व।

सूहवो, सुहओ < सुभग.—सकारोत्तर उकार को विकल्प से ऊकार, भ को ह, ग लोप और अ स्वर शेष।

(ङ) उ = ओ

कोउहलं, कुऊहलं < कुतूहलम्—ककारोत्तर उकार को ओत्व, तकार का लोप, ऊ स्वर शेष तथा ऊ को विकल्प से ह्रस्व।

(६) संस्कृत की ऊ ध्वनि प्राकृत में अ, इ, ई, उ, ए और ओ रूप में बदल जाती है।

(क) ऊ = अ—*निम्न लिखित प्राकृत शब्दों में संस्कृत की ऊ ध्वनि विकल्प से अ में परिवर्तित होती है।*

दुअल्लं दुऊलं < दुकूलम्—मध्यवर्ती क लोप, ऊ स्वर शेष और ऊ के स्थान पर विकल्प से अ।

सण्हं, सुण्हं < सूक्ष्मम्—सकारोत्तर ऊकार के स्थान पर विकल्प से अकार, क्ष्म के स्थान पर ण्ह।

(ख) ऊ = ई

निउरं, नुउरं < नूपुरम्—ऊकार के स्थान पर विकल्प से इकार, प का लोप उ शेष।

(ग) ऊ = ई—

उव्वीढं, उव्वूढं < उद्व्यूढम्—द् य् का लोप और व को द्वित्व और ऊकार को विकल्प से ईकार।

(घ) ऊ = उ—निम्न लिखित शब्दों में ऊकार के स्थान पर उत्व होता है।

कंडुअइ < कण्डूयते—ऊकार के स्थान पर उकार और यकार का लोप, अ स्वर शेष, विभक्ति चिह्न इ।

कंडुया < कण्डूया—ऊकार के स्थान पर उकार।

कंडुयणं < कण्डूयणम्—ऊकार को उत्व तथा न को णत्व।

भुमया < भ्रू—ऊकार के स्थान पर उत्व।

वाउलो < वातूल—तकार का लोप और ऊ स्वर शेष, ऊ के स्थान में उत्व।

हणुमंतो < हनूमान्—नकार को णत्व और ऊकार को उत्व।

कोउहलं, कोऊहलं < कुतूहलम्—ककारोत्तर उकार को ओकार, तकार का लोप और ऊकार के स्थान पर विकल्प से उत्व।

महुअं, महूअं < मधूकम्—ध के स्थान पर ह और ऊकार को विकल्प से उत्व।

(ङ) ऊ = ए

नेउरं, नूउरं < नूपुरम्—ऊकार के स्थान पर एत्व और पकार का लोप और उ स्वर शेष।

(च) ऊ = ओ—निम्न लिखित शब्दों में ऊ को ओ होता है।

कोप्परं < कूर्परम्—ऊकार को ओकार, संयुक्त रेफ का लोप, प को द्वित्व।

कोहण्डी < कूष्माण्डी—ककारोत्तर ऊकार को ओत्व, ष्मा के स्थान पर ह।

गलोई < गुडूची—डकार के स्थान पर ल, डकारोत्तर ऊकार को ओ एवं चकार का लोप, ई शेष।

तंबोलं < ताम्बूलम्—ता को ह्रस्व, बकारोत्तर ऊकार को ओत्व।

तोणीरं < तूणीरम्—ऊकार को ओत्व।

मोल्लं < मूल्यम्—मकारोत्तर ऊकार को ओत्व, संयुक्त य का लोप और ल को द्वित्व।

थोरं < स्थूलम्—संयुक्त स का लोप, थकारोत्तर ऊकार को ओत्व एवं ल को रकार।

तोणं, तूणं < तूणम्—तकारोत्तर ऊकार को विकल्प से ओत्व।

थोणा, थूणा < स्थूणा—संयुक्त स का लोप और थकारोत्तर ऊकार को विकल्प से ओत्व।

(७) प्राकृत वर्णमाला में ऋ को स्थान नहीं दिया गया है। अतः संस्कृत की ऋ का परिवर्तन अ, आ, इ, उ, ऊ, ए, ओ, अरि और रि के रूप में होता है।

(क) ऋ = आ—निम्न लिखित शब्दों में आदि में आनेवाली ऋ अ के रूप में बदल जाती है।

कयं < कृतम्—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, त लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति।

घयं < घृतम्—घकारोत्तर " " "

घट्ठो < घृष्टः—घकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, संयुक्त ष का लोप, ठ को द्वित्व।

तणं < तृणम्—तकारोत्तर ऋ के स्थान अ।

मओ < मृगः—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ग लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

मट्ठं < मृष्टम्—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, संयुक्त ष का लोप और ठ को द्वित्व।

वसहो < वृषभः—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, मूर्धन्य ष को दन्त्य स, भ के स्थान पर ह और विसर्ग का ओत्व।

दुक्कडं < दुष्कृतम्—संयुक्त ष का लोप, क को द्वित्व, ऋ के स्थान पर अ एवं त के स्थान पर ड।

पुरेकडं < पुरस्कृतम्—रकारोत्तर अ को एत्व, संयुक्त स का लोप, ऋ के स्थान पर अ, त को ड।

मट्टिया < मृत्तिका—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, त को ट तथा ककार का लोप, आ स्वर शेष, य श्रुति।

णिअत्तं < निवृत्तम्—न को णत्व, वकारोत्तर ऋकार को अ।

मच्चु < मृत्यु—मकारोत्तर ऋ को अ और त्य के स्थान पर च।

मउओ < मृदुक.—,, ,, ,, द लोप, उ स्वर शेष, क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

वन्दारओ < वृन्दारकः—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

वगी < वृकी—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ तथा क को ग।

कसणपक्खो < कृष्णपक्षः—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ष्ण का पृथक्करण मूर्धन्य ष को दन्त्य स तथा क्ष को क्ख।

पाययं < प्राकृतम्—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ और इस अ को य श्रुति, त लोप, अ स्वर शेष और अ को य।

वहप्फई < वृहस्पति.—वकारोत्तर ऋकार को अत्व, स्प के स्थान पर प्फ।

सिलवटो < शिलावृष्ट —तालव्य श को दन्त्य स, लकार को ह्रस्व, ष का व और ऋ को अ।

मअलाछणं < मृगलाञ्छनम्—मकारोत्तर ऋकार को अत्व, ग लोप और अ स्वर शेष।

मअवहू < मृगवधू—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ध के स्थान पर ह।

रामकण्हो < रामकृष्ण.—ककारोत्तर ऋकार को अ और ष्ण को ण्ह।

(ख) ऋ = आ—निम्न शब्दों में विकल्प से ऋ के स्थान पर आ आदेश होता है।

कासा, किसा < कृशा—ककारोत्तर ऋकार को विकल्प से आत्व।

माउक्कं, मउत्तणं < मृदुत्वम्—मकारोत्तर ऋकार को विकल्प से आत्व।

माउक्कं, मउअं < मृदुकम्— " " "

(ग) ऋ = इ—निम्न शब्दों में संस्कृत की ऋ ध्वनि इ में परिवर्तित होती है।

उक्किट्ठं < उत्कृष्टम्—संयुक्त त का लोप, क को द्वित्व और ऋ के स्थान पर इ।

इड्ढी < ऋद्धिः—ऋ के स्थान पर इ।

इसी < ऋषिः—ऋ के स्थान पर इ, मूर्धन्य ष को सत्व और इकार को दीर्घ।

किच्छम् < कृच्छ्रम्—क ककारोत्तर ऋ के स्थान पर इ।

किविणो < कृपणः— " " तथा प का व और विसर्ग का ओत्व।

किई < कृतिः—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर इ, त लोप और इ स्वर को दीर्घ।

किच्ची < कृत्तिः—क में रहनेवाली ऋ के स्थान पर इ, त्त के स्थान पर च।

किच्चा < कृत्या—क में रहने वाली ऋ के स्थान पर इ, त्य के स्थान पर च।

किवो < कृपः—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ और प को व।

किवा < कृपा— " " " "

किवाणं < कृपाणम्— " " " "

किसो < कृशः— " " " श के स्थान पर 'स'।

किसाणू < कृशानुः— " " " तालव्य श को स, उकार को दीर्घ।

किसिओ < कृषितः—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ, मूर्धन्य ष लोप, त लोप और स्वर शेष तथा ओत्व।

किसरा < कृसरा—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ।

गिट्ठी < गृष्टिः—गकारोत्तर ऋकार को इत्व, मूर्धन्य ष लोप, ट को द्वित्व।

गिद्धी < गृद्धिः—गकारोत्तर ऋकार को इत्व।

घुसिणं < घुसृणम्—सकारोत्तर ऋ को इत्व।

घिणा < घृणा—घकारोत्तर ऋ के स्थान पर इ।

तिप्पं < तृप्तम्—तकारोत्तर ऋकार के स्थान पर इ। संयुक्त प लोप और त को द्वित्व।

दिट्ठं < दृष्टम्—दकारोत्तर ऋ के स्थान पर इ, संयुक्त ष लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ।

दिट्ठी < दृष्टिः— " " "

धिई < धृतिः—धकारोत्तर ऋकार को इकार, त लोप और शेष स्वर इ को दीर्घ।

नत्तिओ < नप्तृकः—संयुक्त प का लोप, त को द्वित्व, ऋकार को इत्व, क लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

निवो < नृपः—नकारोत्तर ऋकार को इत्व और प को व, विसर्ग को ओत्व।

निसंसो < नृशंसः—नकारोत्तर ऋकार को इत्व, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

पिहं < पृथक्—पकारोत्तर ऋकार को इत्व, थ को ह, अन्त्य हलन्त का लोप, अनुस्वारागम।

पिच्छी < पृथ्वी—पकारोत्तर ऋ को इत्व, थ्वी के स्थान पर च्छी।

विंहिओ < बृंहितः—बकारोत्तर ऋकार को इत्व, त का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

भिंगो < भृङ्गः—भकारोत्तर ऋकार को इत्व, विसर्ग को ओत्व।

भिंगारो < भृङ्गारः— ,, ,, ,,

भिऊ < भृगु—भकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग का लोप और उ स्वर, शेष, दीर्घ।

माई < मातृ—तकारोत्तर ऋ को इत्व तथा दीर्घ।

मिइंगो < मृदंगः—मकारोत्तर ऋकार को इत्व, द का लोप, अ स्वर शेष तथा शेष अ को इत्व, विसर्ग को ओत्व।

मिट्ठं < मृष्टम्—मकारोत्तर ऋकार को इत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ।

विइण्हो < वितृष्णः—तकारोत्तर ऋकार को इत्व, ष्ण. के स्थान पर ण्हो।

विञ्चुओ < वृश्चिकः—वकारोत्तर ऋकार को इत्व, श्च के स्थान पर ञ्च तथा इ को उत्व, क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

वित्त < वृत्तम्—वकारोत्तर ऋ के स्थान पर इत्व।

वित्ती < वृत्तिः—वकारोत्तर ऋ को इत्व, तकारोत्तर इकार को दीर्घ।

विद्धकई < वृद्धकविः—वकारोत्तर ऋ को इत्व, व का लोप और शेष स्वर इ को दीर्घ।

विट्ठो < वृष्ट—वकारोत्तर ऋ को इत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ।

विट्ठी < वृष्टिः— ,, ,,

विसी < वृसी—वकारोत्तर ऋ को इत्व।

वाहिअं < व्याहृतम्—संयुक्त य का लोप, हकारोत्तर ऋकार को इत्व, त का लोप और अ स्वर शेप।

सिआलो < शृगालः—तालव्य श को दन्त्य स, शकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग का लोप और आ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

सिंगारो < शृंगारः—तालव्य श को दन्त्य स, शकारोत्तर ऋ को इत्व, और विसर्ग को ओत्व।

सइ < सकृत्—क का लोप और ककारोत्तर ऋकार को इत्व, अन्त्य हलन्त त् का लोप।

समिद्धी < समृद्धिः—मकारोत्तर ऋकार को इत्व, द्धकारोत्तर इकार को दीर्घ।

सिट्ठं < सृष्टम्—सकारोत्तर ऋकार को इत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व और द्वितीय ट को ठ।

सिट्ठी < सृष्टि.— ,, ,, ,, अन्तिम इकार को दीर्घ।

छिहा < स्पृहा—स्प में रहनेवाली ऋ को इत्व, स्प के स्थान पर छ।

हिअयं < हृदयम्—हृ में रहने वाली ऋ को इत्व तथा द् का लोप और अ स्वर शेष।

माइहरं < मातृगृहम्—तकारोत्तर ऋ का इत्व और गृहं को हरं।

मियतण्हा < मृगतृष्णा—मकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति, तकारोत्तर ऋ को अ तथा ष्ण के स्थान पर ण्ह।

मियंको, मयंको < मृगाङ्क—मकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग का लोप और अ स्वर को य श्रुति।

इहामियो < ईहामृग.—मकारोत्तर ऋ को इत्व, ग का लोप, अ स्वर शेष तथा य श्रुति, विसर्ग को ओत्व।

मियसिराओ < मृगशिराः—मकारोत्तर ऋकार को इत्व, ग लोप, अ स्वर शेष तथा य श्रुति, तालव्य श को दन्त्य स।

इसिगुत्तो < ऋषिगुप्त.—ऋकार को इत्व, मूर्धन्य ष को स, संयुक्त प का लोप, त को द्वित्व।

इसिदत्तं < ऋषिदत्तम्—ऋकार को इत्व, मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

धिट्ठो, धट्ठो < धृष्टः—धकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ, विसर्ग को ओत्व।

पिट्ठं, पट्ठं < पृष्ठम्—पकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व, संयुक्त ष का लोप, ठ को द्वित्व तथा द्वितीय ठ को ट।

पिहप्फई, पहप्फई < बृहस्पति.—पकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व, स्प को प्फ, तकार का लोप और इ स्वर शेष को दीर्घ।

माइमंडलं, माउमंडलं < मातृमण्डलम्— तकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व।

मिच्चू, मच्चू < मृत्युः—मकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व और त्युः को च्चू।

विद्धो, वुड्ढो < वृद्धः—वकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व।

विंटं, वेंटं < वृन्तम्— वकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व तथा त को ट।

सिंगं, संगं < शृङ्गम्—तालव्य श को दन्त्य स, शकारोत्तर ऋकार को विकल्प से इत्व।

(घ) ऋ = उ—निम्न प्राकृत शब्दों में संस्कृत की ऋ ध्वनि उकार में परिवर्तित है।

उऊ < ऋतुः—ऋकार को उ तथा तकार का लोप और शेष स्वर उ को दीर्घ।

उसहो < ऋषभः—ऋ को उत्व, मूर्धन्य ष को दन्त्य स, भ को ह, विसर्ग को ओत्व।

जामाउओ < जामातृकः—तकारोत्तर ऋकार को उत्व, तकार का लोप, क लोप, अ स्वर और विसर्ग को ओत्व।

मत्तुओ < मन्तृकः—संयुक्त प का लोप, त को द्वित्व, ऋकार को उत्व, क का लोप और शेष स्वर अ को ओत्व।

निहुअं < निभृतम्—भकार को ह तथा ऋ को उत्व, तकार का लोप और अ स्वर शेष।

निउअं < निवृतम्—वकारोत्तर ऋकार को उत्व, व का लोप, तकार का लोप और और अ स्वर शेष।

निव्वुअं < निर्वृतम्—संयुक्त रेफ का लोप, व द्वित्व, ऋकार को उत्व, त लोप और अ स्वर शेष।

निव्वुई < निर्वृत्तिः—संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व, ऋकार को उत्व, त लोप और इकार शेष तथा इसको दीर्घ।

परहुओ < परभृतः—भकारोत्तर ऋकार को उत्व, भ को ह, त लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

परामुट्ठो < परामृष्टः—मकारोत्तर ऋकार को उत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ, विसर्ग को ओत्व।

पिउओ < पितृकः—तकारोत्तर ऋकार को उत्व, क का लोप अ स्वर शेष और विसर्ग का ओत्व।

पुहई < पृथिवी—पकारोत्तर ऋकार को उत्व, थ के स्थान पर ह, इ स्वर को अ, वकार का लोप और ई स्वर।

पहुडि < प्रभृति—संयुक्त रेफ का लोप, भकारोत्तर ऋकार को उत्व, त को ड।

पउत्ती < प्रवृत्तिः—संयुक्त रेफ का लोप, वकारोत्तर ऋकार को उत्व, व का लोप, अन्तिम स्वर इ को दीर्घ।

पउट्ठो < प्रवृद्धः—संयुक्त रेफ का लोप, वकारोत्तर ऋकार को उत्व, व का लोप, संयुक्त प का लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ।

पाहुडं < प्राभृतम्—संयुक्त रेफ का लोप, भ को ह, ऋकार को उत्व, त को ड।

पाउओ < प्रावृतः—संयुक्त रेफ का लोप, वकार का लोप और अवशेष ऋ को उत्व, त का लोप, अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व।

पाउसो < प्रावृषः—संयुक्त रेफ लोप, व लोप और अवशेष ऋकार को उत्व, मूर्धन्य ष को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

भुई < भृतिः—भकारोत्तर ऋकार को उत्व, तकार का लोप और शेष स्वर इ को दीर्घ।

भाउओ < भ्रातृक.—संयुक्त रेफ का लोप, तकार का लोप, ऋकार को उत्व, क का लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

माउओ < मातृकः—तकार का लोप, ऋकार को उत्व, क का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

माउआ < मातृका—तकार का लोप, शेष स्वर ऋ को उत्व, क का लोप और आ स्वर शेष।

मुणालं < मृणालम्—मकारोत्तर ऋकार को उत्व।

वुत्तंतो < वृत्तान्तः—वकारोत्तर ऋकार को उत्व।

वुड्ढो < वृद्ध—वकारोत्तर ऋकार को उत्व, दन्त्य वर्णों को मूर्धन्य, विसर्ग का ओत्व।

वुड्ढी < वृद्धिः—वकारोत्तर ऋकार को उत्व, दन्त्य वर्णों को मूर्धन्य, इकार को दीर्घ।

वुंदं < वृन्दम्—वकारोत्तर ऋकार को उत्व।

वुंदावणो < वृन्दावनः—वकारोत्तर ऋकार को उत्व, न को णत्व और विसर्ग को ओत्व।

विउअं < विवृतम्—मध्यवर्ती वकार का लोप, शेष ऋ को उत्व, त लोप और अ स्वर शेष।

वुट्ठो < वृष्टः—वकारोत्तर ऋकार को उत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ।

वुट्ठी < वृष्टि—वकारोत्तर, ऋकार को उत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व तथा द्वितीय ट को ठ, इकार दीर्घ।

पुट्ठो < स्पृष्ट.—संयुक्त स का लोप, पकारोत्तर ऋकार को उत्व, संयुक्त ष का लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ, विसर्ग को ओत्व।

संवुअं < संवृतम्—वकारोत्तर ऋकार को उत्व, तकार का लोप, अ शेष।

मुसा, मोसा < मृषा—मकारोत्तर ऋकार को विकल्प से उ, उ के अभाव में ओ तथा मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

उसहो, वसहो < वृषभः—वकारोत्तर ऋकार को विकल्प से उत्व, विकल्पाभाव पक्ष में ऋकार को अ।

(घ) ऋ = ऊ।

मूसा, मुसा, मोसा < मृषा—मकारोत्तर ऋकार के स्थान पर विकल्प से ऊकार, विकल्पाभाव पक्ष में उकार तथा ओकार होने से तीन रूप बनते हैं।

(ङ) ऋ = ए—

वेंट, विंट < वृन्तम्—वकारोत्तर ऋकार को विकल्प से एकार, विकल्पाभावपक्ष में इकार तथा त को ट।

(च) ऋ = ओ—

मोसा < मृषा—मकारोत्तर ऋ को विकल्प से ओत्व।

वोंटं < वृन्तम्—वकारोत्तर ऋकार को विकल्प से ओत्व।

(छ) ऋ = अरि—

दरिओ < दृप्तः—दकारोत्तर ऋकार को अरि, संयुक्त प और अन्तिम त का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

(ज) ऋ = ढि—

आढिओ < आदृतः—मध्यवर्ती दकार का लोप और शेष ऋ के स्थान पर ढि, त लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

(झ) ऋ = रि—निम्न प्राकृत शब्दों में वर्तमान भाषा प्रवृत्ति के समान संस्कृत की ऋ के स्थान पर रि मिलता है।

रिच्छो < ऋक्ष.—ऋ के स्थान पर रि और क्ष को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

अन्नारिसो < अन्यादृश.—संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ को रि, श को स, विसर्ग को ओत्व।

अन्नारिच्छो < अन्यादृक्षः—संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ को रि, क्ष को च्छ तथा विसर्ग को ओत्व।

अमूरिसो < अमूदृश—दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

अमूरिच्छो < अमूदृक्षः—दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, क्ष को च्छो।

अम्हारिसो < अस्मादृशः—दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

अम्हारिच्छो < अस्मादृक्षः—दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, क्ष को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

एरिसो < ईदृशः—ई के स्थान में ए, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ के स्थान में रि, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

एरिच्छो < ईदृक्षः—ई के स्थान में ए, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ के स्थान में रि, क्ष को च्छ और विसर्ग को ओत्व।

एआरिसो < एतादृशः—मध्यवर्ती तकार का लोप, आ स्वर शेष, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

एआरिच्छो < एतादृक्षः—मध्यवर्ती तकार का लोप, आ स्वर शेष, दकार का लोप और शेष स्वर ऋ को रि, क्ष को च्छ और विसर्ग को ओत्व।

केरिसो < कीदृशः—ककारोत्तर ईकार को एकार, दकार का लोप और शेष स्वर ऋकार को रि।

केरिच्छो < कीदृक्षः— ,, ,, ,,

तारिसो < तादृशः—दकार का लोप, शेष स्वर ऋकार को रि, श को स, विसर्ग को ओत्व।

तारिच्छो < तादृक्षः—दकार का लोप, शेष स्वर ऋकार को रि, क्ष को च्छ तथा विसर्ग का ओत्व।

तारिक् < तादृक्—दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, अन्त्य हलन्त क् का लोप।

भवारिसो < भवादृशः— ,, श को दन्त्य स विसर्ग को ओत्व।

भवारिच्छो < भवादृक्षः— ,, क्ष को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

भवारि < भवादृक्— ,, ,, अन्त्य हलन्त्य क् का लोप।

जारिसो < यादृशः—आदि यकार को जकार, द का लोप, शेष स्वर ऋ के स्थान पर रि, तालव्य श को दन्त्य स विसर्ग को ओत्व।

जारिच्छो < यादृक्षः—आदि यकार को जकार, द का लोप, शेष स्वर ऋ के स्थान पर रि, क्ष को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

जारि < यादृक्—आदि य को ज, दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, अन्त्य हलन्त्य क् का लोप।

तुम्हारिसो < युष्मादृशः—युष्मा के स्थान पर तुम्हा, दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स।

तुम्हारिच्छो < युष्मादृक्षः— „ „ क्ष को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

तुम्हारि—युष्मादृक्— „ „ अन्त्य हलन्त्य क् का लोप।

सरिसो < सदृशः—दकार का लोप, शेष स्वर ऋ को रि, तालव्य श को दन्त्य स विसर्ग का ओत्व।

सरिच्छो < सदृक्षः— „ „ क्ष को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

सरि < सदृक्— „ „ अन्त्य हलन्त्य क् का लोप।

रिज्जू, उज्जू < ऋजुः—ऋ के स्थान में विकल्प से रि, विकल्पाभाव में उ।

रिणं, अणं < ऋणम्— „ „ विकल्पाभाव में अ।

रिऊ, उऊ < ऋतुः— „ „ तकार का लोप, शेष स्वर उ को दीर्घ।

रिसहो, उसहो < ऋषभः— „ „ विकल्पाभाव पक्ष में उ।

रिसी, इसी < ऋषिः— „ „ विकल्पाभाव पक्ष में इ।

(८) प्राकृत में संस्कृत की एकार ध्वनि इ और ऊ में बदल जाती है।

(क) ए = इ—

किसरं, केसरं < केसरम्—ककारोत्तर एकार को विकल्प से ह्रस्व।

चविडा, चवेडा < चपेटा—प को व, पकारोत्तर ए को विकल्प से इ।

दिअरो, देयरो < देवरः—दकारोत्तर एकार को ह्रस्व, वकार का लोप और अ स्वर शेष।

विअणा, वेअणा < वेदना—वकारोत्तर एकार को ह्रस्व, दकार का लोप और अ स्वर शेष।

(ख) ए = ऊ—

थूणो, थेणो < स्तेनः—स्त के स्थान पर थ और एकार के स्थान पर विकल्प से ऊकार।

(९) प्राकृत में संस्कृत की ऐकार ध्वनि का अ अ, इ, ई, अइ और ए में परिवर्तन होता है।

(क) ऐ = अअ।

उच्चअं < उच्चैस्—चकारोत्तर ऐकार के स्थान पर अअ।

नीचअं < नीचैस्— „ „

(ख) ऐ = इ

सणिच्छरो < शनैश्चरः—तालव्य श को दन्त्य स, न को ण, नकारोत्तर ऐकार को इत्व, श्च को च्छ, विसर्ग को ओत्व।

सिन्धवं < सैन्धवम्—सकारोत्तर ऐकार को इकार।

सिन्नम्, सेन्नं < सैन्यम्—सकारोत्तर ऐकार को विकल्प से इकार, संयुक्त य का लोप और न को द्वित्व।

(ग) ऐ = ई

धीरं < धैर्यम्—धकारोत्तर ऐकार को ईत्व, संयुक्त यकार का लोप और र शेष।

(घ) ऐ = अइ—

अइसरिअं < ऐश्वर्यम्—ऐकार को अइ, संयुक्त व का लोप, तालव्य श को स, र्यम् को रिअं।

कइअवं < कैतवम्—ऐकार को अइ, तकार का लोप और अ स्वर शेष।

चइत्तं < चैत्यम्—चकारोत्तर ऐकार को अइ, संयुक्त य का लोप और त को द्वित्व।

दइच्चो < दैत्यः—दकारोत्तर ऐकार को अइ, त्य को च्च, विसर्ग को ओत्व।

दइअवं < दैवतम्— ,, ,, ,, वर्णविपर्यय से वतम् का अवं।

भइरवो < भैरवः—भकारोत्तर ऐकार को अइ।

वइजवणो < वैजवनः—वकारोत्तर ऐकार को अइ।

वइआलीअं < वैतालीयम्— ,, ,, तकार का लोप और आ स्वर शेष।

वइदब्भो < वैदर्भः— ,, ,, संयुक्त रेफ का लोप, भ को द्वित्व और पूर्ववर्ती भ को ब।

वइएसो < वैदेशः—वकारोत्तर ऐकार को अइ, मध्यवर्ती दकार का लोप, एकार शेष।

वइएहो < वैदेहः— ,, ,, ,, ,,

वइसाहो < वैशाखः— ,, ,, श को स, ख के स्थान में ह और विसर्ग को ओत्व।

वइसाहो < वैशाखः—वकारोत्तर ऐकार को अइ, श को स।

वइस्साणरो < वैश्वानरः— ,, ,, संयुक्त व का लोप, स को द्वित्व न को ण तथा विसर्ग को ओत्व।

सइरं < स्वैरम्—संयुक्त व का लोप, सकारोत्तर ऐ को अइ।

कइरवं, केरवं < कैरवम्—ककारोत्तर ऐकार को विकल्प से अइ तथा विकल्पाभाव पक्ष में ए।

कइलासो, केलासो < कैलास:— ,, ,, ,,

चइत्तो, चेत्तो < चैत्र:—चकारोत्तर ऐकार को विकल्प से अइ तथा विकल्पाभाव में ए।

वइरं, वेरं < वैरम्—वकारोत्तर ऐकार को विकल्प से अइ तथा विकल्पाभाव में ए।

वइसंपायणो, वेसंपायणो < वैशम्पायन:— ,, ,, ,,
वइसवणो, वेसवणो < वैश्रवण:— ,, ,, ,,
वइसिअं, वेसिअं < वैशिमम्— ,, ,, ,,

(ङ) ऐ = ए—

एरावणो < ऐरावण:—ऐकार को एकार।

केढवो < कैटभ:—ककारोत्तर ऐकार को एकार, ट को ढ और भ को व, विसर्ग का ओत्व।

तेलुक्कं < त्रैलोक्यम्—संयुक्त रेफ का लोप, तकारोत्तर ऐकार को एत्व, संयुक्त य का लोप और क को द्वित्व।

वेज्जो < वैद्य:—वकारोत्तर ऐकार को एत्व, द्य के स्थान पर ज्ज।

वेहव्वं < वैधव्यम्—वकारोत्तर ऐकार को एत्व, ध को ह, संयुक्त य लोप और व को द्वित्व।

सेला < शैला—सकारोत्तर ऐकार को एत्व।

(९) प्राकृत में संस्कृत की ओ ध्वनि का अ, ऊ, अउ और आअ में परिवर्तन होता है।

(क) ओ = अ—

अन्नन्नं, अन्नुन्नं < अन्योन्यम्—संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व और ओ के स्थान पर विकल्प से अ, विकल्पाभाव में उ।

आवज्जं, आउज्जं < आतोद्यम्—तकारोत्तर ओकार के स्थान पर विकल्प से अ, विकल्पाभाव में उ, द्य के स्थान पर ज्ज।

पवट्ठो, पउट्ठो < प्रकोष्ठ:—क का लोप और शेष ओ के स्थान पर अ, विकल्पाभाव में उ, संयुक्त ष का लोप और ठ को द्वित्व।

मणहरं, मणोहरं < मनोहरम्—नकारोत्तर ओ के स्थान पर विकल्प से अ।

सिरविअणा, सिरोविअणा < शिरोवेदना—रकारोत्तर ओ के स्थान में विकल्प से अ।

सररुहं, सरोरुहं < सरोरुहम्— ,, ,, ,,

(ख) ओ = ऊं—

सूसासो < सोच्छ्वासः—सकारोत्तर ओकार को ऊकार।

(ग) ओ = अउ—

गउओ < गोकः—गकारोत्तर ओकार को अउ, क लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

गउआ < गोका—गकारोत्तर ओकार को अउ, क लोप, आ स्वर शेष।

गउ, गऊ < गो— " " "

(घ) ओ = आऊ—

गाऊ < गो—ओकार को आऊ हुआ है।

(१०) संस्कृत की औ ध्वनि का प्राकृत में अउ, आ, उ, आव और ओ में परिवर्तन होता है।

(क) औ = अउ—

कउरवो < कौरवः—औकार के स्थान पर अउ तथा विसर्ग को ओत्व।

कउलो < कौलः— " " "

कउसलं < कौशलम्—ककारोत्तर औकार को अउ, तालव्य श को दन्त्य स।

गउडो < गौडः—गकारोत्तर औकार को अउ।

गउरवं < गौरवम्— " "

पउरो < पौरः—पकारोत्तर औकार के स्थान पर अउ।

पउरिसं < पौरुषम्— " " , मूर्धन्य ष को स तथा रु को रि।

मउणं < मौनम्—मकारोत्तर औकार के स्थान में अउ, न को ण।

मउली < मौलिः— " "

सउहं < सौधम्—सकारोत्तर औकार को अउ तथा ध के स्थान पर ह।

सउरा < सौराः— " " "

(ख) औ = आ—

गारवम् < गौरवम्—औकार के स्थान आकार।

(ग) औ = उ—

दुवारिओ < दौवारिकः—दकारोत्तर औकार के स्थान पर उ, क का लोप, अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व।

पुलोमी < पौलोमी—पकारोत्तर औकार को उत्व।

मुंजायणो < मौञ्जायन—मकारोत्तर औकार को उत्व।

सुंडो < शौण्डः—शकार के स्थान में दन्त्य स तथा औकार को उत्व।

सुद्धोअणी < शौद्धोदनिः—तालव्य श को दन्त्य स, औकार को उत्व, द का लोप, अ स्वर शेष, न को ण।

सुगंधत्तणं < सौगन्ध्यम्—औकार को उत्व।

सुन्देरं < सौन्दर्यम्— „

सुपण्णिओ < सौवर्णिक —औकार को उत्व।

(घ) औ = आव—

नावा < नौः—औकार के स्थान पर आवादेश।

(ङ) औ = ओ—

गोरी < गौरी—गकारोत्तर औकार को ओत्व।

कोमुई < कौमुदी—ककारोत्तर औकार को ओत्व, दकार का लोप और ई स्वर शेष।

कोसंबी < कौशाम्बी—ककारोत्तर औकार को ओत्व, तालव्य श को दन्त्य स।

कोसिओ < कौशिकः— „ „ „ क लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

कोत्थुहो < कौस्तुभः—ककारोत्तर औकार को ओत्व, स्तु के स्थान में त्थु, भ को ह और विसर्ग का ओत्व।

जोव्वणं < यौवनम्—यकार को ज और औकार को ओत्व।

कोंचो < क्रौञ्चः—ककारोत्तर औ को ओत्व।

व्यंजन परिवर्तन

(११) संस्कृत की क ध्वनि का प्राकृत में ख, ग, च, भ, म, व और ह में परिवर्तन होता है।

(क) क = ख—

खप्परं < कर्परम्—क के स्थान पर ख, संयुक्त रेफ का लोप और प को द्वित्व।

खीलो < कील:—क के स्थान पर ख, विसर्ग को ओत्व।

खीलओ—कीलक:—क के स्थान पर ख, अन्त्य क का लोप अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

खुज्जो < कुब्जः—क के स्थान पर ख, संयुक्त ब का लोप और ज को द्वित्व।

(ख) क = ग—

असुगो < असुक —क के स्थान पर ग और विसर्ग को ओत्व।

अमुगो < अमुकः— „ „

आगरिसो < आकर्ष—क के स्थान पर ग, र्ष के स्थान पर रिस, विसर्ग का ओत्व।

आगारो < आकरः—क के स्थान पर ग और दीर्घ।

उवासगो < उपासकः—प के स्थान पर व, तालव्य श को दन्त्य, क को ग।

एगो < एकः—क के स्थान पर ग, विसर्ग को ओत्व।

गेंदुअं < कन्दुकम्—क के स्थान पर ग और अकार को एकार अन्तिम क का लोप, अ स्वर शेष।

दुगुलं < दुकूलम्—क का ग और ऊकार को ह्रस्व उकार।

मयगलो < मदकलः—द का लोप, अ स्वर शेष तथा य श्रुति, क के स्थान में ग।

मरगयं < मरकतम्—क के स्थान में ग, त लोप और शेष अ स्वर को य।

सावगो < श्रावकः—संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, क को ग तथा विसर्ग को ओत्व।

लोगो < लोकः—क को ग, विसर्ग को ओत्व।

(ग) क = च—

चिलाओ < किरातः—क के स्थान पर च और र को ल।

(घ) क = भ—

सीभरो, सीअरो < शीकरः—तालव्य श को दन्त्य स, क को विकल्प से भ, विकल्पाभाव में क का लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

(ङ) क = म—

चंदिमा < चन्द्रिका—संयुक्त रेफ का लोप और क को म।

(च) क = व—

पवट्ठो < पकोष्ठः—संयुक्त रेफ का लोप, क के स्थान पर व, संयुक्त ष का लोप, ठ को द्वित्व और पूर्ववर्ती ठ को ट।

(छ) क = ह—

चिहुरो < चिकुरः—क को ह, विसर्ग को ओत्व।

निहसो < निकषः—क को ह, मूर्धन्य ष को दन्त्य स, विसर्ग को ओत्व।

फलिहो < स्फटिकः—संयुक्त स का लोप, ट का लोप, क के स्थान पर ह, विसर्ग को ओत्व।

सीहरो < शीकरः—तालव्य श को दन्त्य स, क को ह और विसर्ग को ओत्व।

(१२) संस्कृत की ख ध्वनि प्राकृत में क में बदल जाती है।

ख = क—

संकलं < शृंखलम्—संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स और ख के स्थान पर क।

संकला < शृंखला—संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स और ख के स्थान पर क।

(१३) संस्कृत की ग ध्वनि का प्राकृत में म, छ और व में परिवर्तन होता है।

(क) ग = म—

पुंनामाइं < पुंनागानि—ग के स्थान पर म तथा न लोप और इ स्वर, अनुस्वार।

भामिणी < भगिनी—ग के स्थान पर म और न को णत्व।

(ख) ग = छ—

छालो < छाग:—ग के स्थान पर छ और विसर्ग को ओत्व।

छाली < छागी—ग के स्थान पर छ।

(ग) ग = व—

दूहवो < दुर्भग:—उपसर्ग के दु को दीर्घ, भ को ह और ग के स्थान में व तथा विसर्ग को ओत्व।

सूहवो < सुभग:—उपसर्ग के सु को दीर्घ, भ को ह और ग के स्थान पर व तथा विसर्ग को ओत्व।

(१४) प्राकृत में संस्कृत का च वर्ण ज, ट, छ और स में परिवर्तित होता है।

(क) च = ग—

पिसागी < पिशाची—तालव्य श को दन्त्य स और च को ग।

(ख) च = ट—

आउंटणं < आकुञ्चनम्—क का लोप, उ स्वर शेष तथा च के स्थान पर टत्व, न को णत्व।

(ग) च = छ—

पिसल्लो < पिशाच:—तालव्य श को दन्त्य स और च के स्थान में ल्ल, विसर्ग को ओत्व।

(घ) च = स—

खसिओ < खचित:—च के स्थान पर स, अन्तिम त का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

(१५) संस्कृत का ज वर्ण प्राकृत में झ में परिवर्तित होता है।

झडिलो, जडिलो < जटिल:—ज के स्थान पर विकल्प से झ आदेश, ट के स्थान में ड तथा विसर्ग का ओत्व।

(१६) संस्कृत का ट वर्ण प्राकृत में ढ, ड और ल के रूप में परिवर्तित होता है।

(क) ट = ड—

घडो < घटः—ट के स्थान में ड, विसर्ग का ओत्व।

नडो < नटः— ,, ,,

भडो < भटः— ,, ,,

(ख) ट = ढ—

केढवो < कैटभः—ऐकार को एकार, ट को ढ और भ को व, विसर्ग को ओत्व।

सयढो < शकटः—तालव्य श को स, ककार का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति तथा ट को ढ।

सढा < सटा—ट को ढ।

(ग) ट = ल—

फलिहो < स्फटिकः—संयुक्त स का लोप, ट के स्थान पर ल और क को ह।

चविला < चपेटा—प को व, एकार को ह्रस्व और ट को ल।

फालेइ < पाटयति—पा के स्थान पर फा, ट को ल, अकार को एकार तथा विभक्ति चिह्न इ।

(१७) संस्कृत की ठ ध्वनि का प्राकृत में ल, ट और ढ में परिवर्तन हो जाता है।

(क) ठ = ल—

अंकोल्लो < अङ्कोठ—ठ के स्थान पर ल्ल हुआ है।

अंकोल्लतेल्लं < अङ्कोठतैलम्—ठ के स्थान पर ल्ल, तकारोत्तर ऐकार को एकार।

(ख) ठ = ह—

पिहडो < पिठरः—ठ का ह और र का ड हुआ है।

(ग) ठ = ढ—

पढ < पठ—ठ का ढ हुआ है।

पिढरो < पिठरः—ठ को ढ तथा विसर्ग का ओत्व।

(१८) संस्कृत का ड वर्ण प्राकृत में ल हो जाता है।

वलयामुहं < वडवामुखम्—ड के स्थान पर ल।

तलायं < तडागम्— ,,

कीला < क्रीडा— ,,

(१९) संस्कृत का ण वर्ण प्राकृत में विकल्प से ल में बदल जाता है।

वेलू, वेणू < वेणुः—

(२०) संस्कृत के त वर्ण का प्राकृत में च, छ, ड, ट, ण, र, ल, व और ह में परिवर्तन होता है।

(क) त = च—

चुच्छं < तुच्छम्—त के स्थान पर च आदेश हुआ है।

(ख) त = छ—

छुच्छं < तुच्छम्—त के स्थान पर छ आदेश हुआ है।

(ग) त = ट—

टगरो < तगरः—त के स्थान पर ट और विसर्ग को ओत्व।

टूवरो < तूबरः— ,, ,,

टसरो < त्रसरः—संयुक्त रेफ का लोप, शेष त के स्थान पर ट, विसर्ग को ओत्व।

(घ) त = ड—

पडाया < पताका—त के स्थान पर ड, क का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति।

पडिकरइ < प्रतिकरोति—त के स्थान पर ड और करोति का करइ।

पडिनिअत्तं < प्रतिनिवृत्तम्—त के स्थान पर ड, व का लोप, ऋ के स्थान पर अ।

पडिवया < प्रतिपत्—त के स्थान पर ड, प को व और त् के स्थान पर आ तथा यश्रुति होने से या।

पडिहासो < प्रतिभासः—त को ड, भ को ह और विसर्ग को ओत्व।

पडिमा < प्रतिमा—त को ड।

पंडसुआ < प्रतिश्रुत्—त के स्थान पर ड।

पडिसारो < प्रतिसारः— ,, ,,

पडिहासो < प्रतिहासः— ,, ,,

पहुडि < प्रभृति—भ के स्थान पर ह, संयुक्त ऋ को उ, त को ड।

पाहुडं < प्राभृतम्—भ के स्थान पर ह, संयुक्त ऋ को उ, त को ड।

मडयं < मृतकम्—मृ की ऋ के स्थान पर अ, त को ड, क लोप, अ स्वर शेष और यश्रुति।

अवहडं, अवहयं < अवहृतम्—हृ में रहनेवाली ऋ को अ, त को विकल्प से ड, विकल्पाभाव में त का लोप और यश्रुति।

ओहडं, ओहयं < अवहृतम्—अव के स्थान पर ओ, त का ड, विकल्पाभाव में त लोप और य श्रुति।

कडं, कयं < कृतम्—ककारोत्तर ऋ को अ, विकल्प से त को ड विकल्पाभाव में त लोप, अ स्वर शेष और यश्रुति।

दुक्कडं, दुक्कयं < दुष्कृतम्—संयुक्त ष् का लोप, क को द्वित्व, ऋ को अ और त के स्थान पर विकल्प से ड।

मडं, मयं < मृतम्—ऋ को अ, त को ड, विकल्पाभाव में तकार का लोप तथा अ स्वर को यश्रुति।

वेडिसो, वेअसो < वेतसः—त को ड और ह्रस्व, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप और अ स्वर शेष।

सुकडं, सुकयं < सुकृतम्—ककारोत्तर ऋकार को अ, त को ड, विकल्पाभाव में त का लोप, अ स्वर शेष तथा यश्रुति।

(ङ) त = ण—

अणिउँतयं < अतिमुक्तकम्—त के स्थान पर ण, मकार का लोप, शेष उ को अनुनासिक, संयुक्त क का लोप, अन्तिम क का लोप, अ स्वर शेष और यश्रुति।

गब्भिणो < गर्भित.—संयुक्त रेफ का लोप, भ को द्वित्व, पूर्ववर्ती महाप्राण के स्थान पर अल्पप्राण, त को ण विसर्ग को ओत्व।

(च) त = र—

सत्तरी < सप्तति.—संयुक्त प का लोप, त को द्वित्व और ति के स्थान पर रि तथा दीर्घ।

(छ) त = ल—

अलसी < अतसी—त के स्थान पर ल।

सालवाहणो < सातवाहनः—त के स्थान पर ल, न को णत्व, विसर्ग को ओत्व।

पलिलं, पलिअं < पलितम्—त के स्थान पर विकल्प से ल, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप, अ स्वर शेष।

(ज) त = व—

आवज्जं, आउज्जं < आतोद्यम्—त के स्थान पर विकल्प से व और द्य को ज्ज।

पीवलं, पीअलं < पीतलम्—त के स्थान पर विकल्प से व, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप और अ स्वर शेष।

(झ) त = ह—

विहत्थी < वितस्तिः—त के स्थान पर ह और स्ति के स्थान पर त्थी।

काहलो, कायरो < कातरः—त के स्थान पर विकल्प से ह और रेफ को ल।

माहुलिंगं, माउलिंगं < मातुलिङ्गम्—त को विकल्प से ह, विकल्पाभाव पक्ष में त का लोप और उ स्वर शेष।

वसही, वसई < वसति —त को विकल्प से ह, विकल्पाभाव पक्ष में तकार का लोप और इ स्वर शेष तथा दीर्घ।

(२१) संस्कृत का थ वर्ण प्राकृत में ढ, ध और ह में परिवर्तित हो जाता है।

(क) थ = ढ—

पढमो < प्रथमः—थ को ढ और अनुस्वार को ओत्व।

मेढी < मेथिः—थ को ढ और इकार को दीर्घ।

सिढिलो < शिथिरः—तालव्य श को दन्त्य स, थ को ढ, रेफ को ल।

निसीढो < निशीथः—तालव्य श को दन्त्य स तथा थ को ढ।

पुढवी < पृथिवी—पकारोत्तर ऋकार को उकार और थ को ढ।

(ख) थ = ध—

पिधं < पृथक्—पकारोत्तर ऋ को ह्रस्व तथा थ के स्थान पर ध, अनुस्वार और अन्त्य हलन्त व्यंजन क का लोप।

(ग) थ = ह—

निसीहो < निशीथः—तालव्य श को दन्त्य स और थ को ह।

कहइ < कथयति—थ के स्थान पर ह, विभक्ति चिह्न इ।

नाहो < नाथः—थ को ह।

मिहुणं < मिथुनम्—थ के स्थान पर ह और न को णत्व।

आवसहो < आवसथः—थ के स्थान पर ह।

(२२) संस्कृत का द वर्ण प्राकृत में ड, ध, र, ल, व और ह में परिवर्तित हो जाता है।

(क) द = ड—

डंस < दंश—द के स्थान पर ड और तालव्य श को दन्त्य स।

डह् < दह—द के स्थान पर ड।

कडणं, कयणं < कदनम्—द के स्थान पर विकल्प से ड, विकल्पाभाव में द का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति।

डड्ढो < दग्ध.—द के स्थान में ड और ग्ध के स्थान पर ड्ढ।

डंडो < दण्ड.—द के स्थान पर ड और विसर्ग को ओत्व।

डंभो < दम्भ — " " "

डब्भो < दर्भः—द के स्थान पर ड, संयुक्त रेफ का लोप, भ को द्वित्व और महाप्राण को अल्पप्राण।

डरो < दरः—द को ड और विसर्ग को ओत्व।

डसणं < दशनं—द को ड, तालव्य श को दन्त्य स तथा न को णत्व।

डाहो < दाहः—द को ड और विसर्ग को ओत्व।

डोला < दोला—विकल्प से द को ड।

डोहलो, दोहलो < दोहदः—द के स्थान में विकल्प से ड और अन्तिम द को ल।

(ख) द = ध—

धीप < दीप—द को ध।

धिप्पइ < दीप्यते—द के स्थान में ध, दीर्घ ई को ह्रस्व और विभक्ति चिह्न इ।

(ग) द = र—संख्यावाचक शब्दों में अनादि और असंयुक्त संस्कृत का द वर्ण प्राकृत में र हो जाता है।

एआरह < एकादश—क का लोप और आ स्वर शेष, द के स्थान पर र और श को ह।

बारह < द्वादश—संयुक्त व का लोप, द के स्थान पर र, श को ह।

तेरह < त्रयोदश—त्र के स्थान पर ते, द को र, श को ह।

करली < कदली—द को र।

(घ) द = ल—

पलीवेइ < प्रदीपयति—संयुक्त रेफ का लोप, द को ल, प को व, अकार को ए और विभक्ति चिह्न इ।

पलित्तं < प्रदीप्तम्—संयुक्त रेफ का लोप, द को ल, संयुक्त प का लोप और त को द्वित्व।

दोहलो < दोहदः—अन्तिम द को ल।

कलंबो, कयंबो < कदम्ब—विकल्प से द को ल और विकल्पाभाव पक्ष में द का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति।

(ङ) द = व—

उव्वट्टिओ < उद्वर्तितः—द के स्थान पर व, रेफ का लोप और त को ट तथा द्वित्व, तकार का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

(च) द = ड—

कउडं < ककुदम्—मध्यवर्ती क का लोप, उ शेष तथा द के स्थान पर ड।

(२६) प्राकृत में संस्कृत का ध वर्ण ढ और ह में परिवर्तित होता है।

(क) ध = ढ—

निसढो < निषधः—मूर्धन्य ष को दन्त्य स और ध को ढ।

ओसढं < औषधम्—औकार को ओकार, मूर्धन्य ष को दन्त्य स तथा ध को ढ।

(ख) ध = ह—

इंदहणू < इन्द्रधनुः—संयुक्त रकार का लोप, ध को ह, न को णत्व और उकार को दीर्घ।

बहिरो < बधिरः—ध को ह और विसर्ग को ओत्व।

बाहइ < बाधते—ध के स्थान में ह और विभक्ति चिह्न इ।

बाहो < व्याधः—संयुक्त य का लोप और ध को ह।

साहू < साधुः—ध को ह और ह्रस्व उकार को दीर्घ।

(२४) प्राकृत में संस्कृत के न वर्ण का ण, ण्ह और ल में परिवर्तन होता है।

(क) न = ण—स्वर परवर्ती, एकपदस्थित और असंयुक्त न को ण होता है।

कणयं < कनकम्—न को णत्व, क लोप और अ स्वर को य श्रुति।

नयणं < नयनम्—न को णत्व।

मयणो < मदनः—मध्यवर्ती द का लोप, और शेष अ स्वर के स्थान पर य श्रुति न को णत्व।

वयणं < वचनम्—मध्यवर्ती च का लोप, अ स्वर के स्थान पर य, न को णत्व।

वयणं < वदनम्—मध्यवर्ती द का लोप, अ के स्थान पर य तथा न को णत्व।

णई < नदी—न को णत्व, दकार का लोप और ईस्वर शेष।

णरो < नरः—न को णत्व, विसर्ग को ओत्व।

णेइ < नयति—न को णत्व और विभक्ति चिह्न इ।

(ख) न = ण्ह—

ण्हाविओ < नापितः—न के स्थान पर विकल्प से ण्ह, प को व, तकार का लोप अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व, विकल्पाभाव में—नाविओ रूप।

(ग) न = ल—

लिंबो < निम्बः—न को ल, विसर्ग को ओत्व।

(२५) संस्कृत के प वर्ण का प्राकृत में फ, म, व और र में परिवर्तन होता है।

(क) प = फ—

फणसो < पनसः—प के स्थान पर फ, न को णत्व और विसर्ग को ओत्व।

फलिहो < परिघः—प के स्थान पर फ, र को ल, घ को ह और विसर्ग को ओत्व।

फलिहा < परिखा—प के स्थान पर फ, र को ल और ख के स्थान में ह।

फरुसो < परुषः—प को फ और मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

फाडि < पाटि—प को फ और ट को ड।

फालिहद्दो < पारिभद्रः—प को फ, र को ल, भ को ह और संयुक्त रेफ का लोप, द को द्वित्व तथा विसर्ग को ओत्व।

(ख) प = म—

आमेलो < आपीडः—प के स्थान पर म, ईकार को एकार, ड को ल, विसर्ग को ओत्व

नीमो < नीपः—प को म, विसर्ग को ओत्व।

(ग) प = व—

वहुत्तं < प्रभूतम्—संयुक्त रेफ का लोप और प को व, भ को ह तथा त को द्वित्व।

(घ) प = र—

पारद्धी < पापर्द्धिः—यहाँ प के स्थान पर र, संयुक्त रेफ का लोप और दीर्घ।

(२६) संस्कृत के व वर्ण का प्राकृत में, भ, म और य में परिवर्तन होता है।

(क) व = भ—

भिसिणी < बिसिनी—ब के स्थान पर भ हुआ है।

(ख) व = म—

कमंधो < कवन्धः—मध्यवर्ती ब को मकार।

(ग) व = य—

कयन्धो < कबन्धः—व के स्थान पर य और विसर्ग को ओत्व।

(२७) संस्कृत के भ वर्ण का प्राकृत में व और ह में परिवर्तन होता है।

(क) भ = व—

केढवो < कैटभः—ऐकार को एत्व, ट को ढ और भ को व।

(ख) भ = ह—

नहं < नभस्—भ के स्थान पर ह।

पहा < प्रभा—संयुक्त रेफ का लोप और भ को ह।

सहा < सभा—भ को ह।

सहावो < स्वभावः—संयुक्त व का लोप, भ के स्थान पर ह और विसर्ग को ओत्व।

सोहइ < शोभते—तालव्य श को दन्त्य स, भ को ह और विभक्ति चिह्न इ।

(२८ संस्कृत का म वर्ण प्राकृत में ढ, व और स में परिवर्तित होता है।

(क) म = ढ—

विसढो < विषमः—मूर्धन्य ष को दन्त्य स और म को ढ।

(ख) म = व—

वम्महो < मन्मथः—म के स्थान पर व तथा संयुक्त न का लोप और म को द्वित्व, थ को ह।

अहिवन्नू < अभिमन्युः—भ को ह और म को व, संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व और ह्रस्व को दीर्घ।

(ग) म = स—

भसलो < भ्रमरः—संयुक्त रेफ का लोप, म को स और रेफ को ल।

(घ) म = अनुनासिक—निम्न शब्दों में मु के मकार का लोप हो जाता है और शेष स्वर उ के स्थान में अनुनासिक ऊँ हो जाता है।

अणिउँतयं < अतिमुक्तम्—मकार का लोप और शेष स्वर उ को अनुनासिक ॐ।

काउँओ < कामुकः—मकार का लोप और शेष स्वर उ को अनुनासिक ॐ।

चाउँडा < चामुण्डा— „ „ „

जउँणा < यमुना— „ „ „

(२९) संस्कृत के य वर्ण का प्राकृत में आह, ज्ज, ज, त, ल, व और ह में परिवर्तन होता है।

(क) य = आह—

कइवाहं < कतिपयम्—तकार का लोप, इ स्वर शेष, प के स्थान में व और य को आह।

(ख) य = ज्ज—

उत्तरिज्जं < उत्तरीयम्—री को ह्रस्व और य को ज्ज।

तइज्जो < तृतीयः—तकारोत्तर ऋकार को अ, त का लोप और शेष स्वर ई को ह्रस्व और य को ज्ज।

विइज्जो < द्वितीयः—संयुक्त द् का लोप, मध्यवर्ती त का लोप, शेष स्वर ई को ह्रस्व, य को ज्ज।

(ग) य = ज—संस्कृत शब्दों में आदि में आनेवाला य प्राकृत में ज में बदल जाता है।

जमो < यमः—य के स्थान पर ज, विसर्ग को ओत्व।

जसो < यश — „ तालव्य श को दन्त्य स और विसर्ग को ओत्व।

जाइ < याति—य को ज, त का लोप और इ स्वर शेष।

(घ) य = त—

तुम्हकेरो < युष्मदीयः—युष्मद् के स्थान पर तुम्ह और ईय को केर।

तुम्हारिसो < युष्मादृश —युष्मद् के स्थान पर तुम्ह और दृश के स्थान पर रिस।

तुम्ह < युष्मद्—युष्मद् के स्थान पर तुम्ह।

(ङ) य = ल—

लट्ठी < यष्टिः—य के स्थान पर ल, संयुक्त ष् का लोप, ट का द्वित्व और द्वितीय अल्पप्राण का महाप्राण, इकार को दीर्घ।

(च) य = व—

कइअवं < कतिपयम्—त का लोप और इ स्वर शेष, प का लोप और अ स्वर शेष तथा य का व।

(छ) य = ह—

छाही < छाया—य के स्थान पर ह और आकार को ईत्व।

सच्छाहं < सच्छायम्—य को ह।

(३०) संस्कृत का र वर्ण प्राकृत में ड, ण और र में बदल जाता है।

(क) र = ड—

किडी < किरि:—र के स्थान पर ड, इकार को दीर्घ।

पिहडो < पिठर:—ठ के स्थान पर ह और र को ड।

भेडो < भेर:—र के स्थान पर ड।

(ख) र = ण—

कणवीरो < करवीर:—र के स्थान पर ण।

(ग) र = ल—

अवद्दालं < अपद्वारम्—संयुक्त व का लोप और द को द्वित्व, र को ल।

इंगालो < अङ्गार:—अकार को इकार और र को ल।

कलुणो < करुण:—र को ल।

काहलो < कातर:—त को ह और र को ल।

दलिद्दो < दरिद्र:—र को ल, संयुक्त रेफ का लोप और द को द्वित्व।

दलिद्दाइ < दरिद्राति— „ „

दालिद्दं < दारिद्र्यम्— „ और य का लोप

फलिहा < परिखा—प का फ, र को ल और ख को ह।

फलिहो < परिघ:—प को फ, र को ल और घ को ह।

फालिहद्दो < पारिभद्र:—प को फ, र को ल, भ को ह तथा संयुक्त रेफ का लोप और द को द्वित्व।

भसलो < भ्रमर:—संयुक्त रेफ का लोप, म को स और र को ल।

मुहलो < मुखर:—ख को ह और र को ल।

जहुट्ठिलो < युधिष्ठिर:—य को ज, ध को ह, संयुक्त ष का लोप, ठ को द्वित्व और पूर्ववर्ती महाप्राण को अल्पप्राण, र को ल।

लुक्को < रुग्ण:—र को ल और ग्ण को क्क।

वलुणो < वरुण:—र को ल।

सिढिलो < शिथिर:—तालव्य श को दन्त्य स, थ को ढ और र को ल।

सक्कालो < सत्कार:—संयुक्त त का लोप, क को द्वित्व और र को ल।

सोमालो < सुकुमार:—क का लोप, शेष स्वर उ का लोप तथा पूर्व स्वर उ को ओत्व, र को ल।

थूलो—स्थूरः—संयुक्त स का लोप और र को ल।

थूलभद्दो < स्थूरभद्र.—संयुक्त स का लोप, र को ल, संयुक्त र का लोप तथा द को द्वित्व।

हलिद्दो < हरिद्र.—र को ल, संयुक्त रेफ का लोप और द को द्वित्व।

हलिद्दा < हरिद्रा— „ „ „

जढलं, जढरं < जठरम्—ठ को ढ और र को विकल्प से ल।

निट्ठुलो, निट्ठुरो < निष्ठुरः—संयुक्त ष का लोप, ठ को द्वित्व द्वितीय अल्पप्राण को महाप्राण और र को ल।

(३१) संस्कृत का ल वर्ण प्राकृत में ण और र में परिवर्तित होता है।

(क) णडाल, णिडालं < ललाटम्—ल के स्थान पर ण, ट को ड, वर्ण व्यत्यय होने से णडालम्, अकार को इत्व होने से णिडालं।

णंगल, लंगलं < लाङ्गलम्—ल को ण तथा ह्रस्व।

णाहलो, लाहलो < लाहलः—ल को ण।

(ख) ल = र—

थोरं < स्थूलम्—संयुक्त स का लोप, ऊकार को ओत्व, र को ल।

(३२) संस्कृत के व वर्ण का प्राकृत में भ और म में परिवर्तन होता है।

(क) व = भ—

भिब्भलो, विब्भलो, विहलो < विह्वल —व के स्थान पर भ।

(ख) व = म—

समरो < शबरः—तालव्य श के स्थान पर दन्त्य स, व को म।

वेसमणो < वैश्रवण —ऐकार को एकार, संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स, व को म और विसर्ग को ओत्व।

नीमी < नीवी—व के स्थान पर म।

सिमिणो < स्वप्नः—संयुक्त वर्णों का पृथक्करण, इकारागम और व को म तथा न को णत्व।

(३३) संस्कृत के श वर्ण का छ, स और ह में परिवर्तन होता है।

(क) श = छ—

छमी < शमी

छिरा < शिरा

छावो < शावः

(ख) श = स—

कुसो < कुश —श को स।

दस < दश— „

निसंसो < नृशंस—संयुक्त ऋकार को ह्रस्व और श को स।
विसइ < विंशति—अनुस्वार को लोप, श को स और त का लोप, इ शेष।
वंसो < वंश:—श के स्थान पर स।
सद्दो < शब्द:—श को स, संयुक्त ब् का लोप और द् को द्वित्व।
सामा < श्यामा—संयुक्त या का लोप, श को स।
सुद्धं < शुद्धम्—श को स।
सोहइ < शोभते—श को स, भ को ह और विभक्ति चिह्न इ।

(ग) श = ह—

एआरह < एकादश—क लोप, अ स्वर शेष, द को र और श को ह।
दह < दश—श को ह।
दहबलो < दशबल:— „
दहमुहो < दशमुख:—„ और ख को ह।
दहरहो < दशरथ:—श को ह और थ के स्थान में भी ह।
बारह < द्वादश—संयुक्त द् का लोप, द को र, श को ह।
तेरह < त्रयोदश—त्रय के स्थान में ते, द को र, श को ह।

(३४) संस्कृत के ष वर्ण का प्राकृत में छ, ण्ह, स और ह में परिवर्तन होता है।

(क) ष = छ—

छप्पहो < षट्पदः—षट् के स्थान पर छ और द को ह।
छमुहो < षण्मुख:— „ „
छट्ठो < षष्ठ:—ष के स्थान पर छ, संयुक्त ष का लोप और ठ को द्वित्व तथा प्रथम महाप्राण का अल्पप्राण।
छट्ठी < षष्ठी— „ „ „

(ख) ष = ण्ह—

सुण्हा < स्नुषा—संयुक्त न का लोप और ष के स्थान में ण्ह।

(ग) ष = स—

कसायो < कषाय:—ष के स्थान में स।
निहसो < निकष:—क को ह और ष को स।
संडो < षण्ढ:—ष को स।

(३५) संस्कृत के स वर्ण का प्राकृत में छ और ह में परिवर्तन होता है।

(क) स = छ—

छत्तपण्णो < सप्तपर्ण:—स को छ, संयुक्त प का लोप, त को द्वित्व, प को प, संयुक्त रेफ का लोप और ण को द्वित्व।

छुहा < सुधा—स के स्थान में छ आदेश और ध को ह।

(ख) स = ह—

दिवहो < दिवसः—स के स्थान पर ह और विसर्ग को ओत्व।

(३६) संस्कृत का ह वर्ण प्राकृत में घ और र में बदलता है।

सिंघ < सिंहः—ह के स्थान पर घ।

उत्थारो < उत्साहः—त्स को त्थ और ह के स्थान पर र।

(३७) संस्कृत की कई ध्वनियों का प्राकृत में लोप हो जाता है।

(क) स्वर लोप—

रण्णं < अरण्यम्—अ का लोप।

लाऊ < अलाबू— ,,

(ख) व्यञ्जन लोप—

पारो < प्राकारः—क का लोप।

वारणं < व्याकरणम्— ,,

आओ < आगतः—ग का लोप।

दणू < दनुजः—ज का लोप।

दणुवहो < दनुजवधः— ,,

भाणं—भाजनम्— ,,

राउलं < राजकुलम्— ,,

उंबरो < उदुम्बरः—द का लोप।

दुग्गावी < दुर्गादेवी— ,,

पावडणं < पादपतनम्— ,,

पावीढं < पादपीठम्— ,,

किसलं < किसलयम्—य का लोप

कालासं < कालायसम्— ,,

हिअं < हृदयं— ,,

सहिओ < सहृदयः— ,,

अडो < अवडो—व लोप।

अत्तमाणो < आवर्तमान.— ,,

एमेव < एवमेव—व लोप

जीअं < जीवितम्— ,,

देउलं < देवकुलम्— ,,

पारओ < प्रावारकः— ,,

जा < यावत्— ,,

संयुक्त व्यञ्जन परिवर्तन

(३८) संस्कृत की क्ष ध्वनि का प्राकृत में ख, छ और झ होता है; परन्तु पद के मध्य या अन्त में क्ष के आने पर क्ख, च्छ और ज्झ हो जाता है।

(क) क्ष = ख—

खओ < क्षयः—क्ष के स्थान पर ख और य लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

खीणं < क्षीणम्—क्ष के स्थान पर ख।

खीरं < क्षीरम्— ,, ,,

खेडओ < क्ष्वेटकः—क्ष का ख, ट को ड और क लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को उत्व।

खोडओ < क्ष्वोटकः— ,, ,, ,,

इक्खू < इक्षुः—पद के मध्य में क्ष के होने से क्ख और उकार को दीर्घ।

रिक्खो < ऋक्षः—ऋ को रि ,, ,, विसर्ग को ओत्व।

रिक्खं < ऋक्षम्— ,, ,, ,,

मक्खिआ < मक्षिका—पद मध्य में रहने से क्ष को क्ख, ककार का लोप और आ स्वर शेष।

लक्खणं < लक्षणम्—पद के मध्य में रहने से क्ष को क्ख।

पक्खीणं < प्रक्षीणम्—संयुक्त रेफ का लोप, पद के मध्य में रहने से क्ष को क्ख।

पक्खेवो < प्रक्षेपः— ,, ,, ,,

सारिक्खं < सादृक्ष्यम्—दृ के स्थान पर रि और पद के मध्य में रहने से क्ष्य का क्ख।

जक्खो < यक्षः—य को ज और क्ष का क्ख।

(ख) क्ष = छ—

छणो < क्षणः—क्ष के स्थान पर छ।

छयं < क्षतम्—क्ष के स्थान पर छ, तकार का लोप, अस्वर शेष और यश्रुति।

छमा < क्षमा—क्ष के स्थान छ।

छारो < क्षारः— ,, ,,

छीणं < क्षीणम्— ,, ,,

छीरं < क्षीरम्— ,, ,,

छुण्णो < क्षुण्णः— ,, ,,

छीयं < क्षुतम्— ,, ,, और त लोप, अ स्वर शेष तथा य श्रुति।

छुहा < क्षुधा—क्ष को छ तथा ध को ह।

छुरो < क्षुरः—क्ष को छ।

छेत्तं < क्षेत्रम्—क्ष को छ।

अच्छि < अक्षि—पद के मध्य में क्ष के रहने से क्ष के स्थान पर च्छ।

उच्छू < इक्षुः—इ के स्थान पर उत्व, पद के मध्य में क्ष के होने से च्छ।

उच्छा < उक्षा—पद के मध्य में होने से क्ष के स्थान में च्छ।

रिच्छो < ऋक्षः—ऋ के स्थान पर रि और पद के मध्य में होने से क्ष को च्छ।

कच्छो < कक्षः—पद के मध्य में होने से क्ष के स्थान में च्छ।

कच्छा < कक्षा— ,, ,, ,,
कुच्छी < कुक्षिः— ,, ,, ,,

कुच्छेअयं < कौक्षेयकम्—औकार को उत्व, पद के मध्य में क्ष के होने से च्छ, य और क का लोप, अ स्वर शेष अन्तिम में य श्रुति।

दच्छो < दक्षः—पद के मध्य में होने से क्ष को च्छ।

पच्छीणं < प्रक्षीणम्— ,, ,,

मच्छिआ < मक्षिका— ,, ,,

लच्छी < लक्ष्मीः— ,, ,,
वच्छं < वक्षम्— ,, ,,

वच्छो < वृक्ष — ,, ,,

सरिच्छो < सदृक्ष — ,, ,,
सारिच्छं < सादृक्ष्यम्— ,, ,,

(ग) क्ष = झ—

झीणं < क्षीणं—क्ष के स्थान पर झ।

झिज्जइ < क्षीयते—क्ष के स्थान पर झ, ईकार को ह्रस्व, य को ज और द्वित्व, विभक्ति चिह्न इ।

पज्झीणं < प्रक्षीणम्—पद मध्य में होने से क्ष के स्थान पर ज्झ।

(३९) संस्कृत के संयुक्त वर्ण ष्क और स्क के स्थान में ख होता है, पर पद के मध्य में आने से क्ख हो जाता है।

(क) ष्क = ख—

निक्खं < निष्कम्—पद के मध्य में ष्क रहने से क्ख।

पोक्खरं < पुष्करम्— ,, ,,
पोक्खरिणी < पुष्करिणी— ,, ,,

(ख) स्क = क्ख—

अवक्खन्दो < अवस्कन्दः—पद के मध्य में स्क रहने से क्ख।

खंदो < स्कन्दः—पद के आदि में स्क रहने से ख आदेश।

खंधो—< स्कन्धः— ,, ,,
खंधावारो < स्कन्धावारः— ,, ,,

(४०) संस्कृत के संयुक्त वर्ण त्य का प्राकृत में च होता है, पर पद के मध्य में आने से च्च।

(क) त्य = च।

चाओ < त्यागः—पदादि में रहने से त्य के स्थान में च।

चाई < त्यागी— ,, ,,

चयइ < त्यजति— ,, ,,

पच्चओ < प्रत्ययः—पद के मध्य में रहने से त्य के स्थान में च्च।

पच्चूसो < प्रत्यूषः— ,, ,, ,,

सच्चं < सत्यम्— ,, ,, ,,

(४१) प्रयोगानुसार त्व को च, थ्व को छ, द्व को ज और ध्व को झ आदेश होता है, किन्तु पद के मध्य में इनके आने से उक्त वर्ण च्च, च्छ, ज्ज और ज्झ हो जाते हैं।

(क) त्व = च्च—

किच्चा < कृत्वा—पद के मध्य में होने से त्व के स्थान पर च्च।

चच्चरं < चत्वरम्— ,, ,,

णच्चा < ज्ञात्वा—ज्ञ के स्थान में ण तथा पद के मध्य में होने से त्वा के स्थान पर च्चा।

दच्चा < दत्वा—पद के मध्य में होने से त्व के स्थान में च्च।

भोच्चा < भुक्त्वा— ,, ,,

सोच्चा < श्रुत्वा—संयुक्त रेफ का लोप, तालव्य श को दन्त्य स तथा उकार को ओत्व, पद मध्य में त्व के होने से च्च।

(ख) थ्व = छ—

पिच्छी < पृथ्वी—प में संयुक्त ऋ के स्थान पर ह्रस्व और पद के मध्य में थ्व के होने पर च्छ।

(ग) द्व = ज—

विज्जं < विद्वान्—पद के मध्य में होने से द्व के स्थान पर ज्ज और आ को ह्रस्व अन्त्य हलन्त्य व्यंजन न् का अनुस्वार।

(घ) ध्व = झ—

झओ < ध्वजः—पदादि में होने से ध्व का झ, ज का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग का ओत्व।

बुज्झा < बुध्वा—पद के मध्य में होने से ध्व के स्थान पर ज्झ।

सज्झसं < साध्वसम्—सा को ह्रस्व, पद के मध्य में होने से ध्व को ज्झ।

(४२) ह्रस्व स्वर से परे संस्कृत के संयुक्त वर्ण थ्य, श्च, त्स और प्स को प्राकृत में च्छ होता है।

(क) थ्य = च्छ—

पच्छं < पथ्यम्—थ्य के स्थान पर च्छ।
पच्छा < पथ्या— " "
मिच्छा < मिथ्या— " "
सामच्छं < सामर्थ्यम्— " "

(ख) श्च = च्छ—

अच्छेरं < आश्चर्यम्—आ को ह्रस्व, श्च को च्छ, र्य को एरं।
पच्छा < पश्चात्—श्च के स्थान पर च्छ और अन्त्य त का लोप।
पच्छिमं < पश्चिमम्—श्च के स्थान पर च्छ।
विच्छिओ < वृश्चिकः—ऋ में संयुक्त ऋ को इ, श्च को च्छ तथा क का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

(ग) त्स = च्छ—

संवच्छरो < संवत्सरः—त्स के स्थान पर च्छ।
उच्छवो < उत्सवः— " "
उच्छाहो < उत्साहः— " "
उच्छुओ < उत्सुकः— " "
मच्छरो < मत्सरः— " "

(घ) प्स = च्छ—

अच्छरा < अप्सरा—प्स के स्थान पर च्छ।
जुगुच्छइ < जुगुप्सति— " "
लिच्छइ < लिप्सति— " "

(४३) पद के आदि में रहने वाले संस्कृत के संयुक्त वर्ण द्य, य्य और र्य को प्राकृत में ज होता है, पर पद के मध्य में इन वर्णों के आने पर ज्ज हो जाता है।

(क) द्य = ज—

जुई < द्युतिः—पदादि में द्य के रहने से ज, उकार का लोप और ह्रस्व इकार को दीर्घ ईकार।

जोओ < द्योतः—पदादि में रहने से द्य के स्थान में ज, त का लोप, अ स्वर शेष, विसर्ग का ओत्व।

अवज्जं < अवद्यम्—पद के मध्य में रहने से द्य का ज्ज ।

मज्जं < मद्यम्— ,, ,, ,,

वेज्जो < वैद्य.— ,, ,, ,,

(ख) य्य = ज—

जज्जो < जय्यः—य्य के पद मध्य में होने से ज्ज ।

सेज्जा < शय्या— ,, ,, तालव्य श को दन्त्य स और अकार को एत्व ।

(ग) र्य = ज—

कज्जं < कार्यम्—पद के मध्य में र्य के रहने से ज्ज ।

पज्जत्तं—पर्याप्तम्— ,, ,, ,, तथा संयुक्त प का लोप और त को द्वित्व ।

पज्जाओ < पर्याय —पद के मध्य में रहने से र्य को ज्ज ।

भज्जा < भार्या—भा को ह्रस्व और पद के मध्य में होने से र्य को ज्ज ।

मज्जाया < मर्यादा—पद के मध्य में होने से र्य को ज्ज तथा द का लोप, आ स्वर शेष और य श्रुति ।

वज्जं < वर्यम्—पद के मध्य होने से र्य को ज्ज ।

(४४) पद के आदि में रहनेवाले संस्कृत के संयुक्त वर्ण ध्य और ह्य को प्राकृत में झ होता है, किन्तु पद के मध्य में इन वर्णों के आने पर ज्झ होता है ।

(क) ध्य = झ—

झाणं < ध्यानम्—पदादि में ध्य के रहने से उसके स्थान में झ तथा न को णत्व ।

झायइ < ध्यायति—पदादि में ध्य के रहने से उसके स्थान में झ ।

विज्झो < विन्ध्यः—पद के मध्य में ध्य के रहने से ज्झ ।

सज्झं < साध्यम्—सा को ह्रस्व और पद के मध्य में रहने से ध्य को ज्झ ।

सज्झाओ < स्वाध्यायः—संयुक्त व का लोप और ह्रस्व, पद के मध्य में रहने से ध्य को ज्झ ।

(ख) ह्य = झ—

गुज्झं < गुह्यम्—पद के मध्य में रहनेवाले ह्य के स्थान पर ज्झ ।

नज्झइ < नह्यति— ,, ,,

मज्झं < मह्यम्— ,, ,,

सज्झो < सह्यः— ,, ,,

(४९) संस्कृत का संयुक्ताक्षर र्त सामान्यतः प्राकृत में ट्ट हो जाता है।

केवट्टो < कैवर्तः—ऐकार को एकार और र्त को ट्ट तथा विसर्ग को ओत्व।

जट्टो < जर्तः—र्त के स्थान पर ट्ट और विसर्ग का ओत्व।

नट्टई < नर्तकी—र्त के स्थान पर ट्ट तथा ककार का लोप, ई स्वर शेष।

पयट्टइ < प्रवर्तते—संयुक्त रेफ का लोप, व को य, र्त को ट्ट, विभक्ति चिन्ह इ।

रायवट्टयं < राजवर्तकम्—ज का लोप, अ स्वर शेष, य श्रुति, र्त को ट्ट तथा क का लोप अ स्वर को य श्रुति।

वट्टी < वर्ती—र्त को ट्ट।

वट्टलं < वर्तुलम्— ,,

वट्टा < वार्ता— ,,

संवट्टिअं < संवर्तितम्— ,,

(४६) संस्कृत के संयुक्ताक्षर म्न और ज्ञ के स्थान पर प्राकृत में ण होता है, पर पद के मध्य में इन वर्णों के आनेपर इनके स्थान में ण्ण होता है। व्यञ्जन से आगे रहने या दीर्घ स्वर के परे रहने से ण ही होता है।

(क) म्न = ण—

निण्णं < निम्नम्—पद के मध्य में म्न के आने से इसके स्थान में ण्ण।

पज्जुण्णो < प्रद्युम्नः—संयुक्त रेफ का लोप, द्यु को ज्जु और म्न के स्थान में ण्ण।

(ख) ज्ञ = ण—

आणा < आज्ञा—दीर्घ स्वर से परे ज्ञा के रहने से ज्ञ के स्थान में ण।

पण्णा < प्रज्ञा—पदमध्य में ज्ञा के होने से ण्ण।

विण्णाणं < विज्ञानम्— ,, ,,

णाणं < ज्ञानम्—पदादि में ज्ञ के होने से ण।

संणा < संज्ञा—अनुस्वार-म् के परे रहने के कारण ज्ञ को ण।

(४७) संस्कृत का संयुक्त वर्ण स्त प्राकृत में थ हो जाता है, पर पदमध्य में आने पर त्थ होता है।

थवो < स्तवः—पदादि में स्त के होने से, उसके स्थान में थ।

थंभो < स्तम्भः—	,,	,,	,,
थद्धो < स्तब्धः—	,,	,,	,,
थुई < स्तुति —	,,	,,	,,
थोअं < स्तोकम्—	,,	,,	,,
थोत्तं < स्तोत्रम्—	,,	,,	,,
थीणं < स्त्यानम्—	,,	,	,,

अत्थि < अस्ति—पदमध्य में स्त के होने से त्थ हुआ है।

पल्लत्थो < पर्यस्तः— 　"　"　"

पसत्थो < प्रशस्तः— 　"　"　"

पत्थरो < प्रस्तरः— 　"　"　"

हत्थो < हस्तः— 　"　"　"

विशेष—कुछ शब्दों में स्त का ख हो जाता है। यथा—

खंभो < स्तम्भः—यहाँ स्त के स्थान पर ख हुआ है।

(४८) संस्कृत का संयुक्त वर्ण ष्ट प्राकृत में ठ हो जाता है, पर पदमध्य में आने से ष्ट का ट्ठ होता है।

अणिट्ठं < अनिष्टम्—पदमध्य में रहने से ष्ट के स्थान पर ट्ठ।

इट्ठो < इष्टः— 　"　"

कट्ठं < कष्टम्— 　"　"

कट्ठं < काष्ठम्— 　"　"

दट्ठो < दष्टः— 　"　"

दिट्ठी < दृष्टिः— 　"　"

पुट्ठो < पुष्टः— 　"　"

मुट्ठी < मुष्टिः— 　"　"

लट्ठी < यष्टिः—पदमध्य में रहने से ष्ट के स्थान पर ट्ठ।

सुरट्ठा < सुराष्ट्रा— 　"　"

सिट्ठी < सृष्टिः— 　"　"

कोट्ठागारं < कोष्ठागारम्— 　"　"

सुट्ठु < सुष्ठु— 　"　"

(४९) संस्कृत के संयुक्त वर्ण ड्म और क्म के स्थान पर प्राकृत में प हो जाता है, पर पदमध्य में इन वर्णों के आने से प्प हो जाता है।

कुंपलं < कुड्मलम्—ड्म के स्थान पर प हुआ है।

रुप्पिणी < रुक्मिणी—पदमध्य में होने से क्म के स्थान में प्प हुआ है।

(५०) संस्कृत के संयुक्त वर्ण ष्प, स्प को प्राकृत में फ होता है, किन्तु पदमध्य में इन वर्णों के आने से प्फ हो जाता है।

(क) ष्प = फ—

निप्फाओ < निष्पावः—पद मध्य में रहने से ष्प के स्थान पर प्फ हुआ।

निप्फेसो < निष्पेष— 　"　"

पुप्फं < पुष्पम्— 　"　"

सप्फं < शष्पम्— 　"　"

(ख) स्प = फ—

फंदणं < स्पन्दनम्—पदादि में रहने से स्प के स्थान पर फ।

पडिप्फद्दी < प्रतिस्पर्धी—पद के मध्य में रहने से स्प के स्थान में प्फ।

बुहप्फई < बृहस्पतिः— " "

(९१) संस्कृत का संयुक्त वर्ण ह्व प्राकृत में भ हो जाता है, पर पदमध्य में आने पर विकल्प से ब्भ होता है।

जिब्भा, जीहा < जिह्वा—पद मध्य में रहने से ह्व के स्थान में विकल्प से ब्भ, विकल्पाभाव में संयुक्त व का लोप और पूर्व इकार को दीर्घ।

विब्भलो, विहलो < विह्वल—पदमध्य में रहने से ह्व को विकल्प से ब्भ तथा विकल्पाभाव पक्ष में संयुक्त व का लोप और विसर्ग का ओत्व।

(९२) संस्कृत का संयुक्त वर्ण न्म प्राकृत में म्म हो जाता है।

जम्मो < जन्म—न्म के स्थान पर म्म।

वम्महो < मन्मथः—न्म के स्थान पर म्म तथा थ के स्थान में ह, विसर्ग को ओत्व।

मम्मणं < मन्मनः—न्म के स्थान पर म्म तथा नकार को णत्व।

(९३) संस्कृत के संयुक्त वर्ण ग्म के स्थान पर प्राकृत में विकल्प से म्म का परिवर्तन हो जाता है।

तिम्मं, तिग्गं < तिग्मम्—ग्म के स्थान पर विकल्प से म्म, विकल्पाभाव में संयुक्त म का लोप और ग को द्वित्व।

जुम्मं, जुग्गं < युग्मम्—य को ज, ग्म को विकल्प से म्म, विकल्पाभाव में संयुक्त म का लोप और ग को द्वित्व।

(९४) संस्कृत के संयुक्त वर्ण श्म, ष्म, स्म, ह्म और क्ष्म के स्थान पर प्राकृत में म्ह हो जाता है।

(क) श्म = म्ह—

कम्हारा < कश्मीराः—श्म के स्थान में म्ह तथा ईकार को आकार।

कुम्हाणो < कुश्मान —श्म के स्थान में म्ह आदेश और नकार को णत्व।

(ख) ष्म = म्ह—

उम्हा < ऊष्मा—ष्म के स्थान पर म्ह तथा ऊ को ह्रस्व।

गिम्हो < ग्रीष्म —ष्म को म्ह, संयुक्त रेफ का लोप और ईकार को ह्रस्व।

(ग) स्म = म्ह—

अम्हारिसो < अस्मादृशः—स्म के स्थान पर म्ह, दृश के स्थान पर रिस, विसर्ग को ओत्व।

विम्हओ < विस्मयः—स्म के स्थान में म्ह, यकार का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

(घ) ह्म = म्ह—

बम्हा < ब्रह्मा—ह्म के स्थान पर म्ह, संयुक्त रेफ का लोप।

बम्हणो < ब्राह्मणः— ,, ,, ,, और आ को ह्रस्व।

बम्हचेरं < ब्रह्मचर्यम्—ह्म के स्थान पर म्ह, ब्र के संयुक्त रेफ का लोप और चर्य को चेरं।

सुम्हा < सुह्माः—ह्म के स्थान पर म्ह।

(ङ) क्ष्म = म्ह—

पम्हलं < पक्ष्मलम्—क्ष्म के स्थान पर म्ह।

पम्हाइं < पक्ष्माणि— ,, ,,

(९९) संस्कृत के संयुक्त वर्ण श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण, क्ष्ण और सूक्ष्म शब्द के क्ष्म के स्थान में प्राकृत में ण्ह हो जाता है।

(क) श्न = ण्ह—

पण्हो < प्रश्न—प्र में से संयुक्त रेफ का लोप, और श्न के स्थान पर ण्ह, विसर्ग को ओत्व।

सिण्हो < शिश्नः—तालव्य श के स्थान में दन्त्य स तथा श्न के स्थान पर ण्ह।

(ख) ष्ण = ण्ह—

उण्हीसं < उष्णीषम् - ष्ण के स्थान में ण्ह, मूर्धन्य ष को दन्त्य स।

कण्हो < कृष्णः—क में रहनेवाली ऋ के स्थान में अ और ष्ण के स्थान में ण्ह, विसर्ग का ओत्व।

जिण्हू < जिष्णुः—ष्ण के स्थान पर ण्ह, उकार को दीर्घ।

विण्हू < विष्णुः— ,, ,,

(ग) स्न = ण्ह—

जोण्हा < ज्योत्स्ना—संयुक्त य का लोप तथा संयुक्त त का लोप और स्न के स्थान में ण्ह।

पण्हुओ < प्रस्नुतः—प्र में से संयुक्त रेफ का लोप, स्न के स्थान पर ण्ह, त का लोप और अ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

ण्हाओ < स्नातः—स्न के स्थान में ण्ह, त का लोप और अ स्वर शेष तथा विसर्ग को ओत्व।

(घ) ह्नु = ण्ह—

जण्हू < जह्नुः—ह्न के स्थान पर ण्ह और उकार को दीर्घ।

वण्ही < वह्निः— ,, ,, और इकार को दीर्घ।

(ङ) ह्ण = ण्ह—

अवरण्हो < अपराह्णः—प के स्थान पर व, ह्ण के स्थान पर ण्ह।

पुव्वण्हो < पूर्वाह्णः—संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व और आ को अस्व तथा ह्ण के स्थान में ण्ह।

(च) क्ष्ण = ण्ह—

तिण्हं < तीक्ष्णम्—ती को ह्रस्व, क्ष्ण के स्थान में ण्ह।

सण्हं < श्लक्ष्णम्—संयुक्त ल का लोप, मूर्धन्य ष को दन्त्य स, क्ष्ण के स्थान में ण्ह।

क्ष्म = ण्ह—

सण्हं < सूक्ष्मम्—सू के स्थान पर स और क्ष्म को ण्ह।

(९६) संस्कृत का संयुक्त वर्ण ह्ल प्राकृत में ल्ह हो जाता है।

कल्हारं < कह्लारम्—ह्ल के स्थान में ल्ह।

पल्हाओ < प्रह्लादः— ,, ,,

(९७) संस्कृत का ज्ञ वर्ण प्राकृत में विकल्प से ञ होता है, पर पदमध्य में आने से ज्ज होता है।

अहिज्जो, अहिण्णो < अभिज्ञः—भ के स्थान पर ह, पदमध्य में रहने से ज्ञ के स्थान पर विकल्प से ज्ज, विकल्पाभाव में ण्ण।

अज्जा, आणा < आज्ञा—पदमध्य में रहने से ज्ञ के स्थान पर ज्ज, विकल्पाभाव में णा।

अप्पज्जो, अप्पण्णू < आत्मज्ञः—आत्म के स्थान पर अप्प, ज्ञ के स्थान पर पदमध्य में रहने से ज्ज, विकल्पाभाव में ण्ण।

इंगिअज्जो, इंगिअण्णू < इंगितज्ञः—पदमध्य में ज्ञ के रहने से विकल्प से ज्ज, विकल्पाभाव में ण्ण।

देवज्जो, देवण्णू < दैवज्ञः—ऐकार को एकार, पदमध्य में रहने से ज्ञ के स्थान पर विकल्प से ज्ज, विकल्पाभाव में ण्ण।

पज्जा, पण्णा < प्रज्ञा—पदमध्य में ज्ञ के रहने से ज्ञ को विकल्प से ज्ज तथा विकल्पाभाव में ण्ण।

पज्जो, पण्णो < प्राज्ञः— ,, ,,

मणोज्जं, मणुण्णं < मनोज्ञम्— ,, ,,

सव्वज्जो, सव्वण्णू < सर्वज्ञः— ,, ,,

संजा, संणा < संज्ञा—व्यञ्जन से परे रहने के कारण ज्ञ को ज, विकल्पाभाव में ण।

(९८) संस्कृत का संयुक्त वर्ण र्ह प्राकृत में रिह हो जाता है।

अरिहइ < अर्हति—अर्ह के स्थान पर रिह, त का लोप और इ शेष।
अरिहो < अर्हः— ,, ,,
गरिहा < गर्हा— ,, ,,
बरिहो < बर्हः— ,, ,,

(९९) संस्कृत के संयुक्त व्यञ्जन र्श और र्ष के स्थान पर प्राकृत में रिस होता है।

(क) र्श = रिस—

आयरिसो < आदर्श —र्श के स्थान पर रिस हुआ है।
दरिसणं < दर्शनम्— ,, ,,
सुदरिसणं < सुदर्शनम् ,, ,,

(ख) र्ष = रिस—

वरिसं < वर्षम्—र्ष के स्थान पर रिस हुआ है।
वरिससयं < वर्षशतम्— ,, ,,
वरिसा < वर्षा— ,, ,,

(१००) संस्कृत के संयुक्त ल के स्थान पर प्राकृत में इल होता है।

अंबिलं < अम्लम्—संयुक्त ल के स्थान पर इल हुआ है, म के स्थान पर पूर्व स्वर पर अनुस्वार के साथ व हुआ है।

किलम्मइ < क्लाम्यति—संयुक्त ल के स्थान पर इल, म्य को म्म, विभक्ति इ।
किलंतं < क्लाम्यत्—संयुक्त ल को इल।
किलिट्ठं < क्लिष्टम्— ,,
किलिन्नं < क्लिन्नम्— ,,
किलेसो < क्लेशः— ,,
गिलाइ < ग्लायति— ,,
गिलाणं < ग्लानम्— ,,
पिलुट्ठं < प्लुष्टम्— ,,
पिलोसो < प्लोषः— ,,
मिलाइ < म्लायति— ,,
मिलाणं < म्लानम्— ,,
सिलेसो < श्लेषः— ,,

सिलिम्हा < श्लेष्मा—संयुक्त ल को इल।
सिलोओ < श्लोकः— ,,
सिलिट्ठं < श्लिष्टम्— ,,
सुइलं < शुक्लम्— ,, संयुक्त क का लोप, तालव्य श को दन्त्य स।

(६१) संस्कृत के 'र्य' संयुक्त व्यञ्जन को प्राकृत में रिअ होता है।

आयरिओ < आचार्यः—चकार का लोप, अ शेष, य श्रुति, ह्रस्व और र्य के स्थान पर रिअ।
गंभीरिअं < गाम्भीर्यम्—दीर्घ को ह्रस्व और र्य को रिअ।
गहीरिअं < गाभीर्यम्— ,, ,,
चोरिअं < चौर्यम्—औकार को ओकार और र्य के स्थान पर रिअं।
धीरिअं < धैर्यम्—ऐकार को ईत्व और र्य को रिअं।
बम्हचरिअं < ब्रह्मचर्यम्—संयुक्त रेफ का लोप, ह्म को म्ह और र्य को रिअ।
भरिआ < भार्या—र्य को रिअ।
वरिअं < वर्यम्— ,,
वीरिअं < वार्यम्— ,,
थेरिअं < स्थैर्यम्—संयुक्त स का लोप, ऐकार को एकार, र्य को रिअ।
सूरिओ < सूर्यः—र्य को रिअ।
सुन्दरिअं < सौन्दर्यम्—औकार को उकार, र्य को रिअ।
सोरिअं < शौर्यम्—र्य को रिअ।

(६२) संस्कृत के संयुक्त व्यंजनों में कुछ विशेष परिवर्तन भी होता है।

(क) ग्ण = क्क—
लुक्को < रुग्णः—ग्ण के स्थान पर क्क और रु को लु।
(ख) क्ष्ण = क्ख—
तिक्खं < तीक्ष्णम्—ती को ह्रस्व तथा क्ष्ण के स्थान पर क्ख।
(ग) स्त = ख—
खंभो < स्तम्भ—स्त के स्थान पर ख।
(घ) स्फ = ख—
खेडओ < स्फेटकः—स्फ के स्थान पर ख।
(ङ) त्त = च्च—
किच्ची < कृत्तिः—त्त के स्थान पर च्च।
(च) थ्य = च्छ—
तच्चं < तथ्यम्—थ्य के स्थान पर च्च।

(छ) स्प = छ—

छिहा < स्पृहा—

(ज) त्त = ट्ट—

पट्टणं < पत्तनम्—त्त के स्थान पर ट्ट।

मट्टिआ < मृत्तिका—त्त के स्थान पर ट्ट।

(झ) र्थ = ट्ठ—

अट्ठो < अर्थः—र्थ के स्थान पर ट्ठ।

चउट्ठो < चतुर्थः ,,

(ञ) र्त = ड्ड—

गड्डो < गर्तः—र्त के स्थान पर ड्ड।

(ट) र्द = ड्ड—

कवड्डो < कपर्दः—र्द के स्थान पर ड्ड।

छड्डो < छर्दः— ,, ,,

छड्डी < छर्दिः— ,, ,,

मड्डिओ < मर्दितः—,, ,,

विच्छड्डो < विच्छर्दः— ,,

संमड्डो < संमर्दः— ,, ,,

(ठ) र्ध, द्ध, ग्ध, ब्ध = ड्ढ—

अड्ढ < अर्धम्—र्ध के स्थान पर ड्ढ।

ईड्ढो < ऋद्धिः—द्ध के स्थान पर ड्ढ।

दड्ढो < दग्धः—ग्ध के स्थान पर ड्ढ।

विअड्ढो < विदग्धः— ,, ,,

वुड्ढो < वृद्धः—द्ध के स्थान पर ड्ढ।

वुड्ढी < वृद्धिः— ,, ,,

सड्ढा < श्रद्धा— ,, ,,

ठड्ढो < स्तब्धः—ब्ध के स्थान पर ड्ढ।

(ड) ञ्च = ण्ण—

पण्णरह < पञ्चदश—ञ्च के स्थान पर ण्ण।

पण्णासा < पञ्चाशत्— ,, ,,

(ढ) त्त = ण्ण—

दिण्णं < दत्तम्—त्त के स्थान पर ण्ण।

(ण) त्म = प्प—

अप्पा < आत्मा—त्म के स्थान पर प्प।

अप्पाणो < आत्मानः— " "

(त) म्र = म्ब—

अंबं < आम्रम्—म्र के स्थान पर म्ब।

तंबं < ताम्रम्— " "

(थ) ह्म = म्भ—

बम्भणो < ब्राह्मणः—ह्म के स्थान पर म्भ।

बंभचेरं < ब्रह्मचर्यम् " "

(द) क्ष, ख, र्थ, र्घ, र्प, ष्प और ष्म = ह—

दाहिणो < दक्षिणः—क्ष के स्थान पर ह।

दुहं < दुःखम्—ख के स्थान पर ह।

तूहं < तीर्थम्—र्थ के स्थान पर ह।

दीहो < दीर्घः—र्घ के स्थान पर ह।

काहावणो < कार्षापणः—र्ष के स्थान पर ह।

वाहो < वाष्पः—ष्प के स्थान पर ह।

कोहण्डी < कुष्माण्डी—ष्म के स्थान पर ह।

कोहण्डं < कुष्माण्डम् — "

(६३) निम्न वर्णों को प्राकृत में द्वित्व हो जाता है।

उज्जू < ऋजुः—ज को द्वित्व। जोव्वणं < यौवनम्—व को द्वित्व।

तेल्लं < तैलम्—ल को द्वित्व। बहुत्तं < प्रभूतम्—त को द्वित्व।

पेम्मं < प्रेम—म को द्वित्व। मंडुक्को < मण्डूकः—क को द्वित्व।

विड्डा < व्रीडा—ड को द्वित्व। एक्को < एकः—क को द्वित्व।

कण्णिआरो < कर्णिकारः—ण को द्वित्व। कोउहल्लं—कुतूहलं—ल को द्वित्व।

तुण्हिक्को < तूष्णीकः—क को द्वित्व। नक्खो < नखः—ख को द्वित्व।

दइव्वो < दैवः—व को द्वित्व। नेड्डं < नीडम्—ड को द्वित्व।

मुक्को < मूकः—क को द्वित्व।

(६४) निम्न शब्दों में अनियमतः परिवर्तन होते हैं—

अच्छअरं, अच्छरिअं, अच्छरिज्जं, अच्छरीअं < आश्चर्यम्।

केलं, कयलं < कदलम्। कोहलं < कुतूहलम्।

चोग्गुणो < चतुर्गुणः। चोत्थो, चउत्थो < चतुर्थः।

चोत्थी, चउत्थी < चतुर्थी। चोद्दह, चउद्दह < चतुर्दश।

चोद्दसी, चउद्दसी < चतुर्दशी । चोव्वारो, चउव्वारो < चतुर्वारः ।
तेत्तीसा < त्रयस्त्रिंशत् । तेरह < त्रयोदश ।
तेवीसा < त्रयोविंशतिः । तीसा < त्रिंशत् ।
नोणीअं, लोणीअं < नवनीतम् । नोहलिआ < नवफलिका ।
नोमालिआ < नवमल्लिका । पोप्फलं < पूगफलम् ।
पोरो < पूतरः । पाउरणं, पगुरणं < प्रावरणम् ।
बोरं < बदरम् । मोहो, मऊहो < मयूखः ।
रुण्णं < रुदितम् । लोणं < लवणम् ।
वीसा < विंशतिः । सोमालो < सुकुमारः ।
थेरो < स्थविरः ।

(६५) निम्न शब्दों में आमूल परिवर्तन हो जाता है ।

हेट्ठं < अधस् । ओ, अव < अप ।
अच्छरसा < अप्सरस् । आउसं < आयुः ।
आढत्तो < आरब्धः । धूआ < दुहिता ।
दाढा < दंष्ट्रा । हरो < ह्रदः ।
धणुहं < धनुष् । इसि < ईषत् ।
ओ < उत । ओ < उप ।
अवहं उवहं < उभयस् कउहा < ककुभ् ।
छूढं < क्षिप्तम् । घरं < गृहम् ।
छिक्को < छुप्तः । तिरिच्छि < तिर्यक् ।
पाइक्को < पदाति । बहिणी < भगिनी ।
मइलं < मलिनम् । मंजरो < मार्जारः
विलया < वनिता । रुक्खो < वृक्षः ।
वेरुलिअं < वैडूर्यम् । सिप्पी < शुक्तिः ।
थेवं, थोवं, थोक्कं < स्तोकम् । सुसाणं, मसाणं < श्मशानम् ।

(६६) निम्न शब्दों में वर्णव्यत्यय हुआ है ।

अलचपुरं < अचलपुरम् । आणालो < आलानः ।
कणेरू < करेणुः । मरहट्ठं < महाराष्ट्रम् ।
हलुअं < लघुकम् । णडालं < ललाटम् ।
वाणारसी < वाराणसी । हलिआरो < हरितालः ।
दहो < ह्रद, ह्रदः ।

पाँचवाँ अध्याय

लिंगानुशासन

प्राकृत में संस्कृत के समान पुलिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग ये तीन ही लिङ्ग माने गये हैं। प्राणिवाचक और अप्राणिवाचक समस्त संज्ञाएँ उक्त तीनों लिङ्गों में विभक्त हैं। साधारण लिङ्गव्यवस्था संस्कृत के समान ही है, किन्तु जिन शब्दों में अन्तर है, उन्हींका यहाँ निर्देश किया जाता है।

(१) प्रावृष्, शरद् और तरणि शब्दों का पुलिंग में प्रयोग होता है।[1] यथा—

पाउसो < प्रावृष्—संस्कृत में यह शब्द स्त्रीलिंग है।

सरओ < शरद्— " "

तरणी < तरणी— " "

(२) दामन्, शिरस् और नभस् को छोड़ कर शेष सकारान्त तथा नकारान्त शब्द पुलिंग में प्रयुक्त होते हैं।[2]

(क) सकारान्त शब्द—

जसो < यशस्—यश—संस्कृत में यह शब्द नपुंसकलिंग है।

पओ < पयस्—पयः— " "

तमो < तमस्—तमः— " "

तेओ < तेजस्—तेजः— " "

सरो < सरस्—सरः— " "

(ख) नकारान्त शब्द

जम्मो < जन्मन्—जन्म— " "

नम्मो < नर्मन्—नर्म— " "

कम्मो < कर्मन्—कर्म— " "

वम्मो < वर्मन्—वर्म— " "

विशेष—

(क) वयं < वयस्—वयः—संस्कृत में यह नपुंसकलिंग है और प्राकृत में भी इसे नपुंसकलिंग ही माना गया है।

---

१. प्रावृट्शरत्तरणयः पुंसि—८।१।३१. हे०।

२. स्नमदाम-शिरो-नभः—८।१।३२. हे०।

सुमणं < सुमनस्—सुमनः—संस्कृत में यह नपुंसकलिंग है और प्राकृत में भी इसे नपुंसकलिंग ही माना गया है।

सम्मं < शर्मन्—शर्म— „ „

चम्मं < चर्मन्—चर्म— „ „

(ख) दामं < दामन्—दाम—संस्कृत के समान नपुंसकलिंग ही है।

सिरं < शिरस्—शिरः— „ „

नहं < नभस्—नभः— „ „

(३) अक्षि (आंख) के समानार्थक शब्द तथा निम्न निर्दिष्ट वचनादिगण के शब्द पुलिंग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं।[1] अक्षि शब्द का पाठ अञ्जल्यादि गण में भी होने से इसका प्रयोग स्त्रीलिंग में भी होता है[2]। यथा—

अच्छी < अक्षिणी—संस्कृत में नपुंसकलिंग, पर यहां विकल्प से पुलिंग।

अच्छीइं < अक्षिणी—संस्कृत में नपुंसकलिंग, यहां भी विकल्प से नपुंसकलिंग।

एसा अच्छी < एतदक्षि—यहाँ स्त्रीलिंग में व्यवहार है।

चक्खू < चक्षुषी—संस्कृत में नपुंसकलिंग किन्तु प्राकृत में पुल्लिग।

णअणो (पुल्लिग) } नयनम्—संस्कृत में नपुंसकलिंग, किंतु प्राकृत में विकल्प
णअणं (नपुंसकलिंग } से पुल्लिग।

लोअणो (पुल्लिग) } लोचनम्— „ „
लोअणं (नपुंसक)

वअणो (पुल्लिग) } वचनम्— „ „
वअणं (नपुंसक)

कुलो (पुल्लिग) } कुलम्— „ „
कुलं (नपुंसक)

माहप्पो (पुल्लिग) } माहात्म्यम्— „ „
माहप्पं (नपुंसक)

छन्दो (पुल्लिग) } छन्द — „ „
छन्दं (नपुंसक)

दुक्खा (पुल्लिग) } दुःखानि— „ „
दुक्खाइं (नपुंसक)

भायणा (पुल्लिग) } भाजनानि— „ „
भायणाइं (नपुंसक)

---

१. वाक्ष्यर्थ-वचनाद्याः ८।१।३३. हे०।

२. अञ्जल्यादिपाठादक्षिशब्दः स्त्रीलिङ्गेपि ८।१।३३. की वृत्ति।

(४) किसी-किसी आचार्य के मत से पृष्ठ, अक्षि और प्रश्न शब्द विकल्प से स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं।[1] यथा—

पुट्ठी (स्त्रीलिंग) } पृष्ठम्—संस्कृत में नपुंसकलिंग है, पर प्राकृत में विकल्प
पुट्ठं (नपुंसक) } से स्त्रीलिंग भी है।
अच्छी (स्त्रीलिंग) } अक्षि— " "
अच्छं (नपुंसक)
पण्हा (स्त्रीलिंग) } प्रश्नः—संस्कृत में यह पुल्लिंग है, पर प्राकृत में विकल्प
पण्हो (नपुंसक) } से स्त्रीलिंग भी होता है।

(५) गुणादि शब्द विकल्प से नपुंसकलिंग में प्रयुक्त होते हैं।[2]

गुणं (नपुंसक) } गुणः—संस्कृत में गुण शब्द पुल्लिंग है, पर प्राकृत में इसका
गुणो (पुल्लिंग) } व्यवहार पुल्लिंग और नपुंसकलिंग दोनों में होता है।
देवाणि (नपुंसक) } देवाः—संस्कृत में देव शब्द नित्य पुल्लिंग है, पर प्राकृत
देवा (पुल्लिंग) } में यह विकल्प से नपुंसकलिंग भी होता है।
खग्गं (नपुंसक) } खड्गः—खड्ग शब्द संस्कृत में पुल्लिंग है पर प्राकृत विकल्प से।
खग्गो (पुल्लिंग)
मंडलग्गं (नपुंसक), मंडलग्गो (पुल्लिंग) < मंडलाग्र.— "
कररूहं (नपुंसक), कररूहो (पुल्लिंग) < कररुहः— "
रुक्खाइ (नपुंसक), रुक्खा (पुल्लिंग) < वृक्षाः— "

(६) इमान्त—इमन् प्रत्यय जिनके अन्त में आया हो और अञ्जल्यादि गण के शब्द विकल्प से स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं।[3]

इमान्त शब्द—

एसा गरिमा (स्त्रीलिंग), एसो गरिमा (पुल्लिंग) < एष गरिमा।
एसा महिमा (स्त्रीलिंग), एसो महिमा (पुल्लिंग) < एष महिमा।
एसा धुत्तिमा (स्त्रीलिंग), एसो धुत्तिमा (पुल्लिंग) < एष धूर्तता।

---

१. पृष्ठाक्षिप्रश्नाः स्त्रियां वा ४।२०, वर०।
२. गुणाद्याः क्लीबे वा ८।१।३४. हे०।
३. वेमाञ्जल्याद्याः स्त्रियाम् ८।१।३५ हे०।
अञ्जल्यादिगण में अञ्जलि, पृष्ठ, अक्षि, प्रश्न, चौर्य, कुक्षि, बलि, निधि, विधि, रश्मि और ग्रन्थि शब्द गृहीत हैं। कल्पलतिका के अनुसार रश्मि शब्द विकल्प से स्त्रीलिंग ही है।

अञ्जल्यादिगण के शब्द—

एसा अंजली (स्त्री), एसो अंजली (पु०) < एष अञ्जलिः ।
चोरिआ (स्त्री०), चोरिओ (पु०) < चौर्यम् ।
निही (स्त्री), निही (पु०) < निधिः ।
विही (स्त्री०), विही (पु०) < विधिः ।
गंठी (स्त्री०), गंठी (पु०) < ग्रन्थिः ।
रस्सी (स्त्री०), रस्सी (पु०) < रश्मिः ।

(७) जब बाहु शब्द स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है, तब उसके उकार के स्थान में आकार आदेश होता है। पर जब पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है तब आकार आदेश न होकर बाहु रूप ही रह जाता है।[1] यथा—

एसा बाहा (स्त्री), एसो बाहू (पु०) < एष बाहुः ।

स्त्रीप्रत्यय

स्त्रीलिंग शब्द दो प्रकार के होते हैं—मूल स्त्रीलिंग शब्द और प्रत्यय के योग से बने स्त्रीलिंग शब्द। जिन शब्दों का अर्थ मूल से ही स्त्रीवाचक है और रूप पुल्लिंग और नपुंसकलिंग में नहीं होते, उनको मूल स्त्रीवाचक शब्द कहते हैं। यथा—लदा, माआ, छिहा, हलिद्दा, महिआ, लच्छी, सप्पिणी आदि।

प्रत्यय के योग से बने स्त्रीलिंग शब्द मूल से स्त्रीलिंग नहीं होते, किन्तु स्त्रीप्रत्यय जोड़ देने से उनमें स्त्रीत्व आता है। ऐसे शब्द जोड़ीदार होते हैं अर्थात् पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों लिंगों में व्यवहृत होते हैं। अतः स्त्रीप्रत्यय—वे प्रत्यय हैं, जिनके लगने पर पुल्लिंग शब्द स्त्रीलिङ्ग हो जाते हैं। संस्कृत में टाप्, डाप्, चाप् (आ); ङीप्, ङीष्, ङीन् (ई); ऊङ् (ऊ) और ति ये आठ स्त्रीप्रत्यय हैं; पर प्राकृत में आ, ई और ऊ प्रत्यय ही होते हैं। अधिकांश प्राकृत शब्दों में संस्कृत के समान ही स्त्रीप्रत्यय का विधान किया गया है।

(१) सामान्यतया प्राकृत में अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के लिए आ प्रत्यय लगता है। यथा—

अअ + आ = अआ < अजा; चडअ + आ = चडआ < चटका।
मूसअ + आ = मूसिया < मूषिका; बाल + आ = बाला < बाला।
वच्छ + आ = वच्छा < वत्सा, होड + आ = होडा (चोरी)
कोइल + आ = कोइला < कोकिला; चवल < चपला, कुसल < कुशला।

---

1. बाहोरात् ८।१।३६. हे० ।

निउण—निउणा, अचल—अचला, मल्लिय—मल्लिया, चउर—चउरा, पढम—पढमा।

वीय—वीया।

(२) स्त्रीलिंग में सस—स्वस्र आदि शब्दों से पर में आ प्रत्यय जोड़ने से ससा आदि रूप होते हैं।[1]

(३) संस्कृत के नकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय होता है। यथा—राआ + ई = राणी, माहण + ई = माहणी; बंभण + ई—बंभणी। हत्थि—हत्थिणी।

(४) रकारान्त, तकारान्त और अय्, अञ्, ठक् और ठञ् प्रत्ययों से बने संस्कृत शब्दों से प्राकृत में प्रायः स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय जुड़ता है। यथा—

रकारान्त—कुंभआर + ई = कुंभआरी, कुम्हारी; लोहआर—लोहआरी; कुमार—कुमारी।

तकारान्त—सिरीमअ + ई = सिरीमई; पुत्तअ—पुत्तई; धणवअ—धणवई।

(५) संस्कृत के पित् शब्दों—नर्तक, खनक, पथिक प्रभृति तथा गौर, मनुष्य, मत्स्य, शृंग, पिङ्गल, हय, गवय, ऋष्य, द्रुम, हरिण, कोरग, अणक, आवल्क, शष्कुल, बदर, उभय, नर और संगल शब्दों में स्त्रीलिंग बनाने के लिए प्राकृत में ई प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—

गट्टअ + ई = गट्टई, खणअ + ई = खणई, पहिअ + ई—पहिई, कुमार + ई = कुमारी, किसोर—किसोरी, सुन्दर—सुन्दरी, णअ—णई, पड—पडी, कमल—कमली, थल—थली, काल—काली, मंडल—मंडली आदि।

(६) जाति अर्थ में जातिवाचक अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—

सीह + ई = सीही, वग्घ + ई = वग्घी, मअ + ई = मई, हरिण—हरिणी, कुरंग—कुरंगी, सूअर—सूअरी, जंबुअ—जंबुई, सिआल—सियाली, बिडाल—बिडाली, घोड—घोडी, महिस—महिसी, हंस—हंसी, सारस—सारसी, गोव—गोवी, चंडाल—चंडाली, बंभण—बंभणी, रक्खस—रक्खसी, निसाअर—निसाअरी।

(७) पाणिनि के 'टिड्ढाणञ्' इत्यादि (४।१।१५) से अण् आदि प्रत्यय निमित्तक ङीप् होता है, पर प्राकृत में विकल्प से ई होता है।[2] यथा—साहुणी—साहुणा; कुरुचरी—कुरुचरा आदि।

---

1. स्वस्रादेर्डा ८।३।३५ हे०। 2. प्रत्यये ङीर्न वा ८।३।३१.

(८) संस्कृत के अजातिवाचक पुल्लिङ्ग शब्दों से प्राकृत में स्त्रीलिंग बनाने के लिए विकल्प से ई प्रत्यय होता है।[1] यथा—

नीली—नीला; काली—काला, हसमाणी—हसमाणा, सुप्पणही—सुप्पणहा; इमीए—इमाए; इमीणं—इमाणं, एईए—एआए; एईण—एआणं।

(९) संस्कृत के छाया और हरिद्रा शब्दों को प्राकृत में स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए विकल्प से ई प्रत्यय जुड़ता है।[2] यथा—

छाही—छाया; हलद्दी—हलद्दा।

(१०) सु, अम् और आम्, सुप् (सभी विभक्तियों) के पर में रहने पर किम्, यद् और तद् शब्दों से प्राकृत में स्त्रीलिङ्ग में ई प्रत्यय विकल्प से होता है।[3] यथा—

कीओ—काओ; कीए—काए; कीसु—कासु; जीओ—जाओ; तीओ—ताओ।

(११) पुल्लिंग शब्द जो नर का द्योतक है, उससे स्त्रीलिंग बनाने के लिए ई प्रत्यय जोड़ा जाता है। पर पालकान्त शब्दों में ई प्रत्यय नहीं जुड़ता है। बंभणस्स जाया बंभणी, सुद्दस्स जाया सुद्दी, गणअस्स जाया गणई, णाविअस्स जाया णाविई, णिसाअस्स जाया णिसाई।

(१२) संस्कृत के जानपद, कुण्ड, गोण, स्थल, भाग, नाग, कुश, कामुक आदि शब्दों से प्राकृत में स्त्रीलिंग बनाने के लिए विकल्प से ई प्रत्यय जोड़ा जाता है। ई प्रत्यय के अभाव में आ होता है। यथा—

जाणवद + ई—जाणवदी; कुंडी—कुंडा, थली—थला, गोणा—गोणी, भागा—भागी, कुसी—कुसा।

(१३) संस्कृत के इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, आचार्य, हिम, अरण्य, यवन, मातुल और उपाध्याय शब्दों से प्राकृत में ई लगने के पूर्व आण जोड़ दिया जाता है—

इंद + ई = इंदाणी, भव + ई = भवाणी; सव्व + ई = सव्वाणी, रुद्दाणी, मिडाणी, आयरियाणी, जवणाणी, माउलाणी, उवज्झायाणी।

(१४) धर्मविधि से पाणिग्रहण (विवाह) अर्थ प्रकट हो तो संस्कृत के पाणिग्रहण शब्द से प्राकृत में ई प्रत्यय होता है। यथा—

पाणिगहीदी—धर्मविधि पूर्वक विवाह की गयी पत्नी।

पाणिगहीदा—अन्य किसी प्रकार से विवाह की गयी पत्नी।

---

१. अजातेः पुंस. ८।१।३२. २. छाया-हरिद्रयो. ८।३।३४.

३. किं-यत्तदोस्यमामि ८।३।३३.

(१५) आर्य और क्षत्रिय शब्दों से ई प्रत्यय और आन का आगम विकल्प से होता है। यथा—

अज्जा—अज्जाणी, खत्तिया—खत्तिआणी।

(१६) बहुब्रीहि समास होने पर अवयववाचक शब्द के उत्तर में विकल्प से ई प्रत्यय होता है। यथा—

चन्दमुही—चन्दमुहा, सुणसा—सुणसी, तंबणहा—तंबणही।

(१७) नखान्त और मुखान्त शब्दों से प्राकृत में विकल्प से ई होता है। यथा—

वज्जणहा—वज्जणही, गोरमुहा—गोरमुही, कालमुहा—कालमुही।

(१८) जिन शब्दों के उत्तरपद में पाक, वर्ण, पर्ण, पुष्प, फल, मूल और बाल हों, उन शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय होता है। यथा—

संउअण्णी; सालवण्णी; संखपुप्फी, दासीफली, दब्भमूली, गोवाली।

(१९) नासिका, उदर, ओष्ठ, जंघा, दन्त, कर्ण और शृंग शब्दों से विकल्प से ई प्रत्यय होता है। यथा—

तुंगनासिआ, तुंगनासिई; दीहोअरा, दीहोअरी, ।

कतिपय अध्ययनीय शब्द

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
राया < राजा	राणी < राज्ञी
विउसो < विद्वान्	विउसी < विदुषी
माणुसो < मनुष्यः	माणुसी < मानुषी
माउलो < मातुलः	माउली, माउलाणी < मातुलानी
मच्छो < मत्स्यः	मच्छी < मत्सी
गिहवइ < गृहपतिः	गिहवण्णी < गृहपत्नी
अहिवइ < अधिपतिः	अहिवण्णी < अधिपत्नी
तुअ < तुदन्	तुअंती < तुदन्ती
सहा < सखा	सही < सखी
मुणि < मुनिः	मुणी < मुनिः
साहु < साधुः	साहू < साधुः
जुवा < युवा	जुवई < युवती
सुएसो < सुकेशः	सुएसी, सुएसा < सुकेशी, सुकेशा
धीवरो < धीवरः	धीवरी < धीवरी
सुद्दो < शूद्रः	सुद्दा, सुद्दी < शूद्रा, शूद्री

आयरिओ < आचार्यः	आयरिआणी, आयरिआ < आचार्यानी, आचार्या
खत्तियो < क्षत्रियः	खत्तिया, खत्तियाणी < क्षत्रिया, क्षत्रियाणी
उवज्झायो < उपाध्यायः	उवज्झाया, उवज्झायाणी < उपाध्याया, उपाध्यायानी
पढ < पठन्	पढन्ती < पठन्ती
अय्य	अज्जआ
धीवर < धीवरो	धीवरी < धीवरी
कुंभआरो < कुम्भकारः	कुंभआरी < कुम्भकारी
सुवण्णआरो < स्वर्णकारः	सुवण्णआरी < स्वर्णकारी
बालओ < बालकः	बालिआ < बालिका
पुरिसो < पुरुषः	इत्थी < स्त्री
किन्नरो < किन्नरः	किन्नरी < किन्नरी
माहणो < ब्राह्मणः	माहणी < ब्राह्मणी
गोवो < गोपः	गोवी < गोपी; गोवा < गोपा
मऊरो < मयूरः	मऊरी < मयूरी
पिओ < पिता	माआ < माता
भाया < भ्राता	बहिणी < भगिनी
कच्छवो < कच्छपः	कच्छवी < कच्छपी
सुत्तगारो < सूत्रकारः	सुत्तगारी < सूत्रकारी
वुत्तिगारो < वृत्तिकारः	वुत्तिगारी < वृत्तिकारी
सीसो < शिष्यः	सीसा < शिष्या
हत्थि < हस्तिः	हत्थिणी < हस्तिनी
सेट्ठि < श्रेष्ठी	सेट्ठिनी < श्रेष्ठिनी
गंधिओ < गन्धिकः	गंधिआ < गन्धिका
पइ < पतिः	भज्जा < भार्या
नडो < नटः	नडी < नटी
चन्दमुहो < चन्द्रमुखः	चन्दमुही < चन्द्रमुखी
पीवरो < पीवरः	पीवरी < पीवरी
इंदो < इन्द्रः	इंदाणी < इन्द्राणी
गोवालओ < गोपालक	गोवालिआ < गोपालिका
कामुओ < कामुकः	कामुआ < कामुका; कामुई < कामुकी

पढमो < प्रथमः — पढमा < प्रथमा
बीयो < द्वितीयः — बीया < द्वितीया
निउणो < निपुणः — निउणा < निपुणा
चवलो < चपलः — चवला < चपला
अयलो < अचलः — अयला < अचला
सुप्पणहो < शूर्पनखः — सुप्पणहा, सुप्पणही < शूर्पनखी, शूर्पनखा
महिसो < महिषः — महिसी < महिषी
अओ < अजः — अआ < अजा
चडओ < चटकः — चडआ < चटका
भवो < भवः — भवाणी < भवानी
संखपुप्फो < शंखपुष्पः — संखपुप्फी < शंखपुष्पी
तरुणो < तरुणः — तरुणी < तरुणी
णायओ < नायकः — णायिआ < नायिका
रुद्दो < रुद्रः — रुद्दाणी < रुद्राणी

छठवाँ अध्याय

सुबन्त या शब्दरूप प्रकरण

भाषा का आधार वाक्य है और वाक्य का आधार शब्द। शब्दों की रचना वर्णों के मेल से होती है।

जो कान से सुनायी पड़ता है, वह शब्द है। एक या एक से अधिक अक्षरों के योग से बनी हुई स्वतन्त्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं। जैसे—'देवा पि तं नमंसंति' वाक्य में देवा, पि—अपि, तं और नमंसंति शब्द हैं। शब्द दो प्रकार के होते हैं—सार्थक और निरर्थक। सार्थक शब्द की पदसंज्ञा होती है। व्याकरणशास्त्र में सार्थक शब्द का ही विवेचन किया जाता है। पद—सार्थक शब्द मूलतः दो प्रकार के हैं—संज्ञा और क्रिया।

प्राकृत में रूपान्तर के अनुसार पदों के दो भेद हैं—विकारी और अविकारी। जिस सार्थक शब्द के रूप में विभक्ति या प्रत्यय जोड़ने से विकार या परिवर्तन होता है, उसे विकारी कहते हैं। यथा—देवो, देवा, पढइ, पढन्ति आदि। विकारी—परिवर्तनशील सार्थक शब्दों के संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण ये चार मूल भेद हैं। अविकारी पद अव्यय कहलाते हैं।

प्राचीन वैयाकरणों ने नाम, आख्यात और अव्यय ये तीन ही प्रकार के शब्द माने हैं। सर्वनाम, संख्यावाचक और विशेषण भी नाम के अन्तर्गत हैं। नाम को प्रातिपदिक कहा गया है। प्रातिपदिकों के साथ सुप् प्रत्यय लगाने से संज्ञा पद बनते हैं। प्रत्येक संज्ञा के पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ये तीन लिङ्ग होते हैं।

प्राकृत भाषा में संस्कृत के समान लिंगभेद स्वाभाविक स्थिति पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह लिंगभेद कृत्रिम है। उदाहरणार्थ स्त्री का अर्थ बतलाने के लिए दारो, भज्जा और कलत्त-ये तीन शब्द प्रचलित हैं। इनमें दारो पुंल्लिग, भज्जा स्त्रीलिंग और कलत्तं नपुंसकलिंग हैं। इसी प्रकार शरीर का बोध करानेवाले शब्दों में लिंगभेद वर्तमान है। यथा—तणू स्त्रीलिंग, देहो पुंल्लिग और सरीरं नपुंसकलिंग हैं। कई शब्द ऐसे हैं, जिनके रूप एक से अधिक लिंगों में चलते हैं। किन्हीं पुंल्लिग शब्दों में प्रत्यय जोड़ने से भी स्त्रीलिंग शब्द बनते हैं और किन्हीं प्रत्ययों के योग से नपुंसक लिंग के शब्द बन जाते हैं। इतना होने पर भी प्राकृत में संस्कृत के समान ही शब्द प्रायः नियतलिङ्गी हैं—शब्दों के लिङ्ग निर्धारित हैं।

(३) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले अम् के अकार का लोप होता है[४]। यथा—

देव + अम् = देवं < देवम्, णउल + अम् = णउलं < नकुलम् ।

(४) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले टा—तृतीया विभक्ति के एकवचन और आम्—षष्ठी के बहुवचन के स्थान में ण आदेश होता है और ट प्रत्यय के रहने से अ को एत्व हो जाता है। तृतीया एकवचन और षष्ठी के बहुवचन में ण के ऊपर विकल्प से अनुस्वार हो जाता है[१]। यथा—

देव + टा = देवेण, देवेणं < देवेन; देव + आम् = देवाण, देवाणं < देवानाम्।

(५) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले भिस् के स्थान में हि आदेश होता है और अकार को एत्व हो जाता है, तथा हि के ऊपर विकल्प से अनुनासिक और अनुस्वार भी होते हैं[२]। यथा—

देव + भिस् = देवेहि, देवेहिँ, देवहिं < देवैः ।

णउल + भिस् = णउलेहि, णउलेहिँ, णउलेहिं < नकुलैः ।

(६) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले ङसि—पंचमी एकवचन के स्थान में त्तो, दो, दु, हि और हिन्तो आदेश होते हैं[३]। दो और दु के दकार का लुक् भी होता है। जैसे—

देव + ङसि = देवत्तो, देवादो—देवाओ, देवादु—देवाउ, देवाहि और देवाहिन्तो < देवात्—यहाँ नियम २ के अनुसार अ का आत्व हुआ है।

(७) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले भ्यस्—पंचमी बहुवचन के स्थान में त्तो, दो, दु, हिं, हिंतो और सुंतो आदेश होते हैं[४]। तथा विकल्प से दीर्घ होता है। यथा—

देव + भ्यस् = देवत्तो, देवादो—देवाओ, देवाउ,—देवाउ, देवाहि, देवेहि, देवाहितो, देवेहिंतो, देवेसुंतो, देवासुतो < देवेभ्यः ।

(८) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले ङस्—षष्ठी एकवचन के स्थान में 'स्स' आदेश होता है[५]। यथा—

देव + ङस् = देवस्स < देवस्य, णउल + ङस् = णउलस्स < नकुलस्य ।

(९) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले ङि—सप्तमी एकवचन के स्थान में ए और म्मि आदेश होते हैं[६] तथा अकार को एत्व होता है। यथा—

---

१. टा-आमोर्णः ८।३।६. हे० ।
२. भिसो हि हिँ हिं ८।३।७. हे० ।
३. ङसेस् त्तो दो दु-हि हिन्तो लुकः ८।३।८ हे० ।
४. भ्यसस् त्तो-दो दु-हि-हिन्तो सुन्तो ८।३।९ हे० ।
५. ङसः स्सः ८।३।१० हे० ।
६. डे म्मि ङेः ८।३।११ हे० ।

देव + ङि = देवे, देवम्मि < देवे; णउले, णउलम्मि < नकुले ।

(१०) ह्रस्व अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले सुप्—सप्तमी विभक्ति बहुवचन में हलन्त्य प् का लोप हो जाता है और अकार को एत्व तथा सु के ऊपर विकल्प से अनुस्वार होता है । यथा—

देव + सुप् = देवेसु, देवेसुं < देवेषु ।

(११) उक्त नियमों के अनुसार पुंलिंग अकारान्त शब्दों के लिए विभक्ति-चिह्न निम्नांकित हैं—

	प्राकृत विभक्ति चिह्न		संस्कृत विभक्ति चिह्न	
प्रा० सं०	एक०	बहु०	एक०	बहु०
पढमा < प्रथमा	ओ	आ	सु (:)	जस् (आः)
बीआ < द्वितीया	ं	ए, आ	अम्	शस् (आन्)
तइआ < तृतीया	ण, णं	हि, हिँ, हिं	टा (आ)	भिस् (भिः)
चउत्थी < चतुर्थी	[य, आ, ए विकल्पसे]	ण, णं	ङे (ए)	भ्यस् (भ्यः)
पंचमी < पञ्चमी	त्तो, ओ, उ, हि, हिंतो	त्तो, ओ, उ, हि, हिंतो, सुंतो	ङसि (अः)	भ्यस् (भ्यः)
छट्ठी < षष्ठी	स्स	ण, णं	ङस् (अः)	आम्
सत्तमी < सप्तमी	ए, म्मि	सु, सुं	ङि (इ)	सुप् (सु)
संबोहण < संबोधन	आ, ओ, लुक्	आ	सु	जस्

अकारान्त शब्दों के रूप

देव

	एकवचन	बहुवचन
प०	देवो	देवा
बी०	देवं	देवा, देवे
त०	देवेण, देवेणं	देवेहि, देवेहिँ, देवेहिं
च०	देवस्स, (देवाय)	देवाण, देवाणं
पं०	देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि, देवाहिंतो, देवा	देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि, देवेहि, देवाहिंतो, देवेहिंतो, देवासुंतो, देवेसुंतो
छ०	देवस्स	देवाण, देवाणं
स०	देवे, देवम्मि	देवेसु, देवेसुं
सं०	हे देवो, हे देवा	हे देवा

वीर

एकवचन	बहुवचन
प०—वीरो	वीरा
बी०—वीरं	वीरे, वीरा
त०—वीरेण, वीरेणं	वीरेहि, वीरेहिँ, वीरेहिं
च०—वीरस्स (वीराय)	वीराण, वीराणं
पं०—वीरत्तो, वीराओ, वीराउ, वीराहि, वीराहिंतो, वीरा	वीरत्तो, वीराओ, वीराउ, वीराहि, वीरेहि, वीराहिंतो, वीरेहिंतो, वीरासुंतो, वीरेसुंतो
छ०—वीरस्स	वीराण, वीराणं
स०—वीरे, वीरम्मि (वीरंसि)	वीरेसु, वीरेसुं
सं०—हे वीरो, हे वीरा	हे वीरा

जिण (जिन)

एकवचन	बहुवचन
प०—जिणो	जिणा
बी०—जिणं	जिणा, जिणे
त०—जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहिँ, जिणेहिं
च०—जिणस्स, जिणाय	जिणाण, जिणाणं
पं०—जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणाहिंतो, जिणा	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणेहि, जिणाहिंतो, जिणेहिंतो, जिणासुंतो, जिणेसुंतो
छ०—जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
स०—जिणे, जिणम्मि, जिणंसि	जिणेसु, जिणेसुं
सं०—हे जिणो, हे जिणा	हे जिणा

वच्छ < वृक्ष

एकवचन	बहुवचन
प०—वच्छो	वच्छा
बी०—वच्छं	वच्छा, वच्छे
त०—वच्छेण, वच्छेणं	वच्छेहि, वच्छेहिँ, वच्छेहिं
च०—वच्छस्स, वच्छाय	वच्छाण, वच्छाणं
पं०—वच्छत्तो, वच्छाओ, वच्छाउ, वच्छाहि, वच्छाहिंतो, वच्छा	वच्छत्तो, वच्छाओ, वच्छाउ, वच्छेहि, वच्छाहि, वच्छाहिंतो, वच्छेहिंतो, वच्छासुंतो, वच्छेसुंतो

छ०—वच्छस्स	वच्छाण, वच्छाणं
स०—वच्छे, वच्छम्मि, वच्छंसि	वच्छेसु, वच्छेसुं
सं०—हे वच्छो, हे वच्छा	हे वच्छा

धम्म<धर्म

एकवचन	बहुवचन
प०—धम्मो	धम्मा
बी०—धम्मं	धम्मा, धम्मे
त०—धम्मेण, धम्मेणं	धम्मेहि, धम्मेहिँ, धम्मेहिं
च०—धम्मस्स, धम्माय	धम्माण, धम्माणं
पं०—धम्मत्तो, धम्माओ, धम्माउ धम्माहि, धम्माहिंतो, धम्मा	धम्मत्तो, धम्माओ, धम्माउ, धम्माहि, धम्मेहि, धम्माहिंतो, धम्मेहिंतो, धम्मासुंतो, धम्मेसुंतो
छ०—धम्मस्स	धम्माण, धम्माणं
स०—धम्मे, धम्मम्मि, धम्मंसि	धम्मेसु, धम्मेसुं
सं०—हे धम्मो, हे धम्मा	हे धम्मा

अवमाण (अपमान), अलोम (अलोक), आयार (आचार), उज्जम (उद्यम), उवएस (उपदेश), कुढार (कुठार), कोह (कोध), चन्द (चन्द्र), जिणेसर, देह, नाय (न्याय), नरिंद (नरेन्द्र), निरय (नरक), बहिर (बधिर), बंभण (ब्राह्मण), भाव (भाव), मणोरह (मनोरथ), महिवाल (महिपाल), मिग, मअ (मृग), मुक्ख, मोक्ख (मोक्ष), मेह (मेघ), रोस (रोष), लोअ (लोक), वह (वध), वम्मह (मन्मथ), वाह (व्याध), विणय (विनय), वीयराअ (वीतराग), संघ (सङ्घ), सज्जण (सज्जन), सढ (सठ), सहाव (स्वभाव), सर (शर), सग्ग (स्वर्ग), सावग (श्रावक), हस्स (ह्रस्व), पायव (पादप), कच्छव (कच्छप), अहिव (अधिप), गिहत्थ (गृहस्थ), सुत्तगार (सूत्रकार), वुत्तिगार (वृत्तिकार), भासगार (भाष्यकार), सूरिअ (सूर्य), वरिअ (वर्य), सोरिअ (शौर्य), वसण, कसिण (कृष्ण), पज्जुण्ण (प्रद्युम्न), नमोक्कार (नमस्कार), सीह, (सिंह), वग्घ (व्याघ्र), सियाल, सिगाल (शृगाल), गय (गज), वसह (वृषभ), ओट्ठ (ओष्ठ), दंत (दन्त), कुंभार (कुंभकार), चम्मार (चर्मकार), लोह (लोभ), दोस (द्वेष), राग (राग), घड (घट), पड (पट), मढ (मठ) एवं मड आदि अकारान्त शब्दों के रूप देव, धम्म, वीर, वच्छ के समान ही चलते हैं। साधारणतः चतुर्थी के रूप षष्ठी के समान ही होते हैं, पर संस्कृत के प्रभाव के कारण य और ए प्रत्यय संयुक्त रूप भी मिलते हैं। यथा—वहाय और वहाए।

आकारान्त शब्द

(१२) आकारान्त शब्दों के रूप प्रायः ह्रस्व अकारान्त शब्दों के समान ही होते हैं, पर पंचमी विभक्ति में हि प्रत्यय नहीं जुड़ता है। तृतीया में एत्व भी नहीं होता।

आकारान्त हाहा शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	हाहा	हाहा
बी०	हाहां	हाहा
त०	हाहाण, हाहाणं	हाहाहि, हाहाहिँ, हाहाहिं
च०	हाहस्स, हाहणो	हाहाण, हाहाणं
पं०	हाहत्तो, हाहाओ, हाहाउ, हाहाहिंतो	हाहत्तो, हाहाओ, हाहाउ, हाहाहिंतो, हाहासुंतो
छ०	हाहणो, हाहस्स	हाहाण, हाहाणं
स०	हाहम्मि	हाहासु, हाहासुं
सं०	हे हाहा	हे हाहा

इसी प्रकार किलालवा (किलालपा), गोवा (गोपा) और सोमवा (सोमपा) शब्दों के रूप चलते हैं।

इकारान्त और उकारान्त शब्द

(१३) इकारान्त और उकारान्त पुल्लिंग शब्दों में सु, जस्, भिस्, भ्यस् और सुप् विभक्तियों के पर में रहने पर अन्त इ और उ को दीर्घ होता है।[1]

(१४) आचार्य हेमचन्द्र के मतानुसार इकारान्त और उकारान्त शब्दों में द्वितीया विभक्ति बहुवचन में शस् प्रत्यय का लोप और अन्तिम स्वर को दीर्घ हो जाता है।[2]

(१५) इकारान्त और उकारान्त पुल्लिंग शब्दों से पर में आनेवाले जस् के स्थान में ओ और णो आदेश होते हैं। कहीं-कहीं जस् का लुक् भी हो जाता है।[3]

(१६) आचार्य हेम के मतानुसार इकारान्त पुल्लिंग शब्दों में जस् के स्थान में डित्, अउ, अओ आदेश और उकारान्त से केवल डित्, अओ आदेश होते हैं। णो

---

१. इदुतो दीर्घः ८।३।१६ हे०। २. लुप्ते शसि ८।३।१८ हे०।
३. जस्-शसोर्णो वा ८।३।२२ हे०।

आदेश भी होता है। डित् से यहाँ यह तात्पर्य है कि अन्त के इकार और उकार का लोप हो जाता है।[1]

(१७) इकारान्त और उकारान्त पुल्लिग शब्दों से पर में आनेवाले शस् और ङस् के स्थान में विकल्प से णो आदेश होता है।[2]

(१८) इकारान्त और उकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले टा—तृतीया एकवचन के स्थान में 'णा' आदेश होता है।[3]

(१९) उकारान्त चउ < चतुर् शब्द से पर में आनेवाले भिस्, भ्यस् और सुप् विभक्ति को विकल्प से दीर्घ होता है।[4]

(२०) हेम के मत में इकारान्त और उकारान्त शब्दों में ङसि और ङस् के के परे रहने में विकल्प से णो आदेश होता है।[5]

(२१) शेष रूपों की सिद्धि अकारान्त पुल्लिग शब्दों के समान ही होती है।

इकारान्त और उकारान्त पुलिंग शब्दों के विभक्तिचिह्न

	एकवचन	बहुवचन
पढ़मा—	प्रत्यय लुक्, दीर्घ	अउ, अओ, णो, ई
बीआ—	,, ,,	णो, ई
तइया—	णा	हि, हिँ, हिं
चउत्थी—	णो, स्स	ण, णं
पंचमी—	णो, त्तो, ओ, उ, हितो	त्तो, ओ, उ, हिंतो, सुंतो
छट्ठी—	णो, स्स	ण, णं
सत्तमी—	म्मि, सि	सु, सुं
संबोहण—	ई, प्रत्ययलुक्	अउ, अओ, णो, ई

इकारान्त हरि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०—	हरी	हरउ, हरओ, हरिणो, हरी
बी०—	हरिं	हरिणो, हरी
त०—	हरिणा	हरीहि, हरीहिँ, हरीहिं
च०—	हरिणो, हरिस्स	हरीण, हरीणं
पं०—	हरिणो, हरित्तो, हरीओ, हरीउ, हरीहिंतो	हरित्तो, हरीओ, हरीउ, हरीहिंतो हरीसुंतो

---

१. पुंसि जसो डउ डओ वा ८।३।२० हे०। २. ङसो वा ५।१५ वर०।
३. टो णा ८।३।२४ हे०। ४. चतुरो वा ८।३।१७ हे०।
५. ङसि ङसो पुं क्लीबे वा ८।३।२३ हे०।

छ०—हरिणो हरिस्स	हरीण, हरीणं
स०—हरिम्मि, हरिंसि	हरीसु, हरीसुं
सं०—हरी, हरि	हरउ, हरओ, हरिओ, हरी

इकारान्त गिरि शब्द के रूप

एकवचन	बहुवचन
प०—गिरी	गिरी, गिरओ, गिरउ, गिरिणो
बी०—गिरिं	गिरिणो, गिरी
त०—गिरिणा	गिरिहि, गिरिहिँ, गिरीहिं
च०—गिरिणो, गिरिस्स	गिरीण, गिरीणं
पं०—गिरिणो, गिरित्तो, गिरीओ, गिरीउ, गिरीहिंतो	गिरित्तो, गिरीओ, गिरीउ, गिरीहिंतो, गिरीसुंतो
छ०—गिरिणो, गिरिस्स	गिरीण, गिरीणं
स०—गिरिम्मि, गिरिंसि	गिरीसु, गिरीसुं
सं०—गिरी, गिरि	गिरउ, गिरओ, गिरिणो, गिरी

इकारान्त णरवइ (नरपति) शब्द के रूप

एकवचन	एकवचन
प०—णरवई	णरवउ, णरवओ, णरवइणो, णरवई
बी०—णरवइं	णरवइणो, णरवई
त०—णरवइणा	णरवईहि, णरवईहिँ, णरवईहिं
च०—णरवइणो, णरवइस्स	णरवईण, णरवईणं
पं०—णरवइणो, णरवइत्तो, णरवईओ, णरवईउ, णरवईहिंतो	णरवइत्तो, णरवईओ, णरवईउ, णरवईहिंतो, णरवईसुंतो
छ०—णरवइणो, णरवइस्स	णरवईण, णरवईणं
स०—णरवइम्मि, णरवइंसि	णरवईसु, णरवईसुं
सं०—हे णरवई, हे णरवइ	हे णरवउ, हे णरवओ, हे णरवइणो, हे णरवई

इकारान्त इसी-रिसी (ऋषि)

एकवचन	बहुवचन
प०—इसी	इसउ, इसओ, इसिणो, इसी
बी०—इसिं	इसिणो, इसी

त०—हरिणा	हरीहि, हरीहिँ, हरीहिं
च०—हरिणो, हरिस्स	हरीण, हरीणं
पं०—हरिणो, हरित्तो, हरीओ, हरीहिंतो, हरीसुंतो हरीउ,	हरीउ, हरित्तो, हरीओ, हरीहिंतो, हरीसुंतो
छ०—हरिणो, हरिस्स	हरीण हरीणं
स०—हरिसि हरिम्मि	हरीसु, हरीसुं
सं०—हे हरि, हे हरी	हे हरउ, हे हरओ, हे हरिणो, हे हरी

इकारान्त अग्गि (अग्नि)

एकवचन	बहुवचन
प०—अग्गी	अग्गउ, अग्गओ, अग्गिणो, अग्गी
बी०—अग्गिं	अग्गिणो, अग्गी
त०—अग्गिणा	अग्गीहि अग्गीहिँ, अग्गीहिं
च०—अग्गिणो, अग्गिस्स	अग्गीण, अग्गीणं
पं०—अग्गिणो, अग्गित्तो, अग्गीओ, अग्गीउ, अग्गिहिंतो	अग्गित्तो, अग्गीओ, अग्गीउ, अग्गिहिंतो, अग्गिसुंतो
छ०—अग्गिणो, अग्गिस्स	अग्गीण, अग्गीणं
स०—अग्गिसि, अग्गिम्मि	अग्गीसु, अग्गीसुं
सं०—हे अग्गि, हे अग्गी	हे अग्गउ, हे अग्गओ, हे अग्गिणो, हे अग्गी

इसी प्रकार मुणि (मुनि), बोहि (बोधि), दहि, रासि (राशि), रवि, कइ (कवि) कवि (कवि), अरि, तिमि, समाहि (समाधि), णिहि (निधि), विहि (विधि), दंडि (दण्डिन्) करि (करिन्), तवस्सि (तपस्विन्), पाणि (प्राणिन्), सुहि (सुधी), गुहि (गुणी) आदि शब्दों के रूप चलते हैं। प्राकृत में दहि, महु, सप्पि प्रभृति कुछ शब्द ह्रस्व और दीर्घ ईकारान्त माने गये हैं। अत विकल्प से इनके रूप अग्गि के समान भी चलते हैं।

उकारान्त भाणु (भानु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—भाणू	भाणुणो, भाणवो, भाणओ, भाणउ, भाणू
बी०—भाणुं	भाणुणो, भाणू

त०—भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिँ, भाणूहिं
च०—भाणुणो, भाणुस्स	भाणूण, भाणूणं
पं०—भाणूणो, भाणुत्तो, भाणूओ भाणूउ, भाणूहिंतो	भाणुत्तो, भाणूओ, भाणूउ, भाणूहिंतो भाणूसुंतो
छ०—भाणुणो, भाणुस्स	भाणूण, भाणूणं
स०—भाणुसि, भाणुम्मि	भाणूसु, भाणूसुं
सं०—हे भाणु, हे भाणू	हे भाणुणो, हे भाणवो, हे भाणओ, हे भाणउ

उकारान्त वाउ (वायु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—वाऊ	वाउणो, वाउवो, वाउओ, वाऊ
बी०—वाउ	वाउणो, वाऊ
त०—वाउणा	वाऊहि, वाऊहिँ, वाऊहिं
च०—वाउणो, वाउस्स	वाऊण, वाऊणं
पं०—वाउणो, वाउत्तो, वाउओ वाऊउ, वाऊहिंतो	वाउत्तो, वाऊओ, वाऊउ, वाऊहिंतो, वाऊसुंतो
छ०—वाउणो, वाउस्स	वाऊण, वाऊणं
स०—वाउसि, वाउम्मि	वाऊसु, वाऊसुं
सं०—हे वाउ, हे वाऊ	हे वाउणो, हे वाउवो, हे वाउओ, हे वाऊ

इसी प्रकार जउ (यदु), धम्मण्णु (धर्मज्ञ), सव्वण्णु (सर्वज्ञ) देवण्णु (देवज्ञ), गउ (गो), गुरु, साहु (साधु), बन्धु, वपु (वपुष्), मेरु, कारु, धणु (धनुष्), सिंधु, केउ (केतु), विज्जु (विद्युत्), राहु, सऊ (शङ्कु), उच्छु (इक्षु), पवासु (प्रवासिन्), वेलु (वेणु), सेउ (सेतु), मच्चु (मृत्यु), खलपु (खलपू), गोत्तभु (गोत्रभू), सयभु (शम्भु), अभिभु (अभिभू) और सयंभु (स्वयम्भू) आदि शब्दों के रूप चलते हैं। प्राकृत में खलपू, गोत्तभू, सयभू, अभिभू, और सयंभू शब्द विकल्प से ह्रस्व उकारान्त होते हैं। अतः इन शब्दों के रूप वाउ के समान भी चलते हैं।

ईकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के रूप भी इकारान्त और उकारान्त शब्दों के समान होते हैं। हेमचन्द्र ने दीर्घ ई, ऊ के लिए ह्रस्व का विधान किया है और संबोधन के एकवचन में अपने नियम को वैकल्पिक माना है।

दीर्घ ईकारान्त पही (प्रधी) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—पही	पहउ, पहओ, पहिणो, पही
बी०—पहिं	पहिणो, पही
त०—पहिणा	पहीहि, पहीहिँ, पहीहिं
च०—पहिणो, पहिस्स	पहीण, पहीणं
पं०—पहिणो, पहित्तो, पहीओ पहीउ, पहीहिंतो	पहित्तो, पहीओ, पहीउ पहीहिंतो, पहीसुंतो
छ०—पहिणो, पहिस्स	पहीण, पहीणं
स०—पहिम्मि, पहिंमि	पहीसु, पहीसुं
सं०—हे पहि	हे पहउ, हे पहओ, हे पहिणो, हे पही।

दीर्घ ईकारान्त गामणी (ग्रामणी)

एकवचन	बहुवचन
प०—गामणी	गामणउ, गामणओ, गामणिणो, गामणी
बी०—गामणिं	गामणिणो, गामणी
त०—गामणिणा	गामणीहि, गामणिहिँ, गामणीहिं
च०—गामणिणो, गामणिस्स	गामणीण, गामणीणं
पं०—गामणिणो, गामणित्तो, गामणीओ, गामणीउ, गामणीहिंतो	गामणित्तो, गामणीओ, गामणीउ, गामणीहिंतो, गामणीसुंतो
छ०—गामणिणो, गामणिस्स	गामणीण, गामणीणं
स०—गामणिम्मि, गामणिंमि	गामणीसु, गामणीसुं
सं०—हे गामणी	हे गामणउ, हे गामणओ, हे गामणिणो, हे गामणी

दीर्घ ऊकारान्त खलपू शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—खलपू	खलपवो, खलपउ, खलपओ, खलपुणो, खलपू
बी०—खलपुं	खलपुणो, खलपू,
त०—खलपुणा	खलपूहि, खलपूहिँ, खलपूहिं

च०—सव्वण्णुणो, सव्वण्णुस्स	सव्वण्णूण, सव्वण्णूणं
पं०—सव्वण्णुणो, सव्वण्णुत्तो, सव्वण्णूओ सव्वण्णूउ, सव्वण्णूहिंतो	सव्वण्णुत्तो, सव्वण्णूओ, सव्वण्णूउ, सव्वण्णूहिंतो, सव्वण्णूसुंतो
छ०—सव्वण्णुणो, सव्वण्णुस्स	सव्वण्णूण, सव्वण्णूणं
स०—सव्वण्णुम्मि, सव्वण्णुंसि	सव्वण्णूसु, सव्वण्णूसुं
सं०—हे सव्वण्णू	हे सव्वण्णवो, हे सव्वण्णउ, हे सव्वण्णओ, हे सव्वण्णुणो, हे सव्वण्णू

दीर्घ ऊकारान्त सयंभू (स्वयम्भू) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—सयंभू	सयंभवो, सयंभउ, सयंभओ, सयंभुणो, सयंभू
बी०—सयंभुं	सयंभुणो, सयंभू
त०—सयंभुणा	सयंभूहि, सयंभूहिँ, सयंभूहिं
च०—सयंभुणो, सयंभुस्स	सयंभूण, सयंभूणं
पं०—सयंभुणो, सयंभुत्तो, सयंभूओ, सयंभूउ, सयंभूहिंतो	सयंभुत्तो, सयंभूओ, सयंभूउ, सयंभूहिंतो, सयंभूसुंतो
छ०—सयंभुणो, सयंभुस्स	सयंभूण, सयंभूणं
स०—सयंभुम्मि, सयंभुंसि	सयंभूसु, सयंभूसुं
सं०—हे सयंभु	हे सयंभवो, सयंभउ, सयंभओ, सयंभुणो, सयंभू

ऋकारान्त पुल्लिंग शब्द

(२२) ऋकारान्त शब्दों के आगे किसी भी विभक्ति के आने पर अन्त्य ऋ के स्थान पर 'आर' आदेश होता[1] है और इसके रूप अकारान्त शब्दों के समान चलते हैं।

(२३) सु और अम् को छोड़कर शेष सभी विभक्तियों में ऋकारान्त शब्द के अन्त्य ऋ के स्थान में विकल्प से उकार होता है।[2] उत्वपक्ष में उकारान्त शब्दों के समान रूप होते हैं।

---

१. आरः स्यादौ—८।३।४५ हे०।

२. ऋतामुदस्यमौसु वा—८।३।४४ हे०।

(२४) सम्बोधन एकवचन में ऋकारान्त शब्दों के अन्तिम ऋ के स्थान पर विकल्प से अ आदेश होता है[1]। पर जो ऋकारान्त शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, उसके स्थान पर यह नियम लागू नहीं होता। ऋकारान्त शब्दों में सु विभक्ति के परे विकल्प से 'आ' आदेश होता है[2]।

(२५) पितृ, भ्रातृ और जामातृ शब्दों से पर में किसी भी विभक्ति के आने पर ऋकार के स्थान में आर आदेश न होकर अर आदेश होता है[3]। अर आदेश होने पर भी रूप अकारान्त के समान ही चलते हैं।

(२६) प्रथमा एकवचन में ऋकारान्त शब्दों के ऋ के स्थान पर विकल्प से आ आदेश होता है[4]।

(२७) अकारान्त होने पर ऋकारान्त शब्दों के रूप अकारान्त जिण के समान और उकारान्त हो जाने पर 'भाणु' के समान होते हैं। विभक्तिचिह्न भी अकारान्त और उकारान्त शब्दों के समान ही जोड़े जाते हैं।

ऋकारान्त कर्तृ शब्द—कत्तार और कत्तु

	एकवचन	बहुवचन
प०	कत्ता, कत्तारो	कत्तारा, कत्तवो, कत्तओ, कत्तउ, कत्तुणो, कत्तू
बी०	कत्तारं	कत्तारे, कत्तारा, कत्तुणो, कत्तू
त०	कत्तारेग, कत्तारेणं, कत्तुणा	कत्तारेहि, कत्तारेहिँ, कत्तारेहिं, कत्तूहि, कत्तूहिँ, कत्तूहिं
च०	कत्ताराय, कत्तारस्स, कत्तुणो, कत्तुस्स	कत्ताराग, कत्ताराणं, कत्तूण, कत्तूणं
पं०	कत्तारत्तो, कत्ताराओ, कत्ताराउ, कत्ताराहि, कत्ताराहिंतो, कत्तारा, कत्तुणो, कत्तुत्तो, कत्तूओ, कत्तूउ, कत्तूहिंतो	कत्तारत्तो, कत्ताराओ, कत्ताराउ, कत्ताराहि, कत्ताराहिंतो, कत्तारासुंतो, कत्तारेहि, कत्तारेहिंतो, कत्तारेसुंतो, कत्तुत्तो, कत्तूओ, कत्तूउ, कत्तूहिन्तो, कत्तूसुन्तो
छ०	कत्तारस्स, कत्तुणो, कत्तुस्स	कत्ताराण, कत्ताराणं, कत्तूण, कत्तूणं
स०	कत्तारे, कत्तारम्मि, कत्तुम्मि	कत्तारेसु, कत्तारेसुं, कत्तूसु, कत्तूसुं
सं०	हे कत्त, हे कत्तारो	हे कत्तारा, हे कत्तवो, हे कत्तओ, हे कत्तउ, कत्तुणो, कत्तू

---

१. ऋतोद्वा ८।३।३९ हे०। २. आ सौ न वा ८।३।४८ हे०।

३. पितृभ्रातृजामातृणामरः ५।३४ वर०। ४. आ च सौ ५।३५ वर०।

भर्तृ—भत्तार, भत्तर, भत्तु शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—भत्ता, भत्तारो, भत्तरो	भत्तुणो, भत्तरा, भत्तवो, भत्तओ, भत्तउ, भत्तू
बी०—भत्तारं, भत्तरं	भत्तारे, भत्तरे, भत्तारा, भत्तू, भत्तुणो
त०—भत्तरेण, भत्तारेण, भत्तुणा	भत्तारेहि, भत्तरेहि, भत्तारेहिँ, भत्तरेहिँ, भत्तारेहिं, भत्तरेहिं, भत्तूहि, भत्तूहिँ, भत्तूहिं
च०—भत्तारस, भत्तरस्स, भत्तुणो, भत्तुस्स	भत्तूणं, भत्तूण, भत्ताराणं, भत्ताराण, भत्तराणं, भत्तराण
पं०—भत्तरत्तो, भत्तराओ, भत्तराउ, भत्तराहि, भत्तराहिन्तो, भत्तुणो, भत्तुत्तो, भत्तूओ, भत्तूउ, भत्तूहिन्तो, भत्ताराओ, भत्ताराउ, भत्ताराहि, भत्ताराहिन्तो, भत्तारा	भत्तरतो, भत्तराओ, भत्तराउ, भत्तराहि, भत्तराहिन्तो, भत्तरासुन्तो, भत्तरेहि, भत्तरेहिन्तो, भत्तरेसुन्तो, भत्तुत्तो, भत्तूओ, भत्तूउ, भत्तूहिन्तो, भत्तूसुन्तो
छ०—भत्तरस्स, भत्तारस्स, भत्तुणो, भत्तुस्स	भत्तराण, भत्तराणं, भत्ताराण, भत्ताराणं, भत्तूण, भत्तूणं
स०—भत्तरे, भत्तरम्मि, भत्तारे, भत्तारम्मि, भत्तुम्मि	भत्तरेसु भत्तरेसुं, भत्तारेसु, भत्तारेसुं, भत्तूसु, भत्तूसुं
सं०—हे भत्त, हे भत्तर, हे भत्तरो, हे भत्तार	हे भत्तरा, भत्तारा, हे भत्तुणो, भत्तू

भ्रातृ—भायर, भाउ शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—भाया, भायरो	भायरा, भाअवो, भाअओ, भाअउ, भाउणो, भाऊ
बी०—भायरं	भायरे, भायरा, भाउणो, भाऊ
त०—भायरेण, भायरेण, भाउणा	भायरेहि, भायरेहिँ, भायरेहिं, भाऊहि, भाऊहिँ, भाऊहिं
च०—भायराय, भायरस्स, भाउणो, भाउस्स	भायराण, भायराण, भाऊण, भाऊणं

पं०—मायरत्तो, मायराओ, मायराउ, मायराहि, मायराहिन्तो, मायरा, माउणो, माउत्तो, माऊओ, माऊउ, माऊहिन्तो	मायरत्तो, मायराओ, मायराउ, मायराहि, मायराहिन्तो, मायरासुन्तो, मायरेहि, मायरेहिन्तो, मायरेसुन्तो, माउत्तो, माऊओ, माऊउ माऊहिन्तो, माऊसुन्तो
छ०—मायरस्स, माउणो, माउस्स	मायराण, मायराणं, माऊण, माऊणं
स०—मायरे, मायरम्मि, माउम्मि	मायरेसु, मायरेसुं, माऊसु, माऊसुं
सं०—हे माय, मायर, मायरो, मायरं	मायरे, मायरा, माअओ, माअओ, माअउ, माऊणो, माऊ

पितृ—पिउ, पिअर शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—पिअरो, पिआ (पिता)	पिअरा, पिउणो, पिअओ, पिअओ, पिअउ, पिऊ
बी०—पिअरं	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ
त०—पिअरेण, पिअरेणं, पिउणा	पिअरेहि, पिअरेहिं, पिअरेहिँ, पिऊहि, पिऊहिं, पिऊहिँ
च०—पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स	पिअराण, पिअराणं, पिऊण, पिऊणं
पं०—पिअराओ, पिअराउ, पिअरा, पिउणो, पिऊओ, पिऊउ	पिअराओ, पिअराउ, पिअराहि, पिअरेहि, पिअराहिंतो, पिअरेहिंतो, पिअरासुंतो, पिअरेसुंतो, पिऊओ, पिऊसुंतो, पिऊउ, पिऊहिंतो
छ०—पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स	पिअराण, पिअराणं, पिऊण, पिऊणं
स०—पिऊंसि, पिअरम्मि, पिअरे, पिउंसि, पिउम्मि	पिअरेसु, पिअरेसुं, पिऊसु, पिऊसुं
सं०—पिअरं, पिअ, पिअरो, पिअरा, पिअर	पिउणो, पिअवो, पिअओ, पिअउ, पिउ

दातृ—दाउ, दायार शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—दायारो, दायर	दायारा, दाउणो, दायवो, दायओ, दायउ, दाऊ

बी०—दायारं	दायारे, दायारा, दाउणो, दाऊ
त०—दायारेण, दायारेणं, दाउणा	दायारेहि, दायारेहिं, दायारेहिँ, दाऊहि, दाऊहिं, दाऊहिँ
च०—दायारस्स, दाउणो, दाउस्स	दायाराण, दायाराणं, दाऊण, दाऊणं
पं०—दायाराओ, दायाराउ, दायारा, दाउणो, दाऊओ, दाऊउ	दायाराओ, दायाराउ, दायाराहि, दायारेहि, दायाराहिन्तो, दायारेहिंतो, दायारासुंतो, दायारेसुंतो, दाऊओ, दाऊउ, दाऊहिंतो, दाऊसुंतो
छ०—दायारस्स, दाउणो, दाउस्स	दायाराण, दायाराणं, दाऊण, दाऊणं
स०—दायारंसि, दायारम्मि, दायारे दाउंसि, दाउम्मि	दायारेसु, दायारेसुं, दाऊसु, दाऊसुं
सं०—दायार, दाय, दायारो, दायारा	दायारा, दाउणो, दायवो, दायओ, दायउ, दाऊ

एकारान्त, ऐकारान्त, ओकारान्त और औकारान्त

पुल्लिंग शब्द

(२८) प्राकृत में एकारान्त और ओकारान्त शब्दों का प्रायः अभाव है। संस्कृत के एकारान्त और ओकारान्त शब्दों में स्वार्थिक क—अ प्रत्यय जोड़ने से प्राकृत शब्द बनते हैं, पर उनके रूप जिण शब्द के समान होते हैं।

(२९) संस्कृत के ऐकारान्त और औकारान्त शब्द प्राकृत में अकारान्त हो जाते हैं, अतः इनके रूप प्रायः वीर या जिण शब्द के समान चलते हैं।

ऐकारान्त सुरै>सुरेअ शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—सुरेओ	सुरेआ
बी०—सुरेअं	सुरेआ, सुरेए
त०—सुरेएण, सुरेएणं	सुरेएहि, सुरेएहिं, सुरेएहिँ
च०—सुरेअस्स, सुरेआय	सुरेआण, सुरेआणं
पं०—सुरेअत्तो सुरेआओ, सुरेआउ, सुरेआहि, सुरेआहिंतो, सुरेआ	सुरेअत्तो, सुरेआओ, सुरेआउ, सुरेआहि सुरेएहि, सुरेआहिन्तो, सुरेआसुन्तो
छ०—सुरेअस्स	सुरेआण, सुरेआणं
स०—सुरेअंसि, सुरेअम्मि	सुरेएसु, सुरेसुं
सं०—हे सुरेओ	हे सुरेआ

औकारान्त ग्लौ<गिलोअ शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—गिलोओ	गिलोआ
बी०—गिलोअं	गिलोए, गिलोआ
त०—गिलोएण, गिलोएणं	गिलोएहि, गिलोएहिं, गिलोएहिँ
च०—गिलोअस्स, गिलोआय	गिलोआण, गिलोआणं
पं०—गिलोअत्तो, गिलोआओ, गिलोआउ, गिलोआहि, गिलोआहिन्तो, गिलोआ	गिलोअत्तो, गिलोआओ, गिलोआउ, गिलोआहि, गिलोएहि, गिलोआहिंतो, गिलोआसुंतो, गिलोएहिंतो, गिलोएसुंतो
छ०—गिलोअस्स	गिलोआण, गिलोआणं
स०—गिलोअंसि, गिलोअम्मि	गिलोएसु, गिलोएसुं
सं०—हे गिलोओ	हे गिलोआ

स्वरान्त पुँल्लिङ्ग शब्दरूप समाप्त।

स्वरान्त स्त्रीलिङ्ग

(३०) स्त्रीलिंग शब्दों से पर में आनेवाले जस् और शस् के स्थान में विकल्प से उत् और ओत् आदेश होते हैं और उनसे पूर्व के ह्रस्व स्वर को विकल्प से दीर्घ हो जाता है।[1]

(३१) स्त्रीलिङ्ग में टा, ङस् और ङि में प्रत्येक के स्थान में अत्, आत्, इत् और एत् ये चार आदेश होते हैं। पूर्व के ह्रस्व स्वर को दीर्घ हो जाता है। पर ङस् प्रत्यय के स्थान में आदेश होनेपर पूर्व के ह्रस्व स्वर को विकल्प से दीर्घ होता है।[2]

(३२) अम् विभक्ति में—द्वितीया एकवचन में अन्तिम दीर्घ को विकल्प से ह्रस्व होता है।

(३३) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान दीर्घ ईकारान्त शब्द से पर में आनेवाले सु, जस् और शस् के स्थान में विकल्प से आ आदेश होता है।

(३४) संबोधन में आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों में आ के स्थान पर ह्रस्व होता है।

---

१. स्त्रियामुदोतौ वा ८।३।२७ हे०

२. टा-ङस्-ङेरदादिदेद्वा तु ङसेः ८।३।२९ हे०

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में जोड़े जानेवाले विभक्ति चिह्न

एकवचन	बहुवचन
प०—(लुक्)	उ, ओ, (लुक्)
बी०—ं	उ, ओ, (लुक्)
त०—अ, इ, ए	हि, हिं, हिँ
च०—अ, इ, ए,	ण, णं
पं०—अ, इ, ए, त्तो, ओ, उ, हिन्तो	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो
छ०—अ, इ, ए	ण, णं
स०—अ, इ, ए	सु, सुं
सं०—(लुक्)	उ, ओ, (लुक्)

लदा < लता शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—लदा	लदा, लदाओ, लदाउ
बी०—लदं	लदा, लदाओ, लदाउ
त०—लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाहि, लदाहिं, लदाहिँ
च०—लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाण, लदाणं
पं०—लदाए, लदाइ, लदाअ, लदत्तो, लदाओ, लदाउ, लदाहिन्तो	लदत्तो, लदाओ, लदाउ, लदाहिन्तो, लदासुन्तो
छ०—लदाए, लदाइ, लदाअ	लदाण, लदाणं
स०—लदाए, लदाइ, लदाअ	लदासु, लदासुं
सं०—हे लदे, हे लदा	हे लदा, हे लदाओ, हे लदाउ

माला

एकवचन	बहुवचन
प०—माला	मालाउ, मालाओ, माला
बी०—मालं	मालाउ, मालाओ, माला
त०—मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाहि, मालाहिँ, मालाहिं
च०—मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाण, मालाणं
पं०—मालाअ, मालाइ, मालाए, मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो	मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिन्तो, मालासुन्तो

छ०—मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाण, मालाणं
स०— ,, ,, ,	मालासु, मालासुं
सं०—माले, माला	मालाओ, मालाउ, माला

छिहा (स्पृहा)

एकवचन	बहुवचन
प०—छिहा	छिहाउ, छिहाओ, छिहा
बी०—छिहं	,, ,, ,,
त०—छिहाअ, छिहाइ, छिहाए	छिहाहि, छिहाहिँ, छिहाहिं
च०— ,, ,, ,,	छिहाण, छिहाणं
प०—छिहाअ, छिहाइ, छिहाए, छिहत्तो, छिहाओ, छिहाउ, छिहाहिन्तो	छिहत्तो, छिहाओ, छिहाउ, छिहाहिन्तो, छिहासुन्तो
छ०—छिहाअ, छिहाइ, छिहाए	छिहाण, छिहाणं
स०— ,, ,, ,,	छिहासु, छिहासुं
सं०—छिहे, छिहा	छिहाउ, छिहाओ, छिहा

हलिद्दा, हलद्दा (हरिद्रा)

एकवचन	बहुवचन
प०—हलिद्दा	हलिद्दाउ, हलिद्दाओ, हलिद्दा
बी०—हलिद्दं	,, ,, ,,
त०—हलिद्दाअ, हलिद्दाइ, हलिद्दाए	हलिद्दाहि, हलिद्दाहिँ, हलिद्दाहिं
च०— ,, ,,	हलिद्दाण, हलिद्दाणं
पं०— ,, ,, हलिद्दत्तो, हलिद्दाओ, हलिद्दाउ, हलिद्दाहिन्तो	हलिद्दत्तो, हलिद्दाउ, हलिद्दाओ, हलिद्दाहिन्तो, हलिद्दासुन्तो
छ०—हलिद्दाअ, हलिद्दाइ, हलिद्दाए	हलिद्दाण, हलिद्दाणं
स०— ,, ,, ,,	हलिद्दासु, हलिद्दासुं
सं०—हलिद्दे, हलिद्दा	हलिद्दाउ, हलिद्दाओ, हलिद्दा

मट्टिआ (मृत्तिका)

एकवचन	बहुवचन
प०—मट्टिआ	मट्टिआउ, मट्टिआओ, मट्टिआ
बी०—मट्टिअं	,, ,, ,,

त०—मट्टिआअ, मट्टिआइ, मट्टिआए	मट्टिआहि, मट्टिआहिँ, मट्टिआहिं
च०— ,, ,, ,,	मट्टिआण, मट्टिआणं
पं०— ,, ,, ,,	मट्टिअत्तो, मट्टिआओ
मट्टिअत्तो, मट्टिआओ, मट्टिआउ, मट्टिआउ, मट्टिआहिन्तो, मट्टिआसुन्तो मट्टिआहिन्तो	
छ०—मट्टिआअ, मट्टिआइ, मट्टिआए	मट्टिआण, मट्टिआणं
स०— ,, ,, ,,	मट्टिआसु, मट्टिआसुं
सं०—हे मट्टिए, मट्टिआ	हे मट्टिआउ, मट्टिआओ, मट्टिआ

इकारान्त स्त्रीलिंग विभक्तिचिह्न-प्रत्यय

एकवचन	बहुवचन
प०—(लुक्)	उ, ओ, (लुक्)
बी०—म्	,, ,,
त०—अ, आ, इ, ए	हि, हिँ, हिं
च०— ,, ,,	ण, णं
पं०— ,, ,, त्तो, ओ, उ, हिन्तो	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो
छ०— ,, ,,	ण, णं
स०— ,, ,,	सु, सुं
सं०—ई (लुक्)	उ, ओ (लुक्)

मई (मति)

एकवचन	बहुवचन
प०—मई	मईउ, मईओ, मई
बी०—मइं	,, ,, ,,
त०—मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईहि, मईहिँ, मईहिं
च०— ,, ,, ,,	मईण, मईणं
पं०— ,, ,, ,,	मइत्तो, मईओ, मईउ,
मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिंतो	मईहिन्तो, मईसुन्तो
छ०—मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईण, मईणं
स०— ,, ,, ,,	मईसु, मईसुं
सं०—हे मई, मइ	हे मईउ, मईओ, मई

मुत्ति (मुक्ति)

प०—मुत्ती	मुत्तीउ, मुत्तीओ, मुत्ती
बी०—मुत्तिं	,, ,,
त०—मुत्तीअ, मुत्तीआ, मुत्तीइ, मुत्तीए	मुत्तीहि, मुत्तीहिँ, मुत्तीहिं
च०— ,, ,, ,,	मुत्तीण, मुत्तीणं
पं०— ,, ,, ,, मुत्तित्तो, मुत्तीओ, मुत्तीउ, मुत्तीहिन्तो	मुत्तित्तो, मुत्तीओ, मुत्तीउ, मुत्तीहिन्तो, मुत्तीसुन्तो
छ०—मुत्तीअ, मुत्तीआ, मुत्तीइ, मुत्तीए,	मुत्तीण, मुत्तीणं
स०— ,, ,, ,,	मुत्तीसु, मुत्तीसुं
सं०—हे मुत्ती, मुत्ति	मुत्तीउ, मुत्तीओ, मुत्ती

राइ (रात्रि)

एकवचन	बहुवचन
प०—राई	राईओ, राईउ, राई
बी०—राइं	,, ,,
त०—राईअ, राईआ, राईइ, राईए	राईहि, राईहिँ, राईहिं
च०— ,, ,, ,, ,,	राईण, राईणं
पं०—राईअ, राईआ, राईइ, राईए, राईत्तो, राईओ, राईउ, राईहिन्तो	राइत्तो, राईओ, राईउ, राईहिन्तो, राईसुन्तो
छ०—राईअ, राईआ राईइ, राईए	राईण, राईणं
स०— ,, ,, ,, ,,	राईसु, राईसुं
सं०—हे राई, राइ	हे राईउ, राईओ, राई

ईकारान्त स्त्रीलिंग विभक्तिचिह्न—प्रत्यय

एकवचन	बहुवचन
प०—[लुक्], आ	आ, उ, ओ, [लुक्]
बी०—मं	,, ,, ,, ,,
त०—अ, आ, इ, ए	हि, हिँ, हिं
च०—,, ,, ,, ,,	ण, णं
पं०—,, ,, ,, ,, त्तो, ओ, उ, हिन्तो	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो

छ०—अ, आ, इ, ए　　　ण, णं
स०—,, ,, ,, ,,　　　सु, सुं
सं०—[लुक्]　　　आ, उ, ओ [लुक्]

लच्छी (लक्ष्मी)

	एकवचन	बहुवचन
प०	लच्छी, लच्छीआ	लच्छीआ, लच्छीउ, लच्छीओ, लच्छी
बी०	लच्छि	,, ,, ,, ,,
त०	लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए	लच्छीहि, लच्छीहिँ, लच्छीहिं
च०	,, ,, ,, ,,	लच्छीण, लच्छीणं
पं०	,, ,, ,, ,, लच्छित्तो, लच्छिओ, लच्छीउ, लच्छीहिंतो	लच्छित्तो, लच्छीओ, लच्छीउ, लच्छीहिन्तो, लच्छीसुंतो
छ०	लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए	लच्छीण, लच्छीणं
स०	,, ,, ,, ,,	लच्छीसु, लच्छीसुं
सं०	हे लच्छि	हे लच्छीआ, लच्छीउ, लच्छीओ, लच्छी

रुप्पिणी (रुक्मिणी)

	एकवचन	बहुवचन
प०	रुप्पिणी, रुप्पिणीआ	रुप्पिणीआ, रुप्पिणीउ, रुप्पिणीओ, रुप्पिणी
बी०	रुप्पिणिं	रुप्पिणीआ, रुप्पिणीउ, रुप्पिणीओ, रुप्पिणी
त०	रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए	रुप्पिणीहि, रुप्पिणीहिँ, रुप्पिणीहिं
च०	रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए	रुप्पिणीण, रुप्पिणीणं
पं०	रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए रुप्पिणित्तो, रुप्पिणीओ, रुप्पिणीओ, रुप्पिणीउ, रुप्पिणीहिन्तो	रुप्पिणित्तो, रुप्पिणीओ, रुप्पिणीउ, रुप्पिणीहिन्तो, रुप्पिणीसुन्तो
छ०	रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए	रुप्पिणीण, रुप्पिणीणं

स०—रुप्पिणीअ, रुप्पिणीआ, रुप्पिणीइ, रुप्पिणीए — रुप्पिणीसु, रुप्पिणीसुं

सं०—हे रुप्पिणि — हे रुप्पिणीआ, रुप्पिणीउ, रुप्पिणीओ, रुप्पिणी

बहिणी (भगिनी)

	एकवचन	बहुवचन
प०	बहिणी, बहिणीआ	बहिणीआ, बहिणीउ, बहिणीओ, बहिणी
बी०	बहिणिं	,, ,, ,,
त०	बहिणीअ, बहिणीआ, बहिणीइ, बहिणीए	बहिणीहि, बहिणीहिँ, बहिणीहिं
च०	बहिणीअ, बहिणीआ, बहिणीइ, बहिणीए	बहिणीण, बहिणीणं
पं०	,, ,, बहिणित्तो, बहिणीओ, बहिणीउ, बहिणीहिंतो	बहिणित्तो, बहिणीओ, बहिणीउ, बहिणीसुन्तो, बहिणीहिंतो
छ०	बहिणीअ, बहिणीआ, बहिणीइ, बहिणीए	बहिणीण, बहिणीणं
स०	बहिणीअ, बहिणीआ, बहिणीइ, बहिणीए	बहिणीसु, बहिणीसुं
सं०	हे बहिणि	हे बहिणीआ, बहिणीउ, बहिणीओ, बहिणी

उकारान्त स्त्रीलिंग धेणु-शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	धेणू	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
बी०	धेणुं	,, ,, ,,
त०	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूहि, धेणूहिँ, धेणूहिं
च०	,,	धेणूण, धेणूणं
पं०	,, धेणुत्तो, धेणुओ, धेणूउ, धेणूहिन्तो	धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिन्तो, धेणूसुन्तो

छ०—धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए धेणूण, धेणूणं
स०— ,, धेणूसु, धेणूसुं
सं०—हे धेणू, धेणु हे धेणूउ, धेणूओ, धेणू

तणु

एकवचन	बहुवचन
प०—तणू	तणूउ, तणूओ, तणू
बी०—तणुं	,, ,,
त०—तणूअ, तणूआ, तणूइ, तणूए	तणूहि, तणूहिँ, तणूहिं
च०— ,, ,, ,,	तणूण, तणूणं
पं०— ,, ,, ,, तणुत्तो, तणूओ, तणूउ, तणूहिन्तो	तणुत्तो, तणूओ, तणूउ, तणूहिन्तो, तणूसुन्तो
छ०—तणूअ, तणूआ, तणूइ, तणूए	तणूण, तणूणं
स०— ,, ,, ,,	तणूसु, तणूसुं
सं०— हे तणू, तणु	हे तणूउ, तणूओ, तणू

रज्जु

एकवचन	बहुवचन
प०—रज्जू	रज्जूउ, रज्जूओ, रज्जू
बी०—रज्जुं	,, ,, ,,
त०—रज्जूअ, रज्जूआ, रज्जूइ, रज्जूए	रज्जूहि, रज्जूहिँ, रज्जूहिं
च०— ,, ,, ,,	रज्जूण, रज्जूणं
पं०— ,, ,, ,, रज्जुत्तो, रज्जूओ, रज्जूउ, रज्जूहिंतो	रज्जुत्तो, रज्जूओ, रज्जूउ, रज्जूहिन्तो, रज्जूसुंतो
छ०—रज्जूअ, रज्जूआ, रज्जूइ, रज्जूए	रज्जूण, रज्जूणं
स०— ,, ,, ,,	रज्जूसु, रज्जूसुं
सं०—हे रज्जू, रज्जु	हे रज्जूउ, रज्जूओ, रज्जू

ऊकारान्त स्त्रीलिंगशब्द

बहू

एकवचन	बहुवचन
प०—बहू, बहूआ	बहूआ, बहूउ, बहूओ, बहू
बी०—बहुं	,, ,, ,,

त०	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए	बहूहि, बहूहिँ, बहूहिं
च०	,, ,, ,,	बहूण, बहूणं
पं०	,, ,, ,, बहुत्तो, बहूओ, बहूउ, बहूहिन्तो	बहुत्तो, बहूओ, बहूउ, बहूहिन्तो, बहूसुन्तो
छ०	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए	बहूण, बहूणं
स०	,, ,, ,,	बहूसु, बहूसुं
सं०	हे बहु	हे बहूआ, बहूउ, बहूओ,

सासू (श्वश्रू)

	एकवचन	बहुवचन
प०	सासू, सासूआ	सासूआ, सासूउ, सासूओ, सासू
बी०	सासुं	,, ,, ,,
त०	सासूअ, सासूआ, सासूइ, सासूए	सासूहि, सासूहिँ, सासूहिं
च०	,, ,, ,,	सासूण, सासूणं
पं०	,, ,, ,, सासुत्तो, सासूओ, सासूउ, सासूहिन्तो	सासुत्तो, सासूओ, सासूउ, सासूहिन्तो, सासू न्तो
छ०	सासूअ, सासूआ, सासूइ, सासूए	सासूण, सासूणं
स०	,, ,, ,,	सासूसु, सासूसुं
सं०	हे सासु	हे सासूआ, सासूउ, सासूओ, सासू

चमू

	एकवचन	बहुवचन
प०	चमू, चमूआ	चमूआ, चमूउ, चमूओ, चमू
बी०	चमुं	,, ,, ,,
त०	चमूअ चमूआ, चमूइ, चमूए	चमूहि, चमूहिँ, चमूहिं
च०	,, ,, ,,	चमूण, चमूणं
पं०	,, ,, ,, चमुत्तो, चमूओ, चमूउ, चमूहिन्तो	चमुत्तो, चमूओ, चमूउ, चमूहिन्तो, चमू न्तो
छ०	चमूअ, चमूआ, चमूइ, चमूए	चमूण, चमूणं
स०	,, ,, ,,	चमूसु, चमूसुं
सं०	हे चमु	हे चमूआ, चमूउ, चमूओ, चमू

ऋकारान्त स्त्रीलिंग शब्द—

माआ

एकवचन	बहुवचन
प०—माआ	माआओ, माआउ, माआ
बी०—माअं	" "
त०—माआअ, माआइ, माआए	माआहि, माआहिँ, माआहिं
च०— " " "	माआण, माआणं
पं०— " " " माअत्तो, माअत्तो, माआओ, माआउ, माआहिन्तो	माआओ, माआउ, माआहिन्तो, माआसुन्तो
छ०—माआअ, माआइ, माआए	माआण, माआणं
स०— " " "	माआसु, माआसुं
सं०—हे माआ	हे माआओ, माआउ, माआ

ससा (स्वसृ)

एकवचन	बहुवचन
प०—ससा	ससाओ, ससाउ, ससा
बी०—ससं	" " "
त०—ससाअ, ससाइ, ससाए	ससाहि, ससाहिँ, ससाहिं
च०— " " "	ससाण, ससाणं
पं०— " " " ससत्तो, ससाओ, ससाउ, ससाहिन्तो	ससत्तो, ससाओ, ससाउ, ससाहिन्तो, ससासुन्तो
छ०—ससाअ, ससाइ, ससाए	ससाण, ससाणं
सं०— " " "	ससासु, ससासुं
सं०—हे ससा	हे ससाओ, ससाउ, ससा

णणन्दा (ननन्द)

एकवचन	बहुवचन
पं०—णणन्दा	णणन्दाओ, णणन्दाउ, णणन्दा
बी०—णणन्दं	" " "
त०—णणन्दाअ, णणन्दाइ, णणन्दाए	णणन्दाहि, णणन्दाहिँ, णणन्दाहिं
च०— " " "	णणन्दाण, णणन्दाणं
पं०— " " " णणन्दत्तो, णणन्दाओ, णणन्दाउ, णणन्दाहिन्तो	णणन्दत्तो, णणन्दाओ, णणन्दाउ, णणन्दाहिन्तो, णणन्दासुंतो

छ०—णणन्दाअ, णणन्दाइ, णणन्दाए		णणन्दाण, णणन्दाणं
स०— ,, ,, ,,		णणन्दासु, णणन्दासुं
सं०—हे णणन्दा		हे णणन्दाओ, णणन्दाउ, णणन्दा

माउसिआ (मातृष्वसृ)

एकवचन	बहुवचन
प०—माउसिआ	माउसिआओ, माउसिआउ, माउसिआ
बी०—माउसिअं	,, ,, ,,
त०—माउसिआअ, माउसिआइ, माउसिआए	माउसिआहि, माउसिआहिँ, माउसिआहिं
च०— ,, ,,	माउसिआण, माउसिआणं
पं०— ,, ,, माउसिअत्तो, माउसिआओ, माउसिआउ, माउसिआहिन्तो	माउसिअत्तो, माउसिआओ, माउसिआउ, माउसिआहिंतो, माउसिआसुन्तो
छ०—माउसिआअ, माउसिआइ, माउसिआए	माउसिआण, माउसिआणं
स०— ,, ,, ,,	माउसिआसु, माउसिआसुं
सं०—हे माउसिआ	हे माउसिआओ, माउसिआउ, माउसिआ

धूआ (दुहितृ)

एकवच	बहुवचन
प०—धूआ	धूआओ, धूआउ, धूआ
बी०—धूअं	,, ,, ,,
त०—धूआअ, धूआइ, धूआए	धूआहि, धूआहिँ, धूआहिं
च०— ,, ,, ,,	धूआण, धूआणं
पं०— ,, ,, ,, धूअत्तो, धूआओ, धूआउ, धूआहिन्तो	धूअत्तो, धूआओ, धूआउ, धूआहिन्तो, धूआसुन्तो
छ०—धूआअ, धूआइ, धूआए	धूआण, धूआणं
स०— ,, ,, ,,	धूआसु, धूआसुं
सं०—हे धूआ	हे धूआओ, धूआउ, धूआ

ओकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

गावी (गो)

एकवचन	बहुवचन
प०—गावी, गावीआ	गावीआ, गावीउ, गावीओ, गावी
बी०—गाविं	,, ,, ,,
त०—गावीअ, गावीआ, गावीइ, गावीए	गावीहि, गावीहिँ, गावीहिं
च०—,, ,, ,,	गावीण, गावीणं
पं०—,, ,, ,, गावित्तो, गावीओ, गावीउ, गावीहिन्तो	गावित्तो, गावीओ, गावीउ, गावीहिन्तो, गावीसुन्तो
छ०—गावीअ, गावीआ, गावीइ, गावीए	गावीण, गावीणं
स०—,, ,,	गावीसु, गावीसुं
सं०—हे गावि	हे गावीआ, गावीउ, गावीओ, गावी

औकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

नावा (नौ)

एकवचन	बहुवचन
प०—नावा	नावाओ, नावाउ, नावा
बी०—नावं	,, ,,
त०—नावाअ, नावाइ, नावाए	नावाहि, नावाहिँ, नावाहिं
च०—,, ,,	नावाण, नावाणं
पं०—,, ,, नावत्तो, नावाओ, नावाउ, नावाहिन्तो	नावत्तो, नावाओ, नावाउ, नावाहिन्तो नावासुन्तो
छ०—नावाअ, नावाइ, नावाए	नावाण, नावाणं
स०—,, ,,	नावासु, नावासुं
सं०—हे नावा	हे नावाओ, नावाउ, नावा

स्वरान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दरूप समाप्त ।

स्वरान्त नपुंसक लिंग शब्द

(३५) नपुंसक लिंग में स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले सु के स्थान में प्रथमा एकवचन में म् होता है।

(३६) नपुंसक लिंग में स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले जस् और शस् के स्थान में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में इँ, इं और णि आदेश होते हैं।

(३७) नपुंसक लिंग के सम्बोधन एकवचन में 'सु' का लोप होता है।

(३८) सु के पर में रहने पर प्रथमा के एकवचन में इकारान्त और उकारान्त शब्दों के अन्तिम इ और उ को दीर्घ नहीं होता।

नपुंसकलिंग के विभक्तिचिह्न

	एकवचन	बहुवचन
प०	म्	णि, इँ, इं
बी०	म्	णि, इँ, इं
सं०	०	,, ,,

शेष विभक्तियों में पुल्लिंग के समान विभक्ति चिह्न होते हैं

वण (वन) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	वणं	वणाइँ, वणाइं, वणाणि
बी०	वणं	,, ,,
त०	वणेण	वणेहि, वणेहिं
च०	वणस्स	वणाणं
पं०	वणत्तो, वणाओ, वणाउ, वणाहि, वणाहिन्तो, वणा	वणत्तो, वणाओ, वणाउ, वणाहि, वणाहिन्तो, वणासुन्तो
छ०	वणस्स	वणाणं
स०	वणे, वणम्मि	वणेसु, वणेसुं
सं०	हे वण	हे वणाइँ, हे वणाइं, हे वणाणि

धण (धन) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	धणं	धणाइँ, धणाइं, धणाणि
बी०	धणं	धणाइँ, धणाइं, धणाणि

इसके आगे वीर शब्द के समान रूप होते हैं।

इकारान्त दहि (दधि) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—दहिं	दहीइँ, दहीइं, दहीणि
बी०—दहिं	दहीइँ, दहीइं, दहीणि
त०—दहिणा	दहीहिं
च०—दहिणो, दहिस्स	दहीण, दहीणं
पं०—दहिणो, दहित्तो, दहीओ, दहीउ, दहीहिन्तो	दहित्तो, दहीओ, दहीउ, दहीहिन्तो, दहीसुन्तो
छ०—दहिणो, दहिस्स	दहीण, दहीणं
स०—दहिम्मि	दहीसु, दहीसुं
सं०—हे दहि	हे दहीइं, दहीइं, दहीणि

वारि

एकवचन	बहुवचन
प०—वारिं	वारीइँ, वारीइं, वारीणि
बी०—वारिं	वारीइँ, वारीइं, वारीणि

इसके आगे इकारान्त पुंलिंग शब्दों के समान रूप होते हैं।

सुरहि (सुरभि)

एकवचन	बहुवचन
प०—सुरहिं	सुरहीइँ, सुरहीइं, सुरहीणि
बी०—सुरहिं	सुरहीइँ, सुरहीइं, सुरहीणि

इसके आगे पुंलिंग शब्दों के समान रूप होते हैं।

उकारान्त महु (मधु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—महुं	महूइँ, महूइं, महूणि
बी०—महुं	महूइँ, महूइं, महूणि
त०—महुणा	महूहि, महूहिँ, महूहिं
च०—महुणो, महुस्स	महूण, महूणं
पं०—महुणो, महुत्तो, महूओ,	महुत्तो, महूओ, महूउ, महूहिन्तो,

महुउ, महूहिन्तो	महूसुन्तो
छ०—महुणो, महुस्स	महूण, महूणं
स०—महुम्मि	महूसु, महूसुं
सं०—हे महु	हे महूइँ, महूइं, महूणि

जाणु (जानु)

एकवचन	बहुवचन
प०—जाणुं	जाणूइँ, जाणूइं, जाणूणि
बी०—जाणुं	जाणूइँ, जाणूइं, जाणूणि

इसके आगे महु के समान रूप होते हैं।

अंसु (अश्रु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—अंसुं	अंसूइँ, अंसूइं, अंसूणि
बी०—अंसुं	अंसूइँ, अंसूइं, अंसूणि

इसके आगे महु के समान रूप होते हैं।

स्वरान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द समाप्त।

व्यञ्जनान्त पुल्लिङ्ग शब्द

प्राकृत में व्यञ्जनान्त या हलन्त शब्द नहीं होते। कुछ हलन्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जनों का लोप होता है और कुछ हलन्त शब्द अजन्त—स्वरान्त के रूप में परिणत हो जाते हैं। अतः हलन्त शब्दों के साधनार्थ स्वरान्त शब्दों के समान ही नियम समझने चाहिए।

अप्पाण, अत्ताण, अप्प और अत्त (आत्मन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अप्पाणो, अप्पा, अप्पो; अत्ताणो, अत्ता, अत्तो	अप्पाणो, अप्पाणा, अप्पा; अत्ताणो, अत्ताणा, अत्ता
बी०—अप्पाणं, अप्पं, अत्ताणं, अत्तं	अप्पाणो, अप्पाणे, अप्पाणा, अप्पे, अप्पा; अत्ताणो, अत्ताणे, अत्ताणा, अत्ते, अत्ता।

त०—	अप्पणिआ, अप्पणइआ, अप्पणा, अप्पाणेण, अप्पाणेणं, अप्पेण, अप्पेणं; अत्तणा, अत्ताणेण, अत्ताणेणं, अत्तेण, अत्तेणं	अप्पाणेहि-हिँ-हिं, अप्पेहि-हिँ-हिं; अत्ताणेहि-हिँ-हिं, अत्तेहि-हिँ-हिं
च०—	अप्पाणस्स, अप्पणो, अप्पस्स; अत्ताणस्स, अत्तणो, अत्तस्स	अप्पाणाण, अप्पाणाणं, अप्पाण, अप्पाणं; अत्ताणाण, अत्ताणाणं, अत्ताण, अत्ताणं
पं०—	अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ, अप्पाणाउ, अप्पाणाहि, अप्पाणाहिन्तो, अप्पाणा,	अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ, अप्पाणाउ, अप्पाणाहि, अप्पाणाहिन्तो, अप्पाणासुन्तो, अप्पाणेहि, अप्पाणेहिन्तो, अप्पाणेसुन्तो,
	अप्पाणो, अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पाउ, अप्पाहि, अप्पाहिन्तो, अप्पा;	अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पाउ, अप्पाहि, अप्पाहिन्तो, अप्पासुन्तो, अप्पेहि, अप्पेहिन्तो, अप्पेसुन्तो;
	अत्ताणत्तो, अत्ताणाओ, अत्ताणाउ, अत्ताणाहि, अत्ताणाहिन्तो, अत्ताणा	अत्ताणत्तो, अत्ताणाओ, अत्ताणाउ, अत्ताणाहि, अत्ताणाहिन्तो, अत्ताणासुन्तो, अत्ताणेहि, अत्ताणेहिन्तो, अत्ताणेसुन्तो;
	अत्ताणो, अत्तणो, अत्ताओ, अत्ताउ, अत्ताहि, अत्ताहिन्तो, अत्ता	अत्तत्तो, अत्ताओ, अत्ताउ, अत्ताहि, अत्ताहिन्तो, अत्तासुन्तो, अत्तेहि, अत्तेहिन्तो, अत्तेसुन्तो
छ०—	अप्पाणस्स, अप्पणो, अप्पस्स; अत्ताणस्स, अत्तणो, अत्तस्स	अप्पाणाण, अप्पाणाणं, अप्पाण, अप्पाणं; अत्ताणाण, अत्ताणाणं, अत्ताण, अत्ताणं
स०—	अप्पाणम्मि, अप्पाणे, अप्पम्मि, अप्पे, अत्ताणम्मि, अत्ताणे, अत्तम्मि, अत्ते	अप्पाणेसु, अप्पाणेसुं, अप्पेसु, अप्पेसुं; अत्ताणेसु, अत्ताणेसुं, अत्तेसु, अत्तेसुं
सं०—	हे अप्पाणो, अप्पाण, अप्पो, अप्पा, अप्प, हे अत्ताणो, अत्ताण, अत्तो, अत्ता, अत्त	हे अप्पाणो, अप्पाणा, अप्पा; हे अत्ताणो, अत्ताणा, अत्ता

राय (राजन्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—राया	राया, रायाणो, राइणो
बी०—रायं, राइणं	राए, राया, रायाणो, राइणो
त०—राइणा, रण्णा, राएण, राएणं	राएहि-हिं-हिँ; राईहि-हिं-हिँ
च०—रण्णो, राइणो, रायस्स	राईण, राईणं, रायाण, रायाणं
पं०—रण्णो, राइणो, रायत्तो; रायोओ, रायाउ, रायाहि, रायाहिन्तो	रायत्तो, राइत्तो, राईउ, राईओ, राईहिन्तो, राईसुन्तो, रायाओ, रायाउ, रायाहिन्तो, रायासुन्तो
छ०—रण्णो, राइणो, रायस्स	राईण, राईणं, रायाण, रायाणं
स०—राये, रायम्मि, राइम्मि	राईसु, राईसुं, राएसु, राएसुं
सं०—हे राया, राय	हे राया, रायाणो, राइणो

मंहव, महवाण (मघवन्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—महवा, महवो	महवा
बी०—महवं	महवे, महवा
त०—महवणा, महवेण, महवेणं	महवेहि-हिं-हिँ
च०—महवणो, महवस्स,	महवाण, महवाणं
पं०—महवाणो, महवत्तो, महवाओ, महवाउ, महवाहि, महवाहिन्तो, महवा	महवत्तो, महवाओ, महवाउ, महवाहि, महवाहिन्तो, महवासुन्तो, महवेहि, महवेहिन्तो, महवेसुन्तो
छ०—महवणो, महवस्स	महवाण, महवाणं
स०—महवे, महवम्मि	महवेसु, महवेसुं
सं०—हे महवा, महवो	हे महवा

मुद्ध, मुद्धाण (मूर्धन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—मुद्धा, मुद्धो	मुद्धा
बी०—मुद्धं	मुद्धे, मुद्धा

त०—चन्दमेण, चन्दमेणं चन्दमेहि,-हिं-हिँ
च०—चन्दमाय, चन्दमस्स चन्दमाण, चन्दमाणं
प०—चन्दमत्तो, चन्दमाओ, चन्दमाउ, चन्दमत्तो, चन्दमाओ, चन्दमाउ, चन्दमाहि,
चन्दमाहि, चन्दमाहिन्तो, चन्दमाहिन्तो, चन्दमासुन्तो आदि
चन्दमा
छ०—चन्दमस्स चन्दमाण, चन्दमाणं
स०—चन्दमे, चन्दमम्मि चन्दमेसु, चन्दमेसुं
सं०—हे चन्दम, चन्दमा, चन्दमो हे चन्दमा

जसो (यशस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—जसो	जसा
बी०—जसं	जसे, जसा

इससे आगे चन्दमो के समान रूप होते हैं।

उसणो (उशनस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—उसणो	उसणा
बी०—उसणं	उसणे, उसणा

शेष रूप चन्दमो के समान होते हैं।

वर्तमानकृदन्त पुल्लिंग

हसन्तो, हसमाणो (हसत्, हसमाण) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—हसन्तो, हसमाण	हसन्ता, हसमाणा
बी०—हसन्तं, हसमाणं	हसन्ते, हसन्ता, हसमाणे, हसमाणा
त०—हसन्तेण, हसन्तेणं	हसन्तेहि-हिं-हिँ
हसमाणेण, हसमाणेणं	हसमाणेहि-हिं-हिँ
च०—हसन्तस्स, हसमाणस्स	हसन्ताण, हसमाणाण, हसन्ताणं, हसमाणाणं

प०—हसन्तत्तो, हसन्ताओ, हसन्ताउ०; हसमाणत्तो, हसमाणाओ, हसमाणाउ०	हसन्तत्तो, हसन्ताहि, हसन्ताहिन्तो, हसन्तासुन्तो, हसमाणत्तो, हसमाणाहि, हसमाणाहिन्तो, हसमाणासुन्तो
छ०—हसन्तस्स, हसमाणस्स	हसन्ताणं, हसन्ताण, हसमाणाण, हसमाणाणं
स०—हसन्ते, हसन्तम्मि, हसमाणे, हसमाणम्मि	हसन्तेसु, हसन्तेसुं, हसमाणेसु, हसमाणेसुं
सं०—हे हसन्तो, हे हसमाणो	हे हसन्ता, हे हसमाणा

वत्प्रत्ययान्त पुल्लिंग

भगवन्तो (भगवत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—भगवन्तो	भगवन्ता
बी०—भगवन्तं	भगवन्ते, भगवन्ता
त०—भगवन्तेण, भगवन्तेणं	भगवन्तेहि-हिं-हिँ
च०—भगवन्तस्स	भगवन्ताण, भगवन्ताणं
पं०—भगवन्तत्तो, भगवन्ताओ, भगवन्ताउ, भगवन्ताहि, भगवन्ताहिन्तो	भगवन्तत्तो, भगवन्ताओ, भगवन्ताहि, भगवन्ताहिन्तो, भगवन्तासुन्तो इत्यादि
छ०—भगवन्तस्स	भगवन्ताण, भगवन्ताणं
स०—भगवन्ते, भगवन्तम्मि	भगवन्तेसु, भगवन्तेसुं
सं०—हे भगवन्त, भगवन्तो	हे भगवन्ता

सोहिल्लो (शोभावत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—सोहिल्लो	सोहिल्ला

शेष रूप भगवन्तो शब्द के समान होते हैं।

इसी प्रकार धणवन्तो (धनवान्), पुण्णमन्तो (पुण्यवान्), भत्तिमन्तो (भक्तिवान्), सिरीमन्तो (श्रीमान्), जडालो (जटावान्), जोण्हालो (ज्योत्स्नावान्), दप्पुल्लो (दर्पवान्), सद्दालो (शब्दवान्), कव्वइत्तो (काव्यवान्), माणइत्तो (मानवान्) आदि शब्दों के रूप चलते हैं।

नेहालु (स्नेहवान्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	नेहालू	नेहालओ, नेहालवो, नेहालउ, नेहालुणो, नेहालू
बी०	नेहालुं	नेहालुणो, नेहालू

शेष रूप भाणु शब्द के समान होते हैं।

इसी प्रकार दयालु (दयावान्), ईसालु (ईर्ष्यावान्), लज्जालु (लज्जावान्) प्रभृति शब्दों के रूप बनते हैं।

तिरिच्छ, तिरिक्ख, तिरिअ, तिरिअंच (तिर्यञ्च्)

	एकवचन	बहुवचन
प०	तिरिच्छो, तिरिक्खो, तिरिओ तिरिअंचो	तिरिच्छा, तिरिक्खा, तिरिआ, तिरिअंचा,
बी०	तिरिच्छं, तिरिक्खं, तिरिअं, तिरिअंचं	तिरिच्छे, तिरिच्छा, तिरिक्खे, तिरिक्खा, तिरिए, तिरिआ, तिरिअंचे, तिरिअंचा

इससे आगे सभी रूप देव शब्द के समान होते हैं।

भिसओ (भिषज्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	भिसओ	भिसआ

शेष शब्द देव के समान होते हैं।

सरओ (शरद्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	सरओ	सरआ

आगे के सभी रूप देवशब्द के समान होते हैं।

हलन्त स्त्रीलिंग शब्द

कम्मा (कर्मन्)

	एकवचन	बहुवचन
प०	कम्मा	कम्माओ, कम्माउ, कम्मा
बी०	कम्मं	कम्माओ, कम्माउ, कम्मा

त०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए	कम्माहि-हिं-हिँ
च०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए	कम्माण, कम्माणं
पं०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए, कम्मत्तो, कम्माओ, कम्माउ, कम्माहिन्तो	कम्मत्तो, कम्माओ, कम्माउ, कम्माहिन्तो, कम्मासुन्तो
छ०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए	कम्माण, कम्माणं
स०—कम्माअ, कम्माइ, कम्माए	कम्मासु, कम्मासुं
सं०—हे कम्मा	हे कम्माओ, कम्माउ, कम्मा

महिमा (महिमन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—महिमा	महिमाओ, महिमाउ, महिमा
बी०—महिमं	महिमाओ, महिमाउ, महिमा

अवशिष्ट रूप कम्मा के समान होते हैं।

गरिमा (गरिमन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—गरिमा	गरिमाओ, गरिमाउ, गरिमा
बी०—गरिमं	गरिमाओ, गरिमाउ, गरिमा

अवशिष्ट रूप कम्मा के समान होते हैं।

अच्चि (अर्चिस्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अच्ची	अच्चीओ, अच्चीउ, अच्ची
बी०—अच्चिं	अच्चीओ, अच्चीउ, अच्ची
त०—अच्चीअ, अच्चीआ, अच्चीइ, अच्चीए	अच्चीहि, अच्चीहिं, अच्चीहिँ
च०—अच्चीअ, अच्चीआ, अच्चीइ, अच्चीए	अच्चीण, अच्चीणं

पं०—अचीअ, अचीआ, अचीइ, अचीए, अच्चित्तो, अचीओ, अचीउ, अचीहिन्तो	अच्चित्तो, अचीओ, अचीउ, अचीहिन्तो, अचीसुन्तो
छ०—अचीअ, अचीआ, अचीइ, अचीए	अचीण, अचीणं
स०—अचीअ, अचीआ, अचीइ, अचीए	अचीसु, अचीसुं
सं०—हे अचि, अची	हे अचीओ, अचीउ, अची

वर्तमानकृदन्त स्त्रीलिंग

हसई, हसन्ती, हसमाणी (हसन्ती)

एकवचन	बहुवचन
प०—हसई, हसईआ, हसन्ती, हसन्तीआ, हसमाणी, हसमाणीआ	हसईआ, हसईउ, हसईओ, हसई, हसन्तीआ, हसन्तीउ, हसन्तीओ, हसन्ती, हसमाणीआ, हसमाणीउ, हसमाणीओ, हसमाणी
बी०—हसइं; हसन्तिं; हसमाणिं	हसईआ, हसईउ, हसईओ, हसई; हसन्तीआ, हसन्तीउ, हसन्तीओ, हसन्ती; हसमाणीआ, हसमाणीउ, हसमाणीओ, हसमाणी
त०—हसईअ, हसईआ, हसईइ, हसईए; हसन्तीअ, हसन्तीआ, हसन्तीइ, हसन्तीए; हसमाणीअ, हसमाणीआ, हसमाणीइ, हसमाणीए	हसईहि-हिं-हिँ; हसन्तीहि-हिं-हिँ; हसमाणीहि-हिं-हिँ
च०—हसईअ, हसईआ, हसईइ, हसइए; हसन्तीअ, हसन्तीआ, हसन्तीइ, हसन्तीए; हसमाणीअ, हसमाणिआ, हसमाणीइ, हसमाणीए	हसईण, हसईणं, हसन्तीण, हसन्तीणं, हसमाणीण, हसमाणीणं

	एकवचन	बहुवचन
प०—	हसईअ, हसईआ, हसईइ, हसईए, हसइत्तो, हसईओ, हसईउ, हसईहिन्तो, हसइत्तो, हसईओ, हसईउ, हसईहिन्तो, हसन्तीअ, हसन्तीआ, हसन्तीइ, हसन्तीए, हसन्तित्तो, हसन्तीओ, हसन्तीउ, हसन्तीहिन्तो; हसमाणीअ, हसमाणीआ हसमाणीइ, हसमाणीए, हसमाणित्तो, हसमाणिओ, हसमाणिउ, हसमाणीहिन्तो	हसईसुन्तो; हसन्तित्तो, हसन्तीओ, हसन्तीउ, हसन्तीहिन्तो, हसन्तीसुन्तो; हसमाणित्तो, हसमाणीओ, हसमाणीउ, हसमाणीहिन्तो, हसमाणीसुन्तो
छ०—	हसईअ, हसईआ, हसईइ, हसईए; हसन्तीअ, हसन्तीआ, हसन्तीइ, हसन्तीए, हसमाणीअ, हसमाणीआ, हसमाणीइ, हसमाणीए	हसईण, हसईणं, हसन्तीण, हसन्तीणं; हसमाणीण, हसमाणीणं,
स०—	हसईअ, हसईआ, हसईइ, हसईए; हसन्तीअ, हसन्तीआ, हसन्तीइ, हसन्तीए; हसमाणीअ, हसमाणिआ, हसमाणीइ, हसमाणीए	हसईसु, हसईसुं, हसन्तीसु, हसन्तीसुं; हसमाणीसु, हसमाणीसु, हसमाणीसुं
सं०—	हे हसइ; हे हसन्ति; हे हसमाणि	हे हसईआ, हसईउ, हसइओ, हसइ; हे हसन्तीआ, हसन्तीउ, हसन्तीओ, हसन्ती, हे हसमाणिआ, हसमाणीउ, हसमाणीओ, हसमाणी

भगवई (भगवती)

	एकवचन	बहुवचन
प०—	भगवई, भगवईआ	भगवईआ, भगवईउ, भगवईओ, भगवई

शेष रूप लच्छी के समान होते हैं।

सरिआ (सरित्)

	एकवचन	बहुवचन
प०—	सरिआ	सरिआओ, सरिआउ, सरिआ

शेष शब्दरूप माला के समान होते हैं।

तडिआ, तडि (तडित्)

एकवचन	बहुवचन
प०—तडिआ	तडिआओ, तडिआउ, तडिआ

'तडिआ' शब्द के शेष रूप माला के समान होते हैं।

तडि

एकवचन	बहुवचन
प०—तडी	तडीओ, तडीउ, तडी
बी०—तडिं	तडीओ, तडीउ, तडी
त०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए	तडीहि-हिं-हिँ
च०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए	तडीण, तडीणं
पं०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए	तडीओ, तडीउ, तडीहिन्तो, तडीसुन्तो
छ०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए	तडीण, तडीणं
स०—तडीअ, तडीआ, तडीइ, तडीए	तडीसु तडीसुं
सं०—हे तडि, तडी	तडीओ, तडीउ तडी

पाडिवआ, पडिवआ (प्रतिपद्)

एकवचन	बहुवचन
प०—पाडिवआ	पाडिवआओ पाडिवआउ, पाडिवआ
प०—पडिवआ	पडिवआओ पडिवआउ, पडिवआ

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं।

संपया (संपद्)

एकवचन	बहुवचन
प०—संपया	संपयाओ, संपयाउ, संपया

शेष रूप कम्मा के समान हैं

छुहा (क्षुध्)

एकवचन	बहुवचन
प०—छुहा	छुहाओ, छुहाउ, छुहा
बी०—छुहं	छुहाओ, छुहाउ, छुहा

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं।

कउहा (ककुभ्)

एकवचन	बहुवचन
प०—कउहा	कउहाओ, कउहाउ, कउहा

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं।

गिरा [गिर्]

एकवचन	बहुवचन
प०—गिरा	गिराओ, गिराउ, गिरा

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं।

गिरा के समान धुरा (धुर्) और पुरा (पुर्) शब्द के रूप होते हैं।

दिसा [दिश्]

एकवचन	बहुवचन
प०—दिसा	दिसाओ, दिसाउ, दिसा

शेष रूप कम्मा के समान होते हैं।

अच्छरसा, अच्छरा (अप्सरस्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अच्छरसा	अच्छरसाओ, अच्छरसाउ, अच्छरसा,
बी०—अच्छरा	अच्छराओ, अच्छराउ, अच्छरा

अवशिष्ट रूप कम्मा के समान होते हैं।

तिरच्छी (तिरश्ची)

एकवचन	बहुवचन
प०—तिरच्छी, तिरच्छीआ	तिरच्छीआ, तिरच्छीओ, तिरच्छीउ, तिरच्छी
बी०—तिरञ्चि	तिरञ्चीआ, तिरञ्चीओ, तिरञ्चीउ, तिरञ्ची

अवशिष्ट रूप नई शब्द के समान होते हैं।

विज्जु (विद्युत्)

एकवचन	बहुवचन
प०—विज्जू	विज्जूओ, विज्जूउ, विज्जू
बी०—विज्जुं	विज्जूओ, विज्जूउ, विज्जू
त०—विज्जूअ, विज्जूआ, विज्जूइ, विज्जूए	विज्जूहि-हिं-हिँ
च०—विज्जूअ, विज्जूआ, विज्जूइ, विज्जूए	विज्जूण, विज्जूणं
पं०—विज्जूअ, विज्जूआ, विज्जूइ, विज्जूए; विज्जुत्तो, विज्जूओ, विज्जूउ, विज्जूहिन्तो	विज्जुत्तो, विज्जूओ, विज्जूउ, विज्जूहिन्तो, विज्जूसुन्तो
छ०—विज्जूअ, विज्जूआ, विज्जूइ, विज्जूए	विज्जूण, विज्जूणं
स०—विज्जूअ, विज्जूआ, विज्जूइ, विज्जूए	विज्जूसु, विज्जूसुं
सं०—हे विज्जू , विज्जु	हे विज्जूओ, विज्जूउ, विज्जू

व्यञ्जनान्त नपुंसकलिंगशब्द

दाम (दामन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—दामं	दामाइं, दामाइँ, दामाणि
बी०—दामं	दामाइं, दामाइँ, दामाणि
त०—दामेण, दामेणं	दामेहि, दामेहिं , दामेहिँ
च०—दामाय, दामस्स	दामाण, दामाणं
पं०—दामत्तो, दामाओ, दामाउ, दामाहिन्तो, दामा	दामत्तो, दामाओ, दामाउ, दामाहि, दामाहिं, दामाहिन्तो, दामासुन्तो
छ०—दामस्स	दामाण, दामाणं
स०—दामे, दामम्मि	दामेसु, दामेसुं
सं०—हे दाम	हे दामाइं, दामाइँ, दामाणि

नाम (नामन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—नामं	नामाइं, नामाइँ, नामाणि
बी०—नामं	नामाइं, नामाइँ, नामाणि

इससे आगे के रूप दाम के समान होते हैं।

पेम्म (प्रेमन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—पेम्मं	पेम्माइं, पेम्माइँ, पेम्माणि
बी०—पेम्मं	पेम्माइं, पेम्माइँ, पेम्माणि

शेष शब्दरूप दाम के समान होते हैं।

अह (अहन्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अहं	अहाइं, अहाइँ, अहाणि
बी०—अहं	अहाइं, अहाइँ, अहाणि

अवशेष रूप दाम के समान हैं।

सान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

सेयं (श्रेयस्)

एकवचन	बहुवचन
प०—सेयं	सेयाइं, सेयाइँ, सेयाणि
बी०—सेयं	सेयाइं सेयाइँ, सेयाणि

इससे आगे के रूप वन शब्द के समान होते हैं।

वयं [वयस्]

एकवचन	बहुवचन
प०—वयं	वयाइं, वयाइँ, वयाणि
बी०—वयं	वयाइं, वयाइँ, वयाणि

इससे आगे के रूप वन शब्द के समान होते हैं।

वर्तमान कृदन्त नपुंसक लिङ्ग—हसन्त, हसमाण

एकवचन	बहुवचन
प०—हसन्तं	हसन्ताइं, हसन्ताइँ, हसन्ताणि
हसमाणं	हसमाणाइं, हसमाणाइँ, हसमाणाणि
बी०—हसन्तं	हसन्ताइं, हसन्ताइँ, हसन्ताणि
हसमाणं	हसमाणाइं, हसमाणाइँ, हसमाणाणि

अवशिष्ट रूप वण शब्द के समान होते हैं।

इसी प्रकार वेवन्तं, वेवमाणं; धरन्तं, धरमाणं, सरन्तं, सरमाणं; महन्तं, महमाणं आदि शब्दों के रूप भी होते हैं।

वत्प्रत्ययान्त नपुंसकलिङ्ग

भगवन्तं (भगवत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—भगवन्तं	भगवन्ताइँ, भगवन्ताइं, भगवन्ताणि

शेष रूप वण के समान होते हैं।

आउसो, आउ (आउष्)

एकवचन	बहुवचन
प०—आउसं	आउसाइं, आउसाइँ, आउसाणि
बी०—आउसं	आउसाइं, आउसाइँ, आउसाणि

शेष रूप वण शब्द के समान होते हैं।

आउ

एकवचन	बहुवचन
प०—आउं	आऊइं, आऊइँ, आऊणि
बी०—आउं	आऊइं, आऊइँ, आऊणि
त०—आउणा	आऊहि-हिं हिँ
च०—आउणो, आउस्स	आऊण, आऊणं
पं०—आउणो, आउत्तो, आऊओ, आऊउ, आऊहिन्तो	आउत्तो, आऊओ, आऊउ, आऊहिन्तो, आऊसुन्तो

छ०—आउणो, आउस्स	आऊण, आऊणं
स०—आउम्मि	आऊसु, आऊसुं
सं—हे आउ	हे आऊइं, आऊइँ, आऊणि

सर्वनाम शब्द

सव्व (सर्व)

एकवचन	बहुवचन
प०—सव्वो	सव्वे
बी०—सव्वं	सव्वे, सव्वा
त०—सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहि-हिं-हिँ
च०—सव्वाय, सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
प०—सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वा	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो, सव्वेहिन्तो, सव्वेसुन्तो
छ०—सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
स०—सव्वहिं, सव्वम्मि, सव्वस्सिं	सव्वेसु, सव्वेसुं
सं०—हे सव्व, हे सव्वो	हे सव्वे

सुव (स्व)

एकवचन	बहुवचन
प०—सुवो	सुवे
बी०—सुवं	सुवे, सुवा
त०—सुवेण, सुवेणं	सुवेहि-हिं-हिँ
च०—सुवाय, सुवस्स	सुवेसिं, सुवाण, सुवाणं
प०—सुवत्तो, सुवाओ, सुवाउ, सुवाहि, सुवाहिन्तो, सुवा	सुवत्तो, सुवाओ, सुवाउ, सुवाहि, सुवाहिन्तो, सुवासुन्तो, सुवेहि, सुवेहिन्तो, सुवेसुन्तो
छ०—सुवस्स	सुवेसिं, सुवाण, सुवाणं
स०—सुवहिं, सुवम्मि, सुवस्सिं, सुवत्थ	सुवेसु, सुवेसुं
सं०—हे सुव, हे सुवो	हे सुवो

अन्न (अन्य)

	एकवचन	बहुवचन
प०	अन्नो	अन्ने
बी०	अन्नं	अन्ने, अन्ना
त०	अन्नेण, अन्नेणं	अन्नेहि-हिं-हिँ
च०	अन्नाय, अन्नस्स	अन्नेसिं, अन्नाण, अन्नाणं
पं०	अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाउ, अन्नाहि, अन्नाहिन्तो, अन्ना	अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाउ, अन्नाहि, अन्नाहिन्तो, अन्नेहिन्तो, अन्नासुन्तो, अन्नेसुन्तो
छ०	अन्नस्स	अन्नेसिं, अन्नाण, अन्नाणं
स०	अन्नहिं, अन्नम्मि, अन्नासिं, अन्नत्थ	अन्नेसु, अन्नेसुं
सं०	हे अन्न, हे अन्नो	हे अन्ने

पुव्व, पुरिम (पूर्व)

	एकवचन	बहुवचन
प०	पुव्वो पुरिमो	पुव्वे पुरिमे
बी०	पुव्वं पुरिमं	पुव्वे, पुव्वा पुरिमे, पुरिमा
त०	पुव्वेण, पुव्वेणं पुरिमेण, पुरिमेणं	पुव्वेहि-हिं-हिँ पुरिमेहि-हिं-हिँ
च०	पुव्वाय, पुव्वस्स पुरिमाय, पुरिमस्स	पुव्वेसिं, पुव्वाण, पुव्वाणं पुरिमेसिं, पुरिमाण, पुरिमाणं
पं०	पुव्वत्तो, पुव्वाओ, पुव्वाउ, पुव्वाहि, पुव्वा पुरिमत्तो, पुरिमाओ, पुरिमाउ, पुरिमाहि, पुरिमाहिन्तो, पुरिमा	पुव्वत्तो, पुव्वाओ, पुव्वाउ, पुव्वाहि, पुव्वाहिन्तो, पुव्वासुन्तो, पुव्वेहिन्तो, पुव्वेसुन्तो पुरिमत्तो, पुरिमाओ, पुरिमाउ, पुरिमाहि, पुरिमाहिन्तो, पुरिमासुन्तो, पुरिमा

छ०—पुव्वस्स; पुरिमस्स	पुव्वेसिं, पुव्वाण, पुव्वाणं पुरिमेसिं, पुरिमाण, पुरिमाणं
स०—पुव्वेहि, पुव्वम्मि, पुव्वस्सिं, पुव्वत्थ पुरिमहिं, पुरिमम्मि, पुरिमस्सि, पुरिमत्थ	पुव्वेसु, पुव्वेसुं, पुरिमेसु, पुरिमेसुं
सं०—हे पुव्वो, हे पुव्व	हे पुव्वे
" हे पुरिम, हे पुरिमो	हे पुरिमे

वीस (विश्व), उह, उभ (उभ), अवह, उवह, उभय (उभय), अण्ण, अन्न (अन्य), अण्णयर (अन्यतर), इअर (इतर), कयर, (कतर), कइम (कतम), णेम, नेम (नेम), सम, सिम, अवर (अपर), दाहिण, दक्खिण (दक्षिण), उत्तर, अवर, अहर (अधर), स और अंतर शब्दों के 'रूप' सव्व के समान होते हैं।

पुल्लिंग ण, त (तत्)

एकवचन	बहुवचन
प०—सो, ण	ते, णे
बी०—तं, णं	ते, ता, णे, णा
त०—तिणा, तेण, तेणं, णिणा, णेण, णेणं	तेहि-हिं-हिँ; णेहि-हिं-हिँ
च०—तास, तस्स, से	तास, तेसिं, सिं, ताण, ताणं
पं०—तो, तम्हा, तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो, ता	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो, तासुन्तो, तेहि, तेहिसुन्तो, तेहिन्तो
छ०—तास, तस्स, से	तास, तेसिं, सिं, ताण, ताणं
स०—ताहे, ताला, तइआ, तहिं तम्मि, तस्सि, तत्थ	तेसु, तेसुं

ज (यद्)

एकवचन	बहुवचन
प०—जो	जे
बी०—जं	जे, जा
त०—जिणा, जेण, जेणं	जेहि-हिं-हिँ

च०—जास, जस्स	जं, जाण, जाणं
पं०—जम्हा, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जा	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जासुन्तो, जेहि, जेहिन्तो, जेसुन्तो
छ०—जास, जस्स	जेसिं, जाण, जाणं
स०—जाहे, जाला, जइआ, जहिं, जम्मि, जस्सि, जत्थ	जेसु, जेसुं

क (किम्)

एकवचन	बहुवचन
प०—को	के
बी०—कं	के, का
त०—किणा, केण, केणं	केहि-हिं-हिँ
च०—कास, कस्स	कास, केसिं, काण, काणं
पं०—किणो, कीस, कम्हा, कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, का	कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, कासुन्तो, केहि, केहिन्तो, केसुन्तो
छ०—कास, कस्स	कास, केसिं, काण, काणं
स०—काहे, काला, कइआ, कहिं, कम्मि, कस्सि, कत्थ	केसु, केसुं

एत, एअ (एतद्)

एकवचन	बहुवचन
प०—एसो, एस, इणं, इणमो	एते, एए
बी०—एतं, एअं	एते, एता, एए, एआ
त०—एतेणा, एतेण, एतेणं; एइणा, एएण, एएणं	एतेहि-हिं-हिँ एएहि-हिं-हिँ
च०—से, एतस्स, एअस्स	सिं, एतेसिं, एताण, एताणं, एएसिं, एआणं, एयाणं
पं०—एत्तो, एत्ताहे, एतत्तो, एताओ, एताउ, एताहि, एताहिन्तो, एता; एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एआहिन्तो, एआ	एतत्तो, एताओ, एताउ, एताहि, एताहिन्तो, एतासुन्तो, एतेहि, एतेहिन्तो, एतेसुन्तो, एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एआहिन्तो, एआसुन्तो

छ०—से, एअस्स, एतस्स | सिं, एतेसिं, एताण, एआणं, एएसिं, एआण, एआणं
स०—आयम्मि, इअम्मि, एअम्मि, एतस्सिं, एअम्मि, एअस्सिं, एत्थ | एतेसु, एतेसुं, एएसु, एएसुं

अमु (अदस्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अमू	अमुणो, अमणो, अमओ, अमउ, अमू
बी०—अमुं	अमू, अमुणो
त०—अमुणा	अमूहि-हिं-हिँ
च०—अमुणो, अमुस्स	अमूण, अमूणं
पं०—अमुणो, अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो, अमूसुन्तो
छ०—अमुणो, अमुस्स	अमूण, अमूणं
स०—अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि	अमूसु, अमूसुं

इम (इदम्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अयं, इमो	इमे
बी०—इणं, इमं, णं	इमे, इमा, णे, णा
त०—इमिणा, इमेण, इमेणं, णिणा, णेण, णेणं	इमेहि-हिं-हिँ; णेहि-हिं-हिँ; एहि-हिं-हिँ
च०—से, इमस्स, अस्स	सिं, इमेसिं, इमाण, इमाणं
पं०—इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिन्तो, इमा	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिन्तो, इमासुन्तो
छ०—से, इमस्स, अस्स	सिं, इमेसिं, इमाण, इमाणं
स०—अस्सि, इमम्मि, इमस्सिं, इह	इमेसु, इमेसुं, एसु, एसुं

स्त्रीलिङ्ग सर्वनाम शब्द

सव्वा (सर्वा)

एकवचन	बहुवचन
प०—सव्वा	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा
बी०—सव्वं	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा

त०—सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वाहि हिं हिँ
च०—सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
प०—सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए, सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिन्तो	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो
छ०—सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
स०—सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वासु, सव्वासुं
सं०—हे सव्वे, सव्वा	हे सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा

सुवा (स्वा)

एकवचन	बहुवचन
प०—सुवा	सुवाओ, सुवाउ, सुवा
बी०—सुवं	सुवाओ, सुवाउ, सुवा
त०—सुवाअ, सुवाइ, सुवाए	सुवाहि-हिं हिँ
च०—सुवाअ, सुवाइ, सुवाए	सुवेसिं, सुवाण, सुवाणं
प०—सुवाअ, सुवाइ, सुवाए, सुवत्तो, सुवाओ, सुवाउ, सुवाहिन्तो	सुवत्तो, सुवाओ, सुवाउ, सुवाहिन्तो, सुवासुन्तो,
छ०—सुवाअ, सुवाइ, सुवाए	सुवेसिं, सुवाणं, सुवाणं
स०—सुवाअ, सुवाइ सुवाए	सुवासु, सुवासुं
सं०—हे सुवे, सुवा	हे सुवाओ, सुवाउ, सुवा

अण्णा-अन्ना (अन्या)

एकवचन	बहुवचन
प०—अण्णा	अण्णाओ, अण्णाउ, अण्णा
बी०—अण्णं	अण्णाओ, अण्णाउ, अण्णा

शेष रूप सव्वा शब्द के समान होते हैं।

दाहिणा, दक्खिणा (दक्षिणा)

एकवचन	बहुवचन
प०—दाहिणा; दक्खिणा	दाहिणाओ, दाहिणाउ, दाहिणा दक्खिणाओ, दक्खिणाउ, दक्खिणा

बी०—दाहिणं,	दाहिणाओ, दाहिणाउ, दाहिणा
दक्खिणं	दक्खिणाओ, दक्खिणाउ, दक्खिणा

शेष रूप सव्वा शब्द के समान हैं।

सा (तद्)

एकवचन	बहुवचन
प०—सा, णा	तीओ, तीआ, तीउ, ती, ताओ, ताउ, ता
बी०—तं, णं	तीओ, तीआ, तीउ, ती, ताओ, ता
त०—तीअ, तीआ, तीइ, तीए, ताअ, ताइ, ताए णाअ, णाइ, णाए	तीहि हिं-हिँ, ताहि-हिं-हिँ, णाहि-हिं-हिँ
च०—तिस्सा, तीसे, तीअ, तीआ तीइ, तीइ, तास, से, ताअ ताइ, ताए	सिं, तेसिं, ताण, ताणं, तास
पं०—तीअ, ताआ, तीइ, तीए; त्तिो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, ताअ, ताइ, ताए, तो, तम्हा, त्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो	तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तिसुन्तो, तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो, तासुन्तो
छ०—तिस्सा, तीसे, तीअ, तीआ, तीइ, तीए, तास, से, ताअ, ताइ, ताए	सिं, तेसिं, ताण, ताणं, तास
स०—तीअ, तीआ, तीइ, तीए ताअ, ताइ, ताए	तीसु, तीसुं तासु, तासुं

जा (यद्)

एकवचन	बहुवचन
प०—जा	जीओ, जीआ, जीउ; जी, जाओ, जाउ, जा
बी०—जं	जीओ, जीआ, जीउ, जी, जाओ, जाउ, जा
त०—जीअ, जीआ, जीइ, जीए; जाअ, जाइ, जाए	जीहि, जीहिं, जीहिँ; जाहि-हिं-हिँ

च०—जिस्सा, जीसे, जीअ, जीआ, जीइ, जीए; जाअ, जाइ, जाए — जेसिं, जाण, जाणं

पं०—जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जित्तो, जीओ, जीउ, जीहिन्तो; जाअ, जाइ, जाए, जम्हा, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो — जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो, जासुन्तो

छ०—जिस्सा, जीसे, जीअ, जीए, जाअ, जाए — जेसिं, जाण, जाणं

स०—जीअ, जीए, जाअ, जाइ, जाए — जीसु, जीसुं, जासु, जासुं

का (किम्)

एकवचन	बहुवचन
प०—का	कीओ, काउ, की, काओ, काउ, का
बी०—कं	कीओ, काउ, की, काओ, काउ, का
त०—कीअ, कीए, काअ, काए	कीहि हिं हिँ, काहि-हिं हिँ
च०—किस्सा, कीसे, कीअ, कास, काए	केसिं, काण, काणं, कास
पं०—कीअ, कीए, कित्तो, कीओ, कीहिन्तो, काअ, कत्तो, काओ, काहिन्तो	कित्तो, कीओ, कीउ, कीहिन्तो, कीसुन्तो, कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो, कासुन्तो
छ०—किस्सा, कीसे, कीए, कास, काइ, काए	केसिं, काण, काणं
स०—कीअ, कीआ, कीइ, काअ, काइ, काए	कीसु, कीसुं; कासु, कासुं

एई, एआ (एतद्)

एकवचन	बहुवचन
प०—एसा, एस, इण, इणमो, एई, एईआ	एईआ, एई, एआओ, एआ
बी०—एइं, एअं	एईआ, एईओ, एआओ, एआउ
त०—एईअ, एईआ, एईइ, एईए, एआअ, एआए	एईहि हि-हिँ, एआहि-हिं-हिँ

च०—एईअ, एआअ, एईइ, एआए	एईण, एईणं; सिं, एआण, एआणं
पं०—एईअ, एईआ, एईइ, एइत्तो, एईहिन्तो, एआअ, एअत्तो, एआहिन्तो	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहिन्तो, एआसुन्तो
छ०—एईअ, एईआ, एईइ, एआअ, एआए	एईण, सिं, एआण, एआणं
स०—एईअ, एईआ, एआअ, एआइ	एईसु, एईसुं; एआसु, एआसुं

अमु (अदस्)

एकवचन	बहुवचन
प०—अमू	अमूओ, अमूउ, अमू
बी०—अमुं	अमूओ, अमूउ, अमू
त०—अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूहि-हिं हिँ
च०—अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूण, अमूणं
पं०—अमूअ, अमूइ, अमूए, अमुत्तो, अमूओ	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो, अमूसुन्तो
छ०—अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूण, अमूणं
स०—अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूसु, अमूसुं

इमी, इमा (इदम्)

एकवचन	बहुवचन
प०—इमी, इमीअ, इमिआ, इमा,	इमीआ, इमीओ, इमाओ, इमाउ, इमा
बी०—इमिं, इमं, इणं, णं	इमीआ, इमीओ, इमाओ, इमाउ, णाओ, णाउ
त०—इमीअ, इमीआ, इमाअ, इमाए, णाअ, णाये	इमीहि-हिं हिँ; इमाहि-हिं-हिँ, णाहि-हिं
च०—इमीअ, इमीइ, इमाअ, इमाइ, इमाए	इमीण, इमीणं, इमेसिं, इमाण, इमाणं
पं०—इमीअ, इमीआ, इमीए, इमित्तो, इमाओ, इमाअ, इमाइ, इमाउ, इमत्तो, इमाहिन्तो	इमित्तो, इमीहिन्तो, इमीसुन्तो; इमत्तो, इमाओ, इमाहिन्तो, इमासुन्तो

छ०—इमीअ, इमीइ, इमीए, इमाअ, इमाए — इमीण, इमीणं, इमेसिं, इमाण, इमाणं

स०—इमीअ, इमीआ, इमीए, इमाअ, इमाए — इमीसु, इमीसुं; इमासु, इमासुं

नपुंसकलिंग सर्वनाम शब्द

सव्व (सर्व)

एकवचन	बहुवचन
प०—सव्वं	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि
बी०—सव्वं	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि
त०—सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहि-हिं-हिँ
च०—सव्वाय, सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
पं० सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वा	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो, सव्वेहिन्तो सव्वेसुन्तो।
छ०—सव्वाय, सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
स०—सव्वहिं, सव्वसिं, सव्वम्मि सव्वत्थ,	सव्वेसु, सव्वेसुं,
हे सव्व	हे सव्वाइ, सव्वाइँ, सव्वाणि

सुव (स्व)

एकवचन	बहुवचन
प०—सुवं	सुवाइं, सुवाइँ, सुवाणि
बी०—सुवं	सुवाइं, सुवाइँ, सुवाणि

शेष रूप पुल्लिंग के समान होते हैं।

पुव्व, पुरिम (पूर्व)

एकवचन	बहुवचन
प०—पुव्वं	पुव्वाइं, पुव्वाइँ, पुव्वाणि
पुरिमं	पुरिमाइं, पुरिमाइँ, पुरिमाणि
बी०—पुव्वं	पुव्वाइं, पुव्वाइँ, पुव्वाणि
पुरिमं	पुरिमाइं, पुरिमाइँ, पुरिमाणि

शेष रूप पुल्लिंग के समान होते हैं।

त (तद्)

	एकवचन	बहुवचन
प०—	तं, णं	ताइं, ताइँ, ताणि, णाइं, णाइँ, णाणि
बी०—	तं, णं	ताइं, ताइँ, ताणि, णाइं, णाइँ, णाणि

शेष रूप पुल्लिग के समान होते हैं।

ज (यद्)

	एकवचन	बहुवचन
प०—	जं	जाइं, जाइँ, जाणि
बी०—	जं	जाइं, जाइँ, जाणि

शेष रूप पुल्लिग के समान होते हैं।

किं (किम्)

	एकवचन	बहुवचन
प०—	किं	काइं, काइँ, काणि
बी०—	किं	काइं, काइँ, काणि

शेष रूप पुल्लिग के समान होते हैं।

एअ (एतद्)

	एकवचन	बहुवचन
प०—	एअं, एस, इणं, इणमो	एआइं, एआइँ, एआणि
बी०—	एअं	एआइं, एआइँ, एआणि

शेष रूप पुल्लिग के समान होते हैं।

अमु (अदस्)

	एकवचन	बहुवचन
प०—	अमुं	अमूइं, अमूइँ, अमूणि
बी०—	अमुं	अमूइं, अमूइँ, अमूणि

शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।

इम (इदम्)

	एकवचन	बहुवचन
प०—	इदं, इणमो, इणं	इमाइं, इमाइँ, इमाणि
बी०—	इदं, इणमो, इणं	इमाइं, इमाइँ, इमाणि

शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होते हैं।

तीनों लिङ्गों में समान—युष्मद् शब्द

एकवचन	बहुवचन
प०—तुमं, तं, तुं, तुवं, तुह	भे, तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे, तुम्हे, तुज्झे, उम्हे
बी०—तं, तुं, तुवं, तुमं, तुह, तुमे, तुए	वो, तुज्झ, तुज्झे, तुम्हे, तुय्हे, तुम्हे, उय्हे, भे
त०—भे, दि, दे, ते, तइ, तुए, तुमं, तए, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ	भे, तुब्भेहिं, तुम्हेहिं, तुज्झेहिं, उज्झेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं
च०, छ०—तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, उब्भ, उम्ह, उज्झ, उय्ह	तु, वो, भे, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, तुब्भं, तुम्हं, तुज्झं, तुब्भाण, तुम्हाण, तुज्झाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण, उम्हाणं, तुब्भाणं, तुम्हाणं आदि
पं०—तइत्तो, तईओ, तईउ, तईहिन्तो, तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, तुवाहि, तुवाहिन्तो; तुव, तुमत्तो; तुहत्तो, तुहाओ, तुहाहि; तुब्भत्तो, तुब्भाहिन्तो; तुम्हत्तो, तुम्हाहिन्तो, तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुम्ह,, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ	तुब्भत्तो, तुब्भाहिन्तो, तुब्भासुन्तो; तुम्हत्तो, तुम्हाहिन्तो, तुम्हासुन्तो; तुम्हेहि; तुज्झत्तो, तुज्झाओ, तुज्झाहिन्तो, तुज्झासुन्तो; तुय्हत्तो, तुय्हाउ; उय्हत्तो, उय्हासुन्तो; उम्हत्तो, उम्हाओ, उम्हाहिन्तो, उम्हासुन्तो
स०—तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए तुम्मि, तुवम्मि, तुवंसि, तुवत्थ, तुमम्मि, तुमंसि, तुमत्थ, तुहम्मि, तुहंसि, तुहत्थ, तुब्भम्मि, तुब्भंसि, तुब्भत्थ, तुम्हम्मि, तुम्हंसि, तुम्हत्थ, तुज्झम्मि, तुज्झंसि, तुज्झत्थ	तुसु, तुसुं, तुवेसु, तुवेसुं, तुमेसु, तुमेसुं, तुहेसु, तुहेसुं, तुब्भेसु, तुब्भेसुं, तुम्हेसु, तुम्हेसुं, तुज्झसु, तुज्झेसुं, तुमसु, तुमसुं, तुम्हसु, तुम्हसुं, तुज्झासु, तुज्झासुं, तुम्हासु, तुम्हासुं

तीनों लिङ्गों में समान 'अस्मद्' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं, अहयं	अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, भे
बी०	णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं ममं, मिम, अहं	अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे
त०	मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए, जे	अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे
च०, छ०	मे, मइ, मम, मह, मज्झं, मज्झ, मम्हं, अम्ह, अम्हं	णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, ममाण, ममाणं, महाण, मज्झाणं, महाणं
पं०	मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो; ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिन्तो, ममा, महत्तो, महाओ, महाउ, महाहि, महाहिन्तो, महा, मज्झत्तो, मज्झाओ, मज्झाउ, मज्झाहि, मज्झाहिन्तो, मज्झा	ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिन्तो, ममासुन्तो, अम्हत्तो, अम्हाओ, अम्हाउ, अम्हाहि, अम्हाहिन्तो, अम्हासुन्तो, अम्हेहि, अम्हेहिन्तो, अम्हेसुन्तो
स०	मि, मइ, ममाइ, मए, मे, अम्हम्मि, अम्हस्सि, अम्हत्थ, ममम्मि, ममस्सि, ममत्थ; महम्मि, महस्सि, महत्थ; मज्झम्मि मज्झस्सि, मज्झत्थ	अम्हेसु अम्हेसुं, ममेसु, ममेसुं; महेसु, महेसुं; मज्झेसु, मज्झेसुं; ममसु, ममसुं; महसु, महसुं, मज्झसु, मज्झसुं

संख्यावाचक शब्द

संख्यावाचक शब्दों में अट्ठारस (अष्टादश) संख्यावाचक शब्द तक षष्ठी विभक्ति के बहुवचन में ण्ह और ण्हं प्रत्यय जुड़ते हैं।

पुँल्लिङ्ग इक्क, एक्क, एग, एअ (एक)

एकवचन	बहुवचन
प०—एगो, एओ, एक्को; एक्कल्लो	एगे, एए; एक्के; एक्कल्ले
वी०—एगं, एअं; एक्कं, एक्कल्लं	एगे, एगा, एए, एआ; एक्के, एक्का; एक्कल्ले, एक्कल्ला

शेष रूप सव्व शब्द के समान होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग एगा, एआ, एक्का, एक्कल्ला (एका)

एकवचन	बहुवचन
प०—एगा, एआ; एक्का, एक्कल्ला	एगाओ, एगाउ, एगा; एआओ, एआउ, एआ; एक्काओ एक्काउ, एक्का; एक्कल्लाओ, एक्कल्ला
वी०—एगं, एअं एक्कं, एक्कल्लं	एगाओ, एगाउ, एगा; एआओ, एआउ, एआ; एक्काओ, एक्काउ, एक्का, एक्कल्लाओ, एक्कल्ला

शेष रूप सव्वा शब्द के समान होते हैं।

नपुंसकलिङ्ग—एग, एअ, एक्क, एक्कल्ल (एक)

एकवचन	बहुवचन
प०—एगं	एगाइं, एगाइँ, एगाणि
एअं	एआइं, एआइँ, एआणि
एक्कं	एक्काइं, एक्काइँ, एक्काणि
एक्कल्लं	एक्कल्लाइं, एक्कल्लाइँ, एक्कल्लाणि
वी०—एगं	एगाइं, एगाइँ, एगाणि
एअं	एआइँ, एआइँ, एआणि
एक्कं	एक्काइं, एक्काइँ, एक्काणि
एक्कल्लं	एक्कल्लाइं एक्कल्लाइँ, एक्कल्लाणि
सं०—हे एग	हे एगाइँ, एगाइं, एगाणि
हे एअ	हे एआइं, एआइँ, एआणि
हे एक्क	हे एक्काइं, एक्काइँ, एक्काणि
हे एक्कल्ल	हे एक्कल्लाइं, एक्कल्लाइँ, एक्कल्लाणि

शेष रूप पुंल्लिङ्ग के समान होते हैं।

उभ, उह (उभ)

बहुवचन

प०—उभे

बी०—उभे, उभा

त०—उभेहि, उभेहिं, उभेहिँ

च०, छ०—उभण्ह, उभण्ह

पं०—उभत्तो उभाओ, उभाउ, उभाहि, उभाहिन्तो, उभासुन्तो, उभेहि।

स०—उभेसु, उभेसुं

दु, दो. वे (द्वि) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे

बी०—दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे

त०—दोहि-हिं-हिँ; वेहि-हिं-हिँ

च०, छ०—दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं; वेण्ह, वेण्हं, विण्ह, विण्हं।

पं०—दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहिन्तो, दोसुन्तो; वित्तो, वेओ, वेउ, वेहिन्तो, वेसुन्तो

स०—दोसु, दोसुं, वेसु, वेसुं

ति (त्रि) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—तिण्णि

बी०—तिण्णि

त०—तीहि, तीहिं, तीहिँ

च०, छ०—तीण्ह, तीण्हं

पं०—तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तीसुन्तो

सं०—तीसु, तीसुं

चउ (चतुर)—तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—चत्तारो, चउरो, चत्तारि

बी०—चत्तारो, चउरो, चत्तारि

त०—चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ

च० छ०—चउण्ह, चउण्हं

पं०—चउत्तो, चऊओ, चऊउ, चऊहिन्तो, चऊसुन्तो, चउओ, चउहिन्तो, चउसुन्तो

स० —चऊसु, चऊसुं, चउसु, चउसुं

पंच (पञ्चन्) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—पंच

बी०—पंच

त०—पंचहि-हिं-हिँ

च० छ०—पंचण्ह, पंचण्हं

पं०—पंचत्तो, पंचाओ, पंचाउ, पंचाहि, पंचाहिन्तो, पंचासुन्तो पचेहि

स०—पंचसु, पंचसुं

छ (षष्) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—छ

बी०—छ

त०—छहि, छहिं, छहिँ

च० छ०—छण्ह, छण्हं

पं०—छओ, छउ, छहिन्तो, छसुन्तो

स०—छसु, छसुं

सत्त (सप्तन्) तीनों लिङ्गों में

बहुवचन

प०—सत्त

बी०—सत्त

त०—सत्तहि हिं-हिँ

च० छ०—सत्तण्ह, सत्तण्हं

पं०—सत्तओ, सत्तउ, सत्तहिन्तो, सत्तसुन्तो

स०—सत्तसु, सत्तसुं

अट्ठ (अष्टन्) तीनों लिंगो मे

बहुवचन

प०—अट्ठ

बी०—अट्ठ

त०—अट्ठहि-हिं हिँ

च०छ०—अट्ठण्ह, अट्ठण्हं

पं०—अट्ठाओ, अट्ठाउ, अट्ठाहिन्तो, अट्ठासुन्तो

स०—अट्ठसु, अट्ठसुं

णव, नव (नवन्) तीनों लिंगों में

बहुवचन

प०—णव

बी०—णव

त०—णवहि हिं हिँ

च०छ०—णवण्ह, णवण्हं

पं०—णवाओ, णवाउ, णवाहिन्तो, णवासुन्तो

सं०—णवसु, णवसुं

दह, दस (दशन्) तीनों लिंगो मे

बहुवचन

प०—दह, दस

बी०—दह, दस

त०—दहहि हिं-हिँ, दसहि हिं-हिँ

च०छ०—दहण्ह, दहण्हं, दसण्ह, दसण्हं

पं०—दहाओ, दहाउ, दहाहिन्तो, दहासुन्तो, दसाओ, दसाउ, दसाहिन्तो, दसासुन्तो

स०—दहसु, दहसुं, दससु दससुं

तेरह (त्रयोदश) तीनों लिंगों में

बहुवचन

प०—तेरह

बी०—तेरह

त०—तेरहहि-हिं-हिँ
च०छ०—तेरहण्ह, तेरहण्हं
पं०—तेरहओ, तेरहउ, तेरहहिन्तो, तेरहसुन्तो
स०—तेरहसु, तेरहसुं

इसी प्रकार चउद्दह, पण्णरह, सोलह, छद्दह, सत्तरह और अट्ठारह शब्दों के रूप होते हैं।

कइ (कति) तीनों लिंगों में समान

बहुवचन

प०—कइ
बी०—कइ
त०—कईहि-हिं-हिँ
च०छ०—कइण्ह, कइण्हं
पं०—कइत्तो, कईओ, कईउ, कईहिन्तो, कईसुन्तो
स०—कईसु, कईसुं

वीसा (विंशति) तीनों लिंगों में

	एकवचन	बहुवचन
प०—	वीसा	वीसाओ, वीसाउ, वीसा
बी०—	वीसं	वीसाओ, वीसाउ, वीसा
त०—	वीसाअ, वीसाइ, वीसाए	वीसाहि-हिं हिँ
च०छ०—	वीसाअ, वीसाइ, वीसाए	वीसाण, वीसाणं,
पं०—	वीसाअ, वीसाइ, वीसाए, वीसत्तो, वीसाओ, वीसाउ, वीसाहिन्तो	वीसत्तो, वीसाओ, वीसाउ, वीसाहिन्तो, वीसासुन्तो
स०—	वीसाअ, वीसाइ, वीसाए	वीसासु, वीसासुं
सं०—	हे वीसा	हे वीसाओ, वीसाउ, वीसा

इसी प्रकार एगूणवीसा, एगवीसा, दुवीसा, तेवीसा, चउवीसा, पण्णवीसा, छव्वीसा, सत्तवीसा, अट्ठावीसा, एगूणतीसा, तीसा, एगतीसा, दुतीसा, दोतीसा, तेतीसा, चउतीसा, पण्णतीसा, छत्तीसा, सत्ततीसा, अडतीसा, एगूणचत्तालीसा, चत्तालीसा, एगचत्तालीसा, बायाला, तेआलीसा, चउआलीसा, पण्णचत्तालीसा, छचत्तालीसा, सत्तचत्तालीसा, अडआलीसा, एगूणपन्ना, पन्नासा, एगावन्ना, दोवन्ना, तेवन्ना, चउवन्ना, पणवन्ना, छप्पन्ना, सत्तावन्ना, अट्ठावण्णा एवं अडवन्ना शब्दों के रूप होते हैं।

सट्ठि (षष्टि) तीनों लिंगों में

एकवचन	बहुवचन
प०—सट्ठी	सट्ठीओ, सट्ठीउ, सट्ठी
बी०—सट्ठि	सट्ठीओ, सट्ठीउ, सट्ठी
त०—सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ, सट्ठीए	सट्ठीहि हिं हिँ
च०छ०—सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ, सट्ठीए	सट्ठीण, सट्ठीणं
पं०—सट्ठित्तो, सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ, सट्ठीए	सट्ठित्तो, सट्ठीओ, सट्ठीउ, सट्ठीहिन्तो, सट्ठीसुन्तो
स०—सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ, सट्ठीए	सट्ठीसु, सट्ठीसुं
सं०—हे हे सट्ठि, सट्ठी	हे सट्ठीओ, सट्ठीउ, सट्ठी

इसी प्रकार एगसट्ठि, दोसट्ठि, तेसट्ठि, चउरट्ठि, पणसट्ठि, छसट्ठि, सत्तसट्ठि, अडसट्ठि, एगूणसत्तरि, सत्तरि, सयरी, एगसत्तरि, दोसत्तरि, तेवत्तरि, तेवसत्तरि, चउसत्तरि, चउसयरि, पणसत्तरि, छस्सयरि, सत्तसयरि, अडसयरि, एगूणासीइ, असीइ, एगासीइ, दोसीइ, तेसीइ, चउरासीइ, पणसीइ, छासीइ, सत्तासीइ, सगसीइ, अठासीइ, एगूणउइ, णवइ एगणउइ, दोणवइ, तेणवइ, चउणवइ, पचणवइ, छण्णवइ, सत्ताणवइ, अट्ठाणवइ और नवणवइ शब्दों के रूप होते हैं।

नपुंसकलिंग सय (शत)

एकवचन	बहुवचन
प०—सयं	सयाइ, सयाइँ, सयाणि
बी०—सयं	सयाइं, सयाइँ, सयाणि
सं०—हे सय	हे सयाइं, सयाइँ, सयाणि

शेष शब्द अकारान्त पुंल्लिग शब्दों के समान होते हैं।

दुसय, तिसय, (त्रिशत), वेसयाइ-वेस (द्विशत), तिण्णि सयाइ-सणमें (त्रिशत), चत्तारिसयाइं-चारसें (चतुश्शत), सहस्स (सहस्र), दहसहस्स (दशसहस्र), अयुअ (अयुत), लक्ख (लक्ष), दहलक्ख (दशलक्ष), पयुअ (प्रयुत), कोडि (कोटि), कोडाकोडि (कोटाकोटि) आदि शब्दों के रूप भी इन्हीं शब्दों के समान होते हैं। सय आदि शब्दों के रूप केवल नपुंसकलिंग में होते हैं, अन्य लिंगों में नहीं।

सातवाँ अध्याय

अव्यय और निपात

ऐसे शब्द, जिनके रूप में कोई विकार—परिवर्तन उत्पन्न न हो और जो सदा एकसे—सभी विभक्ति, सभी वचन और सभी लिङ्गों में एक समान रहें, अव्यय कहलाते हैं।

अव्यय शब्द का शाब्दिक अर्थ है कि लिङ्ग, विभक्ति और वचन के अनुसार जिनके रूपों में व्यय—घटती-बढती न हो; वह अव्यय है।[1]

अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं—(१) उपसर्ग (२) क्रिया विशेषण (३) समुच्चयादि बोधक (Conjunctions), (४) मनोविकारसूचक (Interjections) और (५) अतिरिक्त अव्यय।

उपसर्ग (उवसग्ग)

जो अव्यय क्रिया के पूर्व आते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। उपसर्ग लगाने से क्रिया के अर्थ में परिवर्तन या वैशिष्ट्य आ जाता है। उपसर्ग की स्थिति तीन प्रकार की होती है।

(१) कोई उपसर्ग धातु के मुख्यार्थ को बाधकर नवीन अर्थ का बोध कराता है; (२) कोई धात्वर्थ का ही अनुवर्तन करता है और (३) कोई विशेषण होकर उसी धात्वर्थ को और भी स्पष्ट कर देता है।[2] यथा—हरइ—ले जाता है; अवहरइ (अपहरति)—चुराता है, अणुहरइ (अनुहरति)—नकल करता है, परिहरइ (परिहरति)—छोड़ता है, आहरइ (आहरति)—लाता है, पहरइ (प्रहरति)—मारता है, विहरइ (विहरति)—विहार करता है, उवहरइ (उपहरति)—उपहार देता है[3], आदि।

---

१. स्वरादिनिपातमव्ययम्—स्वरादि और निपात की अव्यय संज्ञा है।—१-१-३७ पा०
सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥—सि० कौ० अव्यय प्रकरण

२. धात्वर्थं बाधते कश्चित्कश्चित्तमनुवर्तते।
विशिनष्टि तमेवार्थमुपसर्गगतिस्त्रिधा॥

३. उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराऽऽहार-संहार-विहार-परिहारवत्॥—स्नातकसंस्कृतव्याकरणम् पृ० १२१

संस्कृत में २२ उपसर्ग हैं, पर प्राकृत में २० उपसर्ग ही मिलते हैं; निस् का अन्तर्भाव निर् में और दुस् का अन्तर्भाव दुर् में हो जाता है। प, परा, ओ-अ, व, सं, अणु, ओ-अव, ओ-नि, दु, अहि, वि, अहि, सु, उ, अइ, णि नि, पडि–पति, परि-पलि, इ पि-वि अवि, ऊ-ओ-उव और आ ये बीस उपसर्ग हैं। संस्कृत में भी निस् का प्रयोग निर् के अन्तर्गत और दुस् प्रयोग दुर् के अन्तर्गत पाया जाता है।

प < प्र—प्रकर्ष—अधिकता बतलाने के लिए—परूवेइ (प्ररूपयति), पभासेइ (प्रभाषते)

परा < परा—विपरीत अर्थ बतलाने के लिए—पराघाओ (पराघातः); पराजिणइ (पराजयते)

ओ, अव < अप—दूर अर्थ बतलाने के लिए—ओसरइ, अवसरइ (अपसरति) अवहरइ (अपहरति) दूर ले जाता है; ओसरिअं, अवसरिअं (अपसृतम्)

सं < सम्—अच्छी तरह—संखिवइ (संक्षिपति), संखित्तं (संक्षिप्तम्)।

अणु, अनु < अनु—पीछे या साथ—रामं अणुगमइ लक्खणो; अणुजाणइ (अनुजानाति), अनुमई (अनुमतिः)।

ओ, अव < अव-नीचे, दूर, अभाव—ओअरइ (अवतरति); ओआरो (अवतारः) अवमाणो (अवमानः); ओआसो, अवयासो (अवकाश)।

ओ, नि, नी < निर्—निषेध, बाहर, दूर—ओमल्लं, निम्मल्लं (निर्माल्यम्) निग्गओ (निर्गतः), नीसहो (निस्सहः), रामो तं णिराकरइ।

दु, दू < दुर्—कठिन, बुरा—दुन्नयो (दुर्नयः), दूहवो (दुर्भग.)।

अहि, अभि < अभि—ओर—अहिगमणं (अभिगमनम्)—किसी ओर जाना, अभिहणइ (अभिहन्ति), अहिप्पाओ (अभिप्राय.)।

वि < वि—अलग होना, बिना—विकुव्वइ (विकुर्वति), विणओ (विनयः), वेणइआ (वैनयिकाः)।

अहि, अधि < अधि—ऊपर—अहिरोहइ (अधिरोहति)—ऊपर चढ़ता है, अज्झायो (अध्यायः), अहीइ (अधीते)।

सु—सू < सु—अच्छा सहज—सुभरं (सुकरम्), सूहवो (सुभगः)।

उ < उत्—ऊपर, ऊँचा श्रेष्ठ—उग्गच्छइ (उद्गच्छति), उग्गओ (उद्गत.), उप्पत्तिआ (औत्पत्तिकी)।

अइ, अति < अति—बाहुल्य या उल्लंघन—अईओ (अतीतः), वइक्कंतो (व्यतिक्रान्त.), अतिसओ (अतिशय.), अच्चन्तं (अत्यन्तम्)।

णि, नि < नि—अन्दर, नीचे—दुट्ठे णियमइ (दुष्टान् नियमति)—दुष्टों को अधीन या नीचे करता है; णिवेसो (निवेशः), सन्निवेसो (सन्निवेशः) निविसइ (निविशते)।

पडि-पति परि < प्रति—ओर, उलटा—पडिआरो (प्रतिकारः) पडिमा (प्रतिमा), पतिट्ठा (प्रतिष्ठा), परिट्ठा (प्रतिष्ठा)।

परि, पलि < परि—चारों ओर—सुज्जो पुहवीं परिगमइ—सूर्य पृथ्वी के चारों घूमता है। परिवुडो (परिवृत्तः), पलिहो (परिघः)।

इ, पि, वि, अवि < अपि—भी, निकट—देवदत्तो वि णागओ—देवदत्त भी नहीं आया। किमवि (किमपि), कोइ, कोवि (कोऽपि)।

ऊ, ओ उव < उप—निकट, उवासणा (उपासना)—निकट बैठना, प्रार्थना, ऊज्झायो, ओज्झायो, उवज्झायो (उपाध्याय),

आ < आङ्—तक—दिलीवो आसमुद्दं पुहवीए पइ आसि—दिलीप समुद्रपर्यन्त पृथ्वी का राजा था, आवासो (आवास), आयन्तो (आचान्त)।

क्रियाविशेषण

क्रियाविशेषण अव्यय प्राकृत में संस्कृत के समान कई प्रकार के होते हैं। क्रियाविशेषणों की संख्या प्राकृत में संस्कृत से भी अधिक है। नीचे अकारादि क्रम से प्रमुख क्रियाविशेषणों की तालिका दी जाती है।

अइ < अति—अतिशय,
अइ < अयि—संभावना
अईव < अतीव—विशेष, अधिकता, बहुत
अओ < अत—इसलिए
अग्गओ < अग्रतः—आगे
अग्गे < अग्रे—पहले
अज्ज < अद्य—आज
अण (नञ्) < अन—निषेधार्थक
अण्णमण्णं (अन्योन्यम्) < अन्योन्यम्—आपस में
अण्णहा < अन्यथा—विपरीत
अणंतरं < अनन्तरम्—पश्चात्, बिना
अत्थं < अस्तम्—अदर्शन, अस्त-छिपना
अत्थि < अस्ति—सत्तासूचक, अस्तित्वसूचक
अत्थु < अस्तु—विधिसूचक, निषेधसूचक
अंतो < अन्तर—भीतर
अंतरं < अन्तरम्—अन्तर
अप्पणो < आत्मनः—अपना
अपरज्जु < अपरेद्युः—दूसरे दिन

अप्पेव < अप्येवम्—संशय

अभितो < अभितः—चारों ओर

अलाहि < अलंहि—निवारण, निषेध

अवरिं < उपरि—ऊपर

अहत्ता < अधस्तात्—नीचे

अहा < यथा—जिस प्रकार

आविं < आविः—प्रकट

इ < इ—पादपूर्त्ति के लिए

इक्कसरिअं < एकसृतम्—सम्प्रति

इच्चत्थो < इत्यर्थः—इसके निमित्त

इर < किल—निश्चय

इहं < ऋधक्—सत्य

इहरा < इतरथा—अन्यथा

ईसिं < ईषत्—थोड़ा

उत्तरओ < उत्तरतः—उत्तरसे

उत्तरसुवे < उत्तरश्वः—पश्चात्

उवरिं < उपरि—ऊपर

एअं < एतत्—यह

एक्कइआ < एकदा—एक समय

एक्कसरिअं < एकसृतम्—झटिति, सम्प्रति

एक्कसिअं, इक्कसिअं < एकदा—एक समय

एगयओ < एकैकतः—एक-एक

एगज्झं < ऐकध्यम्—एक प्रकार

एत्थं, एत्थ < अत्र—यहाँ

एवं < एवम्—इस तरह

कओ < कुतः—कहाँ से

कल्लं < कल्यम्—कल

कहि, कहिं < कुत्र—कहाँ

अभिक्खं < अभीक्ष्णम्—निरन्तर, बारम्बार

अलं < अलम्—बस, पर्याप्त

अवस्सं < अवश्यम्—अवश्य

असइं < असकृत्—अनेक बार

अहव, अहवा < अथवा—पक्षान्तर

अहे < अधः—नीचे

आहच्च < आहृत्य—बलात्कार

इओ < इतः—यहाँ से, वाक्यारम्भ में

इत्थत्तं < इत्थंत्वम्—इसप्रकार

इयाणि < इदानीम्—इस समय

इह < इह—यहाँ

इहयं < ऋधकक्—सत्य

इं < किम्—प्रश्न, गर्हा

ईसि < ईषत्—थोड़ा

उच्चअ < उच्चैः—ऊँचे

उप्पि < उपरि—ऊपर

उवरि < उपरि—ऊपर

एक्कइआ < एकदा—एक समय

एक्कया < ,, ,,

एक्कसि, इक्कसि < एकदा—एक समय

एगइया, एगया < एकदा—एक समय

एगंततो < एकान्तत—एक ओर

एतावता, एयावया < एतावता—इतना

एव < एव—ही

एवमेव < एवमेव—इस तरह

कत्थइ < कुत्रचित्—कहीं

कह, कहं < कथम्—कैसे

कालओ < कालतः—समय से

काहे < कहि—कब, किस समय

किणा, किण्णा, किणो < किन्तु—प्रश्न

केवच्चिरं, केवच्चिरेण < कियच्चिरम्, कियच्चिरेण—कितनी देर से

खलु, खु < खलु—निश्चय

जइ < यदि—जो

जत्थ < यत्र—जहाँ

जहेव < यथैव—जिस प्रकार से

जाव < यावत्—जबतक

जह-तहा < यथा-तथा—जैसे-तैसे

जेण < येन—जिससे

झगिति—सम्प्रति

ण < न—निषेधार्थक

णं < नं—वाक्यालंकार

णवर—परन्तु, केवल

णवरं < नवरम्—विशेषता

णूण, णूणं < नूनम्—निश्चय, तर्क

तं < तत्—वाक्यारंभ, इसलिए

तए < तदा—तब

तत्थ < तत्र—वहाँ

तह, तहा < तथा—उस तरह

तहि, तहिं < तत्र—वहाँ

तिरो < तिरः—छिपाना

तु < तु—किन्तु

दर < दर—आधा, थोड़ा, अल्प

दुट्ठु < दुष्टु—दुष्ट, खराब

धुवं < ध्रुवं—निश्चय

पच्चुअ < प्रत्युत—उलटा

पच्छा < पश्चात्—पीछे

परज्जु < परेद्युः—दूसरे दिन, कल

किंचि < किञ्चित्—अल्प, ईषत्, थोड़ा

किर, किल < किल—निश्चय, सचमुच

केवलं < केवलम्—सिर्फ

चिअ, चेअ < चैव—और भी

जओ < यतः—क्योंकि

जह, जहा < यथा—जैसे

जं < यत्—जो, क्योंकि

जह, जहा < यथा-यथा—जैसे-जैसे

जाव < यावत्—जबतक

जे < ये—पादपूरक

झत्ति < झटिति—जल्दी

णइ—अवधारण

णमो < नमः—नमस्कार

णवरि—अनन्तर

णाणा < नाना—अनेक

णो < नो—निषेध

तंजहा < तद्यथा—उदाहरणार्थ, जैसे

तओ, तदो, तत्तो < ततः—पुनः इसके पश्चात्

तप्पभिइं < तत्प्रभृति—इसको आदि कर

तहेव < तथैव—उसी तरह

तिरियं < तिर्यक्—बांका या तिरछा

तीअं < अतीतम्—अतीत

थू < थूत्—तिरस्कार

दिवारत्तं < दिवारात्रम्—रात-दिन

दुहओ, दुहा < द्विधा—दो प्रकार

णिच्चं, निच्चं < नित्यम्—नित्य

पगे < प्रगे—प्रातःकाल में

पडिरूवं < प्रतिरूपम्—समान

परं < परम्—परन्तु

समुच्चयबोधक अव्यय

जो अव्यय एक वाक्य को दूसरे वाक्य में मिलाता है, उसे समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। इसके सात भेद हैं।

(१) संयोजक—य, अह, अहो, (अध), उद, उ (तु), किंच आदि।
(२) वियोजक—वा, किंवा, तु, ऊ, किंतु आदि।
(३) संकेतार्थ—जइ, चेअ, णोचेअ, (नोचेत्), जइवि, तहावि, जदि, इत्यादि।
(४) कारणवाचक—हि, तअ, तेण इत्यादि।
(५) प्रश्नवाचक—अहो, उद, किं, किमुत, तणु, णु, किन्तु, इत्यादि।
(६) कालवाचक—जाव, ताव, जदा, तदा, कदा इत्यादि।
(७) विधि अथवा निषेधार्थक—अङ्ग, अह, इं, आम, अद्धा, इत्यादि।

अह कार्यारम्भ और 'इति' कार्यान्त का सूचक है। 'य' शब्द और अर्थ का सूचक है। जहाँ हिन्दी में 'और' दो जोड़े हुए शब्दों के बीच में आता है, वहाँ प्राकृत में 'य' शब्द दोनों के उपरान्त आता है। यथा—रामो लक्खणो य सीआए सह गमीईअ।

मनोविकारसूचक अव्यय

(१) अव्वो—दुःख, संभाषण, अपराध, विस्मय, आनन्द, आदर, भय, खेद, विषाद और पश्चात्ताप अर्थों में 'अव्वो' का प्रयोग होता है। अव्वो तम्मेसि—खेद है कि तुम उदास हो। अव्वो तुज्झेरिसो माणो—प्रणययुक्त प्रणयी में तुम्हारा ऐसा मान?—इससे अपराध और आश्चर्य दोनों प्रकट होते हैं। आनन्द अर्थ में—अव्वो पिअस्स समओ—यह आनन्द की बात है कि प्रियतम के आने का समय है। आदर अर्थ में—अव्वो सो एइ—मेरा प्रियतम यह आ रहा है। भय अर्थ में—रूसणो अव्वो—भय है कि वह थोड़े अपराध पर ही रूठ जानेवाला है। खेद और विषाद अर्थ में—अव्वो कट्ठं—मैं खिन्न और विषण्ण हूँ। पश्चात्ताप अर्थ में—अव्वो किं एसो सहि यए वरिओ—सखि! मैं तो पछता रही हूँ कि मैंने इसे वरा क्यों?

(२) आ, हुम् क्रोध सूचक; आ कहमिदं संजाअं—अरे! यह कैसे हो गया—क्रोध दिखलाया गया है। हं ते कइवरा विवरीया बोहा—क्रोध सहित—खेद है कि कविवर विपरीत बोध वाले हैं।

(३) विषाद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय और सत्य अर्थों में 'हन्दि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। विषाद अर्थ में—हन्दि विदेसो—दुःख है कि हमारे लिए यह विदेश है। विकल्प अर्थ में—जीवइ हन्दि पिआ—पता नहीं मेरी प्रियतमा

जीती है अथवा नहीं। पश्चात्ताप अर्थ में—हन्दि किं पिआ मुक्का ? क्या हमने विरह दुःख का बिना विचार किये ही प्रियतमा को छोड़ दिया ? निश्चय अर्थ में—हन्दि मरणं—मरना निश्चित है। सत्य अर्थ में—हन्दि जमो गिम्हो—ग्रीष्म यमराज है, यह बात सच है। शोकसूचक अर्थ में—हा रोगेण पीडिताह्मि—रोग से पीड़ित हूँ।

(४) भय, वारण और विषाद अर्थ में 'वेव्वे' का प्रयोग होता है। यथा—समुट्ठीअम्मि भमरे वेव्वे त्ति भणेइ महिलउच्चिणिरी—सम्मुखोत्थिते भ्रमरे वेव्वे इति भणति महिलानुच्चेत्री।

(५) निश्चय, वितर्क, संभावना और विस्मय अर्थों में 'हुं' और 'खु' का प्रयोग किया जाता है। निश्चय अर्थ में—सो हु अन्नरओ—यह निश्चित है कि वह दूसरी स्त्री में रम गया है। वितर्क और संभावनों अर्थों में—तस्स हुं जुग्गा सि सा खु न तं—मैं ऐसा अनुमान करता हूँ और यह सभव भी है कि वह दूसरी स्त्री उसके योग्य है और तुम उसके प्रियतम के योग्य नहीं हो। विस्मय अर्थ में—एसो खु तुज्झ रमणो—आश्चर्य है कि यह तुम्हारा प्रिय है।

(६) गर्हा, आक्षेप, विस्मय और सूचन अर्थों में ऊ का प्रयोग किया जाता है। गर्हा अर्थ में—तुज्झ ऊ रमणो—तुम्हारा निन्दित रमण। आक्षेप अर्थ में—ऊ किं मए भणिअं—अरे मैंने क्या कह डाला। विस्मय अर्थ में—ऊ अच्छरा मह सही—अहो, मेरी सखी अप्सरा है। सूचन अर्थ में—ऊ इअ हसेइ लोओ—तुम्हारे प्रियतम को दोष देखकर सखियाँ हँसती हैं।

(७) आश्चर्य अर्थ में अम्मो अव्यय का प्रयोग होता है। यथा—स अम्मो पत्तो खु अप्पणो—वह प्रियतम अपने आप प्राप्त हो गया; आश्चर्य है।

(८) रतिकलह अर्थ में रे, अरे और हरे अव्यय का प्रयोग होता है। यथा—अरे मए समं मा करेसु उवहासं—रतिकाल में झगड़ा हो जाने पर नायिका कहती है—अरे मेरे साथ हँसी मत करो। अरे बहुवल्लह—अरे बहुतों के प्रिय।

(९) हद्धी अव्यय निर्वेद अर्थ में प्रयुक्त होता है। यथा—

हद्धी, इअ व्व चोरीहि उव्वहिअं।

(१०) अम्हो आश्चर्य अर्थ में प्रयुक्त होता है। यथा—अम्हो कहं भाइ—आश्चर्य कथं भाति।

अतिरिक्त अव्यय

निपात

तद्धितों और कृत् प्रत्ययों के संयोग से भी कुछ अव्यय बनते हैं। तथा इआणि, इआणिं (इदानीम्), इअदरा (इतरथा), एण्हि, एत्ताहे (इदानीम्) कहि (कुत्र), कुओ कुदो (कुतः), जत्थ (यत्र), जहा, जहा, जहि (यथा), सव्वाओ, (सर्वतः); सहासउत्तो (सहस्रकृत्वः), एकहा आदि अव्यय के समान ही प्रयुक्त होते हैं।

प्राकृत में निपात का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जो पद व्याकरण के नियमों के विपरीत सिद्ध होते हैं, वे निपातन से सिद्ध माने जाते हैं। जनभाषा होने से प्राकृत में ऐसे सहस्रों शब्द हैं, जिनकी व्युत्पत्तियाँ सिद्ध नहीं की जा सकती हैं। ऐसे शब्द निपातन से सिद्ध माने जाते हैं। जितने देशी शब्द हैं, वे प्रायः निपातन से सिद्ध माने गये हैं।

अ

अउज्झहरो—रहस्यभेदी
अकोप्पो—अपराधः
अक्कंतो—वृद्धः
अग्गहिओ—निरचितः, विप्रगृहीतः
अग्गिआयो—इन्द्रगोपः
अग्गुच्छं—प्रतीतम्
अंकिअं—आलिङ्गितम्
अच्छिवडणं—निमीलनम्
अच्छिविअच्छी—परस्पराकृष्टिः
अच्छिहरुल्लो—द्वेष्यः
अच्छुद्धसिरी—मनोरथाधिकफलप्राप्तिः
अजडो—जार
अजमो—ऋजुः
अट्टणो—आर्तज्ञ
अड्डुअणा—पुंश्चली
अणडो—जारः
अणरहू—नववधूः
अणहवणअं—भर्सितम्
अणुज्झिअओ—प्रबुद्धः, परिजागरित
अणुदियं—दिनमुखम्
अणुसूआ—आसन्नप्रसवा
अण्णं—आरोपितम्, खण्डितम्
अण्णइओ—सर्वांगतृप्त
अण्णासअं—आस्तृतम्
अत्तिहरी—दूती
अथक्कं—अकाण्डम्
अन्तरिज्जं—रशना, कटिसूत्रम्
अपंडिअं—अनष्टम्
अपिट्ठं—पुनरुक्तम्
अपुण्णं—आक्रान्तम्
अप्पुण्णं—पूर्णम्
अवुद्धसिरी—मनोरथाधिकफलप्राप्तिः
अमओ—असुरः
अम्मच्छं—असंबद्धम्
अम्हत्तो—प्रमृष्टः
अयुजरेयइ—अचिरयुवतिः

अरणी—सरणी
अलिल्लो—भ्रमरः
अवडाहिअं—उत्कृष्टम्
अवरिज्जं—अद्वैतम्
अवहिट्ठो—दर्पित.
अवाडिओ—वञ्चितः
अविहिओ—मत्तः
अस्संगिअं—आसक्तम्
अहिरोइअं—पूर्णम्
अहुमाअं—पूर्णम्
अलल्लवसहओ—धूर्त्तवृषभः
अवगलो—आक्रान्तः
अवडुहिअं—कूपादिनिपतितम्
अवसेण्णं—स्तुतम्
अवहोओ—विरह
अविणअवइ—जारः
अव्वा—अम्बा
अहिअलो—क्रोधः
अहिसिओ—ग्रहभीतः

आ

आआसत्तअं—हर्म्यपृष्ठम्
आकासिअं—पर्याप्तम्
आणंदवसो—प्रथमरजस्वलारक्तवस्त्रम्
आप्पणं—पिष्टम्
आरिट्ठो—यातः
आरोग्गरिअं—रत्तम्
आविअं—प्रोतम्
आवेवओ—व्यासक्तः, प्रवृद्धः
आहुडं—सीत्कारः
आलिआ—आली
आओ—आपः
आडविओ—चूर्णितः
आणुअं—आननम्
आरनालम्—अम्बुजम्
आरोइअं—मुकुलितम्, मुक्तम्, भ्रान्तम्, पुलकितम्
आरोड्ढो—प्रवृद्ध, गृहागतः
आविलिओ—कुपितः
आसंघो—आस्था
आहिद्धो—रुद्धः, गलित.

इ

इसओ—विस्तीर्णः

ई

ईढग्गिधूमो—तुहिनम्

उ

उओ—ऋजुः
उक्कंअं—प्रसृतम्
उओग्गिओ—सन्नद्ध.
उकज्जो—अनवस्थितः

उक्कंडिअ—आरोपितम्, खण्डितम्
उक्कंदं—विप्रलब्धम्
उक्कारिओ—विस्तीर्णः
उक्कारिअं—आरोपितम्, खण्डितम्
उक्कासं—उत्कृष्टम्
उक्कोसिअं—पुरस्कृतम्
उक्खणं—अवकीर्णम्
उग्गाहिअं—उत्क्षिप्तम्
उग्घुणम्—पूर्णम्
उच्चादिअं—मूषितम्
उच्चारिअं—पुरस्कृतम्
उच्चल्लो—अध्यासितः, दारितः
उच्चुगो—अनवस्थितः
उच्चुरणो—उच्छिष्टः
उच्छिरणं—उच्छिष्टम्
उच्छिल्लो—अवजीर्णः
उच्छूढो—आरूढः
उज्झणिअं—विक्रीतम्, निम्नीकृतम्
उज्झमाणं—पलायितम्
उज्झल्लिअं—प्रक्षिप्तम्, विक्षिप्तम्
उज्झलो—प्रबलः
उज्झसिअं—उत्कृष्टम्
उज्झिअं—शुष्कम्, निम्नीकृतम्
उडंवो—लिप्तः
उडाहिअं—उत्क्षिप्तम्
उडिअं—अन्विष्टम्
उड्डिओ—उत्क्षिप्तः
उत्ततो—अध्यासितः
उत्तुर्वो—दृप्तः
उदाहिअं—उत्क्षिप्तम्
उदूलिअं—अवनतम्
उद्धारिअं—रणद्धतम्, उत्खातम्
उद्धओ—शान्तः
उद्धणो—उद्धतः
उद्धरिअं—अर्दितम्
उद्धलो—पार्श्वद्वयाप्रवृतः
उप्पत्तो—गलितः, विरक्तः
उप्पल्लो—अध्यासितः
उम्मडो—उद्धृतः
उम्मरिअं—उन्मूलितम्
उम्मुहो—उद्धृतः
उय्यंकिअं—पुञ्जीकृतम्
उय्यलो—अध्यासितः
उरविअं—आरोपितम्, खण्डितम्
उरुमल्लो—प्रेरितः
उलुओसिअं—रोमाञ्चितम्
उलुहुलअं—अवितृप्तम्
उल्लिओ —उपसर्पितः
उल्लिकं—दुश्चेष्टितम्
उल्लुअं—दूरस्थितम्, रसम्
उल्लुहुडिअं—उन्नतम्
उल्लूढो—आरूढः
उल्लोको—त्रुटितः
उवउज्झो—उपकारी
उवडिअं—अवनतम्
उविद्धो—पतितः
उव्विग्गो—प्रलपितः
उव्विडअं—चकितम्, क्लान्तकम्
उव्विव्वओ—क्रुद्धः
उसलिअं—रोमाञ्चितम्

ऊ

ऊआ—यूका
ऊणंदिअं—आनन्दितम्
ऊसअं—उपधानीकृतम्
ऊसुंभिअं—रुद्धगल्रोदनम्
ऊगिअं—अलंकृतम्
ऊरिसंकिओ—रुद्धः
ऊसविअं—उद्भ्रान्तम्
ऊसुंभिअं—उपधानीकृतम्

ए

एक्कल्लो = प्रबलः
एलविलो = धनी, वृषः

ओ

ओओग्घिअं = आघ्रातम्
ओअड्डम् = विप्रलब्धम्
ओउल्लिअं = पुरस्कृतम्
ओज्जरो = भीरुः
ओंदुरो—उन्दुरुः
ओम्मल्लं—घनीभूतम्
ओवाअओ—आपातपः
ओसडिओ—आकीर्णः
ओसरिओ—आकीर्णः, अक्षिसंकोचात् संज्ञित.
ओसिअं—अपूर्वम्
ओहल्ली—अपसृतिः
ओहामिओ—अभिभूतः
ओअम्मओ = अभिभूतः
ओअल्लो = कम्प, अपचार.
ओच्छुंदिअं = अपहृतशरीरादिव्यथितम्
ओणअं—अवनतम्
ओप्पं—मृष्टम्
ओमंसो—अपसृतः
ओसट्टो—विकसितः
ओसण्णो—त्रुटितः
ओसाअणं—महीदानम्
ओसिरणं—व्युत्सर्जनम्
ओहरणं—आघ्रातम्

क

कउडं—ककुदम्
कक्खलो—कर्कशः
कडदरिअं—छिन्नम्, छिद्रता
कडिओ—प्रीणितम्
कणइल्लो—शुकः
कत्तं—कलत्रम्
कंदोट्टं—उत्पलम्
कक्खडो—कर्कशः
कज्जं—कार्यम्
कडप्पो—कलापः
कडिल्लं—आशीः, गहनम्, दौवारिक, कटिवस्त्रम्, निर्विवरः, विपक्षः
कणइ—लता
कथो—उपरतः, क्षीणः
कमणी—निःश्रेणी

कमढं—आस्यम्, कण्ठः
करमा—क्षीण
कलवू—अलाबुः
कव्वरिअं—आरोपितम्, खण्डितम्
कारिमं—कृत्रिमम्
किपाडो—स्खलितः
किरिकिरिआ—कर्णोपकर्णिका, कुतुकम्
कुच्छिउमई—गर्भवती
कुडुचीअं—सुरतम्
कुम्मणो—म्लानः
कोडिओ—पिशुनः
कोलीरं—कुरुविन्दम्
करमरी—हठहृता
करिल्लो—करीरः
कलेरं—कङ्कालम्
काअपिउआ—कोकिला
कालं—तमिस्रम्
किमिघरवसणं—कौशेयम्
किरो—किटः
कुडङ्गो—लतागृहम्
कुडूढं—कुतुकम्
कोज्जरिअं—आपूरितम्
कोडिल्लो—पिशुनः

ख

खंधमसी—स्कन्धयष्टिः
खुड्डुओ—क्षुल्लकः
खेड्डुं—खेलः
खंधलट्ठी—स्कन्धयष्टिः
खुरहखुडी—प्रणयकोपः

ग

गअं—आघूर्णितम्
गअसाउल्लो—विरक्तः
गंजोलो—समाकुलः
गत्तो—गतः
गल्लो—गण्डस्थलम्
गविअं—गवयतम्
गहिआ—प्राह्याः
गामणहं—ग्रामस्थानम्
गावी—गौः
गुज्झलिओ—संपट्टितः
गुम्मइओ—अपूरितः, स्खलितः, आमूलोच्चलितः, मूढः, विघटितः
गुम्मिओ—मूलाच्छिन्नः
गञ्जिलिओ—अङ्गस्पर्शनिमित्तहासः, अङ्गस्पर्शनिमित्तकपुलकः
गत्तडी—गायिका
गमिदो—अपूर्णः, मूढः, स्खलितः
गलद्धओ—प्रेरितः
गहरो—गृध्रः
गहिल्लो—ग्रहिलः
गामरेडो—ग्रामभक्षकः
गावो—गतः
गुमिलो—मूढः
गुलिअं—मथितम्

गोणा—गौः
गोदा—गोदावरी
गोला—गोदावरी
गोसो—प्रत्यूषः
गोणिक्को—गोसमूहः
गोरडितम्—वस्तम्
गोसण्णो—मूर्ख.

घ

घअंदं—मुकुरम्
घडं—घटीकृतम्
घडिआ—गोष्ठी
घाअणो—गायनम्
घुसिमं – घसृणम्
घडइअं—संकुचितम्
घडाघडी—गोष्ठी
घसणिअं—अन्विष्टम्
घुग्घुसुरअं—अशंकं फणितम्

च

चउक्कं—चतुष्पथम्
चचरिओ—चंचरीकः
चच्चिक्को—स्थासकः
चण्डिज्जो—पिशुनः, कोपः
चपेटा—कराघातः
चलणाओहो—चरणायुधम्
चिक्कं—स्तोकः, क्षुतम्
चित्तलं—रम्यम्
चिमिणं—रोमाञ्चितम्
चिलिचिलिआ—धारा
चक्कलं—वर्तुलम्
चम्बा—तलाहतिः
चण्डिक्को—कोपः
चंदोज्जं—कुमुदम्
चप्पलओ—बहुमिथ्यावादी
चल्लणकं—जघनांशुकम्
चिक्खअणो—सहनः
चित्तविअओ—परितोषितः
चिरिचिरिआ—धारा
चच्छाइल्लो—रूपवान्

छ

छट्टा—छटा
छिक्कं—स्पृष्टम्
छिच्छओ—जारः
छिण्णालो—जारः
छिलं—छिद्रम्
छेणो—स्तेनः
छंडिअं—छन्नम्
छिच्छई—पुंश्चली
छिछि—धिक्‌धिक्
छिण्णो—जारः
छूहिअं—पार्श्वपरावृतम्

ज

जअड्डो—घन:
जंघालुओ—द्रुत:
जडं—त्यक्तम्
जण्णहरो—नरराक्षस:
जंभणंभणो—स्वैरभाषी
जहणरोहो—ऊरु:
जुअणो—युवा
जोअडो—खद्योत:
जोइओ—खद्योत:
जोइ—विद्युत:
उज्झुरायिअं—निर्वासितम्

जंघामओ—द्रुत:
जच्छंदो—स्वच्छन्द:
जणउत्तो—ग्रामप्रधान:
जपिक्खिरमग्गिरओ—दृष्टार्थयाचनशील:
जरण्डो—वृद्ध:
जहणूसुअं—जघनांशुकम्
जूसओ—उत्क्षिप्त:
जोअणो—खद्योत:
जोइक्खो—दीप:
जोओ—चन्द्र:

झ

झडिओ—श्रान्त:
झपिअं—पर्यस्तम्

झंदिअं—प्रद्रुतम्

ठ

ठाणिज्जं—गौरवम्

ड

डंभिओ—डाम्भिक:
डेकुणो—मत्कुण:
डोसिणी—ज्योत्स्ना

डिडओ—जलान्त: पतित:
डेड्डुरो—दर्दुर:

ण

णन्दिणी—धेनु:
णाली—द्यूत
णिउको—तूष्णीक:
णिकज्जो—अनवस्थित:
णिक्खाचिओ—शान्त:
णिग्गठो—निर्गत:
णिज्जो—सुप्त:

णलिअं—निलयम्
णिअद्धणं—परिधानम्
णिउरं—छिन्नम्, जीर्णम्
णिकजो—निश्चय:
णिगमिअं—निर्वासितम्
णिच्चुड्डो—उद्धृत:
णिप्पणिओ—जलधौत:

णिप्फंसो—निस्त्रिंशः
णिम्मीसुओ—निःश्मश्रुकः
णिव्वहइ—उद्वहति
णिहुयो—सुप्तः
णिहेलणं—निलयम्
णिमिअं—आघ्रातम्
णिरासो—नृशंसः
णिसुद्धो—पातित.
णिहुअं—सुरतम्
णीसंको—वृषः

त

तच्छिल्लो—तत्परः
तणसोल्ली—तृणशून्यम्
तण्णाअं—आर्द्रम्
तत्तुरिअं—रञ्जितम्
तंबकुसुमं—कुरवकम्, कुरण्टकम्
तलारो—तलवरः
तल्लडं—तल्पम्
तेआलिसा—त्रिचत्वारिंशत्
तोमरिओ—शस्त्रमार्जनम्
तडकडिओ—अनवस्थितः
तणेसी—तृणराशि.
तत्तिल्लो—तत्परः
तंबकिमी—इन्द्रगोपः
तलं—तल्पम्
तल्लं—तल्पम्
तित्ति—तात्पर्यम्
तेवण्णा—त्रिपञ्चाशत्

थ

थिरणेसो—अस्थिरः
थेवो—स्तोकः
थोवो—स्तोकः
थेरोसणं—अम्बुजम्
थोक्को—स्तोकः

द

दड्ढाली—दवमार्ग
दुग्गं—दुःखम्
दुद्धोलनी—गौः
दुम्मइणी—कलहकारिणी
दूणो—द्विपः
दोग्गं—युग्मम्
दोंबुरो—तुंबुरिः
दोसारअणो—चन्द्रः
दरवल्लहो—कातरः
दुग्घोट्टो—द्विपः
दुदुमिअं—रसितम्
दुरिअं—द्रुतम्
दूसलो—दुर्भगः
दोग्घोट्टो—द्विपः
दोसणिजन्तो—चन्द्रः
दोसो—कोपः

ध

धणिआ—धन्या
धारावासो—दुर्दुरः
धुअरासो—भ्रमरः
धुत्तो—आक्रान्तः
धुअई—पुरस्कृतम्
धूमद्धअमहिसी—कृत्तिकाः
धूमरी—तुहिनम्
धोरणी—पङ्क्तिः

न

नंगओ—रुद्धः

प

पअरो—अर्धदरः
पअलाओ—फणी
पंसुलो—रुद्धः
पाङ्गरणं—प्रावरणम्
पच्छाणिओ—सन्मुखमागतः
पज्जत्तरं—दलितम्
पड्डिअं—असंस्कृतम्
पडिक्खरो—प्रतिकूलः
पडिरिग्गअं—भग्नम्
पडिसिद्धी—प्रतिस्पर्धा
पडिसोत्तो—प्रतिकूलः
पडिहत्थो—अपूर्वः
पड्डाविअं—समापितम्
पणिलिअं—हृतम्
पण्णवण्णा—पञ्चपञ्चाशत्
पण्णा—पञ्चाशत्
पंडरंगु—ग्रामेशः
पत्थरं—पादताडनम्
पद्धलं—पार्श्वद्वयावनतः
पम्मी—पाणिः
पह्वालो—केसरः
परभत्तो—भीरुः
परिअट्टविअं—परिच्छन्नम्
परिअड्डिअं—प्रकटितम् -
परिक्खाइअओ—परिक्षीणः
परिघिअं—उत्क्षिप्तम्
परिहाइओ—परिक्षीणः
परेओ—पिशाचः
परोट्टं—पर्यस्तम्
पलहिअओ—मूर्खः, उपलहृदयः
पल्हित्थं—पर्यस्तम्
पल्लोट्टजीहो—रहस्यभेदी
पविरंगं—विस्मृतम्
पविरंजवो—स्निग्धः
पसल्लिओ—प्रेरितः
पहट्टो—उद्धतः; अचिरदृष्टः
पाउरणं—प्रावरणम्, कवचम्
पाओ—फणी
पाडहुकः—प्रतिभूः
पाडिपिद्धी—प्रतिस्पर्धा
पासाणिओ—साक्षी
पासावो—गवाक्षः
पिउच्छा—पितृष्वसा, सखी
पिउसिआ—पितृष्वसा

पिढओ—आर्द्रः
पिप्पडिअं—यत्किंचित्पठितम्
पिव्वं—जलम्
पुणाली—पुंश्चली
पुरिल्लो—दैत्यः
पुव्वंगो—मुण्डितः
पेसणआली—दूती
पेक्किअं—वृषारटितम्
पिव्वुइअं—प्रशान्तम्
पिलुअं—क्षुतम्
पुआइ—उन्मत्तः, पिशाचः
पुप्फी—पितृष्वसा
पुलंघओ—भ्रमरः
पेज्जलिओ—संघटितः
पोरत्थो—मत्सरी

ब

बइल्लो—बलीवर्दः
बप्पोल्लो—मेलकः
बम्हालो—अपस्मारः
बहिओ—मथितः
बहुल्लिआ—ज्येष्ठभ्रातृवधूः
बाओ—बालः
बुलबुलो—बुद्बुदः
बंडिओ—बन्दी
बम्हहरं—अम्बुजम्
बलामोडी—बलात्कारः
बहुजाणो—चौरः, धूर्तः, जारः
बहुल्ली—क्रीडोचितशालभञ्जिका
बुड्डिरो—महिषः

भ

भक्को—भागिनेयः
भाइरो—भीरुः
भिगं—नीलम्, स्त्रीरत्नम्
भेज्जो—भीरुः
भट्टिओ—विष्णुः
भाउज्जा—भ्रातृजाया
भेज्जलो—भीरुः
भोइओ—मंडपः

म

मइमोहिणी—सुरा
मघोणो—मघवान्
मडप्फरो—गर्वः
मदोली—दूती
मरिओ—त्रुटितः, विस्तीर्णः
महल्लो—मुखरः
माउच्छा—मातृष्वसा, सखी
माणंसी—मायावी, मनस्वी
मइलपुत्ती—पुष्पवती
मंजरो—मार्जारः
मत्तवालो—मत्तः
मम्मक्को—गर्वः
महालयपक्खो—महालयपक्षः
माइंदो—माकन्दः
माउसिआ—मातृष्वसा
माभाइ—अभयम्

माहिवाओ—माघवातः
मुसलं—मांसलम्
मुहुरोमराइ—भ्रूः
मिअं—अलंकृतम्
मुद्दलं—मुखम्
मेहुणिआ—मातुलात्मजा, स्याली

र

रअणिद्धअं—कुमुदम्
रंगिल्लो—अभिलषितः
रिंछोली—पंक्तिः
रिमिणो—रोदनशीलः
रूमरूइआ—उत्कलिका
रोक्कअं—प्रोक्षितम्
रइलक्खं—जघनम्
रिअं—रुदनम्
रिट्ठो—अरिष्टम्, दैत्यः, काकः
रुद्धो—आक्रान्तः
रूवसिणी—रूपवती

ल

लंबा—वल्लरी, केशः
लइणा—लता
लज्जालुइणी—कलहकारिणी
लवचो—पुत्रः
लुक्को—सुप्तः
लिहुक्को—गतः
लअणी—लता
लक्कुडो—लगुडः
लडहा—विलासवती
लाहिल्लो—लम्पटः
लोट्ठो—स्मृतः

व

वअणीआ—उन्मत्ता, दुःशीला
वक्कं—पिष्टम्
वच्छुद्धलिओ—प्रत्युद्गतः
वडिणायो—घर्घरकण्ठः
वड्डिमं—स्तुतम्
वडइअं—पीडितम्
वणनत्तडिअं—पुरस्कृतम्
वप्पिअं रक्तम्
वरइत्तो—नूतनवरः
वरत्तो—पीतः, पतित, पेटितः
वल्लटं—पुनरुक्तम्
वइरोडो—जारः
वक्खलं—आच्छादितम्
वंजरं—मार्जारः
वडिसाअं—स्तुतम्
वड्डुअरो—बृहत्तरः
वणइ—वनराजिः
वंद्रं—वृन्दम्
वप्पिओ—केदारः
वरण्डो—प्राकारः
वल्लकिअं—उत्संगितम्
वल्लविअं—अक्षारकम्

वड्डिइअं—पर्याप्तम्
वाअडो—शुकः
वाडी—वृतिः
वामो—आक्रान्तः
वारिज्जो—विवाहः
विअंदुटं—अवरोपितम्, मुक्तम्
विच्छुरिअं—अपूर्वम्
विड्ढो—सुप्तोत्थितः
वित्थिरं—विस्तारः
विरुओ—विरुद्धः
विसारो—सैन्यम्
विहडणो—अनर्थः
विहुंडओ—विधुंतुदः
वीवी—वीचिः
वेणुसारो—भ्रमरः
वेलंबो—विडम्बनम्
वेल्हल्लो—कोमलः, विलासी
वेल्लरीओ—वल्लरी, केशः
व्युडो—विटः
वहुहाडिणी—वध्वा उपरि परिणीता
वाउल्लो—प्रलपितः
वामूलूरो—वामलूरः
वारड्डं—अभिपीडितम्
वावडो—कुटुम्बी
विउसग्गो—व्युत्सर्गः
विड्ढत्तं—अर्जितम्
विडुच्छओ—निषिद्धः
विरिचरो—धाराविरेचनशीलः
विसओ—विस्तीर्णः
विसो—वृषः, मूषकः
विहिमिहिओ—विकसितः
वीली—वीथिः
वेणिअं—वचनीयम्
वेण्णो—आक्रान्तः
वेल्लइअं—संकुचितम्
वेल्लरी—विलासवती
वोड्डी—सकः

स

संसाओ—आरूढः, चूर्णितः, पीतः, उद्विग्नः
सइकोडी—शतकोटि.
सइलासिओ—मयूरः
संकरो—रथ्या
सघअणं—संहननम्
सडिअग्गिअं—वर्धितम्
सत्थरो—संस्तरः
समराइअं—पिष्टम्
समुदहरं—अभ्युद्धृतं
सहउत्थिया—दूती
सग्गहो—मुक्तः
संगोल्लं—संघातः
संचारी—दूती
सत्तो—गतः
सद्दालं—नूपुरम्
समुद्धणवणीअं—चन्द्रः
सरिसाहुलो—सदृशः
साउल्लो—अनुरागः

साणिओ—शान्तः
सालंकिआ—शारिका
सिट्ठो—सुशोभितः
सिढ्ढहिल्लो—बालकः
सीउट्टं—हिमकालदुर्दिनम्
सीसक्कं—शीर्षकाम्
सुहरओ—धारिकागृहम् , चटकः
सूरद्धओ—दिवसः
सेवालं—सेवालम्
सोहिअं—पिष्टम्

सामरी—शाल्मरी
साहुली—शाखा
सिप्पी—शूची
सिहिणं—स्तनम्
सीउल्लं—हिमकालदुर्दिनम्
सुण्हसिओ—निद्राशीलः
सुरंगो—दीपः
सूरल्ली—मध्याह्नम्
सोत्ती—तरङ्गिणी

ह

हक्किअं—उन्नतम्
हुडहुडओ—अनुरागः
हिज्जा—ह्रीः
हीमोरं—भीमरम्
हेपिअं—उन्नतम्
हेसमणं—उन्नतम्

हट्टमहट्टो—सुस्वस्थः
हल्लपविअं—त्वरितम्
हिद्धो—स्रस्तः
हीरणा—त्रपा
हेरिवो—हेरम्बः
हेसिअं—रसितम्

आठवाँ अध्याय

कारक, समास और तद्धित प्रकरण

कारकविचार

करोति क्रियां जनयतीति कारकम्—क्रिया के उत्पादक को कारक कहते हैं; अथवा 'क्रियान्वयि कारकम्'—क्रिया के साथ जिसका सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं। हेमचन्द्र ने—'क्रियाहेतुः कारकम्' क्रिया की उत्पत्ति में जो हेतु—सहायक हो, उसे कारक कहा है। प्राकृत में संस्कृत के समान ही कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण ये छः कारक हैं। प्राकृत के वैयाकरणों ने सम्बन्ध को कारक नहीं माना है और न षष्ठी (छट्ठी) विभक्ति के रूपों को ही पृथक् स्थान दिया है। षष्ठी के रूप चतुर्थी के समान ही होते हैं। वास्तविक बात यह है कि सम्बन्ध कारक का क्रिया के साथ सम्बन्ध नहीं है। यथा—विउसाणं परिसाए मुरुक्खेहिं मउणं सेवीअउ, अन्नह मुक्खत्ति नज्जिहिन्ति'—विद्वानों की सभा में मूर्खों को मौन रहना चाहिए, अन्यथा उनकी मूर्खता प्रकट हो जाती है। इस वाक्य में 'सेवीअउ' क्रिया के साथ 'विउसाणं' का किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है और न 'विउसाणं' में सेवीअउ' क्रिया का जनकत्व-उत्पादकत्व ही है। अतः यह पद षष्ठी विभक्ति तो है, पर सम्बन्ध-कारक नहीं है।

विभक्ति की परिभाषा करते हुए कहा है—"संख्याकारकबोधयित्री विभक्तिः"—जिसके द्वारा संख्या और कारक का बोध हो, वह विभक्ति है। 'विउसाणं' से विद्वानों के समूह का बोध होता है, अतः वह षष्ठी विभक्ति तो है, पर कारक नहीं।

विभक्ति और कारक में एक अन्तर यह भी है कि कारक कुछ है और विभक्ति कुछ हो जाती है यथा—कर्त्ता में सर्वदा प्रथमा और कर्म में द्वितीया विभक्ति ही नहीं होती; बल्कि कर्त्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा विभक्ति भी होती है। जैसे—'रावणो रामेण हओ' इस वाक्य में हनन क्रिया का वास्तविक कर्त्ता राम है, पर राम प्रथमा विभक्ति में नहीं है, तृतीया विभक्ति में रखा गया है। इसी प्रकार हनन क्रिया का वास्तविक कर्म रावण है, उसे द्वितीया विभक्ति में न रखकर प्रथमा विभक्ति में रखा गया है।

१. कर्त्ता—क्रिया के द्वारा जिस संज्ञा के सम्बन्ध में विधान किया जाता है, उस संज्ञा के रूप को कर्त्ता कारक कहते हैं[1]। जैसे—रामो 'झाईअइ'—में 'झाईअइ' क्रिया राम के सम्बन्ध में विधान करती है कि राम ध्यान करता है।

प्रथमा विभक्ति के नियम—

(१) प्रातिपदिकार्थ—शब्द का मात्र अर्थ, लिङ्गमात्र, परिमाणमात्र अथवा वचन मात्र बतलाने के लिए प्रथमा विभक्ति होती है[2]। प्रातिपदिक शब्द का अर्थ—"नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः"—जिस शब्द की जिस अर्थ के साथ नियम से उपस्थिति हो, उसे प्रातिपदिकार्थ कहते हैं। प्रातिपदिकार्थ में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा—जिणो, वाऊ, पज्जुणो, सयंभू, णाणं आदि।

संस्कृत के समान प्राकृत में भी शब्द में जब तक प्रत्यय नहीं लगता, तब तक उसका अर्थ नहीं जाना जा सकता है। प्रातिपदिक (Crude form) में सुप् आदि विभक्तियों को जोड़ने से ही अर्थ प्रकट होता है। उदाहरण के लिए यों समझना चाहिए कि विभक्ति रहित देव शब्द का उच्चारण करें तो यह निरर्थक होगा। जब 'देवो' उच्चारण करते हैं तभी इस शब्द का अर्थ 'देव' ने यह प्रकट होता है। इसलिए संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण में विभक्ति प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

लिङ्गमात्र में—तडो, तडी, तडं; परिमाणमात्र में—वचन मात्र का ज्ञान कराने के लिए—दोणोव्वीही—यहाँ प्रथमा विभक्ति से व्रीहि का द्रोण रूप परिमाण विदित होता है।

वचनमात्र—एको, बहू आदि।

(२) सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति होती है। यथा हे देवो, हे देवा, हे हे पज्जुणा।

२. कर्म—जिस पदार्थ पर क्रिया के व्यापार का फल प्राप्त होता है; उस पदार्थ से सूचित होनेवाली संज्ञा के रूप को कर्म कारक कहते हैं। किसी वाक्य में प्रयोग किये गये पदार्थों में से जिसको कर्त्ता सबसे अधिक चाहता है, उसे कर्म कहते हैं।[3] अर्थात् कर्त्ता के लिए जो अत्यन्त ईप्सित-अभीष्ट है, उसीकी कर्म संज्ञा होती है। जैसे—'मासेसु अस्सं बंधइ' उड़द के खेत में घोड़े को बाँधता है, इस वाक्य में बाँधने-

---

१. स्वतन्त्रः कर्त्ता २।२।२. हे०।

२. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा २।३।४६ पा०।

३. कर्तुरीप्सिततमं कर्म १।४।४९. पा०।

वाला अपनी बाँधने की क्रिया के द्वारा अश्व को वशंगत करना चाहता है। अतः बन्धन व्यापार द्वारा अश्व ही कर्त्ता को अभीष्ट है, उड़द नहीं। उड़द की चाह अश्व को हो सकती है और उसके प्रलोभन से उसका बाँधना सुगमतर हो सकता है, परन्तु कर्त्ता को उसकी चाह नहीं है। अतः मासेसु में कर्म संज्ञा नहीं हुई।

क्रियाविशेष द्वारा जो कर्त्ता को अत्यन्त अभीष्ट है, उसीकी कर्म संज्ञा होती है। जैसे—पयेण ओदनं भुंजइ—दूध से भात खाता है, वाक्य में दूध भी भात की तरह कर्त्ता को प्रिय है, पर कर्त्ता अपने भोजन व्यापार द्वारा, जिसे सबसे अधिक पाना चाहता है, वह भात है, दूध नहीं। अतः दूध पेय है, यह तो केवल भोजन क्रिया के सम्पादन में सहायक है, अतः यहाँ पर पयेण की कर्म संज्ञा नहीं है, ओदनं की है।

(१) अनुक्त कर्म को बतलाने के लिए कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।[1] यथा—हरिं भजइ, गामं गच्छइ, वेअं पढइ, पुत्थकं पढइ, झाणं झाईअइ, अत्थं चिव्वइ।

(२) सप्तमी और प्रथमा विभक्ति के स्थान पर क्वचित् द्वितीया विभक्ति होती है।[2] यथा—विज्जुज्जोमं भरइ रत्ति—विद्युदुद्योतं भाति रात्र्याम्—यहाँ सप्तमी के स्थान पर द्वितीया हुई है।

चउवीसं पि जिणवरा—चतुर्विंशतिरपि जिनवराः—यहाँ प्रथमा के स्थान पर द्वितीया हुई है।

(३) संस्कृत के समान प्राकृत में भी द्विकर्मक धातुओं के योग में अपादान आदि कारकों में भी द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

(१) माणवअं पहं पुच्छइ—बच्चे से रास्ता पूछता है।

(२) रुक्खं ओचिव्वइ फलाई—वृक्ष के फलों को इकट्ठा करता है।

(३) माणवअं धम्मं सासइ—माणवक से धर्म कहता है।

(४) शी, स्था और आस् धातुओं के पूर्व यदि अधि (अहि) उपसर्ग लगा हो तो इन क्रियाओं के आधार की कर्म संज्ञा होती है। यथा—अहिचिट्ठइ वइउंठं हरी।

(५) अहि और नि उपसर्ग जब एक साथ विस् (विस) धातु के पहले आते हैं, तो विस् के आधार को कर्म कारक होता है। यथा—अहि निवसइ सग्गगं।

(६) यदि वस् धातु के पूर्व उव, अनु, अहि और आ में से कोई भी उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार को कर्मकारक होता है। यथा—

---

१. कर्मणि द्वितीया २।३।२. पा०।

२. सप्तम्या द्वितीया ८।३।१३७ हे०

हरी वइउंठं उववसइ, अहिवसइ, आवसइ वा।

(७) अहिओ (अभितः)—चारों ओर, परिओ (परितः)—सब ओर, समया—समीप, णिकहा (निकषा)—समीप, हा, पडि, धिअ, सव्वओ और उवरि उवरि शब्दों को जिनमें सन्निकटता पाई जाय उनमें द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

अहिओ किसणं, परिओ किसणं, गामं समया, णिकहा लंकं, हा किसणभत्तं, परिजणो रायाणं अहिओ चिट्ठइ।

(८) अणु के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—णईं अणुवसिआ सेना, अणुहरिं सुरा, मोहणं अणुगच्छइ हरी।

(९) अधिक तथा हीन अर्थ का वाचक होने पर अणु के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—अणुहरिं सुरा—देवता हरि से हीन हैं।

(१०) जब अंगुलि निर्देश करना हो, इत्थंभूत—ये इस प्रकार के हैं—यह बतलाना हो, भाग—यह उनके हिस्से में पड़ा या पड़ता है, यह प्रकट करना हो अथवा पुनरुक्ति दिखलानी हो तो पडि, परि और अणु के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

(१) वच्छं पडि विज्जुअइ विज्जु—वृक्ष पर बिजली चमकती है।

(२) भत्तो विसणुं पडि अणु वा—विष्णु के वे भक्त हैं।

(३) एच्छी हरिं पडि अणु वा—लक्ष्मी विष्णु के हिस्से में पड़ी या पड़े।

(४) वच्छं वच्छं पडि सिंचइ—प्रत्येक वृक्ष को सींचता है।

(११) पूजार्थ में सु अव्यय और उल्लंघन अर्थ में अइ अव्यय के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—

अइ देवा किसणो—कृष्ण सब देवताओं की अपेक्षा पूज्य हैं।

सुसित्तअं वच्छं—अच्छी तरह सींचा हुआ वृक्ष।

३. करण कारक—अपने कार्य की सिद्धि में कर्त्ता जिसकी सबसे अधिक सहायता लेता है, उसे करण कहते हैं। यथा—"रामेण बाणेन हओ वाली" वाक्य में कर्त्ता राम वाली को मारने में सबसे अधिक सहायता बाण की लेता है; यों तो हाथ और धनुष भी सहायक हैं, पर ये अत्यन्त सहायक नहीं हैं, अतः इन्हें करणकारक नहीं माना जायगा। तात्पर्य यह है कि जो क्रिया-फल की निष्पत्ति में साधन का बोध कराता है, उसे करणकारक कहते हैं। करण अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—रामो जलेन कडं पक्खालइ।

(१) प्रकृति—स्वभावादि अर्थों में तृतीया होती है। यथा—पइईअ चारू—स्वभाव से सुन्दर, गोत्तेण गग्गो, रसेण महुरो, सुहेण जाइ। किं वर्णाणिजोव्वणविउणमसेण जम्मेणं।

(२) दिव् धातु के योग में विकल्प से द्वितीया विभक्ति भी होती है। यथा—अक्खेहिं अक्खा वा दीव्वइ—पासों से या पासों को फेंकता है।

(३) समपूर्वक ज्ञा धातु के कर्म की विकल्प से करण संज्ञा होती है। यथा—पिअरेण, पिअरं वा सण्णाणइ—पिता के साथ मेल से रहता है।

(४) फलप्राप्ति या कार्यसिद्धि को बतलाने के लिए तृतीया विभक्ति होती है। यथा—दुवालसवरिसेहिं वाअरणं सुणइ—द्वादशवर्षैः व्याकरणं श्रूयते।

(५) सह, समं, सार्धं और सद्धं के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—पुत्तेण सहाअओ पिआ—पुत्रेण सहागतः पिता, लक्खणो रामेण सार्धं गच्छइ, देवदत्तो जण्णदत्तेण समं नहाति।

(६) पिधं, विना, नाना शब्दों के साथ तृतीया, द्वितीया या पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—पिधं रामेण, रामत्तो, रामं वा; जलेन, जलत्तो, जलं वा; जलं विना कमलं चिट्ठतुं ण सकइ।

(७) जिस विकृत अंग के द्वारा अङ्गी का विकार मालूम हो, उस अंग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—पाएण खंजो, कण्णेन वहिरो—पैर का लँगड़ा; कान का बहिरा।

(८) जिस कारण या प्रयोजन से कोई कार्य किया जाता है या होता है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

दण्डेण घडो जाओ—दण्डे के कारण घड़ा उत्पन्न हुआ।
पुण्णेण दिट्ठो हरि—पुण्य के कारण हरि दिखलायी पड़े।
अज्झणेण वसइ—अध्ययन के प्रयोजनन से रहता है।

(९) जो जिस प्रकार से जाना जाय, उसके लक्षण में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

जडाहि तावसो—जटाओं से तपस्वी जान पड़ता है।
गमणेण रामं अणुहरइ—गमन में राम के सदृश है।

(१०) कार्य, अर्थ, प्रयोजन, गुण तथा इसी प्रकार उपयोग या प्रयोजन प्रकट करने वाले शब्दों के योग में उपयोज्य या आवश्यक वस्तु को तृतीया विभक्ति होती है। यथा—

तिणेण कज्जं भवइ ईसराणं—धनी लोगों का कार्य तिनके से भी हो जाता है।

को अत्थो पुत्तेण जो ण विउसो ण धम्मिओ—उस पुत्र के उत्पन्न होने से क्या लाभ है, जो न विद्वान् है और न धर्मात्मा।

(११) आर्ष प्रयोगों में सप्तमी स्थान में तृतीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। यथा—

तेणं कालेणं, तेणं समएणं—तस्मिन् काले, तस्मिन् समये—उस समय में।

४. सम्प्रदान कारक—दानकार्य के द्वारा कर्त्ता जिसे सन्तुष्ट करता है, उसे सम्प्रदान कहते हैं। अर्थात् जिस पदार्थ के लिए कोई क्रिया की जाती है, उसका बोध कराने वाली संज्ञा के रूप को संप्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—विप्पाय या विप्पस्स गावं देइ—विप्राय गां ददाति।

(१) रोअ—रुच् धातु तथा रुच् के समान अर्थवाली अन्य धातुओं के योग में प्रसन्न होनेवाला सम्प्रदान कहलाता है और सम्प्रदान को चतुर्थी होती है। यथा—

हरिणो रोयइ भत्ती—हरी को भक्ति अच्छी लगती है।

बालकस्स मोअआ रोअन्ते—बालकाय मोदकाः रोचन्ते, बालक को लड्डू अच्छे लगते हैं। मम तव वियारो रोयइ—मुझे तुम्हारा विचार अच्छा लगता है।

तस्स वाआ मज्झं न रोयइ—उसकी बात मुझे अच्छी नहीं लगती।

(२) सलाह (श्लाघ) हुण, (हु‌ङ्), चिट्ठ (स्था) और (सव) शप् धातुओं के योग में जिसको जाना जाय उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है और सम्प्रदान को चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

गोवी समरत्तो किसणाय किसणस्स वा सलाहइ, चिट्ठइ, सवइ वा—गोपी कामदेव के वश से श्रीकृष्ण के अर्थ अपनी श्लाघा करती है, स्थित होकर कृष्ण को अपना अभिप्राय बतातो है तथा कृष्ण के लिए अपना उपालम्भ करती है।

(३) धर—धङ् उधार लेना—कर्ज लेना धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

भत्ताय, भत्तस्स वा धरइ मोक्खं हरी—हरि भक्त के लिए मोक्ष को धारण करते हैं।

सामो अस्सपइणो सइं धरइ—श्याम ने अश्वपति से एक सौ कर्ज लिए।

(४) सिह (स्पृह) धातु के योग में जिसे चाहा जाय, वह सम्प्रदानसंज्ञक होता है और सम्प्रदान को चतुर्थी विभक्ति में रखते हैं। यथा—

पुप्फाणं सिहइ—पुष्पेभ्यः स्पृहयति—फूलों की चाहना करता है।

(५) कुज्झ (क्रुध्) दोह (द्रुह्), ईस (ईर्ष्य) तथा असूअ (असूय्) धातुओं के योग में तथा इन धातुओं के समान अर्थवाली धातुओं के योग में जिनके ऊपर क्रोधादि किये जाते हैं, उनकी चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा हरिणो कुज्झइ, दोहइ, ईसइ, असूअइ, वा।

(६) निश्चित काल के लिए वेतन इत्यादि पर किसी को रखा जाना परिक्रयण कहलाता है, उस परिक्रयण में जो करण होता है, उसकी विकल्प से सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथा–

सयेण सयस्स वा परिकीणइ–सौ रुपये के वेतन पर रखा गया।

(७) जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाय, उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा–

मुत्तिणो हरिं भजइ–मुक्ति के लिए हरि को भजता है।

भत्ती णाणाय कप्पइ, संपज्जइ, जाअइ वा।

(८) हेमचन्द्र के मत से तादर्थ्य-उसके लिए–अर्थ में षष्ठी विभक्ति विकल्प से आती है। यथा-

मुणिस्स, मुणीणं देइ—मुनीनं मुनिभ्यो वा ददाति।

नमो नाणस्स—नमो ज्ञानाय, नमो गुरुस्स—नमो गुरवे।

देवस्स देवाय नमो।

(९) हिअ और सुह के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

बंभणस्स हिअं सुहं वा—ब्राह्मण के लिए हितकर या सुखकर।

(१०) नमो, सुत्थि, सुहा, सुआहा, और अलं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—

हरिणो नमो–हरि को नमस्कार हो।

पआणं सुत्थि–प्रजा का कल्याण हो।

पिअराणं सुहा—पितरों को यह समर्पित है।

अलं मल्लो मल्लस्स—मल्ल दूसरे मल्ल के लिए पर्याप्त–काफी है।

५ अपादान कारक—जिससे किसी वस्तु का विश्लेष होता है, उसे अपादान-कारक कहते हैं। अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—धावत्तो अस्सत्तो पडइ—दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।

(१) दुगुञ्छ, विराम और पमाय तथा इनके समानार्थक शब्दों के साथ पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—पावत्तो दुगुञ्छइ, विरमइ वा; धम्मत्तो पमायइ।

(२) जिसके कारण डर मालूम हो अथवा जिसके डर के कारण रक्षा करनी हो, उस कारण को पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—चोरओ बीहइ, सप्पओ भयं, रामो कलहत्तो बीहइ।

(३) प्राकृत में 'भी' धातु के योग में पञ्चमी के अर्थ में चतुर्थी विभक्ति भी पायी जाती है। यथा—दुट्ठाण को न बीहइ—दुष्टेभ्य: को न बिभेति—दुष्टों से कौन नहीं डरता है।

(४) पञ्चमी के अर्थ में षष्ठी विभक्ति भी देखी जाती है। यथा—चोरस्स बीहइ—चौराद्बिभेति—चोर से डरता है।

(५) पञ्चमी के स्थान में कहीं-कहीं तृतीया और सप्तमी विभक्ति भी पायी जाती है। यथा—चोरेण बीहइ—चौराद्बिभेति, अन्तेउरे रमिउमागओ राया—अन्तःपुराद् रन्त्वागत इत्यर्थः।

(६) परापूर्वक जि धातु के योग में जो असह्य होता है, उसकी अपादान संज्ञा होती है और पञ्चमी विभक्ति हो जाती है। यथा—अज्झयणत्तो पराजयइ।

(७) जनधातु के कर्त्ता का आदिकारण अपादान होता है। यथा—रामत्तो कोहो अहिजाअइ, कोहत्तो मोहो अहिजाअइ।

६. प्रातिपदिक और कारक के अतिरिक्त स्वस्वामिभावादि सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। मुख्यतः सम्बन्ध चार प्रकार का है—स्वस्वामिभाव सम्बन्ध, जन्य जनक भाव सम्बन्ध, अवयवावयविभाव सम्बन्ध और स्थान्यादेश। साहुणो धणं में स्वस्वामिभाव सम्बन्ध है, क्योंकि साधु धन का स्वामी है। पिअरस्स, पिउणो वा पुत्तं में जन्य-जनकभाव सम्बन्ध है। पसुणो पाअं में अवयव-अवयविभाव सम्बन्ध है, क्योंकि पशु अवयवी है और पैर उसके अवयव हैं। अस्मद् के स्थान में अहज्ज, अहं और अहम्म आदेश होता है, अतः यहाँ स्थान्यादेश सम्बन्ध माना जायगा। इन सम्बन्धों के अतिरिक्त कार्य-कारणादि और भी सम्बन्ध हैं सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा—बाअस्स अंगाणि पससेइ—कौए के अंगों की प्रशंसा करता है। जहा तुह अंगाणि अईव मणोहराणि तहा तुमं सुमहुराइं गीयाइं गावें समत्थो सि—जैसे तुम्हारे अंग सुन्दर हैं, वैसे ही तुम सुमधुर गाना गाने में भी समर्थ हो।

(१) कर्मादि में भी सम्बन्धभाव की विवक्षा होने पर षष्ठी विभक्ति हो जाती है। यथा—तस्स आहरणत्थं माहावाहिहाणा चेडी पेसिया—उसे बुलाने के लिए माधवी नाम की दासी को भेजा।

तस्स कहियं—उससे कहा, माआए, माऊए वा सुमरइ—माता को याद करता है।

(२) हेउ शब्द के प्रयोग में जो शब्द कारण या प्रयोजन रहता है, वह और हेउ शब्द दोनों ही षष्ठी में रखे जाते हैं। यथा—अन्नस्स हेउस्स वसइ—अन्न प्राप्ति के प्रयोजन से रहता है। कस्स हेउस्स वसइ—किस कारण रहते हो।

(३) द्वितीया-तृतीयादि विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति होती है।[1] यथा—सीमाधरस्स वन्दे—सीमाधरं वन्दे; तिस्सा मुहस्स भरिमो—तस्या मुखं भरामः, धणस्स लुद्धो—धनेन लुब्धः; तेसिमेअमणाइण्णं—तैरेतदनाचरितम्; चिरस्स मुक्का—चिरेण मुक्ता; इअराइं जाण लहुअक्खराइं पायन्तिमिल्ल सहिआण—पादान्तेन सहितेभ्यः इतराणि।

७. अधिकरण कारक—कर्त्ता और कर्म के द्वारा किसी भी क्रिया का आधार अधिकरण कहलाता है। आधार के तीन भेद हैं—औपश्लेषिक, वैषयिक और अभिव्यापक। जिसके आधेय का भौतिक संश्लेष हो, उसे औपश्लेषिक आधार कहते हैं। जैसे—कडे आसइ कागो—यहाँ चटाई से बैठनेवाले का भौतिक संश्लेष प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है। जिसके साथ आधेय का बौद्धिक संश्लेष हो, उसे वैषयिक आधार कहते हैं। यथा—मोक्खे इच्छा अत्थि—इच्छा का मोक्ष में अधिष्ठित होना बौद्धिक संश्लेष है। जिसके साथ आधेय का व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध हो, उसे अभिव्यापक कहते हैं। यथा—"तिलेसु तेल्लं" में तैल तिल के किसी एक भाग में नहीं रहता है, बल्कि समस्त तिल में व्याप्त रहता है।

(१) अधिकरण तथा दूर एवं अन्तिक अर्थ वाले शब्दों में सप्तमी विभक्ति होती है। कडे आसइ कागो; गामस्स दूरे अन्तिए वा।

(२) सामी, ईसर, अहिवइ, दायाद, साखी, पडिहू और पसूअ इन सात शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी ये दोनों ही विभक्तियाँ होती हैं। यथा—

गवाणं गोसु वा सामी, गवाणं गोसु वा पसूओ।

(३) यदि किसी वस्तु का अपने समुदाय की अन्य वस्तुओं में से किसी विशेषण द्वारा वैशिष्ट्यनिर्देश किया जाय तो समुदायवाचक शब्द सप्तमी अथवा षष्ठी विभक्ति में रखा जाता है। यथा—कइसु कईणं वा हरिचन्दो सेट्ठो—कवियों में हरिश्चन्द्र सबसे बड़े कवि हैं। गवाणं गोसु वा किसणा बहुक्खीरा—गायों में काली गाय बहुत दूध देनेवाली है। छत्ताणं छत्तेसु वा गोइन्दो पडु—विद्यार्थियों में गोविन्द श्रेष्ठ है।

---

१. क्वचिद् द्वितीयादेः ८।३।१३४—द्वितीयादीनां विभक्तीनां स्थाने षष्ठी भवति क्वचित्।

(४) समृद्धि अर्थ में—मद्दाणं समिद्धि—सुमद्दं ।

(५) अभाव अर्थ में—मच्छिआणं अभाओ—निम्मच्छिअं ।

(६) अत्यय—नाश में—हिमस्स अचओ—अइहिमं ।

(७) असम्प्रति—अनौचित्य अर्थ में—निद्दा संपइ न जुज्जइ—अइनिद्दं ।

(८) यथा का भाव—योग्यता—रूवस्स जोग्गं—अणुरूवम् (अनुरूपम्)।

,, वीप्सा—नयरं नयरं ति—पइनयरं (प्रतिनगरम्) ।

,, ,, —दिणं दिणं ति—पइदिणं (प्रतिदिनम्) ।

,, ,, —घरे घरे ति—पइघरं (प्रतिगृहम्) ।

,, अनतिक्रम—सत्ति अणइक्कमिअ—जहाविहि (यथाविधि)।

,, ,, —सत्ति अणइक्कमिऊण—जहासत्ति (यथाशक्ति)।

(९) आनुपूर्व्य—क्रम—जेट्ठस्स अणुपुव्वेण—अणुजेट्ठं (अनुज्येष्ठम्) ।

(१०) यौगपद्य—एक साथ होना—चक्केण जुगवं—सचक्कं (सचक्रम्) ।

(११) सम्पत्ति—छत्ताणं संपइ—सछत्तं (सक्षत्रम्) ।

(२) तत्पुरुष (तप्पुरिस)

(१) उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः—जिसमें उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता रहती है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। राइणो पुरिसो = रायपुरिसो में उत्तरपद पुरुष की प्रधानता है । तात्पर्य यह है कि तत्पुरुष समास में प्रथम पद विशेषण और द्वितीय पद विशेष्य रहता है, अतः विशेष्य की प्रधानता रहने के कारण इसमें उत्तरपद की प्रधानता मानी जाती है ।

तत्पुरुष समास के आठ भेद हैं—प्रथमा तत्पुरुष, द्वितीया तत्पुरुष, तृतीया तत्पुरुष, चतुर्थी तत्पुरुष, पञ्चमी तत्पुरुष, षष्ठी तत्पुरुष, सप्तमी तत्पुरुष और अन्य तत्पुरुष ।

(१) प्रथमा तत्पुरुष (पढमा तप्पुरिस)

(१) पुव्व, अवर, अहर और उत्तर प्रथमान्त पद अपने अवयवी षष्ठ्यन्त के साथ एकाधिकरण में समास को प्राप्त होते हैं । यथा—पुव्वं कायस्स = पुव्वकायो, अवरं कायस्स = अवरकायो, उत्तरं गामस्स = उत्तरगामो ।

(२) द्वितीया तत्पुरुष (बीया तप्पुरिस)

(२) सिअ, अतीत, पडिअ, गअ, अइअत्थ, पत्त और आवण्ण शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति के आने पर द्वितीया-तत्पुरुष समास होता है । यथा—

समासविचार

(१) "समसनं समासः"—संक्षेप को समास कहते हैं अर्थात् दो या अधिक शब्दों को इस प्रकार साथ रखना, जिससे उनके आकार में कमी आ जाय और अर्थ भी प्रकट हो जाय। तात्पर्य यह है कि परस्पर सम्बद्ध अर्थवाले शब्दों का एक रूप में मिलना समास है। समास से सिद्ध पद—सामासिक या समस्तपद कहलाते हैं। समस्तपद के प्रत्येक पद को विभक्तियों के साथ अलग-अलग करने को विग्रह कहते हैं।

समास मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं—(१) अव्ययीभाव, (२) तत्पुरुष, (३) बहुव्रीहि और (४) द्वन्द्व। अव्ययीभाव में पहले पद के अर्थ की, तत्पुरुष में दूसरे पद के अर्थ की, बहुव्रीहि में अन्य पद के अर्थ की तथा द्वन्द्व में सभी पदों के अर्थों की प्रधानता होती है।

तत्पुरुष समास दो प्रकार का होता है—(१) समानाधिकरण तत्पुरुष और (२) व्यधिकरण तत्पुरुष। समानाधिकरण तत्पुरुष का ही दूसरा नाम कर्मधारय समास है। द्विगु समास कर्मधारय का ही भेद है।

एकशेष समास भी स्वतन्त्र नहीं है, यह द्वन्द्व का ही एक उपभेद है। कहा भी है—

> दंदे य बहुव्वीही कम्मधारय दिगुयए चेव।
> तप्पुरिसे अव्वईभावे एक्सेसे य सत्तमे॥

(१) अव्ययीभाव (अव्वईभाव)

(१) अव्ययीभाव समास में पहला पद प्रायः कोई अव्यय होता है और वही प्रधान होता है। अव्ययीभाव समास का समूचा पद क्रियाविशेषण अव्यय होता है।

(२) विभक्ति आदि अर्थों में अव्यय का प्रयोग होने पर अव्ययीभाव समास होता है।

(१) विभक्ति अर्थ में—हरिम्मि इइ—अहिहरि; अप्पंसि अज्झो—अज्झप्पं।

(२) समीप अर्थ में—गुरुणो समीवं—उवगुरु; सिद्धगिरिणो समीवं—उवसिद्धगिरिं।

(३) पश्चात् अर्थ में—जिणस्स पच्छा—अणुजिणं; भोयणस्स पच्छा—अणुभोयणं।

संसाराओ भीओ = संसारभीओ (संसारभीत), दंसणाओ भट्ठो = दंसणभट्ठो (दर्श भ्रष्ट), अन्नाणाओ भय = अन्नाणभय (अज्ञानभय), वग्धाओ भयं = वग्घभय (व्याघ्रभय), रिणाओ मुत्तो = रिणमुत्तो (ऋणमुक्त), चोराओ भय = चोरभय (चोरभय), थेणाओ भीओ = थेणभीओ (स्तेनभीत), थोवाओ मुत्तो = थोवमुत्तो (स्तोकान्मुक्त)।

(६) षष्ठी तत्पुरुष (छट्ठी तप्पुरिस)

(१) जिस तत्पुरुष समास का प्रथम पद षष्ठी विभक्ति म हो, उसे षष्ठी तत्पुरुष कहते हैं। यथा—

देवस्स मंदिरं = देवमंदिरं (देवमन्दिर), कन्नाए मुहं = कन्नामुहं (कन्या मुखम्), नरस्स इंदो = नरिंदो (नरेन्द्र), देवस्स इंदो = देविंदो (देवेन्द्र), लेहस्स साला = लेहसाला (लेखशाला), विज्जाए ठाणं = विज्जाठाणं (विद्यास्थान), समाहिणो ठाणं = समाहिठाणं (समाधिस्थान) देवस्स थुई = देवत्थुई, देवथुई (देवस्तुति), जिणाण इन्दो = जिणेन्दो, जिणिन्दो (जिनेन्द्र), विबुहाण अहिवो = विबुहाहिवो (विबुधाधिप), बहूए मुहं = बहूमुहं (वधूमुखम्), धम्मस्स पुत्तो = धम्मपुत्तो (धर्मपुत्र), गणिअस्स अज्झावओ = गणिअज्झावओ (गणिता ध्यापक), देवस्स पुज्जओ = देवपुज्जओ (देवपूजक)।

(७) सप्तमी तत्पुरुष (सत्तमी तप्पुरिस)

(१) सप्तमी तत्पुरुष समास उसे कहते हैं, जिसका प्रथम पद सप्तमी विभक्ति म रहा हो। यथा—

कलासु कुसलो = कलाकुसलो (कलाकुशल), बम्भणेसु उत्तमो = बम्भणोत्तमो (ब्राह्मणोत्तम), जिणेसु उत्तमो = जिणोत्तमो (जिनोत्तम), सभाए पंडिओ = सभापंडिओ (सभापण्डित) कडाहे पक्को = कडाहपक्को (कटाहपक्व), कम्मे कुसलो = कम्मकुसलो (कर्मकुशल), विज्जाए दक्खो = विज्जादक्खो (विद्यादक्ष), नरेसु सेट्ठो = नरसेट्ठो (नरश्रेष्ठ), नाणम्मि उज्जओ = नाणोज्जओ, नाणुज्जओ (ज्ञानोद्यत), गिहे जाओ = गिहजाओ (गृहजात)।

(८) अन्यतत्पुरुष (अण्णतप्पुरिस)

अन्यतत्पुरुष समास के नञ् तत्पुरुष, प्रादितत्पुरुष, गतितत्पुरुष, उपपदतत्पुरुष, अलुक तत्पुरुष, मध्यमपदलोपी तत्पुरुष, एवं मयूरव्यंसकादि तत्पुरुष ये सात भेद हैं।

(क) नञ् तत्पुरुष (न तप्पुरिस)

(१) जब तत्पुरुष समास म प्रथम शब्द न और दूसरा कोई संज्ञा या विशेषण हो तो उसे नञ् तत्पुरुष कहते हैं। व्यंजन के पूर्व न का अ और स्वर के पूर्व अन् म बदल जाता है। यथा—

किसणं सिओ = किसणसिओ, इंदियं अतीतो = इंदियातीतो (इन्द्रियातीतः), अग्गि पडिओ = अग्गिपडिओ (अग्निपतितः), सिवं गओ = सिवगओ (शिवगतः), सुहं पत्तो = सुहपत्तो (सुखप्राप्तः), भद्दं पत्तो = भद्दपत्तो (भद्रप्राप्तः), पलयं गओ = पलयगओ (प्रलयगतः), दिवं गओ = दिवगओ (दिवंगतः), कट्ठं आवण्णो = कट्ठावण्णो (कष्टापन्नः), मेहं अइअत्थो = मेघाइअत्थो (मेघात्यस्तः), वीरं अस्सिओ = वीरस्सिओ (वीराश्रितः)।

(३) तृतीया तत्पुरुष (तईया तप्पुरिस)

(१) जब तत्पुरुष समास का प्रथम शब्द तृतीया विभक्ति में हो, तब उसे तृतीया तत्पुरुष कहते हैं। यथा—

साहूहिं वन्दिओ = साहुवंदिओ (साधुवन्दितः), जिणेण सरिसो = जिणसरिसो (जिनसदृशः), ईसरेण कडे = ईसरकडे (ईश्वरकृतः), दयाए जुत्तो = दयाजुत्तो (दयायुक्तः), गुणेहिं संपन्नो = गुणसंपन्नो (गुणसम्पन्नः), रसेण पुण्णं = रसपुण्णं (रसपूर्णम्), मायाए सरिसी = माउसरिसी (मातृसदृशः), कुलगुणेण सरिसी = कुलगुणसरिसी (कुलगुणसदृशः), रूवेण समाणा = रूवसमाणा (रूपसमाना), आयारेण निउणो = आयारनिउणो (आचारनिपुणः), णहेहिं भिण्णो = णहभिण्णो (नखभिन्नः), गुडेन मिस्सं = गुडमिस्सं (गुडमिश्रं), महुणा मत्तो = महुमत्तो (मधुमत्त.), पंकेन लित्तो = पंकलित्तो (पङ्कलिप्तः), बाणेन विद्धो = बाणविद्धो (बाणविद्धः)।

(४) चतुर्थी तत्पुरुष (चउत्थी तप्पुरिस)

(१) जिस तत्पुरुष समास का प्रथम पद चतुर्थी विभक्ति में हो, उसे चतुर्थी तत्पुरुष कहते हैं। यथा—

कलसाय सुवण्णं = कलससुवण्णं (कलशसुवर्णम्), मोक्खत्थं नाणं, मोक्खाय नाणं वा = मोक्खनाणं (मोक्षज्ञानम्), लोयाय हिओ = लोयहिओ (लोकहितः), लोगस्स सुहो = लोगसुहो (लोकसुख.), कुंभस्स मट्टिआ = कुंभमट्टिआ (कुम्भमृत्तिका), भूयाणं बली = भूयबली (भूतबलि), बंभणाय हिअं = बंभणहिअं (ब्राह्मणहितम्), गवस्स हिअं = गवहिअं (गोहितम्), थंभाय कट्ठं = थंभकट्ठं (यूपदारु), बहुजणस्स हिओ = बहुजणहिओ (बहुजनहितः)।

(५) पञ्चमी तत्पुरुष (पंचमी तप्पुरिस)

(१) जब तत्पुरुष समास का पहला पद पञ्चमी विभक्ति में रहता है, तब उसे पञ्चमी तत्पुरुष कहते हैं। यथा—

(३) जिसमें विशेष्य विशेषण से पूर्व रहे, उसे विशेष्य पूर्वपद कहते हैं। यथा—वीरो अ एसो जिणिंदो = वीरजिणिंदो (वीरजिनेन्द्रः), महंतो च सो रायो = महारायो (महाराजः), कुमारी अ सा समणा = कुमारीसमणा, कुमारसमणा (कुमारीश्रमण), कुमारी अ सा गब्भिणी = कुमारगब्भिणी (कुमारगर्भिणी)।

(४) जिसके दोनों पद विशेषणवाचक हों, वह विशेषणोभयपद कहलाता है। यथा—

रत्तो अ एस सेओ = रत्तसेओ आसो (रक्तश्वेतोऽश्वः), सीअं च तं उण्हं य = सीउण्हं जलं (शीतोष्णं जलम्), रत्तं अ तं पीअं य = रत्तपीअं वत्थं (रक्तपीतं वस्त्रम्)।

(५) उपमानवाचक शब्द जिसके पूर्वपद में रहे, वह उपमानपूर्वपद कहलाता है। यथा—

चंदो इव मुहं = चन्दमुहं (चन्द्रमुखम्), घणो इव सामो = घणसामो (घनश्यामः), वज्जो इव देहो = वज्जदेहो (वज्रदेहः), चन्दो इव आणणं = चंदाणणं (चन्द्राननम्)।

(६) उपमानवाचक शब्द जिसके उत्तरपद में हो, उसे उपमानोत्तरपद कहते हैं। यथा—

मुहं चंदो व्व = मुहचंदो (मुखचन्द्रः), जिणो चंदो व्व = जिणचंदो (जिनचन्द्र)।

(७) जिसमें सम्भावना पायी जाय ऐसा विशेषण अपने विशेष्य के साथ समास को प्राप्त करता है और इस प्रकार के समास को सम्भावनापूर्वपद समास कहते हैं। यथा—

संजमो एव धणं = संजमधणं (संयमधनम्), तवो च्चिअ धणं = तवोधणं (तपोधनम्), पुण्णं चेअ पाहेज्जं = पुण्णपाहेज्जं (पुण्यपाथेयम्)।

(८) जिसमें अवधारणा पायी जाय ऐसा विशेषण पद भी अपने विशेष्य पद के साथ समस्त हो जाता है। यथा—

अन्नाणं चेअ तिमिरं = अन्नाणतिमिरं (अज्ञानतिमिरम्), णाणं चेअ धणं = णाणधणं (ज्ञानधनम्), पयमेव पउमं = पयपउमं (पादपद्मम्)।

द्विगु (दिगु)

(१) जिस तत्पुरुष के संख्यावाचक शब्द पूर्वपद में हों, वह द्विगु समास कहलाता है। द्विगु समास दो प्रकार का होता है—(१) एकवद्भावी और (२) अनेकवद्भावी।

न लोगो = अलोगो (अलोकः), न देवो = अदेवो (अदेवः), न आयारो = अणायारो (अनाचारः), न इट्ठं = अणिट्ठं (अनिष्टम्), न दिट्ठं = अदिट्ठं (अदृष्टम्), न अवज्जं = अणवज्जं (अनवद्यम्), न विरई = अविरई (अविरतिः), न सच्चम् = असच्चम् (असत्यम्), न ईसो = अणीसो (अनीशः), न कयं = अकयं (अकृतम्), न बंभणो = अबंभणो (अब्राह्मणः) ।

(ख) प्रादितत्पुरुष (पादितप्पुरिस)

(१) जब तत्पुरुष समास में प्रथमपद 'प्र–प' आदि उपसर्गों में से कोई हो तो उसे प्रादि तत्पुरुष कहते हैं । यथा—

: पगतो आयरियो = पायरिओ (प्राचार्यः), उग्गओ वेलं = उव्वेलो (उद्वेलः), संगतो अत्थो = समत्थो (समर्थः), अइक्कंतो पल्लंकं = अइपल्लंको (अतिपल्यङ्कः), निग्गओ कासीए = निक्कासी (निष्काशी) ।

(ग) उपपद समास

(१) जब तत्पुरुष समास का प्रथमपद ऐसी संज्ञा या अव्यय में हो, जिसके न रहने से शब्द का रूप ही न रह सकता हो, तो उसे उपपद तत्पुरुष कहते हैं। यथा—

कुंभं करइ त्ति = कुंभआरो (कुम्भकारः), भासआरो (भाष्यकारः), सव्वण्णु (सर्वज्ञः), पायवो (पादपः), कच्छवो (कच्छपः), अहिवो (अधिपः), गिहत्थो (गृहस्थः), सुत्तआरो (सूत्रकारः), वुत्तिआरो (वृत्तिकारः), निव्वया (निम्नगा), नीयगा (नीचगा), नम्मया (नर्मदा), सगडब्भि (शकृतभित्), पावणासओ (पापनाशकः) ।

(घ) कर्मधारय

(१) जब प्रथमपद विशेषण हो और दूसरा विशेष्य हो तो उसे कर्मधारय कहते हैं । इसके सात भेद हैं—(१) विशेषणपूर्वपद (२) विशेष्यपूर्वपद (३) विशेषणोभयपद (४) उपमानपूर्वपद (५) उपमानोत्तरपद (६) सम्भावना-पूर्वपद (७) अवधारणापूर्वपद ।

(२) जिसमें विशेषण विशेष्य से पहले रहे, उसको विशेषणपूर्वपद कहते हैं। यथा—रत्तो अ एसो घडो = रत्तघडो (रक्तघटः), सुंदरा य एसा पडिमा = सुंदर-पडिमा (सुन्दरप्रतिमा), परमं एअं पयं परमपयं (परमपदम्), पीअं तं वत्थं = पीअवत्थं (पीतवस्त्रम्), गोरो सो वसभो = गोवसभो (गौरवृषभः), महंतो सो वीरो = महावीरो (महावीरः), वीरो सो जिणो = वीरजिणो (वीरजिनः), कण्हो य सो पक्खो = कण्हपक्खो (कृष्णपक्षः), सुद्धो सो पक्खो = सुद्ध-पक्खो (शुद्धपक्षः) ।

सेयं अंवरं जेसि ते = सेयंवरा (श्वेताम्बरा:); महंता वाहुणो जस्स सो महावाहू (महाबाहु); पंच वत्ताणि जस्स सो = पंचवत्तो सीहो (पञ्चवक्त्र:); चत्तारि मुहाणि जस्स सो = चउम्मुहो (चतुर्मुख:) ब्रह्मा; तिण्णि नेत्ताणि जस्स सो = तिणेत्तो (त्रिनेत्र:) हरो, एगो दंतो जस्स सो = एगदंतो (एकदन्त:) गणेसो; वीरा नरा जम्मि गामे सो गामो = वीरणरो (वीरनर:), सुत्तो सिंघो जाए गुहाए सा = सुत्तसिंहा गुहा (सुप्तसिंहा गुफा); दिण्णाइं वयाइं जेसि ते = दिण्णवयो साहवो (दत्तव्रता: साधव:); पत्तं नाणं जं सो = पत्तनाणो मुणी (प्राप्तज्ञान: मुनि:) जिओ कामो जेण सो = जिअकामो अकलंओ (जितकामोऽकलङ्क:); नट्ठं दंसणं जत्तो सो = नट्ठदंसणो मुणी (नष्टदर्शनो मुनि:), जिओ अरिगणो जेण सो = जिआरिगणो अजिओ (जितारिगणोऽजित:)।

(३९) व्यधिकरण बहुव्रीहि वह है, जिसके सभी पद प्रथमान्त न हों, केवल एक ही पद प्रथमान्त हो और दूसरा पद षष्ठी या सप्तमी में हो। यथा—

चक्कं पाणिम्मि जस्स सो चक्कपाणी (चक्रपाणि:); चक्कं हत्थे जस्स सो चक्कहत्थो भरहो (चक्रहस्तो भरत:); गंडीवं करे जस्स सो गंडीवकरो अज्जुणो (गाण्डीवकरोऽर्जुन:)।

(२) विशेषणपूर्वपद बहुव्रीहि

(४०) जिस बहुव्रीहि का प्रथम पद विशेषण हो, उसे विशेषणपूर्वपद बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

णीलो कंठो जस्स सो णीलकंठो मोरो (नीलकण्ठो मयूर:)।

(३) उपमानपूर्वपद बहुव्रीहि

(५) जिस बहुव्रीहि का प्रथमपद उपमान हो, उसे उपमानपूर्वपद बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

चन्दो इव मुहं जाए = चंदमुही कन्ना (चन्द्रमुखी कन्या); मियनयणाइं इव नयणाणि जाए सा = मियनयणा (मृगनयना); कमलनयणाइं इव नयणाणि जाए सा = कमलनयणा (कमलनयना); गजाणण इव आणणो जस्स सो = गजाणणो (गजानन); हंसगमणं इव गमणं जाए सा = हंसगमणा (हंसगमना)।

(४) अवधारणपूर्वपद बहुव्रीहि

(६) जिसके पूर्वपद में अवधारणा पायी जाय, उसे अवधारणपूर्वपद बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

चरणं चेअ धणं जाणं = चरणधणा साहवो (चरणधना: साधव:)।

(२) समाहार अर्थ में जो द्विगु समास होता है, वह एकवद्भावी कहलाता है और उसमें सदा नपुंसकलिंग और एकवचन होता है। यथा—

नवण्हं वत्ताणं समाहारो = नववत्तं (नववृत्तम्), चउण्हं कसायाणं समूहो = चउकसायं (चतुष्कषायम्), तिण्हं लोगाणं समूहो = तिलोयं (त्रिलोकम्), तिण्हं लोआणं समूहो = तिलोई (त्रिलोकी);

(३) प्राकृत में कोई-कोई समाहारद्विगु पुल्लिंग भी हो जाता है। यथा—

तिण्हं वियप्पाणं समाहारो त्ति = तिवियप्पो (त्रिविकल्पम्)।

(४) संज्ञा में जो द्विगु होता है, वह अनेकवद्भावी कहलाता है और इसमें वचन और लिंग का कोई नियम नहीं रहता है। यथा—

तिण्णि लोया = तिलोया (त्रिलोकाः), चउरो दिसाओ = चउदिसा (चतुर्दिशः)।

(३) बहुव्रीहि (बहुव्वीहि)

(१) जब समास में आये हुए दो या अधिक पद किसी अन्य शब्द के विशेषण हों तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। यथा—

पीअं अंबरं जस्स सो = पीआंबरो (पीताम्बरः)। इस समास के मुख्य दो भेद हैं—(१) समानाधिकरण बहुव्रीहि और (२) व्यधिकरण बहुव्रीहि। विशेषापेक्षया इसके सात भेद हैं—(१) द्विपद, (२) बहुपद (३) सहपूर्वपद (४) संख्योत्तरपद, (५) संख्योभयपद, (६) व्यतिहारलक्षण (७) दिगन्तराललक्षण।

(१) समानाधिकरण बहुव्रीहि

(२) समानाधिकरण बहुव्रीहि वह है, जिसके दोनों या सभी शब्दों का समान अधिकरण हो अर्थात् वे प्रथमान्त में हों। यथा—

पीअं अंबरं जस्स सो पीआंबरो (पीताम्बरः); आरूढो वाणरो जं रुक्खं सो = आरूढवाणरो रुक्खो (आरूढवानरः वृक्षः); जिआणि इंदियाणि जेण सो = जिइंदियो मुणी (जितेन्द्रियः मुनिः); जिओ कामो जेण सो = जिअकामो महादेवो (जितकामः महादेवः); जिआ परीसहा जेण सो = जिअपरीसहो गोयमो (जितपरीषहः गौतमः), भट्ठो आयारो जाओ सो = भट्ठायारो जणो (भ्रष्टाचारः जनः), नट्ठो मोहो जाओ सो = नट्ठमोहो साहू (नष्टमोहः साधुः); घोरं बंभचेरं जस्स सो = घोरबंभचेरो जंबू (घोरब्रह्मचारी—जम्बूः); समं चउरंसं संठाणं जस्स सो = समचउरंससंठाणो रामो (समचतुरस्रसंस्थानः रामः); कओ अत्थो जस्स सो = कयत्थो कण्हो (कृतार्थः कृष्णः), आसा अंबरं जेसिं ते = आसंबरा (दिगम्बराः);

(४) द्वन्द्व समास (दंद समास)

(१) दो या दो से अधिक संज्ञाएँ एक साथ रखी गई हों और उन्हें च (य) शब्द के द्वारा जोड़ा गया हो तो वह द्वन्द्व समास कहलाता है। इस समास के तीन भेद हैं—

(१) इतरेतर द्वन्द्व। (२) समाहार द्वन्द्व। (३) एकशेष द्वन्द्व।

(१) इतरेतर द्वन्द्व

(२) जिस समास में आई हुई दोनों संज्ञाएँ अपना प्रधान अस्तित्व रखती हों, उस समास को इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। यथा—

पुण्णं य पावं य = पुण्णपावाइं (पुण्यपापे)।
अजिओ अ संती अ = अजियसंतिणो (अजितशान्ती)।
उसहो अ वीरो अ = उसहवीरा (ऋषभवीरौ)।
देवा य दाणवा य गंधव्वा य = देवदाणवगंधव्वा (देवदानवगन्धर्वाः)।
वाणरो अ मोरो अ हंसो अ = वानरमोरहंसा (वानरमयूरहंसाः)।
सावगो अ साविआ य = सावगसाविआओ (श्रावकश्राविके)।
देवा य देवीओ अ = देवदेवीओ (देवदेव्यः)।
सासू अ बहू अ = सासूबहूओ (श्वश्रूवध्वौ)।
भक्खं अ अभक्खं अ = भक्खाभक्खाणि (भक्ष्याभक्ष्ये)।
पत्तं य पुप्फं य फलं य = पत्तपुप्फफलाणि (पत्रपुष्पफलानि)।
जीवा य अजीवा य = जीवाजीवा (जीवाजीवौ)।
सुहं य दुक्खं य = सुहदुक्खाइं (सुखदुःखे)।
सुरा य असुरा य = सुरासुरा (सुरासुराः)।
हत्था य पाया य = हत्थपाया (हस्तपादाः)।
लाहो य अलाहो य = लाहालाहा (लाभालाभौ)।
सारं य असारं य = सारासारं (सारासारम्)।
रूवं य सोहग्गं य जोव्वणं य = रूवसोहग्गजोव्वणाणि (रूपसौभाग्ययौवनानि)।

(२) समाहारद्वन्द्व

(३) जिस समास में अ या य शब्द से जुड़ी हुई संज्ञाएँ अपना पृथक् अर्थ रखने पर भी समूह अर्थ का बोध कराती हों, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। यथा—

असणं य पाणं य एएसिं समाहारो = असणपाणं (अशनपानम्)।
तवो अ संजमो अ एएसिं समाहारो = तवसंजमं (तपःसंयमम्)।
नाणं य दंसणं य चरित्तं य एएसिं समाहारो = नाणदंसणचरित्तं (ज्ञानदर्शनचरित्रम्)।

(५) बहुपद बहुव्रीहि

(७) साधनदशा में दो से अधिक पदों का जो समास होता है, उसे बहुपद बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

धुओ सव्वो किलेसो जस्स सो = धुअसव्वकिलेसो जिणो (धुतसर्वक्लेशो जिनः)।

(६) नञ्, न बहुव्रीहि

(८) निषेध के अर्थवाचक अ और अण के साथ जो बहुव्रीहि समास होता है, उसे नञ् या न बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

न अत्थि भयं जस्स सो = अभयो (अभयः); न अत्थि पुत्तो जस्स सो = अपुत्तो (अपुत्रः); न अत्थि णाहो जस्स सो = अणाहो (अनाथः), न अत्थि पच्छिमो जस्स सो = अपच्छिमो (अपश्चिमः); न अत्थि उयरं जीए सा = अणुयरा (अनुदरा कन्या); नत्थि उत्तमो जस्स सो = अणुत्तमो पुरिसो (अनुत्तमः पुरुषः); नत्थि अवज्जं जस्स सो = अणवज्जो मुणी (अनवद्यो मुनिः)।

(७) सहपूर्व बहुव्रीहि

(९) सह अव्यय जिस बहुव्रीहि समास में हो, उसे सहपूर्वपद बहुव्रीहि कहते हैं। सह अव्यय का तृतीयान्त पद के साथ समास होता है तथा आशीर्वाद अर्थ को छोड़ शेष अर्थों में सह स्थान पर स आदेश होता है। यथा—पुत्रेण सह = सपुत्तो राया (सपुत्रः राजा); सीसेण सह = ससीसो आयरिओ (सशिष्यः आचार्यः); पुण्णेण सह = सपुण्णो लोयो (सपुण्यः लोकः); पावेण सह = सपावो रक्खसो (सपापः राक्षसः); कम्मणा सह = सकम्मो नरो (सकर्मा नरः); फलेण सह = सफलं (सफलम्); मूलेण सह = समूलं (समूलं) चेलेण सह = सचेलं ण्हाणं (सचैलं स्नानम्); कलत्तेण सह = सकलत्तो नरो (सकलत्रं)।

(८) प्रादि बहुव्रीहि

(१०) प, नि, वि, अव, अइ, परि आदि उपसर्गों के साथ जो बहुव्रीहि समास होता है, उसे प्रादि बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

प—पगिट्ठं पुण्णं जस्स सो = पपुण्णो जणो (प्रपुण्यः जनः)।

नि—णिग्गया लज्जा जस्स सो = णिल्लज्जो (निर्लज्जः)।

वि—विगओ धवो जाए सा = विहवा (विधवा)।

अव—अवगतं रूवं जस्स सो = अवरूवो (अपरूपः)।

अइ—अइक्कंतो मग्गो जेण सो = अइमग्गो रहो (अतिमार्गः रथः)।

परि—परिअभं जलं जाए सा = परिजला परिहा (परिजला परिखा)।

निर्—निग्गआ दया जस्स सो = निद्दयो जणो (निर्दयो जनः)।

जोण्हा + आल = जोण्हालो (ज्योत्स्नावान्)

सद्द + आल = सद्दालो (शब्दवान्)

फडा + आल = फडालो (फटावान्)

आलु—ईसा + आलु = ईसालू (ईर्ष्यावान्)

दया + आलु + दयालू (दयालु)

नेह + आलु = नेहालू (स्नेहवान्)

लज्जा + आलु = लज्जालु (लज्जावान्), स्त्री० लज्जालुआ (लज्जावती)

इत्त—कव्व + इत्त = कव्वइत्तो (काव्यवान्)

माण + इत्त = माणइत्तो (मानवान्)

इर—गव्व + इर = गव्विरो (गर्ववान्)

इल्ल—सोहा + इल्ल = सोहिल्लो (शोभावान्)

छाया + इल्ल = छाइल्लो (छायावान्)

जाम + इल्ल = जामइल्लो (यामवान्)

उल्ल—वियार + उल्ल = वियारल्लो (विचारवान्)

वियार + उल्ल = वियारल्लो (विकारवान्)

मंस + उल्ल = मंसुल्लो (श्मश्रुवान्)

दप्प + उल्ल = दप्पुल्लो (दर्पवान्)

मण—धण + मण = धणमणो (धनवान्)

सोहा + मण = सोहामणो (शोभावान्)

बोहा + मण = बोहामणा (भायान)

मंत—हणु + मंत = हणुमंतो (हनुमान्)

सिरि + मंत = सिरिमंतो (श्रीमान्)

पुण्ण + मंत = पुण्णमंतो (पुण्यवान्)

वंत—धण + वंत = धणवंतो (धनवान्)

भत्ति + वंत = भत्तिवंतो (भक्तिमान्)

(१०) संस्कृत के तस् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में त्तो और विकल्प से दो आदेश होते हैं[1]। यथा—

सव्व + तस् (त्तो) = सव्वत्तो, सव्वदो, सव्वओ (सर्वतः)

एक + तस् (त्तो) = एकत्तो, एक्कदो, एकओ (एकतः)

अन्न + तस् (त्तो) = अन्नत्तो, अन्नदो, अन्नओ (अन्यतः)

---

१. त्तो दो तसो वा ८।२।१६० तसः प्रत्ययस्य स्थाने त्तो, दो इत्यादेशौ भवतः।

पुर + इल्ल = पुरिल्लं (पुरे भवम्), स्त्री० पुरिल्ली।
हेट्ठ (अधस्) + इल्ल = हेट्ठिल्लं (अधो भवम्) स्त्री० हेट्ठिल्ली।
उवरि + इल्ल = उवरिल्लं (उपरि भवम्)।

उल्ल—अप्प + उल्ल = अप्पुल्लं (आत्मनि भवम्)।
तरु + उल्ल = तरुल्लं (तरौ भवम्)।
नयर + उल्ल = नयरुल्लं (नगरे भवम्)।

(६) संस्कृत के वत् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में 'व्व' आदेश होता है[1]। यथा—

व्व—महु + व्व = महुव्व (मधुवत्)
महुर + व्व = महुरव्व पाडलिपुत्ते पासाया (मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादाः)

(७) संस्कृत के त्व के स्थान पर प्राकृत में डिमा और त्तण विकल्प से आदेश होते हैं[2]। यथा—

पीण + इमा = पीणिमा (पीनत्वम्)।
पीण + त्तण = पीणत्तणं, पीण + त्त = पीणत्तं (पीनत्वम्)।
पुप्फ + इमा = पुप्फिमा (पुष्पत्वम्)।
पुप्फ + त्तण = पुप्फत्तणं, पुप्फ + त्त = पुप्फत्तं (पुष्पत्वम्)।

(८) वार अर्थ प्रकट करने के लिए—क्रिया की अभ्यावृत्ति की गणना अर्थ में संस्कृत के कृत्वस् प्रत्यय के स्थान पर 'हुत्तं' आदेश होता है[3]। आर्ष प्राकृत में यह प्रत्यय खुत्तं हो जाता है। यथा—

एय + हुत्तं = एयहुत्तं (एककृत्वः—एकवारम्)।
दु + हुत्तं = दुहुत्तं (द्विवारम्)।
ति + हुत्तं = तिहुत्तं (त्रिवारम्)।
सय + हुत्तं = सयहुत्तं (शतवारम्)।
सहस्स + हुत्तं = सहस्सहुत्तं (सहस्रवारम्)।

(९) 'वाला' अर्थ बतलानेवाले संस्कृत के मतुप् प्रत्य के स्थान पर आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त और मन्त आदेश होते हैं[4]।

आल—रस + आल = रसालो (रसवान्)।
जडा + आल = जडालो (जटावान्)।

---

१. वतेर्व्वः ८।२।१५०। २. त्वस्य डिमा-त्तणौ वा ८।२।१५४।
३. कृत्वसो हुत्तं ८।२।१५८। ४. आल्विल्लोल्लाल वन्त-मन्तेत्तेर-मणा मतोः ८।२।१५९।

जोण्हा + आल = जोण्हालो (ज्योत्स्नावान्)
सद्द + आल = सद्दालो (शब्दवान्)
फडा + आल = फडालो (फटावान्)

आलु—ईसा + आलु = ईसालू (ईर्ष्यावान्)
दया + आलु + दयालू (दयालु)
नेह + आलु = नेहालू (स्नेहवान्)
लज्जा + आलु = लज्जालु (लज्जावान्), स्त्री० लज्जालुआ (लज्जावती)

इत्त—कव्व + इत्त = कव्वइत्तो (काव्यवान्)
माण + इत्त = माणइत्तो (मानवान्)

इर—गव्व + इर = गव्विरो (गर्ववान्)

इल्ल—सोहा + इल्ल = सोहिल्लो (शोभावान्)
छाया + इल्ल = छाइल्लो (छायावान्)
जाम + इल्ल = जामइल्लो (यामवान्)

उल्ल—वियार + उल्ल = वियारुल्लो (विचारवान्)
वियार + उल्ल = वियारुल्लो (विकारवान्)
मंस + उल्ल = मंसुल्लो (श्मश्रुवान्)
दप्प + उल्ल = दप्पुल्लो (दर्पवान्)

मण—धण + मण = धणमणो (धनवान्)
सोहा + मण = सोहामणो (शोभावान्)
सोहा + मण = सोहामणो (श्रीवान्)

मंत—हणु + मंत = हणुमंतो (हनुमान्)
सिरि + मंत = सिरिमंतो (श्रीमान्)
पुण्ण + मंत = पुण्णमंतो (पुण्यवान्)

वंत—धण + वंत = धणवंतो (धनवान्)
भत्ति + वंत = भत्तिवंतो (भक्तिमान्)

(१०) संस्कृत के तस् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में त्तो और विकल्प से दो आदेश होते हैं[1] । यथा—

सव्व + तस् (त्तो) = सव्वत्तो, सव्वदो, सव्वओ (सर्वतः)
एक + तस् (त्तो) = एकत्तो, एकदो, एकओ (एकतः)
अन्न + तस् (त्तो) = अन्नत्तो, अन्नदो, अन्नओ (अन्यतः)

---

१. त्तो दो तसो वा ८।२।१६० तसः प्रत्ययस्य स्थाने त्तो, दो इत्यादेशौ भवतः ।

कु + तस् (त्तो) = कुत्तो, कुदो, कुओ (कुतः)

ज + तस् (त्तो) = जत्तो, जदो, जओ (यतः)

त = तस् (त्तो) = तत्तो, तदो, तओ (ततः)

इ + तस् (त्तो) = इत्तो, इदो, इओ (इतः)

(११) संस्कृत के त्रप् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में हि, ह और त्थ प्रत्यय आदेश होते हैं[1]। यथा—

ज + त्र (हि) = जहि, जह, जत्थ (यत्र)

त + त्र (हि) = तहि, तह, तत्थ (तत्र)

क + त्र (हि) = कहि, कह, कत्थ (कुत्र)

अन्न + त्र (हि) = अन्नहि, अन्नह, अन्नत्थ (अन्यत्र)

(१२) स्वार्थिक क प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में विकल्प से अ, इल्ल और उल्ल प्रत्यय आदेश होते हैं[2]। यथा—

अ—चंद + अ = चंदओ, चंदो (चन्द्रकः)

हिअय + अ = हिअयअं, हिअयं (हृदयकम्)

बहुअ + अ = बहुअअं, बहुअं (बहुकम्)

इल्ल—पल्लव + इल्ल = पल्लविल्लो, पल्लवो (पल्लवः)

पुरा + इल्ल = पुरिल्लो, पुरा (पुरा)

उल्ल—पिअ + उल्ल = पिउल्लो, पिआ (पिता)

हत्थ + उल्ल = हत्थुल्लो, हत्थो (हस्तः)

(१३) अंकोठ शब्द को छोड़ शेष बीजवाची शब्दों से लगने वाले तैल प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में 'एल्ल' प्रत्यय जोड़ा जाता है[3]। यथा—

कडु + तेल = कडुएल्लं (कटुतैलम्)।

अंकोठ + तैल = अंकोल्लतेल्लं (अङ्कोठतैल)

(१४) यद्, तद् और एतद् शब्दों से पर में आनेवाले परिमाणार्थक प्रत्यय के स्थान में इत्तिअ आदेश होता है और एतद् शब्द का लुक् भी होता है[4]। यथा—

यत् (ज) + इत्तिअ = जित्तिअं (यावत्)

तद् (त) + इत्तिअ = तित्तिअं (तावत्)

एतद् + इत्तिअ = इत्तिअं (एतावत्)

---

१. त्रपो हि-ह-त्थाः ८।२।१६१ त्रप् प्रत्ययस्य एते भवन्ति।

२. स्वार्थे कश्च वा ८।२।१६४ ३. अनङ्कोठात्तैलस्य डेल्लः ८।२।१५५

४. यत्तदेतदोतोरित्तिअ एतल्लुक् च ८।२।१५६

(१५) इदम्, किम्, यद्, तद् और एतद् शब्दों से पर में आनेवाले परिमाणार्थक प्रत्यय के स्थान में डेत्तिअ, डेत्तिल और डेद्दह आदेश होते हैं। इन प्रत्ययों के आने पर एतद् शब्द का लुक् हो जाता है[1]। यथा—

ज + एत्तिअ = जेत्तिअं ज + एत्तिल = जेत्तिलं ज + एद्दह = जेद्दहं	यावत्
त + एत्तिअ = तेत्तिअं त + एद्दिल = तेद्दिलं त + एत्तह = तेत्तहं	तावत्
एत + एत्तिअ = एत्तिअं एत + एत्तिल = एत्तिलं एत + एद्दह = एद्दहं	एतावत्, इयत्
क + एत्तिअ = केत्तिअं क + एत्तिल = केत्तिलं क + एद्दह = केद्दहं	कियत्

(१६) भाववाचक संस्कृत के त्व और तल प्रत्यय के स्थान पर ये ही प्रत्यय रह जाते हैं[2]। यथा—

मृदुक + त्व = मउअत्त + ता = मउअत्तता, मउअत्तया (मृदुकत्वता)।

(१७) एक शब्द के उत्तर में होनेवाले दा प्रत्यय के स्थान में सि, सिअं और इआ आदेश होते हैं[3]। यथा—

एक + सि = एक्कसि एक + सिअं = एक्कसिअं एक + इआ = एक्कइआ	एकदा

(१८) भ्रू शब्द से स्वार्थ में मया और डमया ये दो प्रत्यय होते हैं[4]। यथा—

भ्रू (भु) + मया = भुमया भ्रू (भ) + डमया = भमया	भ्रूः

(१९) शनि शब्द से स्वार्थिक डिअम् प्रत्यय होता है[5]। यथा—

---

१. इदकिमश्च डेत्तिअ-डेत्तिल-डेद्दहाः ८।२।१५७

२. त्वादेः सः ८।२।१७२

३. वैकाद्दः सि सिअं इआ ८।२।१६२

४. भ्रुवो मया डमया ८।२।१६७

५. शनैसो डिअम् ८।२।१६८

शनैः + इअ = सणिअं (शनैः), सणिअमवगूढो ।

(२०) मनाक् शब्द से स्वार्थिक डयम् और डिअम् प्रत्यय विकल्प से होते हैं[1] । यथा—

मनाक् (मण) + अय = मणयं
मनाक् (मण) + इय = मणियं, मणा } मनाक्

(२१) मिश्र शब्द से स्वार्थिक डालिअ प्रत्यय विकल्प से होता है[2] । यथा—

मिश्र (मीस) + आलिअ = मीसालिअं, मीसं (मिश्रम्)

(२२) दीर्घ शब्द से स्वार्थिक रो प्रत्यय विकल्प से होता है[3] । यथा—

दीर्घ (दीह) + र = दीहरं, दीहं (दीर्घम्)

(२३) विद्युत्, पत्र, पीत और अन्ध शब्द से स्वार्थ में ल प्रत्यय विकल्प से होता है[4] । यथा—

विद्युत् (विज्जु) + ल = विज्जुला, विज्जू (विद्युत्)
पत्र (पत्त) + ल = पत्तलं, पत्तं (पत्रम्)
पीत (पीअ) + ल = पीअलं, पीवलं, पीअं (पीतम्)
अन्ध + ल = अंधलो, अंधो (अन्धः)

(२४) नव और एक शब्द को स्वार्थ में विकल्प से ल्लो प्रत्यय होता है[5] । यथा—

नव + ल्ल—नवल्लो, नवो (नवकः)
एक + ल्ल = एकल्लो, एक्को (एककः)
अवरि + ल्ल = अवरिल्लो

(२५) पथ शब्द से होने वाले ण के स्थान में इकट् प्रत्यय होता है[6] । यथा—

पह + इअ = पहिओ (पान्थः)

(२६) आत्म शब्द से होनेवाले ईय के स्थान में णय आदेश होता है[7] । यथा—

अप्प + णय = अप्पणयं (आत्मीयम्)

---

१. मनाको न वा डयं च ८।२।१६९　　२. मिश्राड्डालिअः ८।२।१७०
३. रो दीर्घात् ८।२।१७१　　४. विद्युत्पत्र-पीतान्धाल्लः ८।२।१।१७३
५. ल्लो नवैकाद्वा ८।२।१६५　　६. पथो णस्येकट् ८।२।१५२
७. ईयस्यात्मनो णयः ८।२।१५३

(२) सर्वाङ्ग शब्द से विहित इन के स्थान में इक आदेश होता है[1]। यथा—
सव्वंग + इअ = सव्वंगिओ (सर्वाङ्गीणः)

(२८) पर और राजन् शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए क्क प्रत्यय होता है[2]। यथा—

पर + क्क = परक्कं (परकीयम्)

राय + क्क = राइक्कं (राजकीयम्)

(२९) संस्कृत तद्धितान्त रूपों के ऊपर से प्राकृत के रूप बनाये जाते हैं। यथा—

धनिन् = धनी — धणी	कानीनः = काणीणो
आर्थिकः = अत्थिओ	मदीयम् = मईयं
तपस्विन् = तपस्वी = तवस्सी	पीनता = पीणया
भैक्षम् = भिक्खं	राजन्यः = रायण्णो
आस्तिकः = अत्थिओ	कौशेयम् = कोसेयं
आर्षम् = आरिसं	पितामहो = पिआमहो

यदा = जया; कदा = कया, सर्वदा = सव्वया, तदा = तया, अन्यदा = अण्णदा; सर्वथा = सव्वहा।

तर और तम प्रत्यय

प्राकृत में एक से श्रेष्ठ और सबसे श्रेष्ठ का भाव बतलाने के लिए तर (अर), तम (अम), ईयस् (ईअस) और इष्ठ (इट्ठ) का प्रयोग संस्कृत के समान ही होता है। इन तुलनात्मक विशेषणों की (Degree of Comparison) की तालिका दी जाती है।

तिक्ख (तीक्ष्ण)	तिक्खअर (तीक्ष्णतर)	तिक्खअम (तीक्ष्णतम)
उज्जल (उज्ज्वल)	उज्जलअर (उज्ज्वलतर)	उज्जलअम (उज्ज्वलतम)
परगहिय (प्रगृहीत)	परगहियअर (प्रगृहीततर)	परगहियतम (प्रगृहीततम)
थोव (स्तोक)	थोवअर (स्तोकतर)	थोवअम (स्तोकतम)
अप्प (अल्प)	अप्पअर (अल्पतर)	अप्पअम (अल्पतम)
अहिअ (अधिक)	अहिअअर, अहिअइर (अधिकतर)	अहिअअम, अहिअयम (अधिकतम)
पिअ (प्रिय)	पिअअर (प्रियतर)	पिअअम (प्रियतम)
लहु, लहु (लघु)	लहुअर (लघुतर)	लहुअम (लघुतम)

---

1. सर्वाङ्गादीनस्येकः ८।२।१५१ 2. पर-राजभ्यां क्क-डिक्कौ च ८।२।१४८

अप्प (अल्प)	कणीअस (कनीयस्)	कणिट्ठ, कणिट्ठग (कनिष्ठ)
बहु	भूयस (भूयस्)	भूइट्ठ (भूयिष्ठ)
पावी (पापी)	पावीयस (पापीयस्)	पाविट्ठ (पापिष्ठ)
गुरु	गरीयस (गरीयस्)	गरिट्ठ (गरिष्ठ)
जेट्ठ (ज्येष्ठ)	जेट्ठयर (ज्येष्ठतर)	जेट्ठयम (ज्येष्ठतम)
विउल (विपुल)	विउलअर	विउलअम (विपुलतम)
पडु (पटु)	पडीअस, पडुअर (पटीयस्)	पडिट्ठ, पडुअम (पटुतम)
धणी (धनी)	धणिअर	धणिअम
महा	महत्तर	महत्तम
वुड्ढ (वृद्ध)	जायस (ज्यायस्)	जेट्ठ (ज्येष्ठ)
थूल (स्थूल)	थूलअर (स्थूलतर)	थूलअम (स्थूलतम)
बहुल	बंहीअस (बंहीयस्)	बंहिट्ठ (बंहिष्ठ)
दीहर (दीर्घ)	दीहरअस (दीर्घतर)	दीहरअम (दीर्घतम)
अंतिम (अन्तिम)	नेदीअस (नेदीयस्)	नेदिट्ठ (नेदिष्ठ)
दूर	दवीअस (दवीयस्)	दविट्ठ (दविष्ठ)
पाचअ (पाचक)	पाचअअर (पाचकतर)	पाचअअम (पाचकतम)
विउस (विद्वान्)	विउसअर (विद्वत्तर)	विउसअम (विद्वत्तम)
मिउ (मृदु)	मिउअर (मृदुतर)	मिउअम (मृदुतम)
धम्मी (धर्म्मी)	धम्मीअस (धर्मीयस्)	धम्मिट्ठ (धर्मिष्ठ)
खुद्द (क्षुद्र)	खुद्दअर (क्षुद्रतर)	खुद्दअम (क्षुद्रतम)
मइम (मतिमान्)	मईअस (मतीयस्)	मइट्ठ (मतिष्ठ)

नवाँ अध्याय

क्रियाविचार

प्राकृत में क्रिया शब्दों के मूल रूप को धातु कहते हैं। धातुओं में विविध प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया के रूप बनते हैं।

प्राकृत में क्रियारूपों के विकास पर सादृश्य का प्रभाव संज्ञा आदि रूपों की अपेक्षा और भी अधिक व्यापक रूप में मिलता है। द्विवचन का लोप, कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के रूपों का प्रायः एकीकरण, आत्मनेपद के रूपों का ह्रास, विविध काल रूपों में अनुरूपता, क्रिया के विभिन्न रूपों में ध्वनिपरिवर्तन के कारण समानता आदि प्राकृत के क्रियाविकास की कुछ मुख्य विशेषताएँ हैं। संस्कृत धातुएँ भ्वादि, अदादि, जुहोत्यादि, स्वादि, तुदादि, रुधादि, तनादि, क्र्यादि और चुरादि इन दश गणों में विभक्त हैं। इन गणों के अनुसार ही विभक्तियों के जुड़ने के पूर्व धातु में परिवर्तन होता है। परन्तु इन सबमें भ्वादि रूपों की ही व्यापकता प्राकृत के क्रियापदों के विकास में मिलती है। कालरचना की दृष्टि से वर्तमान, भूत, आज्ञा, विधि, भविष्य और क्रियातिपत्ति के प्रयोग प्राकृत में दिखलायी पड़ते हैं। सहायक क्रिया के साथ कृदन्त रूपों का व्यवहार बहुलता से उपलब्ध होता है। अतएव यह कहा जा सकता है कि सादृश्य और ध्वनिविकास के कारण क्रिया के रूप अधिक सरल हो गये हैं। संस्कृत के समान क्रियारूपों में पेचीदगी नहीं है।

क्रियारूपों की जानकारी के सम्बन्ध में निम्न नियम स्मरणीय हैं—

(१) प्राकृत में तिप् आदि प्रत्ययों को तिङ् कहते हैं। अकारान्त धातुओं को छोड़कर शेष धातुओं में आत्मनेपदी और परस्मैपदी का भेद नहीं माना जाता। हाँ, अदन्त या अकारान्त धातुएँ उभयपदी होती हैं।

(२) अकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के प्रथम और मध्यम पुरुष एकवचन के स्थान में क्रमशः ए और से आदेश विकल्प से होते हैं। यथा—तुवरए < त्वरते, तुवरसे < त्वरसे।

(३) अदन्त धातुओं से 'मि' के पर में रहने पर पूर्व के 'अ' का आत्व विकल्प से होता है। यथा—हसामि, हसमि इत्यादि।

(४) अकारान्त धातुओं से मो, मु और म पर में रहें तो पूर्व के अकार के स्थान में इ और आ होते हैं। कहीं-कहीं ए भी हो जाता है। यथा—हसिमो, हसामो, हसेमो, हसिमु, हसेमु इत्यादि।

(५) स्वरान्त धातु से भूतकाल में सभी पुरुषों और वचनों में विहित प्रत्ययों के स्थान पर ही, सी और हीअ आदेश होते हैं। यथा—काही, कासी, काहीअ; ठाही, ठासी और ठाहीअ (आकार्षीत्, अकरोत्, चकार; अस्थात्, अतिष्ठत्, तस्थौ)।

(६) व्यञ्जनान्त धातुओं से भूतकाल में विहित सभी प्रत्ययों के स्थान में इअ आदेश होता है। यथा—गहणीअ < अग्रहीत्, अगृह्णात्, जग्राह।

(७) अस धातु के सभी पुरुषों के एकवचन में आसि और बहुवचन में अहेसि आदेश होता है।

(८) वर्तमानकाल और आज्ञार्थ धातुओं में अन्त्य अ हो तो विकल्प से प्रत्यय के पूर्ववर्ती उस अ को विकल्प से ए हो जाता है। यथा—हसेइ < हसति।

(९) वर्तमानकाल के समान ही भविष्यत् काल के प्रत्यय होते हैं, किन्तु मि, मो, मु, म प्रत्ययों से पूर्व विकल्प से हिस्सा और हित्था आदेश होते हैं।

(१०) धातु से परे भविष्यत् काल के मि प्रत्यय के स्थान पर स्सं विकल्प से होता है।

(११) भविष्यत्काल में पूर्व अ के स्थान पर इ और ए होता है।

(१२) विधि और आज्ञार्थ में धातु से पर इज्जसु, इज्जहि, इज्जे प्रत्यय जोड़े जाते हैं। प्रत्यय का लोप होने से धातु का मूल रूप ज्यों का त्यों भी शेष रह जाता है।

(१३) क्रियातिपत्ति में ज्ज, ज्जा, न्त और माण प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

(१४) क्रियातिपत्ति में ज्ज, ज्जा प्रत्यय जोड़ने के पूर्व सभी पुरुष और सभी वचनों में अकार को एत्व हो जाता है।

कर्त्तरि में धातुओं के विकरणों के नियम

(१५) व्यञ्जनान्त में अ विकरण जोड़ने के अनन्तर प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा—

भण् + अ—भण + इ = भणइ < भणति
कह् + अ—कह, कह + इ = कहइ < कथयति
सम् + अ—सम, सम + इ = समइ < शाम्यति
हस् + अ—हस, हस + इ = हसइ < हसति
आव् + अ—आव, आव + इ = आवइ < आप्नोति
सिंच् + अ—सिंच, सिंच + इ = सिंचइ < सिञ्चति
रुन्ध् = अ—रुन्ध, रुन्ध + रुन्ध + इ = रुन्धइ < रुणद्धि
मुस् + अ—मुस, मुस + इ = मुसइ < मुष्णाति
तण् + अ—तण, तण + इ = तणइ < तनोति

(१६) अकारान्त धातुओं के अतिरिक्त शेष स्वरान्त धातुओं में अ विकरण विकल्प से जुड़ता है। यथा—

पा + अ—पाअ, पाअ + इ = पाअइ, पा + इ = पाइ < पाति
जा + अ—जाअ, जाअ + इ = जाअइ; जा + इ = जाइ < याति
धा + अ—धाअ, धाअ + इ = धाअइ; धा + इ = धाइ < धयति, धावति, दधाति
झा + अ—झाअ, झाअ + इ = झाअइ; झा + इ = झाइ < ध्यायति
जंभा + अ—जंभाअ, जंभाअ + इ = जंभाअइ; जंभा + इ = जंभाइ < जम्भते
वा + अ—वाअ, वाअ + इ = वाअइ, वा + इ = वाइ < वाति
मिला + अ—मिलाअ, मिलाअ + इ = मिलाअइ, मिला + इ = मिलाइ < म्लायति
विक्की—विके + अ—विकेअ, विकेअ + इ = विकेअइ, विके + इ = विकेइ < विक्रीणाति
हो + अ—होअ, होअ + इ = होअइ, हो + इ = होइ < भवति

(१७) उकारान्त धातुओं में उ के स्थान पर उव आदेश होने के अनन्तर अ विकरण जोड़ा जाता है। यथा—

ण्हु—ण्हव् + अ—ण्हव + इ = ण्हवइ < ह्नुते
नि + ण्हु—निण्हव् + अ = निण्हव + इ = निण्हवइ < निह्नुते
हु—हव्, हव् + अ—हव + इ = हवइ < जुहोति
चु—चव्, चव् + अ = चव + इ = चवइ < च्यवते
रु—रव्—रव् + अ = रव + इ = रवइ < रौति
कु—कव्, कव् + अ = कव + इ = कवइ < कौति
सू—सव् + अ = सव + इ = सवइ < सूते, पसवइ < प्रसूते

(१८) ऋकारान्त धातुओं में ऋ के स्थान पर अर् हो जाने के अनन्तर अ विकरण जोड़ा जाता है। यथा—

कृ—कर्, कर् + अ = कर, कर + इ = करइ < करोति
धृ—धर्, धर् + अ = धर + इ = = धरइ < धरति
मृ—मर्, मर् + अ = मर + इ = मरइ < म्रियते
वृ—वर्, वर् + अ = वर + इ = वरइ < वृणोति, वृणुते
सृ—सर्, सर् + अ = सर + इ = सरइ < सरति
हृ—हर्, हर् + अ = हर + इ = हरइ < हरति
तृ—तर्, तर् + अ = तर + इ = तरइ < तरति

(१९) उपान्त्य ऋ वर्णवाली धातुओं में ऋकार के स्थान पर अरि आदेश होता है, पश्चात् अ विकरण जोड़ा जाता है। यथा—

कृष्—कृ = करि—करिस् + अ = करिस + इ = करिसइ < कर्षति

मृष्—मरिस् + अ = मरिस + इ = मरिसइ < मृष्यते

वृष्—वरिस् + अ = वरिस + इ = वरिसइ < वर्षति

हृष्—हरिस् + अ = हरिस + इ = हरिसइ < हृष्यति

(२०) इकारान्त और उकारान्त धातुओं में इकार के स्थान पर ए और उकार के स्थान पर ओ होता है। यथा—

नी—ने + इ = नेइ < नयति, नेंति < नयन्ति

उड्डी—उड्डे + इ = उड्डेइ < उड्डयते, उड्डेंति < उड्डयन्ते

(२१) कुछ व्यञ्जनान्त धातुओं के उपान्त्य स्वर को दीर्घ होता है। यथा—

रुष्—रुस्—रूस + इ = रूसइ < रुष्यति

तुष्—तुस्—तूस + इ = तूसइ < तुष्यति

शुष्—सुस्—सूस + इ = सूसइ < शुष्यति

पुष्—पुस्—पूस + इ = पूसइ < पुष्यति

शिष् = सीस + इ = सीसइ < शिष्यते

(२२) धातुओं के नियत स्वर के स्थान पर प्रयोगानुसार अन्य स्वर होता है।

हवइ—हिवइ < भवति

चिणइ—चुणइ < चिनोति

सद्दहणं—सद्दहाणं < श्रद्धानम्

धावइ—धुवइ < धावति

दा—दे—देइ < ददाति, दाति

ला—ले—लेइ < लाति

विहा—विहे—विहेइ < विदधाति, विभाति

ब्रू—बे—बेमि < ब्रवीमि

(२३) कुछ धातुओं के अन्त्य व्यञ्जन को द्वित्व होता है। यथा—

फुडइ, फुट्टइ < स्फुटति

चलइ, चल्लइ < चलति

निमीलइ, निमिल्लइ < निमीलति

संमीलइ, उम्मिल्लइ < सम्मीलति

जिम्मइ

परिअट्टइ < पर्यटति

सक्कइ < शक्नोति

तुट्टइ < त्रुटति

नट्टइ < नटति

नस्सइ < नश्यति

कुप्पइ < कुप्यति, नृत्यति

(२४) कुछ धातुओं में संस्कृत के विकरण लुप्त जाने पर य के स्थान में ज आदेश होता है। यथा—

संपज्जइ < सम्पद्यते, खिज्जइ < स्विद्यति; खिज्जइ < खिद्यते

वर्तमानकाल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष (Third Person)	इ, ए	न्ति, न्ते, इरे
मध्यम पुरुष (Second Person)	सि, से	इत्था, ह
उत्तम पुरुष (First Person)	मि	मो, मु, म

भूतकाल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन	
प्र० पु०	ईअ	ईअ	व्यञ्जनान्त धातुओं के लिए
म० पु०	ईअ	ईअ	,, ,,
उ० पु०	ईअ	ईअ	,, ,,

स्वरान्त धातुओं में तीनों पुरुष और दोनों वचनों में सी, ही, हीअ ये तीन प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

भविष्यत्काल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हिइ, हिए	हिन्ति, हिन्ते, हिरे
म० पु०	हिसि, हिसे	हित्था, हिह
उ० पु०	स्सं, स्सामि, हामि, हिमि	स्सामो, हामो, हिमो, स्सामु, हामु, हिमु, स्साम, हाम, हिम, हिस्सा, हित्था

विधि और आज्ञार्थक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उ	न्तु
म० पु०	हि, सु	ह
उ० पु०	मु	मो

इज्जसु, इज्जहि और इज्जे प्रत्यय भी अकारान्त धातुओं में जोड़े जाते हैं और प्रत्यय का लोप भी होता है।

क्रियातिपत्ति के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ज्ज, ज्जा, न्त, माण	ज्ज, ज्जा, न्त, माण
म० पु०	,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,,	,, ,,

(२९) वर्तमान का अर्थ बतलाने के लिए वर्तमानकाल; अतीत—भूत का अर्थ बतलाने के लिए भूत; भविष्य का अर्थ प्रकट करने के लिए भविष्यत्काल; सम्भावना (Possibility) या संशय (Doubt) विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, अधीष्ट (Speaking of honorary Duty), संप्रश्न (Questioning) और प्रार्थना; इच्छा, आशीर्वाद, आज्ञा, शक्ति (Ability) एवं आवश्यकता (Necessity) अर्थ में विधि या अनुज्ञा का प्रयोग और जब परस्पर संकेतवाले दो वाक्यों का एक संकेत-वाक्य बने और उसका बोध करानेवाली क्रिया कोई सांकेतिक क्रिया जब अशक्य प्रतीत हो, तब क्रियातिपत्ति का प्रयोग होता है। क्रियातिपत्ति में क्रिया की अतिपत्ति (असम्भवता) की सूचना मिलती है। The Conditional is used instead of the potential, when the non-performance of an action is implied.

उभयपदी हस् धातु

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसइ, हसए	हसन्ति, हसन्ते, हसिरे
म० पु०	हससि, हससे	हसित्था, हसह
उ० पु०	हसामि, हसमि	हसिमो, हसामो, हसमो, हसिमु, हसामु, हसमु, हसिम, हसाम, हसम

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसेइ	हसेन्ते, हसेइरे
म० पु०	हसेसि	हसेइत्था, हसेह
उ० पु०	हसेमि	हसेमो, हसेमु, हसेम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसीअ	हसीअ
म० पु०	,,	,,
उ० पु०	,,	,,

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसिहिइ, हसिहिए	हसिहिन्ति, हसिहिन्ते, हसिहिरे
म० पु०	हसिहिसि, हसिहिसे	हसिहित्था, हसिहिह

उ० पु०	हसिस्सं, हसिस्सामि हसिहामि, हसिहिमि	हसिस्सामो, हसिहामो, हसिहिमो; हसिस्सामु, हसिहामु, हसिहिमु; हसिस्साम, हसिहाम, हसिहिम; हसिहिस्सा, हसिहित्था

विधि और आज्ञार्थकरूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसउ	हसन्तु
म० पु०	हसहि, हससु, हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसज्जे, हस	हसह
उ० पु०	हसिमु, हसामु, हसमु	हसिमो, हसामो हसमो

आज्ञार्थ में एत्व हो जाता है—

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसेउ	हसेन्तु
म० पु०	हसेहि, हसेसु	हसेह
उ० पु०	हसेमु	हसेमो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसेज्ज, हसेज्जा, हसन्तो, हसमाणो	हसेज्ज, हसेज्जा, हसन्तो, हसमाणो
म० पु०	,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,,	,, ,,

हो<भू धातु के रूप—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होइ	होन्ति, होन्ते, होइरे
म० पु०	होसि	होइत्था, होइ
उ० पु०	होमि	होमो, होमु, होम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होसी, होही, होहीअ	होसी, होही, होहीअ
म० पु०	,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,,	,,

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होहिइ	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिरे
म० पु०	होहिसि	होहित्था, होहिह
उ० पु०	होस्सं, होस्सामि होहामि, होहिमि	होस्सामो, होहामो, होहिमो; होस्सामु, होहामु, होहिमु; होस्साम, होहाम, होहिम; होहिस्सा, होहित्था

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होउ	होन्तु
म० पु०	होहि, होसु	होह
उ० पु०	होमु	होमो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होज्ज, होज्जा, होन्तो, होमाणो	होज्ज, होज्जा, होन्तो, होमाणो
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

ठा<स्था धातु (=ठहरना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाइ	ठान्ति, ठान्ते, ठाइरे
म० पु०	ठासि	ठाइत्था, ठाह
उ० पु०	ठामि	ठामो, ठामु, ठाम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठासी, ठाही, ठाहीअ	ठासी, ठाही, ठाहीअ
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाहिइ	ठाहिन्ति, ठाहिन्ते, ठाहिरे
म० पु०	ठाहिसि	ठाहित्था, ठाहिह

उ० पु०	ठाहामि, ठाहिमि	ठास्सामु, ठाहामु, ठाहिमु, ठास्साम, ठाहाम, ठाहिम, ठाहिस्सा, ठाहित्था

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाउ	ठान्तु
म० पु०	ठाहि, ठासु	ठाह
उ० पु०	ठामु	ठामो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाज्ज, ठाज्जा, ठान्तो, ठामाणो	ठाज्ज, ठाज्जा, ठान्तो, ठामाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

झा<ध्यै (= ध्यान करना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	झाइ	झान्ति, झान्ते, झाइरे
म० पु०	झासि	झाइत्था, झाह
उ० पु०	झामि	झामो, झामु, झाम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	झासी, झाही, झाहीअ	झासी, झाही, झाहीअ
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	झाहिइ	झाहिन्ति, झाहिन्ते, झाइरे
म० पु०	झाहिसि	झाहित्था, झाहिह
उ० पु०	झास्सं, झास्सामि	झास्सामो, झाहामो, झाहिमो; झास्सामु, झाहामु, झाहिमु, झास्साम, झाहाम, झाहिम; झाहिस्सा, झाहित्था

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	झाउ	झान्तु
म० पु०	झाहि, झासु	झाह
उ० पु०	झासु	झामो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	झाज्ज, झाज्जा, झान्तो, झामाणो	झाज्ज, झाज्जा, झान्तो, झामणो
म० पु०	,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,,	,, ,,

ने<नी (=ले जाना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेइ	नेन्ति, नेन्ते, नेइरे
म० पु०	नेसि	नेइत्था, नेह
उ० पु०	नेमि	नेमो, नेमु, नेम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेसी, नेही, नेहीअ	नेसी, नेही, नेहीअ
म० पु०	,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,,	,, ,,

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेहिइ	नेहिन्ति, नेहिन्ते, नेहिरे
म० पु०	नेहिसि	नेहित्था, नेहिह
उ० पु०	नेस्सं, नेस्सामि, नेहामि, नेहिमि	नेस्सामो, नेहामो, नेहिमो, नेस्सामु, नेहामु, नेहिमु; नेस्साम, नेहाम, नेहिम, नेहिस्सा, नेहित्था

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नेउ	नेन्तु
म० पु०	नेहि, नेसु	नेह
उ० पु०	नेसु	नेमो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन				बहुवचन			
प्र० पु०	नेज्ज,	नेज्जा,	नेन्तो,	नेमाणो	नेज्ज,	नेज्जा,	नेन्तो,	नेमाणो
म० पु०	,,	,,			,,	,,		
उ० पु०	,,	,,			,,	,,		

उड्डे < उड्डी (= उड़ना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उड्डेइ	उड्डेन्ति, उड्डेन्ते, उड्डेइरे
म० पु०	उड्डेसि	उड्डेइत्था, उड्डेह
उ० पु०	उड्डेमि	उड्डेमो, उड्डेमु, उड्डेम

भूतकाल

	एकवचन			बहुवचन		
प्र० पु०	उड्डेसी,	उड्डेही,	उड्डेहीअ	उड्डेसी,	उड्डेही,	उड्डेहीअ
म० पु०	,,	,,		,,	,,	
उ० पु०	,,	,,		,,	,,	

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उड्डेहिइ	उड्डेहिन्ति, उड्डेहिन्ते, उड्डेहिरे
म० पु०	उड्डेहिसि	उड्डेहित्था, उड्डेहिह
उ० पु०	उड्डेस्सं, उड्डेस्सामि, उड्डेहामि, उड्डेहिमि	उड्डेस्सामो, उड्डेहामो, उड्डेहिमो; उड्डेस्सामु, उड्डेहामु, उड्डेहिमु; उड्डेस्साम, उड्डेहाम, उड्डेहिम

विधि एवं आज्ञार्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उड्डेउ	उड्डेन्तु
म० पु०	उड्डेहि, उड्डेसु	उड्डेह
उ० पु०	उड्डेमु	उड्डेमो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन				बहुवचन			
प्र० पु०	उड्डेज्ज;	उड्डेज्जा,	उड्डेन्तो,	उड्डेमाणो	उड्डेज्ज,	उड्डेज्जा,	उड्डेन्तो,	उड्डेमाणो
म० पु०	,,	,,			,,	,,		
उ० पु०	,,	,,			,,	,,		

पा पाने (= पीना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाइ	पान्ति, पान्ते, पाइरे
म० पु०	पासि,	पाइत्था, पाह
उ० पु०	पामि	पामो, पामु, पाम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पासी, पाही, पाहीअ	पासी, पाही, पाहीअ
म० पु०	,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,,	,, ,,

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाहिइ	पाहिन्ति, पाहिन्ते, पाहिरे
म० पु०	पाहिसि	पाहित्था, पाहिह
उ० पु०	पस्सं, पास्सामि; पाहामि, पाहिमि	पास्सामो, पाहामो, पाहिमो, पास्सामु, पाहामु, पाहिसु, पास्साम, पाहाम, पाहिम, पाहिस्सा, पाहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाउ	पान्तु
म० पु०	पाहि, पासु	पाह
उ० पु०	पामु	पामो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाज्ज, पाज्जा, पान्तो, पामाणो	पाज्ज, पाज्जा, पान्तो, पामाणो
म० पु०	,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,,	,, ,,

ण्हा<स्ना (स्नान करना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हाइ	ण्हान्ति, ण्हान्ते, ण्हाइरे
म० पु०	ण्हासि	ण्हाइत्था, ण्हाह
उ० पु०	ण्हामि	ण्हामो, ण्हामु, ण्हाम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हासी, ण्हाही, ण्हाहीअ	ण्हासी, ण्हाही, ण्हाहीअ
म० पु०	,, ,,	,, ,,
पु० पु०	,, ,,	,, ,,

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हाहिइ	ण्हाहिन्ति, ण्हाहिन्ते, ण्हाहिरे
म० पु०	ण्हाहिसि	ण्हाहित्था, ण्हाहिह
उ० पु०	ण्हास्सं, ण्हास्सामि; ण्हाहिमि, ण्हाहामि	ण्हास्सामो, ण्हाहामो, ण्हाहिमो; ण्हास्सामु, ण्हाहामु, ण्हाहिमु, ण्हास्साम, ण्हाहाम, ण्हाहिम; ण्हाहिस्सा, ण्हाहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ण्हाउ	ण्हान्तु
म० पु०	ण्हाहि, ण्हासु	ण्हाह
उ० पु०	ण्हामु	ण्हामो

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र०, म०, उ० पु० ण्हज्ज, ण्हज्जा, ण्हान्तो, ण्हामाणो

गा—गै (गाना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पुं०	गाइ	गान्ति, गान्ते, गाइरे
म० पु०	गासि	गाइत्था, गाह
उ० पु०	गामि	गामो, गामु, गाम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र०, म०, उ० पु०—

गासी, गाही, गाहीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गाहिइ	गाहिन्ति, गाहिन्ते, गाहिरे
म० पु०	गाहिसि	गाहित्था, गाहिह
उ० पु०	गास्सं, गास्सामि; गाहामि, गाहिमि	गास्सामो, गाहामो, गाहिमो; गास्सामु, गाहामु, गाहिमु; गास्साम, गाहाम, गाहिम; गाहिस्सा, गाहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गाउ	गान्तु
म० पु०	गाहि, गासु	गाह
उ० पु०	गामु	गामो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन				बहुवचन			
प्र० पु०	गाज्ज,	गाज्जा,	गान्तो,	गामाणो	गाज्ज,	गाज्जा,	गान्तो,	गामाणो
म० पु०	,,	,,	,,	,,				
उ० पु०	,,	,,	,,	,,				

(२९) अकारान्त धातुओं के अतिरिक्त अन्य स्वरान्त धातुओं में विकल्प से विकरण अ प्रत्यय जुड़ने के पश्चात् विभक्तिचिन्ह जोड़ा जाता है। यथा—

भा—भा + अ = भाअ + इ = भाअइ, विकल्पाभाव पक्ष में भा + इ = भाइ
या—जा + अ = जाअ + इ = जाअइ, विकल्पाभाव में जा + इ = जाइ
पा—पा + अ = पाअ + इ = पाअइ, पा + इ = पाइ
ध्यै—झा + अ = झाअ + इ = झाअइ, झा + इ = झाइ
धा—धा + अ = धाअ + इ = धाअइ, धाइ
उद् + वा — उव्वा + अ = उव्वाअ + इ = उव्वाअइ, उव्वाइ
म्लै—मिला + अ = मिलाअ + इ = मिलाअइ, मिलाइ
वि + क्री—विके + अ = विकेअ + इ = विकेअइ, विकेइ

(२६) वर्तमान, भविष्यत् तथा विधि एवं आज्ञार्थ में स्वरान्त धातुओं में प्रत्ययों से पूर्व तथा प्रत्ययों के स्थान पर विकल्प से ज्ज, ज्जा आदेश होता है। यथा—

हो—भू—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होज्जइ, होज्जाइ होज्ज, होज्जा	होज्जन्ति, होज्जन्ते, होज्जिरे होज्ज, होज्जा
म० पु०	होज्जसि, होज्जासि होज्ज, होज्जा	होज्जित्था, होज्जह, होज्जाह होज्ज, होज्जा
उ० पु०	होज्जमि, होज्जामि होज्ज, होज्जा	होज्जमो, होज्जामो, होज्ज, होज्जा; होज्जमु, होज्जाम, होज्ज, होज्जा, होज्जम, होज्जाम, होज्ज, होज्जा

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होज्जहिइ, होज्जाहिइ, होज्ज, होज्जा	होज्जहिन्ति, होज्जाहिन्ति, होज्जहिन्ते, होज्जाहिन्ते, होज्जहिरे, होज्जाहिरे, होज्ज, होज्जा
म० पु०	होज्जहिसि, होज्जाहिसि, होज्ज, होज्जा	होज्जहित्था, होज्जाहित्था, होज्जहिह, होज्जाहिह, होज्ज, होज्जा
उ० पु०	होज्जस्सं, होज्जस्सामि, होज्जहामि, होज्जाहामि; होज्जहिमि, होज्जाहिमि, होज्ज, होज्जा	होज्जस्सामो, होज्जहामो, होज्जाहामो, होज्जाहिमो, होज्जस्सामु, होज्जहामु, होज्जाहामु, होज्जहिमु, होज्जाहिमु, होज्जहिस्सा, होज्जाहिस्सा, होज्जहित्था, होज्जाहित्था, होज्ज, होज्जा

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रवउ, रवेउ	रवन्तु, रवेन्तु
म० पु०	रवहि, रवसु, रवेहि, रवेसु, रवेज्जहि, रवेज्जे, रव	रवह, रवेह
उ० पु०	रविमु, रवेमु, रवामु, रवमु	रविमो, रवामो, रवमो, रवेमो

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रवेज्ज, रवेज्जा, रवन्तो, रवमाणो	रवेज्ज, रवेज्जा, रवन्तो, रवमाणो
म० पु०	,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,,	,, ,,

उभयपदी कर<कृ (करना) वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करइ, करए	करन्ति, करन्ते, करिरे
म० पु०	करसि, करसे	करित्था, करह
उ० पु०	करामि, करमि	करिमो, करामो, करमो, करिमु, करामु, करमु, करिम, कराम, करम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करीअ	करीअ
म० पु०	,,	,,
उ० पु०	,,	,,

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करिहिइ, करिहिए	करिहिन्ति, करिहिन्ते, करिहिरे
म० पु०	करिहिसि, करिहिसे	करिहित्था, करिहिह
उ० पु०	करिस्सं, करिस्सामि, करिहामि, करिहिमि	करिस्सामो, करिहामो, करिहिमो, करिस्सामु, करिहामु, करिहिमु, करिस्साम, करिहाम, करिहिम, करिहिस्सा, करिहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होज्जउ, होज्जाउ, होज्ज, होज्जा	होज्जन्तु, होज्ज, होज्जा
म० पु०	होज्जहि, होज्जाहि, होज्जसु, होज्जासु, होज्ज, होज्जा	होज्जह, होज्जाह, होज्ज, होज्जा
उ० पु०	होज्जमु, होज्जामु, होज्ज, होज्जा	होज्जमो, होज्जामो, होज्ज, होज्जा

इसी प्रकार ने<नी, मिला<म्लै प्रभृति धातुओं के रूप ज्ज, ज्जा प्रत्ययों के जोड़ने से निष्पन्न होते हैं।

रव<रु (=कहना या बोलना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रवइ, रवए	रवन्ति, रवन्ते, रविरे
म० पु०	रवसि, रवसे	रवित्था, रवह
उ० पु०	रवामि, रवमि	रविमो, रवामो, रवमो; रविमु, रवामु, रवमु; रविम, रवाम, रवम
प्र० पु०	रवेइ	रवेन्ति, रवेन्ते, रवेइरे
म० पु०	रवेसि	रवेत्था, रवेह
उ० पु०	रवेमि	रवेमो, रवेमु, रवेम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० पु० म० पु० उ० पु० रवीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	रविहिइ, रविहिए	रविहिन्ति, रविहिन्ते, रविहिरे
म० पु०	रविहिसि, रविहिसे	रविहित्था, रविहिह
उ० पु०	रविस्सं, रविस्सामि	रविस्सामो, रविहामो, रविहिमो, रविस्सामु, रविहामु, रविहिमु; रविस्साम, रविहाम, रविहिम, रविहिस्सा, रविहित्था

उभयपदी पूसं<पुष्--पुष्ट होना--वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पूसइ, पूसए, पूसेइ	पूसन्ति, पूसन्ते, पूसिरे, पूसेन्ति
म० पु०	पूसासि, पूससे, पूसेसि	पूसित्था, पूसह, पूसेइह ॥
उ० पु०	पूसामि, पूसमि, पूसेमि	पूसिमो, पूसामो, पूसमो; पूसिमु, पूसामु, पूसमु; पूसिम, पूसाम, पूसम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पूसीअ	पूसीअ
म० पु०	,,	,,
उ० पु०	,,	,,

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पूसिहिइ, पूसिहिए	पूसिहिन्ति, पूसिहिन्ते, पूसिहिरे
म० पु०	पूसिहिसि, पूसिहिसे	पूसिहित्था, पूसिहिह
उ० पु०	पूसिस्सं, पूसिस्सामि, पूसिहामि, पूसिहिमि	पूसिस्सामो, पूसिहामो, पूसिहिमो; पूसिस्सामु, पूसिहामु, पूसिहिमु, पूसिस्साम, पूसिहाम, पूसिहिम, पूसिहिस्सा, पूसिहित्था

विशेष—अकार को एत्व कर देने से भी इसके रूप बनते हैं।

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पूसउ	पूसन्तु
म० पु०	पूसहि, पूससु, पूसेज्जसु, पूसज्जहि, पूस	पूसह
उ० पु०	पूसिम, पूसासु, पूससु	पूसिमो, पूसामो, पूसमो

विशेष—अकार को एत्व कर देने पर भी इसके रूप बनते हैं।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० म० उ० पु०	पूसेज, पूसेज्जा, पूसन्तो, पूसमाणो	पूसेज, पूसेज्जा, पूसन्तो, पूसमाणो

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करउ, करेउ	करन्तु, करेन्तु
म० पु०	करहि, करसु, करेज्जसु, करेज्जसु, करेज्जहि, करेज्जे, कर	करह
उ० पु०	करिमु, करामु, करमु	करिमो, करामो, करमो

क्रियाविपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करेज्ज, करेज्जा, करन्तो, करमाणो	करेज्ज, करेज्जा, करन्तो, करमाणो
म० पु०	,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,,	,, ,,

इसी प्रकार धर<धृ, मर<मृ, वर<वृ, सर<सृ, हर<हृ, तर<तृ एवं जर<जृ आदि संस्कृत की ऋकारान्त धातुओं के रूप होते हैं।

अस् (होना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अत्थि	अत्थि
म० पु०	अत्थि, सि	अत्थि
उ० पु०	अत्थि, म्हि, असि	अत्थि, म्हो, म्ह

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	आसि	अहेसि
म० पु०	,,	,,
उ० पु०	,,	,,

विध्यर्थ, आज्ञार्थ और भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अत्थि	अत्थि
म० पु०	,,	,,
उ० पु०	,,	,,

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	थुणेज्ज, थुणेज्जा, थुणन्तो, थुणमाणो	थुणेज्ज, थुणेज्जा, थुणन्तो, थुणमाणो
म० पु०	"	"
उ० पु०	"	"

इसी प्रकार चिण (चि), जिण (जि), सुण (श्रु), हुण (हु), लुण (लू), पुण (पू) और धुण (धू) आदि धातुओं के रूप बनते हैं।

हरिस < हृष् (प्रसन्न होना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरिसइ, हरिसए	हरिसन्ति, हरिसन्ते, हरिसिरे
म० पु०	हरिससि, हरिससे	हरिसित्था, हरिसह
उ० पु०	हरिसामि, हरिसमि	हरिसिमो, हरिसामो, हरिसमो; हरिसिमु, हरिसामु, हरिसमु; हरिसिम, हरिसाम, हरिसम

विशेष—अकार को एत्व कर देने पर हरिसेइ, हरिसेन्ति इत्यादि रूप बनते हैं।

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० हरिसीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरिसिहिइ, हरिसिहिए	हरिसिहिन्ति, हरिसिहिन्ते, हरिसिहिरे
म० पु०	हरिसिहिसि, हरिसिहिसे	हरिसिहित्था, हरिसिहिह
उ० पु०	हरिसिस्सं, हरिसिस्सामि हरिसिहामि, हरिसिहिमि	हरिसिस्सामो, हरिसिहामो, हरिसिहिमो, हरिसिस्सामु, हरिसिहामु, हरिसिहिमु; हरिसिस्साम, हरिसिहाम, हरिसिहिम; हरिसिहिस्सा, हरिसिहित्था

विशेष—एत्व हो जाने पर हरिसेहिइ, हरिसेहिन्ति आदि रूप होते हैं।

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० हरिसेज्ज, हरिसेज्जा, हरिसन्तो, हरिसमाणो

इसी प्रकार रूस (रुष्), तूस (तुष्), सूस (शुष्), दूस (दुष्) एवं सीस (शिष्) धातुओं के रूप होते हैं।

उभयपदी थुण < स्तु (स्तुति करना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	थुणइ, थुणए	थुणन्ति, थुणन्ते, थुणिरे
म० पु०	थुणसि, थुणसे	थुणित्था, थुणह
उ० पु०	थुणामि, थुणमि	थुणिमो, थुणामो, थुणमो, थुणिमु, थुणामु, थुणमु, थुणिम, थुणाम, थुणम

विशेष—अकार को एत्व होने पर थुणेइ, थुणेन्ति, थुणेसि आदि रूप होते हैं।

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र०, म०, उ० पु०	थुणीअ	थुणीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	थुणीहिइ, थुणिहिए	थुणिहिन्ति, थुणिहिन्ते, थुणिहिरे
म० पु०	थुणिहिसि, थुणिहिसे	थुणिहित्था, थुणिहिह
उ० पु०	थुणिस्सं, थुणिस्सामि, थुणिहामि, थुणिहिमि	थुणिस्सामो, थुणिहामो, थुणिहिमो थुणिस्सामु, थुणिहामु, थुणिहिमु, थुणिस्साम, थुणिहाम, थुणिहिम थुणिहिस्सा, थुणिहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	थुणउ	थुणन्तु
म० पु०	थुणहि, थुणसु, थुणेज्जसु थुणेज्जहि, थुणेज्जे, थुण	थुणह
उ० पु०	थुणिमु, थुणामु, थुणमु	थुणिमो, थुणामो, थुणमो

विशेष—अकार को एत्व हो जाने पर थुणेउ, थुणेन्तु आदि रूप होते हैं।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छेज्ज, गच्छेज्जा, गच्छन्तो, गच्छमाणो	गच्छेज्ज, गच्छेज्जा, गच्छन्तो, गच्छमाणो
म० पु०	,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,,	,, ,,

(२७) भविष्यत्काल में सुण (श्रु) के स्थान पर सोच्छ, सद् के स्थान पर रोच्छ, विद् के स्थान पर वेच्छ, दृश् के स्थान पर दच्छ, मुच् के स्थान पर मोच्छ, वच् के स्थान पर वोच्छ, छिद् के स्थान पर छेच्छ, भिद् के स्थान पर भेच्छ, भुज् के स्थान पर भोच्छ आदेश होता है तथा गच्छ धातु के समान रूप होते हैं।

बोल्ल, जंप, कह < कथ (कहना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बोल्लइ, बोल्लए	बोल्लन्ति, बोल्लन्ते, बोल्लिरे
म० पु०	बोल्लसि, बोल्लसे	बोल्लित्था, बोल्लह
उ० पु०	बोल्लामि, बोल्लमि	बोल्लिमो, बोल्लामो, बोल्लमो बोल्लिमु, बोल्लामु, बोल्लमु, बोल्लिम, बोल्लाम, बोल्लम

विशेष—एत्व हो जाने पर बोल्लेइ, बोल्लेन्ति इत्यादि रूप होते हैं।

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बोल्लिहिइ, बोल्लिहिए	बोल्लिहिन्ति, बोल्लिहिन्ते, बोल्लिहिरे
म० पु०	बोल्लिहिसि, बोल्लिहिसे	बोल्लिहित्था, बोल्लिहिह
उ० पु०	बोल्लिस्सं, बोल्लिस्सामि, बोल्लिहामि, बोल्लिहिमि	बोल्लिस्सामो, बोल्लिहामो, बोल्लिहिमो, बोल्लिस्सामु, बोल्लिहामु, बोल्लिहिमु, बोल्लिस्साम, बोल्लिहाम, बोल्लिहिम, बोल्लहिस्सा, बोल्लिहित्था

विशेष—एत्व होने से बोल्लेउ, बोल्लेन्तु आदि रूप होते हैं। विधि एवं आज्ञार्थ रूप पूर्ववत् होते हैं।

इसी प्रकार वरिस (वृष्), दरिस (दृश्), करिस (कृष्) और मरिस (मृष्) धातुओं के रूप होते हैं।

उभयपदी गच्छ<गम् (जाना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छइ, गच्छए	गच्छन्ति, गच्छन्ते, गच्छिरे
म० पु०	गच्छसि, गच्छसे	गच्छित्था, गच्छह
उ० पु०	गच्छामि, गच्छमि	गच्छिमो, गच्छामो, गच्छमो, गच्छिमु, गच्छामु, गच्छमु, गच्छिम, गच्छाम, गच्छम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० गच्छीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिहइ, गच्छिहिइ गच्छिहए, गच्छिहिए	गच्छिन्ति, गच्छिहिन्ति, गच्छिन्ते गच्छिहिन्ते, गच्छिरे, गच्छिहिरे
म० पु०	गच्छिसि, गच्छिहिसि, गच्छिसे, गच्छिहिसे	गच्छित्था, गच्छिहित्था, गच्छिह, गच्छिहिह
उ० पु०	गच्छं, गच्छिस्सं, गच्छिस्सामि, गच्छिहामि, गच्छिमि, गच्छिहिमि	गच्छिस्सामो, गच्छिहामो, गच्छिमो, गच्छिहिमो, गच्छिस्सामु, गच्छिहामु, गच्छिमु, गच्छिहिमु, गच्छिस्साम, गच्छिहाम, गच्छिम, गच्छिहिम, गच्छिहिस्सा, गच्छिहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छउ	गच्छन्तु
म० पु०	गच्छहि, गच्छसु, गच्छेज्जसु गच्छेज्जहि, गच्छेज्जे, गच्छ	गच्छह
उ० पु०	गच्छिमु, गच्छामु, गच्छामु	गच्छमो, गच्छामो, गच्छमो

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	थुवउ	थुवन्तु
म० पु०	थुवहि, थुवसु, थुवेज्जसु, थुवेज्जहि, थुवुज्जे, थुव	थुवह
उ० पु०	थुविमु, थुवामु, थुवमु	थुविमो, थुवामो, थुवमो

विशेष—आज्ञार्थ में एत्व होने पर थुवेउ, थुवेन्तु इत्यादि रूप होते हैं।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	थुवेज्ज, थुवेज्जा, थुवन्तो, थुवमाणो	थुवेज्ज, थुवेज्जा, थुवन्तो, थुवमाणो
म० पु०	,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,,	,, ,,

धातुओं के कर्मणि रूप

(२८) धातुओं के कर्मणि रूपों में वर्तमानकाल और विधि एवं आज्ञार्थ में धातु प्रत्ययों के पूर्व ईअ और इज्ज विकरण जुट जाते हैं। पर यह नियम उन्हीं धातुओं के लिए है, जिन धातुओं के स्थान पर आदेश—धात्वादेश नहीं होता है। भविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान ही होते हैं।

हस (हँसना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसीअइ, हसीअए हसिज्जइ, हसिज्जए	हसीअन्ति, हसीअन्ते, हसीइरे हसिज्जन्ति, हसिज्जन्ते, हसिज्जिरे
म० प्र०	हसीअसि, हसीअसे हसिज्जसि, हसिज्जसे	हसीइत्था, हसीअह हसिज्जित्था, हसिज्जह
उ० पु०	हसीअमि, हसीआमि, हसिज्जमि, हसिज्जामि	हसीअमो, हसीआमो, हसीइमो, हसीअमु, हसीआमु, हसीइमु, हसीअम, हसीआम, हसीइम, हसिज्जमो, हसिज्जामो, हसिज्जिमो, हसिज्जमु, हसिज्जामु, हसिज्जिमु, हसिज्जम, हसिज्जाम, हसिज्जिम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बोल्लीअ	बोल्लीअ
म० पु०	,,	,,
उ० पु०	,,	,,

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बोल्लेज्ज, बोल्लेज्जा, बोल्लन्तो, बोल्लमाणो	बोल्लेज्ज, बोल्लेज्जा, बोल्लन्तो, बोल्लमाणो
म० पु०	,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,,	,, ,,

उभयपदी धुव < धू (कंपाना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धुवइ, धुवए	धुवन्ति, धुवन्ते, धुविरे
म० पु०	धुवसि, धुवसे	धुवित्था, धुवह
उ० पु०	धुवामि, धुवमि	धुविमो, धुवामो, धुवमो, धुविमु, धुवामु, धुवमु, धुविम, धुवाम, धुवम

विशेष—एत्व होने पर धुवेइ, धुवेन्ति इत्यादि रूप होते हैं।

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धुवीअ	धुवीअ
म० पु०	,,	,,
उ० पु०	,,	,,

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धुविहिइ, धुविहिए	धुविहिन्ति, धुविहिन्ते, धुविहिरे
म० पु०	धुविहिसि, धुविहिसे	धुविहित्था, धुविहिह
उ० पु०	धुविस्सं, धुविस्सामि, धुविहामि, धुविहिमि	धुविस्सामो, धुविहामो, धुविहिमो, धुविस्सामु, धुविहामु, धुविहिमु, धुविस्साम, धुविहाम, धुविहिम, धुविहिस्सा, धुविहित्था

विशेष—एत्व होने पर धुवेहिइ, धुवेहिए इत्यादि रूप होते हैं।

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	थुवउ	थुवन्तु
म० पु०	थुवहि, थुवसु, थुवेज्जसु, थुवेज्जहि, थुवुज्जे, थुव	थुवह
उ० पु०	थुविमु, थुवामु, थुवमु	थुविमो, थुवामो, थुवमो

विशेष—आज्ञार्थ में एत्व होने पर थुवेउ, थुवेन्तु इत्यादि रूप होते हैं।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	थुवेज्ज, थुवेज्जा, थुवन्तो, थुवमाणो	थुवेज्ज, थुवेज्जा, थुवन्तो, थुवमाणो
म० पु०	,,	,,
उ० पु०	,,	,,

धातुओं के कर्मणि रूप

(२८) धातुओं के कर्मणि रूपों में वर्तमानकाल और विधि एवं आज्ञार्थ में धातु प्रत्ययों के पूर्व ईअ और इज्ज विकरण जुड जाते हैं। पर यह नियम उन्हीं धातुओं के लिए है, जिन धातुओं के स्थान पर आदेश—धात्वादेश नहीं होता है। भविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान ही होते हैं।

हस (हँसना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसीअइ, हसीअए, हसिज्जइ, हसिज्जए	हसीअन्ति, हसीअन्ते, हसीइरे, हसिज्जन्ति, हसिज्जन्ते, हसिज्जिरे
म० पु०	हसीअसि, हसीअसे, हसिज्जसि, हसिज्जसे	हसीइत्था, हसीअह, हसिज्जित्था, हसिज्जह
उ० पु०	हसीअमि, हसीआमि, हसिज्जमि, हसिज्जामि	हसीअमो, हसीआमो, हसीइमो; हसिअमु, हसीआमु, हसीइमु, हसीअम, हसीआम, हसीइम, हसिज्जमो, हसिज्जामो, हसिज्जिमो; हसिज्जमु, हसिज्जामु, हसिज्जिमु, हसिज्जम, हसिज्जाम, हसिज्जिम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसीअईअ, हसीईअ, असिज्जीअ	हसीअईअ, हसीईअ, हसिज्जईअ, हसिज्जीअ
म० पु०	,, ,,	,, ,,
उ० पु०	,, ,,	,, ,,

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हससीअउ, हसिज्जउ	हसीअन्तु, हसिज्जन्तु
म० पु०	हसीअहि, हसीअसु, हसीएज्जसु, हसिइज्जसु, हसीएज्जहि, हसीइज्जहि, हसीएज्जे, हसीइज्जे, हसीअ, हसिज्जहि, हसिज्जसु, हसिज्जेज्जसु, हसिज्जज्जसु, हसिज्जेज्जहि, हसिज्जिज्जहि, हसिज्जेज्जे, हसिज्जिज्ज, हसिज्ज	हसिज्जह
उ० पु०	हसीअमु हसीआमु, हसीइमु, हसिज्जमु, हसिज्जामु, हसिज्जमु	हसीअमो, हसीआमो, हसीइमो, हसिज्जमो, हसिज्जामो, हसिज्जिमो

भविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति के रूप कर्त्तरि के समान होते हैं।

हो < भू—कर्मणि—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होईअइ, होइज्जइ	होईअन्ति, होईअन्ते, होईइरे, होइज्जन्ति, होइज्जन्ते, होइज्जिरे
म० पु०	होईआसि, होइज्जसि	होईइत्था, होईअह, होइज्जित्था, होइज्जह

झा <ध्यै (कर्मणि)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	झाईअइ	झाईअन्ति, झाईअन्ते, झाईइरे
	झाइज्जइ	झाइज्जन्ति, झाइज्जन्ते, झाइज्जिरे
म० पु०	झाहिअसि	झाहिइत्था, झाईअह
	झाइज्जसि	झाइज्जित्था, झाइज्जह
उ० पु०	झाईअमि, झाईआमि	झाईअमो, झाईआमो, झाईइमो,
	झाइज्जमि, झाइज्जामि	झाईअमु, झाईआमु, झाईइमु, झाईअम, झाईआम, झाईइम, झाइज्जमो, झाइज्जामो, झाइज्जिमो, झाइज्जमु, झाइज्जामु, झाइज्जिमु, झाइज्जम, झाइज्जाम, झाइज्जिम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु०	झाईअसी, झाइअही, झाईअहीअ
	झाइज्जसी, झाइज्जही, झाइज्जहीअ

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	झाईअउ, झाइज्जउ	झाईअन्तु, झाइज्जन्तु
म० पु०	झाईअसु, झाईअहि	झाईअह
	झाइज्जसु, झाइज्जहि	झाइज्जह
उ० पु०	झाईअमु, झाईआमु,	झाईअमो, झाईआमो, झाईइमो,
	झाईइमु, झाइज्जमु,	झाइज्जमो, झाइज्जामो, झाइज्जिमो
	झाइज्जामु, झाइज्जिमु	

भविष्यत्काल, और क्रियातिपत्ति के रूप कर्तरि के समान होते हैं।

चिव्व <चि (कर्मणि)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिव्वइ, चिव्वए	चिव्वन्ति, चिव्वन्ते, चिव्विरे
म० पु०	चिव्वसि, चिव्विसे	चिव्वित्था, चिव्वह

उ० पु०	चिव्वामि, चिव्वमि	चिव्विमो, चिव्वामो, चिव्वमो, चिव्विमु, चिव्वामु, चिव्वमु, चिव्विम, चिव्वाम, चिव्वम

एत्व होने पर चिव्वेइ, चिव्वेन्ति इत्यादि रूप होते हैं। चि > चिव्व के स्थान पर विकल्प से चिम्म आदेश भी होता है।

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिव्वीअ	चिव्वीअ
म० पु०	,,	,,
उ० पु०	,,	,,

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिव्विहिइ, चिव्विहिए	चिव्विहिन्ति, चिव्विहिन्ते, चिव्विहिरे
म० पु०	चिव्विहिसि, चिव्विहिसे	चिव्विहित्था, चिव्विहिह
उ० पु०	चिव्विस्सं, चिव्विस्सामि चिव्विहामि, चिव्विहिमि	चिव्विस्सामो, चिव्विहामो, चिव्विहिमो, चिव्विस्सामु चिव्विहामु, चिव्विहिमु, चिव्विस्साम, चिव्विहाम, चिव्विहिम, चिव्विहिस्सा, चिव्विहित्था

विशेष—एत्व होने पर चिव्वेहिइ, चिव्वेस्सं इत्यादि रूप होते हैं।

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिव्वउ	चिव्वन्तु
म० पु०	चिव्वहि, चिव्वसु, चिव्वेज्जसु, चिव्वेज्जहि, चिव्वेज्जे, चिव्व	चिव्वह
उ० पु०	चिव्विमु, चिव्वामु, चिव्वमु	चिव्विमो, चिव्वामो, चिव्वमो

विशेष—एत्व होने पर चिव्वेउ, चिव्वेन्तु आदि रूप होते हैं।

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिव्वेज्ज, चिव्वेज्जा, चिव्वन्तो, चिव्वमाणो	चिव्वेज्ज, चिव्वेज्जा, चिव्वन्तो, चिव्वमाणो
म० पु०	" "	" "
उ० पु०	" "	" "

इसी प्रकार कर्मणि में चिम्म (चि), जिव्व (जि), सुव्व, (सु), हुव्व (हु), थुव्व (स्तु), लुव्व (लू) पुव्व (पू), धुव्व (धू) प्रभृति धातुओं के रूप होते हैं।

'चि' के स्थान पर प्राकृत में विकल्प से चिण भी होता है। चिण में कर्मणि विकरण और प्रत्यय जोड़ने पर रूप बनते हैं। यथा—

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० नेईअसी, नेईअही, नेईअहीअ
नेइज्जसी, नेइज्जही, नेइज्जहीअ

विधि एवं आज्ञार्थ

प्र० पु०	नेईअउ, नेइज्जउ	नेईअन्तु, नेइज्जन्तु
म० पु०	नेईअसु, नेईअहि नेइज्जसु, नेइज्जहि	नेईअह, नेइज्जह
उ० पु०	नेइअमु, नेईआमु, नेईइमु नेइज्जमु, नेइज्जामु, नेइज्जिमु	नेईअमो, नेईआमो, नेईइमो, नेइज्जमो, नेइज्जामो, नेइज्जिमो

विशेष—एत्व होने पर नेईएउ, नेईएन्तु, नेइज्जेउ, नेइज्जेन्तु आदि रूप होते हैं। भविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति के रूप कर्तरि के समान होते हैं।

ठा<स्था (=ठहरना) के कर्मणि रूप—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाईअइ, ठाइज्जइ	ठाईअन्ति, ठाईअन्ते, ठाईइरे, ठाइज्जन्ति, ठाइज्जन्ते, ठाइज्जिरे

वर्तमानकाल के शेष रूप ने<नी के समान होते हैं।

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० ठाइअसी, ठाईअही, ठाईअहीअ
ठाइज्जसी, ठाइज्जही, ठाज्जहीअ
ठासी, ठाही, ठाहीअ

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ठाईअउ, ठाइज्जउ	ठाईअन्तु, ठाइज्जन्तु

मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष में 'ने' धातु के समान रूपावली होती है।

पा (पीना) कर्मणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पाईअइ, पाइज्जइ	पाईअन्ति, पाईअन्ते, पाईइरे पाइज्जन्ति, पाइज्जन्ते, पाईज्जिरे

इसके आगे ठा धातु के समान सभी कालों में रूप बनते हैं।

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चिणीअइ, चिणीअए चिणिज्जइ, चिणिज्जए	चिणीअन्ति, चिणीअन्ते, चिणीइरे चिणिज्जन्ति, चिणिज्जन्ते, चिणिज्जिरे

इसी प्रकार आगे के रूप बनते हैं।

भण्ण, भण (भण्)—कर्मणि—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भण्णइ, भण्णए, भणीअइ भणीअए, भणिज्जइ, भणिज्जए	भण्णन्ति, भण्णन्ते, भण्णिरे, भणीअन्ति, भणीअन्ते, भणीइरे, भणिज्जन्ति, भणिज्जन्ते, भणिज्जिरे,
म० पु०	भण्णसि, भण्णसे, भणीअसि, भणीअसे, भणिज्जसि, भणिज्जसे	भणित्था, भण्णह, भणीइत्था, भणीअह भणिज्जित्था, भणिज्जह

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	भण्णामि, भण्णमि	भण्णिमो, भण्णामो, भण्णमो, भण्णिमु, भण्णामु, भण्णमु, भण्णिम, भण्णाम, भण्णम;
	भणिअमि, भणीआमि	भणीअमो, भणीआमो, भणीइमो; भणीअमु, भणीआमु, भणीइमु, भणीअम, भणीआम, भणीइम
	भणिज्जमि, भणिज्जामि	भणिज्जमो, भणिज्जामो, भणिज्जिमो, भणिज्जमु, भणिज्जामु, भणिज्जिमु, भणिज्जम, भणिज्जाम, भणिज्जिम

विशेष—एत्व जोड़ने से भण्णेइ, भण्णीएइ, भणिज्जेइ इत्यादि रूप होते हैं।

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० भण्णीअ, भण्णीअईअ, भणीईअ, भणिज्जईअ, भणिज्जीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु	भण्णिहिइ, भण्णिहिए	भण्णिहिन्ति, भण्णिहिन्ते, भण्णिहिरे
	भणिहिइ, भणिहिए	भणिहिन्ति, भणिहिन्ते, भणिहिरे
म० पु०	भण्णिहिसि, भण्णिहिसे	भण्णिहित्था, भण्णिहिह
	भणिहिसि, भणिहिसे	भणिहित्था, भणिहिह
उ० पु०	भणिस्सं, भणिस्सामि	भणिस्सामो, भण्णिहामो, भण्णिहिमो
	भण्णिहामि, भण्णिहिमि	भण्णिहिस्सा, भण्णिहित्था
	भण्णिस्सं, भण्णिस्सामि	भण्णिस्सामो, भणिहामो, भणिहिमो
	भणिहामि, भणिहिमि	भणिहिस्सा, भणिहित्था

विशेष—एत्व होने पर भण्णेहिइ, भणेहिइ आदि रूप होते हैं।

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भण्णउ, भण्णीअउ, भणिज्जउ	भण्णन्तु, भणिअन्तु, भणिज्जन्तु
म० पु०	भण्णहि, भण्णसु, भण्णेज्जसु	भण्णह
	भण्णेज्जहि, भण्णेज्जे, भण्ण	
	भणीअहि, भणीअसु, भणीएज्जहि	भणीअह

भणीइज्जहि, भणीएज्जसु, भणीइज्जसु
भणीएज्जे, भणीइज्जे, भणीअ,
भणिज्जहि, भणिज्जसु, भणिज्जेज्जहि भणिज्जइ
भणिज्जिज्जहि, भणिज्जेज्जसु,
भणिज्जज्जसु, भणिज्जेज्जे, भणिज्जिज्जे,
भणिज्ज

उ० पु०	भणिमु, भणामु, भणमु, भणीअमु, भणीआमु, भणीइमु भणिज्जमु, भणिज्जामु, भणिज्जमु	भणिमो, भणामो, भणमो, भणीअमो, भणीआमो, भणीइमो, भणिज्जमो, भणिज्जामो, भणिज्जिमो

विशेष—णत्व कर देने से भणेउ, भणिएउ, भणिज्जेउ आदि रूप बनते हैं।

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० भणेज्ज, भणेज्जा, भणन्तो, भणमाणो
भणन्तो, भणमाणो

लिभ, लिह्<लिह् (चाटना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिभइ, लिहीअइ, लिहिज्जइ	लिभन्ति, लिहीअन्ति, लिहिज्जन्ति, लिहीअन्ते, लिहिज्जन्ते, लिभन्ते

इसी प्रकार आगे के रूप भी होते हैं।

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० लिभीअ, लिहीअई, अलिहीईअ, लिहिज्जई,
अलिहिज्जीअ, लिहीअ

भविष्यत्काल और विधि एवं आज्ञार्थ के रूप पूर्ववत् ही होते हैं।

क्रियातिपत्ति

सभी वचन और पुरुषों में—
लिभेज्ज, लिभेज्जा, लिभन्तो, लिभमाणो
लिहेज्ज, लिहेज्जा, लिहन्तो, लिहमाणो

गम्म, गम<गम् (जाना) वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गम्मइ, गमीअइ, गमिज्जइ	गम्मन्ति, गमीअन्ति, गम्मन्ते, गमीअन्ते, गमिज्जन्ति, गमिज्जन्ते

इसी प्रकार आगे रूप भी समझने चाहिए।

प्रेरणार्थक क्रिया

२९. प्रेरणार्थक क्रिया—क्रिया का वह विकृत रूप है, जिससे यह बोध होता है कि क्रिया के व्यापार में कर्त्ता स्वतन्त्र नहीं है; बल्कि उसपर किसी की प्रेरणा है। साधारण धातु में जो कर्त्ता रहता है, वह प्रेरणार्थक में स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे से कार्य कराता है। जैसे—पढ़ता है का प्रेरणार्थक—पढ़ाता है।

(३०) प्राकृत में प्रेरणार्थक बनाने के लिए अ, ए, आव और आवे प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

(३१) अ और ए प्रत्यय के रहने पर उपान्त्य अ को आ हो जाता है। यथा—

कृ—कर् + अ = कार, कर् + आव = करावइ—कराता है।

कर् + ए = कारे; कर् + आवे = करावेइ—कराता है।

(३२) मूल धातु के उपान्त्य में इ स्वर हो तो ए और उ स्वर हो तो ओ हो जाता है। यथा—

विस् + अ = वेस + इ = वेसइ; विस् + ए = वेसे + इ = वेसेइ

विस् + आव = वेसाव + इ = वेसावइ; विस् + आवे = वेसावे + इ = वेसावेइ

(३३) उपान्त्य दीर्घ स्वर रहने पर धातु में प्रेरणार्थक प्रत्यय जुड़ जाते हैं और उपान्त्य को एकार या ओकार नहीं होता। यथा—

चूस् + अ = चूस + इ = चूसइ; चूस + ए = चूसे + इ = चूसेइ

चूस् + आव = चूसाव + इ = चूसावइ; चूस् + आवे = चूसावे + इ = चूसावेइ

प्रेरणार्थक क्रियाओं की रूपावलि

हस (हसाता है)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासइ, हासेइ, हसावइ; हसावेइ; हासए, हासेए, हसावए, हसावेए	हासन्ति, हासेन्ति, हसावन्ति, हसावेन्ति हासन्ते, हासेन्ते, हसावन्ते, हसावेन्ते हासिरे हासेइरे, हसाविरे, हसावेरे

म० पु०	हाससि, हासेसि, हसावसि, हसावेसि	हासह, हासेह, हसावह, हसावेह,
	हाससे, हासेसे, हसावसे, हसावेसे	हासित्था, हासेइत्था, हसावित्था, हसावेइत्था
उ० पु०	हासमि, हासेमि, हसावमि हसावेमि	हासमो, हासेमो, हसावमो, हसावेमो हासमु, हासेमु, हसावमु, हसावेमु हासम, हासेम, हसावम, हसावेम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० हासीअ, हासेईअ, हसावीअ, हसावेईअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासिहिइ, हासेहिइ, हसाविहिइ, हसावेहिइ,	हासिहिन्ति, हासेहिन्ति, हसाविहिन्ति, हसावेहिन्ति,
	हासिहिए, हासेहिए, हसाविहिए, हसावेहिए	हासिहिन्ते, हासेहिन्ते, हसाविहिन्ते, हसावेहिन्ते, हासिहिरे, हासेहिरे, हसाविहिरे, हसावेहिरे
म० पु०	हासिहिसि, हासेहिसि, हसाविहिसि, हसावेहिसि,	हासिहित्था, हासेहित्था, हसाविहित्था, हसावेहित्था
	हासिहिसे, हासेहिसे, हसाविहिसे, हसावेहिसे	हासिहिह, हासेहिह, हसाविहिह, हसावेहिह
उ० पु०	हासिस्सं, हासेस्सं, हसाविस्सं, हसावेस्सं	हासिस्सामो, हासेस्सामो, हसाविस्सामो, हसावेस्सामो, हासिस्सामु, हासेस्सामु हसाविस्सामु, हसावेस्सामु
	हासिस्सामि, हासेस्सामि, हसाविस्सामि, हसावेस्सामि,	हासिस्साम, हासेस्साम, हसाविस्साम, हसावेस्साम
	हासिहामि, हासेहामि हसाविहामि, हसावेहामि	हासिहामो, हासेहामो, हसाविहामो, हसावेहामो, हासेहामु, हसाविहामु,
	हासिहिमि, हासेहिमि,	हसावेहाम, हासिहाम, हासेहाम,

हसाविहिमि, हसावेहिमि	हसाविहाम, हसावेहाम, हासिहिमो, हासेहिमो, हसाविहिमो, हसावेहिमो, हासिहिमु, हासेहिमु, हसाविहिमु; हासिहिस्सा, हासेहिस्सा, हसाविहिस्सा, हसावेहिस्सा, हासिहित्था, हासेहित्था, हसाविहित्था, हसावेहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासउ, हासेउ, हसावउ, हसावेउ	हासन्तु, हासेन्तु, हसावन्तु, हसावेन्तु
म० पु०	हाससु, हासेसु, हसावसु, हसावेसु, हासहि, हासेहि, हसावहि, हसावेहि, हासेज्जसु, हासेइज्जसु, हसावेज्जसु, हासेज्जहि, हासेइज्जहि, हासेवेज्जहि, हासेज्जे, हासेइज्जे, हसावेज्जे, हसावेइज्जे, हास, हासे, हसाव, हसावे	हासह, हासेह, हसावह, हसावेह
उ० पु०	हासमु, हासेमु, हसावमु, हसावेमु	हासमो, हासेमो, हसावमो, हसावेमो

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० हासेज्ज, हासेज्जा, हसावेज्ज, हसावेज्जा, हासन्तो, हासेन्तो, हासवन्तो, हसावेन्तो, हासमाणो, हासेमाणो, हसावमाणो हसावेमाणो

कर√कृ (कराना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	कारइ, कारेइ, करावइ, करावेइ, कारए, कारेए, करावए, करावेए	कारन्ति, कारेन्ति, करावन्ति, करावेन्ति, कारन्ते, कारेन्ते, करावन्ते, करावेन्ते कारिरे, कारेइरे, कराविरे, करावेइरे

म० पु० कारसि, कारेसि, करावसि, करावेसि, कारसे, कारेसे, करावसे, करावेसे	कारह, कारेह, करावह, करावेह, कारित्था, कारेइत्था, करावित्था, करावेइत्था
उ० पु० कारमि, कारेमि, करावमि, करावेमि	कारमो, कारेमो, करावमो, करावेमो कारमु, कारेमु, करावमु, करावेमु कारम, कारेम, करावम, करावेम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० कारीअ, कारेईअ, करावीअ, कराईअ

भविष्यत्काल

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० कारिहिइ कारेहिइ, काराविहिइ, करावेहिइ कारिहिए, कारेहिए, कराविहिए, करावेहिए	कारिहिन्ति, कारेहिन्ति, कराविहिन्ति, करावेहिन्ति, कारिहिन्ते, कारेहिन्ते, कराविहिन्ते, करावेहिन्ते, कारिहिरे, कारेहिरे, कराविहिरे, करावेहिरे
म० पु० कारिहिसि, कारेहिसि, कराविहिसि, करावेहिसि, कारिहिसे, कारेहिसे, कराविहिसे, कराविहिसे, करावेहिसे	कारिहित्था, कारेहित्था, करावहित्था करावेहित्था, कारिहिह, कारेहिह, कराविहिह, करावेहिह
उ० पु० कारिस्सं, कारेस्सं, करावि‍स्सं, कारिस्सामि, कारेस्सामि कराविस्सामि, करावेस्सामि कारिहामि, कारेहामि, कराविहामि	कारिस्सामो, करावेस्समो, कराविस्सामो, करावेस्सामो कारिहामो, कारेहामो, कराविहामो, करावेहामो, कारिहिमो, कारेहिमो, कारेहिमो, कराविहिमो, करावेहिमो

विधि एवं आज्ञार्थ

एकवचन	बहुवचन
प्र० पु० कारउ, कारेउ, करावउ, करावेउ	कारन्तु, कारेन्तु, करावन्तु, करावेन्तु

म० पु०	कारसु, कारेसु, करावसु करावेसु, कारहि, कारेहि, करावहि, करावेहि, कारेज्जसु कारेइज्जसु, करावेज्जसु, करावेइज्जसु, कारेज्जहि, कारेइज्जहि, करावेज्जहि, कारेज्जे, करावेज्जे	कारह, कारेह, करावह, करावेह
उ० पु०	कारमु, कारेमु, करावमु, करावेमु	कारमो, कारेमो, करावमो, करावेमो

क्रियाविपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र०म०उ० पु० कारेज्ज, कारेज्जा, करावेज्ज, करावेज्जा, कारन्तो, कारेन्तो, करावन्तो, करावेन्तो, कारमाणो, कारेमाणो, करावमाणो, करावेमाणो

ढक्क<छद् (ढकवाना, बन्द करवाना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ढक्कइ, ढक्केइ, ढक्कावइ, ढक्कावेइ	ढक्कन्ति, ढक्केन्ति, ढक्कावन्ति, ढक्कावेन्ति, ढक्किरे, ढक्केइरे, ढक्काविरे, ढक्काविरे
म० पु०	ढक्कसि, ढक्केसि, ढक्कावसि, ढक्कावेसि	ढक्किइत्था, ढक्केइत्था, ढक्काविइत्था, ढक्कावेइत्था, ढक्कह, ढक्केह, ढक्कावह, ढक्कावेह
उ० पु०	ढक्कमि, ढक्केमि, ढक्कावमि, ढक्कावेमि	ढक्किमो, ढक्केमो, ढक्कावमो, ढक्कावेमो, ढक्किमु, ढक्केमु—इत्यादि

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ढक्किहिइ, ढक्केहिइ, ढक्काविहिइ, ढक्कावेहिइ	ढक्किहिन्ति, ढक्केहिन्ति, ढक्काविहिन्ति ढक्कावेहिन्ति, ढक्केहिरे, ढक्किहिरे, ढक्काविहिरे, ढक्कावेहिरे
म० पु०	ढक्किहिसि, ढक्केहिसि, ढक्काविहिसि, ढक्कावेहिसि	ढक्किहित्था, ढक्केहित्था, ढक्काविहित्था ढक्कावेहित्था, ढक्किहिह, ढक्केहिह ढक्काविहिह, ढक्कावेहिह

उ० पु०	ढक्किस्सं, ढक्केस्सं, ढक्काविस्सं, ढक्कावेस्सं ढक्किस्सामि, ढक्केस्सामि ढक्किहामि, ढक्किहिमि	ढक्किस्सामो, ढक्केस्सामो, ढक्काविस्सामो, ढक्कावेस्सामो, ढक्किहामो, ढक्किहिमो, ढक्किहिस्सा, ढक्किहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ढक्कउ, ढक्केउ, ढक्कावउ, ढक्कावेउ	ढक्कन्तु, ढक्केन्तु, ढक्कावन्तु, ढक्कावेन्तु
म० पु०	ढक्कसु, ढक्केसु, ढक्कावसु, ढक्कावेसु, ढक्कहि, ढक्केहि, ढक्कावहि, ढक्कावेहि, ढक्केज्जसु, ढक्केइज्जसु, ढक्केइज्जहि	ढक्कह, ढक्केह, ढक्कावह, ढक्कावेह
उ० पु०	ढक्कमु, ढक्केमु, ढक्कावमु, ढक्कावेमु	ढक्कमो, ढक्केमो, ढक्कावमो, ढक्कावेमो

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० ढक्कीअ, ढक्केईअ, ढक्कावीअ, ढक्कावेईअ

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० ढक्केज्ज, ढक्केज्जा, ढक्कावेज्ज ढक्कावेज्जा, ढक्कन्तो, ढक्केन्तो, ढक्कावन्तो, ढक्कावेन्तो, ढक्कमाणो, ढक्केमाणो, ढक्कावमाणो, ढक्कावेमाणो

हो<भू—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होअइ, होएइ, होआवइ, होआवेइ	होअन्ति होएन्ति, होआवन्ति, होआवेन्ति, होअन्ते, होइरे
म० पु०	होअसि, होएसि, होआवसि, होआवेसि	होइत्था, होएइत्था, होआवित्था, होआवेइत्था, होअह, होएह, होआवह, होआवेह

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	होअमि, होएमि, होआवमि, होआवेमि	होअमो, होएमो, होआवमो, होआवेमो, होअमु, होएमु, होआवमु, होअम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० होअसी, होएसी, होआवसी, होआवेसी, होअही, होएही, होआवही, होआवेही, होअहीअ, होएहीअ, होआवहीअ, होआवेहीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होइहिइ, होएहिइ, होआविहिइ, होआवेहिइ	होइहिन्ति, होएहिन्ति, होआविहिन्ति, होआवेहिन्ति
म० पु०	होइहिसि, होएहिसि, होआविहिसि, होआवेहिसि	होइहित्था, होएहित्था, होआविहित्था, होआवेहित्था, होइहिह
उ० पु०	होइस्सं, होएस्सं, होआविस्सं, होआवेस्सं, होइस्सामि, होएस्सामि—इत्यादि	होइस्सामो, होएस्सामो, होआविस्सामो, होआवेस्सामो, होइहामो, होएहामो, होआविहामो, होआवेहामो—इत्यादि

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होअउ, होएउ, होआवउ, होआवेउ	होअन्तु, होएन्तु, होआवन्तु, होआवेन्तु
म० पु०	होअसु, होएसु, होआवसु, होआवेसु, होअहि, होएहि, होआवहि, होआवेहि	होअह, होएह, होआवह, होआवेह
उ० पु०	होअमु, होएमु, होआवमु, होआवेमु	होअमो, होएमो, होआवमो, होआवेमो

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० होएज्ज, होएज्जा, होआवेज्ज, होआवेज्जा, होअन्तो, होएन्तो, होआवन्तो, होआवेन्तो, होअमाणो, होएमाणो, होआवमाणो होआवेमाणो

कुछ क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूपों का संकेत

धातु	वर्तमान	भूत	भविष्यत्	विधि एवं आज्ञा	क्रियातिपत्ति
पड (पत्)	पाडइ	पाडीअ	पाडिहिइ	पाडउ	पाडेज्ज
आहोड (तड्)	आहोडइ	आहोडीअ	आहोडिहिइ	आहोडउ	आहोडेज्ज
नासव (नश्)	नासवइ	नासवीअ	नासविहिइ	नासवउ	नासवेज्ज
दरिस (दृश्)	दरिसइ	दरिसीअ	दरिसिहिइ	दरिसउ	दरिसेज्ज
मिस्स (मिश्र)	मिस्सइ	मिस्सीअ	मिस्सिहिइ	मिस्सउ	मिस्सेज्ज
अप्प (अर्प)	अप्पइ	अप्पीअ	अप्पिहिइ	अप्पउ	अप्पिज्ज
दूम (दू)	दूमइ	दूमीअ	दूमिहिइ	दूमउ	दूमेज्ज
वा (वा)	वाअइ	वाअसी	वाइहिइ	वाअउ	वाएज्ज
ठा (स्था)	ठाअइ	ठाअसी	ठाइहिइ	ठाअउ	ठाएज्ज
झा (ध्यै)	झाअइ	झाअसी	झाइहिइ	झाअउ	झाएज्ज
ण्हा (स्ना)	ण्हाअइ	ण्हाअसी	ण्हाहिइ	ण्हाअउ	ण्हाएज्ज
गा (गै)	गाअइ	गाअसी	गाइहिइ	गाअउ	गाएज्ज
भमाड (भ्रम्)	भमाडइ	भमाडीअ	भमाडिहिइ	भमाडउ	भमाडेज्ज
सोस (शुष्)	सोसइ	सोसीअ	सोसिहिइ	सोसउ	सोसेज्ज
तोस (तुष्)	तोसइ	तोसीअ	तोसिहिइ	तोसउ	तोसेज्ज
रूस (रुष्)	रूसइ	रूसीअ	रूसिहिइ	रूसउ	रूसेज्ज
मोह (मुह्)	मोहइ	मोहीअ	मोहिहिइ	मोहउ	मोहेज्ज
नव (नम्)	नावइ	नावीअ	नाविहिइ	नावउ	नावेज्ज
पूस (पुष्)	पूसइ	पूसीअ	पूसिहिइ	पूसउ	पूसेज्ज
खम् (क्षम्)	खामइ	खामसी	खामहिइ	खामसु	खामेज्ज

धातुओं के कर्मणि और भाव में प्रेरकरूप

(३४) प्रेरणार्थक धातु में भाव और कर्मणि के रूप बनाने के लिए मूल धातु में आवि प्रत्यय जोड़ने के उपरान्त कर्मणि और भाव के प्रत्यय ईअ, ईय अथवा इज्ज प्रत्यय जोड़ने चाहिए।

(३५) मूलधातु में उपान्त्य अ के स्थान पर आ कर दिया जाय और इस अंग में ईअ, ईय या इज्ज प्रत्यय जोड़ देने से प्रेरक कर्मणि और भावि के रूप होते हैं।

कर् + आवि = करावि, करावि + ईअ = करावीअ + इ = करावीअइ < कारााप्यते
कर्—कार + ईअ = कारीअ + इ = कारीअइ, कारीअ + ए = कारीअए < कार्यते
कराविहिइ, कराविहिए, कराविस्सए < कारायिष्यते।

प्रेरक भाव और कर्मणि—हास, हसावि—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासीअइ, हासीअए हासिज्जइ, हासिज्जए, हसावीअइ, हसावीअए हसाविज्जइ, हसाविज्जए	हासीअन्ति, हासीअन्ते, हासीइरे हासिज्जन्ति, हासिज्जन्ते, हासिज्जिरे, हसावीअन्ति, हसावीअन्ते, हसावीइरे, हसाविज्जन्ति, हसाविज्जन्ते, हसाविज्जिरे
म० पु०	हासीअसि, हासीअसे, हासिज्जसि, हासिज्जसे, हसावीअसि, हसावीअसे हसाविज्जसे, हसाविज्जसि	हासीइत्था, हासीअह, हासिज्जित्था, हासिज्जह, हसावीइत्था, हसावीअह, हसावीअह, हसाविज्जित्था, हसाविज्जह
उ० पु०	हासीअमि, हासीआमि, हासिज्जमि, हासिज्जामि हसावीअमि, हसावीआमि, हसाविज्जामि, हसाविज्जमि	हासीअमो, हासीआमो, हासीइमो, हासीएमो, हासीअमु, हासीआमु, हासीइमु, हासीएमु, हासीअमु, हासीआम, हासीइम, हासीएम, हासिज्जमो, हासिज्जामो, हासिज्जिमो, हासिज्जेमो, हासिज्जमु, हासिज्जामु, हासिज्जिमु, हासिज्जेमु, हासिज्जम, हासिज्जाम, हासिज्जिम, हासिज्जेम हसावीअमो, हसावीआमो, हसावीइमो, हसावीएमो, हसावीअमु, हसावीआमु, हसावीइमु, हसावीएमु, हसावीअम, हसावीआम, हसावीइम, हसावीएम, हसाविज्जमो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासिहिइ, हासिहिए, हसाविहिइ	हासिहिन्ति, हासिहिन्ते, हासिहिरे, हसाविहिन्ति, हसाविहिन्ते, हसाविहिरे
म० पु०	हासिहिसि, हासिहिसे, हसाविसि	हासिहित्था, हासिहिह हसाविहित्था, हसाविहिह
उ० पु०	हासिस्सं, हासिस्सामि हासिहामि, हासिहिमि हसाविस्सं, हसाविस्सामि	हासिस्सामो, हासिहामो, हासिहिमो हासिस्सामु, हासिहामु, हासिहिमु, हासिस्साम, हासिहाम, हासिहिम

हसाविहामि, हसाविहिमि	हसाविस्सामो, हसाविहामो, हसाविहिमो, हसाविस्सासु, हसाविहामु, हसिहिस्था, हसाविहित्था

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० हासीअ, हसावीअ, हासीईअ, हसीअईअ, हासिज्जीअ

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हासीअउ, हासिज्जउ हसावीअउ, हसाविज्जउ	हासीअन्तु, हासिज्जन्तु, हसावीअन्तु हसाविज्जन्तु
म० पु०	हासीअहि, हासीअसु, हासीएज्जसु, हासीएज्जहि, हासीएज्जे, हासीअ हासिज्जहि, हासिज्जसु, हासिज्जेज्जसु, हासिज्जेज्जहि, हासिज्जेज्जे, हासिज्ज, हसावीअहि, हसावीएज्जहि	हासीअह, हासिज्जह, हसावीअह, हसाविज्जह
उ० पु०	हासीअमु, हासीआमु, हासीइमु, हासिजमु, हासिजामु, हासिजिमु, हसावीअमु, हसावीइमु	हासीअमो, हासीआमो, हासीइमो, हासिजमो, हासिज्ज मो, हासिज्जिमो हसावीअमो, हसाविजमो, हसाविज्जिमो

क्रियातिपत्ति

सभी पुरुष और सभी वचनों में

हासेज्ज, हासेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा, हासन्तो, हासेन्तो, हसाविन्तो, हासमाणो हसाविमाणो

खाम, खमावि < क्षम् (क्षमा कराना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	खामीअए, खामीअइ खामिज्जइ, खामिज्जए	खामीअन्ति, खामीअन्ते, खामीइरे खामिज्जन्ति, खामिज्जन्ते, खामिज्जिरे

	खमावीअइ, खमावीअए	खमावीअन्ति, खमावीअन्ते,
	खमाविज्जइ, खमाविज्जए	खमावीइरे, खमाविज्जन्ति
म० पु०	खामीअसि, खामीअसे	खामीइत्था, खामीअह
	खामिज्जसि, खामिज्जसे	खामिज्जित्था, खामिज्जह
	खमावीअसि, खमावीअसे	खमावीइत्था, खमावीअह
	खमाविज्जसि, खमाविज्जसे	खमाविज्जित्था, खमाविज्जह
उ० पु०	खामीअमि, खामीआमि	खामीअमो, खामीआमो, खामीइमो
	खामीज्जमि, खामिज्जामि	खामीएमो,
	खमावीअमि, खमावीआमि	खामिज्जमो, खामिज्जामो,
	खमाविज्जमि, खमाविज्जामि	खामिज्जिमो, खामिज्जेमो
		खमावीअमो, खमावीआमो
		खमावीइमो, खमावीएमो

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० खामीईअ, खामीअईअ, खामिज्जीअ, खामिज्जईअ, खमावीईअ, खमावीअईअ, खमाविज्जीअ, खमाविज्जईअ, खामीअ, खमावीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	खामिहिइ, खामिहए	खामिहिन्ति, खामिहिन्ते, खामिहिरे,
	खमाविहिइ	खमाविहिन्ति, खमाविहिन्ते, खमाविहिरे
म० पु०	खामिहिसि, खामिहिसे	खामिहित्था, खामिहिह,
	खमाविहिसि	खमाविहित्था, खमाविहिह
उ० पु०	खामिस्सं, खामिस्सामि	खामिस्सामो, खामिहामो
	खामिहामि, खामिहिमि	खामिहिमो, खमाविस्सामो,
	खमाविस्सं, खमाविहामि	खमाविहामो, खमाविहिमो
		खामिहिस्सा, खामिहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	खामीअउ, खामिज्जउ	खामीअन्तु, खामीज्जन्तु
	खमावीअउ, खमाविज्जउ	खमावीअन्तु, खमाविज्जन्तु

म० पु०	खामीअहि, खामीअसु	खामीअह, खामिज्जह
	खामीएज्जसु, खामीएज्जहि	खमावीअह, खमाविज्जह
	खामीएज्जे, खामीअ, इत्यादि	
उ० पु०	खामीअमु, खामीआमु	खामीअमो, खामीआमो खामीइमो,
	खामीइमु, खामिज्जमु,	खामिज्जमो, खामिज्जामो,
	खामिज्जामु	खामिज्जिमो
	खमावीअमु, खमावीआमु	खमावीअमो, खमावीआमो
	खमावीइमु	खमावीइमो
	खमाविज्जमु, खमाविज्जामु	खमाविज्जमो, खमाविज्जामो
	खमाविज्जिमु	खमाविज्जिमो

क्रियातिपत्ति

सभी वचन और पुरुषों में

खामेज्ज, खामेज्जा, खमाविज्ज, खमाविज्जा, खामन्तो, खामेन्तो, खमाविन्तो, खाममाणो, खमाविमाणो

पिवास<पा (पिलाना, पिलवाना)—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पिवासइ, पिवासए	पिवासन्ति, पिवासन्ते, पिवासिरे
म० पु०	पिवाससि, पिवाससे	पिवासित्था, पिवासह
उ० पु०	पिवासमि, पिवासामि	पिवासमो, पिवासामो, पिवासिमो, पिवासेमो
		पिवासमु, पिवासामु, पिवासिमु, पिवासेमु, पिवासम, पिवासाम, पिवासिम, पिवासेम

भूतकाल

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० पिवासीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पिवासिहिइ, पिवासिहिए	पिवासिहिन्ति, पिवासिहिन्ते, पिवासिहिरे
म० पु०	पिवासिहिसि, पिवासिहिसे	पिवासिहित्था, पिवासिहिह
उ० पु०	पिवासिस्सं पिवासिस्सामि पिवासिहामि, पिवासिहिमि	पिवासिस्सामो, पिवासिहामो, पिवासिहिमो, पिवासिस्सामु, पिवासिहामु, पिवासिहिमु, पिवासिस्साम, पिवासिहाम

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पिवासउ	पिवासन्तु
म० पु०	पिवासहि, पिवासमु, पिवासेज्जसु, पिवासेज्जहि, पिवासेज्जे, पिवास	पिवासह
उ० पु०	पिवाससु पिवासामु, पिवासिमु	पिवासमो पिवासामो, पिवासिमो

सभी पुरुष और सभी वचनों में

पिवासेज, पिवासेज्जा, पिवासन्तो, पिवाससमाणो

क्रियातिपत्ति

धातु	वर्तमान	भूत	भविष्यत्	विधि एवं आज्ञा	क्रियातिपत्ति
कार, कराविं < कृ	कारीअइ	कारीईअ	कारिहिइ	कारीअउ	कारेज्ज
हो, होआवि < भू	होईअइ	होसी	होहिइ	होईअउ	होज्ज
	होआवीअइ	होआविसी	होआविहिइ	होआवीअउ	होआविज्ज
ने, नेआवि < नी	नेईअइ	नेसी	नेहिइ	नेईअउ	नेज्ज
	नेआविअइ	नेआविसी	नेआविहिइ	नेआविअउ	नेआविज्ज
झा, झाआवि < ध्यै	झाईअइ	झाईअसी	झाहिइ	झाईअउ	झाज्ज
	झाआवीअइ	झाआविअसी	झाआविहिइ	झाआवीअउ	झाआविज्ज
जुगुच्छ < गुप्	जुगुच्छइ	जुगुच्छीअ	जुगुच्छिहिइ	जुगुच्छउ	जुगुच्छेज्ज
	जुगुच्छाइ	जुगुच्छावीअ	जुगुच्छाविहिइ	जुगुच्छावेउ	जुगुच्छावेज्ज
छिच्छ < क्षम्	छिच्छइ	छिच्छीअ	छिच्छिहिइ	छिच्छउ	छिच्छेज्ज
	छिच्छावइ	छिच्छावीअ	छिच्छाविहिइ	छिच्छावउ	छिच्छावेज्ज

सन्नन्त क्रिया

(३६) किसी कार्य के करने की इच्छा का अर्थ बतलाने के लिए संस्कृत में धातु से सन् प्रत्यय जोड़ा जाता है। पर प्राकृत में सन्नन्त प्रक्रिया के बनाने के कोई विशेष नियम नहीं हैं। मात्र ध्वनिपरिवर्तन के आधार पर ही इस प्रक्रिया के रूप बनते हैं। यहाँ कुछ क्रियारूप उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं।

लिच्छ < लभ्—लिप्सते (= लाभ की इच्छा करना)

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिच्छइ, लिच्छए	लिच्छन्ति, लिच्छन्ते, लिच्छिरे
म० पु०	लिच्छसि, लिच्छसे	लिच्छित्था, लिच्छह
उ० पु०	लिच्छामि, लिच्छमि	लिच्छमो, लिच्छामो, लिच्छिमो, लिच्छेमो, लिच्छमु, लिच्छम

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० म० उ० पु०	लिच्छीअ	लिच्छीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिच्छिहिइ, लिच्छिहिए	लिच्छिहिन्ति, लिच्छिहिन्ते, लिच्छिहिरे
म० पु०	लिच्छिहिसि, लिच्छिहिसे	लिच्छिहित्था, लिच्छिहिह
उ० पु०	लिच्छिस्सं, लिच्छिस्सामि, लिच्छिहामि, लिच्छिहिमि	लिच्छिस्सामो, लिच्छिहामो, लिच्छिहिमो, लिच्छिस्सामु, लिच्छिहामु, लिच्छिहिमु, लिच्छिहिस्सा, लिच्छिहित्था

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिच्छउ	लिच्छन्तु
म० पु०	लिच्छहि, लिच्छसु, लिच्छेज्जसु, लिच्छ	लिच्छह
उ० पु०	लिच्छमु, लिच्छामु, लिच्छिमु	लिच्छमो, लिच्छामो, लिच्छिमो

क्रियातिपत्ति

एकवचन और बहुवचन

प्र० म० उ० पु० लिच्छज्ज, लिच्छेज्जा, लिच्छन्तो, लिच्छमाणो

जुगुच्छ < गुप् (निन्दा या तिरस्कार करने की इच्छा करना)

जुगुच्छइ < जुगुप्सति—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जुगुच्छइ, जुगुच्छए	जुगुच्छन्ति, जुगुच्छन्ते, जुगुच्छिरे
म० पु०	जुगुच्छसि, जुगुच्छसे	जुगुच्छित्था, जुगुच्छह

उ० पु०	जुगुच्छमि, जुगुच्छामि	जुगुच्छमो, जुगुच्छामो, जुगुच्छिमो, जुगुच्छेमो, जुगुच्छमु, जुगुच्छामु, जुगुच्छिमु, जुगुच्छम, जुगुच्छाम

भूतकाल

सभी वचन और सभी पुरुषों में जुगुच्छीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जुगुच्छिहिइ, जुगुच्छिहिए	जुगुच्छिहिन्ति, जुगुच्छिहिन्ते, जुगुच्छिहिरे
म० पु०	जुगुच्छिहिसि, जुगुच्छिहिसे	जुगुच्छिहित्था, जुगुच्छिहिह
उ० पु०	जुगुच्छिस्सं, जुगुच्छिस्सामि जुगुच्छिहामि, जुगुच्छिहिमि	जुगुच्छिस्सामो, जुगुच्छिहामो, जुगुच्छिहिमो

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जुगुच्छउ	जुगुच्छन्तु
म० पु०	जुगुच्छहि, जुगुच्छसु जुगुच्छेज्जसु	जुगुच्छह
उ० पु०	जुगुच्छमु, जुगुच्छामु, जुगुच्छिमु	जुगुच्छमो, जुगुच्छामो, जुगुच्छिमो

क्रियातिपत्ति

सभी वचन और सभी पुरुषों में

जुगुच्छेज्ज, जुगुच्छेज्जा, जुगुच्छन्तो, जुगुच्छमाणो

बुहुक्ख<भुज—भोजन करने की इच्छा करना

बुहुक्खइ<बुभुक्षति—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बुहुक्खइ, बुहुक्खए	बुहुक्खन्ति, बुहुक्खन्ते, बुहुक्खिरे
म० पु०	बुहुक्खसि, बुहुक्खसे	बुहुक्खित्था, बुहुक्खह
उ० पु०	बुहुक्खमि, बुहुक्खामि	बुहुक्खमो, बुहुक्खामो, बुहुक्खिमो, बुहुक्खेमो, बुहुक्खमु, बुहुक्खामु, बुहुक्खिमु, बुहुक्खेमु,

भूतकाल

सभी वचनों और सभी पुरुषों में — बुहुक्खीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बुहुक्खिहिइ, बुहुक्खिहिए	बुहुक्खिहिन्ति, बुहुक्खिहिन्ते, बुहुक्खिहिरे
म० पु०	बुहुक्खिहिसि, बुहुक्खिहिसे	बुहुक्खिहित्था, बुहुक्खिहिह
उ० पु०	बुहुक्खिस्सं, बुहुक्खिस्सामि, बुहुक्खिहामि, बुहुक्खिहिमि	बुहुक्खिस्सामो, बुहुक्खिहामो, बुहुक्खिहिमो, बुहुक्खिस्सामु, बुहुक्खिहामु, बुहुक्खिहिस्सा

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	बुहुक्खउ	बुहुक्खन्तु
म० पु०	बुहुक्खहि, बुहुक्खसु	बुहुक्खह
उ० पु०	बुहुक्खमु, बुहुक्खामु, बुहुक्खिमु	बुहुक्खमो, बुहुक्खामो, बुहुक्खिमो

क्रियातिपत्ति

सभी वचन और सभी पुरुषों में

बुहुक्खेज्ज, बुहुक्खेज्जा, बुहुक्खन्तो, बुहुक्खमाणो

सुस्सूस < श्रु (सुनने की इच्छा करना)

सुस्सूसइ < शुश्रूषति—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सुस्सूसइ, सुस्सूसए	सुस्सूसन्ति, सुस्सूसन्ते, सुस्सूसिरे
म० पु०	सुस्सूससि, सुस्सूससे	सुस्सूसित्था, सुस्सूसह
उ० पु०	सुस्सूसमि, सुस्सूसामि	सुस्सूसमो, सुस्सूसामो, सुस्सूसिमो, सुस्सूसमु, सुस्सूसामु, सुस्सूसिमु

भूतकाल

सभी वचन और सभी पुरुषों में — सुस्सूसीअ

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सुस्सूसिहिइ, सुस्सूसिहिए	सुस्सूसिहिन्ति, सुस्सूसिहिन्ते, सुस्सूसिहिरे

म० पु०	सुस्सूसिहिसि, सुस्सूसिहसे	सुस्सूसिहित्था, सुस्सूसिहिह
उ० पु०	सुस्सूसिस्सं, सुस्सूसिस्सामि सुस्सूसिहामि	सुस्सूसिस्सामो, सुस्सूसिहामो सुस्सूसिहिमो, सुस्सूसिस्सामु

विधि एवं आज्ञार्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सुस्सूसउ	सुस्सूसन्तु
म० पु०	सुस्सूसहि, सुस्सूससु	सुस्सूसह
उ० पु०	सुस्सूसमु, सुस्सूसामु सुस्सूसिमु	सुस्सूसमो, सुस्सूसामो, सुस्सूसिमो

क्रियातिपत्ति

सभी वचन और सभी पुरुषों में—

सुस्सूसेज्ज, सुस्सूसेज्जा, सुस्सूसन्तो, सुस्सूसमाणो

सन्नन्त—इच्छार्थक धातुओं के कर्मणि और भावि रूप

लिच्छ < लभ्—लिच्छीअइ (लिप्स्यते)

जुगुच्छ < गुप्—जुगुच्छीअइ (जुगुप्स्यते)

बुहुक्ख < भुज्—बुहुक्खीअइ (बुभुक्ष्यते)

यङन्त, यङ्लुगन्त और नामधातु

(३७) व्यञ्जन से आरम्भ होनेवाली किसी भी एकाच् धातु के अनन्तर क्रिया को बार-बार करने अथवा क्रिया को खूब करने का बोध कराने के लिए संस्कृत में यङ् प्रत्यय लगाया जाता है। पर प्राकृत में यङन्त क्रियाएँ वर्णविकार द्वारा ही निष्पन्न होती हैं। यथा—

पेबीअइ, पेबीअए < पेपीयते

लालप्पइ, लालप्पए < लालप्यते

चरीकच्चइ, चरीकच्चए < चरीकृत्यते

सासक्कइ, सासक्कए < शाशक्यते

जाजाअइ, जाजाअए < जाजायते

(३८) संस्कृत धातुओं में यङ् प्रत्यय का लोप हो जाने पर भी अतिशय या बार-बार अर्थ में क्रिया का प्रयोग होता है। प्राकृत में यह यङ्लुगंत या यङ्लुगन्त भी वर्णविकार द्वारा अवगत किया जाता है। यथा—

चंकमइ < चङ्क्रमीति

चंकमणं < चङ्क्रमणम्

(३९) संज्ञा या प्रातिपदिक को 'नाम' कहते हैं; उससे किसी विशेष अर्थ में प्रत्यय होकर धातुवत् रूपों की जिसमें उत्पत्ति होती है, उसे नामधातु प्रक्रिया कहते हैं। तात्पर्य यह है कि जब किसी सुबन्त संज्ञा के अनन्तर प्रत्यय जोड़कर धातु बना लेते हैं, तो उसे 'नामधातु' कहते हैं। नामधातुओं के विशेष विशेष अर्थ होते हैं। प्राकृत में नामधातु बनाने के निम्नलिखित नियम हैं।

(४०) नामधातु बनाने के लिए प्राकृत में विकल्प से अ (य) प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—

गुरुआइ, गुरुआअइ < गुरुरिव आचरतीति—गुरुकायते
अमराइ, अमराअइ < अमर इव आचरतीति—अमरायते
तमाइ, तमाअइ < तमायते—अन्धकार में होनेवाला आचरण करता है।
अलसाइ, अलसाअइ < अलसायते—आलसी के समान आचरण करता है।
ऊम्हाइ, उम्हाअइ < उष्मायते—गर्मी में होनेवाला जैसा आचरण करता है।
दमदमाइ, दमदमाअइ < दमदमायते—दम-दम जैसा करता है।
धूमाइ, धूमाअइ < धूमायते—धूम मचाता है।
सुहाइ, सुहाअइ < सुखायते—सुखी होता है, सुख का अनुभव करता है।
सद्दाइ, सद्दाअइ < शब्दायते—शब्द करता है।
लोहिआए—इ, लोहिआअए—इ < लोहितायते—लाल होता है।
हंसाए—इ, हंसाअए—इ < हंसायते—हंस के समान आचरण करता है।
अच्छराए—इ, अच्छराअए—इ < अप्सरायते—अप्सरा के समान आचरण करता है।
उम्मणाए—इ, उम्मणाअए—इ—उन्मनायते—उन्मना होता है।
कट्ठाए—इ, कट्ठाअए—इ < कष्टायते—कष्ट का अनुभव करता है।
अत्थाअइ, अत्थाइ < अस्तायते—अस्त होता है।
तणुआइ, तणुआअइ < तनुकायति—दुबला होता है।
संझाअइ, संझाइ < सन्ध्यायते—सन्ध्या होती है।
सीदलाअइ, सीदलाइ < शीतलायति—शीतल होता है।
पुत्तीअइ, पुत्तीइ < पुत्रीयति—पुत्र की इच्छा करता है।
कुरुकुराअइ, कुरुकुराइ < कुरुकुरायते—कुरुकुरु करता है।
थरथरेइ < थरथरायते—थर थर करता है।
धणाअइ, धणाइ < धनायति—धन की इच्छा करता है।
अस्साअइ, अस्साइ < अश्वस्यति—मैथुनेच्छा करता है।
गव्वाअइ, गव्वाइ < गव्यति—गो की इच्छा करता है।

वाआअइ, वाआइ < वाच्यति—बात करने की इच्छा करता है।

रायाअए, रायाए < राजायते—राजा के समान आचरण करता है।

असनाअइ, असनाइ < अशनायति—खाने की इच्छा करता है।

वाप्फाअइ, वाप्फाइ < वाष्पायते—भाप निकलती है।

नमाअइ, नमाइ < नमस्यति—नमस्कार करता है।

पुत्तकामाअइ, पुत्तकामाइ < पुत्रकाम्यति—पुत्र की कामना करता है।

जसकामाअइ, जसकामाइ < यशस्काम्यति—यश की इच्छा करता है।

खीराअइ, खीराइ < क्षीरस्यति—दूध की इच्छा करता है।

उअआइ, उअआअइ < उदकन्यति—पानी की प्यास है।

वेराअइ-ए वेराइ-ए < वैरायते—वैर जैसा आचरण करता है, वैर करता है।

कलहाअइ, कलहाइ < कलहायते—झगड़ता है।

चवलाअइ, चवलाइ < चपलायते—चञ्चल होता है।

करुणाअइ-ए, करुणाइ-ए < करुणायते—करुणा करता है।

सपत्ताअइ-ए, सपत्ताइ-ए < सपत्नायते—कलह करती-कराता है।

हरिआअइ, हरीअइ < हरितायति—हरा होता है।

मेहाअइ-ए, मेहाइ-ए < मेघायते—वर्षा होती है।

दुम्माअइ-ए, दुम्माइ-ए < द्रुमायते—वृक्ष जैसा मालूम होता है।

कृदन्तविचार

कृत् प्रत्यय धातु के अन्त में लगते हैं और उनके योग से संज्ञा, विशेषण अथवा अव्यय के रूप बनते हैं। कृत् प्रत्ययों से सिद्ध शब्द कृदन्त कहलाते हैं।

कृत् और तिङ् प्रत्ययों में यह अन्तर है कि कृत् प्रत्ययों से सिद्ध कृदन्त शब्द संज्ञा, विशेषण अथवा अव्यय होते हैं। कहीं कहीं कृदन्त शब्द क्रिया का भी कार्य करते हैं। पर तिङ् प्रत्ययों से सिद्ध तिङन्त शब्द सदा क्रिया ही होते हैं। कृत् और तद्धित प्रत्ययों में यह अन्तर है कि तद्धित प्रत्यय सर्वदा किसी सिद्ध संज्ञा, विशेषण अथवा अव्यय में जोड़े जाते हैं; किन्तु कृत् प्रत्यय धातु में ही लगते हैं।

वर्तमान कृदन्त

(४०) धातु में न्त, माण और ई प्रत्यय लगाने से वर्तमान कृदन्त के रूप होते हैं। पर ई प्रत्यय केवल स्त्रीलिङ्ग में ही जोड़ा जाता है।

(४१) धातु के प्रेरकरूप में न्त, माण और ई प्रत्यय लगाने से प्रेरक कर्तरि वर्तमान कृदन्त के रूप होते हैं। यहाँ पर भी ई प्रत्यय केवल स्त्रीलिङ्ग में जुड़ता है।

(४२) धातु के प्रेरक भावि और कर्मणि रूप में न्त, माण और ई प्रत्यय लगाने से प्रेरक भावि और कर्मणि कृदन्त के रूप होते हैं।

(४३) वर्तमान कृदन्त के न्त, माण और ई प्रत्यय के परे पूर्ववर्ती अकार को विकल्प से एकार होता है। यथा—

भण्—भण + न्त = भणन्त, भण + माण = भणमाण—

	पुंलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
	भणंतो, भणमाणो	भणंतं, भणमाणं	भणंती, भणंता
	भणेंतो, भणेमाणो	भणेंतं, भणेमाणं	भणेंती, भणेंता
पा—	पाअंतो, पाअमाणो	पाअंतं, पाअमाणं	पाअंती, पाअंता
	पाएंतो, पाएमाणो	पाएंतं, पाएमाणं	पाएंती, पाएंता
	पांतो, पामाणो	पांतं, पामाणं	पाती, पांता
			पाअमाणी, पाअमाणा
			पाएमाणी, पाएमाणा
			पामाणी, पामाणा
			पाअई, पाएई, पाई

रु—रवंतो, रवमाणो	रवंतं, रवमाणं	रवंती, रवंता
रवेंतो, रवेमाणो	रवेंतं, रवेमाणं	रवेंती, रवेंता
		रवमाणी, रवमाणा
		रवेमाणी, रवेमाणा
		रवई, रवेई
हृ—हरंता, हरमाणो	हरंतं, हरमाणं	हरंती, हरंता
हरेंतो, हरेमाणो	हरेंतं, हरेमाणं	हरेंती, हरेंता
		हरमाणी, हरमाणा
		हरेमाणी, हरेमाणा
		हरई, हरेई
वृष्—वरिसंतो, वरिसमाणो	वरिसंतं, वरिसमाणं	वरिसंती, वरिसंता
वरिसेंतो, वरिसेमाणो	वरिसेंतं, वरिसेमाणं	वरिसेंती, वरिसेंता
		वरिसमाणी, वरिसमाणा
		वरिसेमाणी, वरिसेमाणा
		वरिसई, वरिसेई
नी—नेंतो, नेमाणो	नेंतं, नेमाणं	नेंती, नेंता, नेमाणी, नेमाणा
		नेई
तुष्—तूसंतो, तूसमाणो	तूसंतं, तूसमाणं	तूसंती, तूसंता
तूसेंतो, तूसेमाणो	तूसेंतं, तूसेमाणं	तूसेंती, तूसेंता, तूसमाणी
		तूसमाणा, तूसेमाणी, तूसेमाणा
		तूसई, तूसेई
दा—देंतो, देमाणो	देंतं, देमाणं	देंती, देंता, देमाणी, देमाणा
		देई
चल्—चल्लंतो, चल्लमाणो	चल्लंतं, चल्लमाणं	चल्लंती, चल्लंता
चल्लेंतो, चल्लेमाणो	चल्लेंतं, चल्लेमाणं	चल्लेंती, चल्लेंता, चल्लमाणी
		चल्लमाणा, चल्लेमाणी,
		चल्लेमाणा, चल्लई, चल्लेई
खिद्—खिज्जंतो, खिज्जमाणो	खिज्जंतं, खिज्जमाणं	खिज्जंती, खिज्जंता
खिज्जेंतो, खिज्जेमाणो	खिज्जेंतं, खिज्जेमाणं	खिज्जेंती, खिज्जेंता,
		खिज्जमाणी, खिज्जमाणा
		खिज्जेमाणी, खिज्जेमाणा
		खिज्जई, खिज्जेई

त्वर्—	तुर—तुरंतो, तुरमाणो तूर—तूरंतो, तूरमाणो तुरेंतो, तुरेमाणो	तुरंतं, तुरमाणं तूरंतं, तूरमाणं तुरेंतं, तुरेमाणं	तुरंती, तुरंता तुरंती, तूरंता तुरेंती, तुरेंता तुरमाणी, तुरमाणा तुरेमाणी, तुरेमाणा तुरई, तुरेई
शुश्रूष्—	सुस्सूसंतो, सुस्सूसमाणो सुस्सूसेंतो, सुस्सूसेमाणो,	सुस्सूसंतं, सुस्सूसमाणं सुस्सूसेंतं, सुस्सूसेमाणं,	सुस्सूसंती, सुस्सूसंता सुस्सूसेंती, सुस्सूसेंता सुस्सूसमाणी, सुस्सूसमाणा सुस्सूसेमाणी, सुस्सुसेमाणा सुस्सूसई, सुस्सूसेई
लालप्य्—	लालप्पंतो, लालप्पमाणो लालप्पेंतो, लालप्पेमाणो	लालप्पंतं, लालप्पमाणं लालप्पेंतं, लालप्पेमाणं	लालप्पंती, लालप्पंता लालप्पेंती, लालप्पेंता लालप्पमाणी, लालप्पमाणा लालप्पेमाणी, लालप्पेमाणा लालप्पई, लालप्पेई
गुरुकाय्—	गुरुअंतो, गुरुअमाणो गुरुएंतो, गुरुएमाणो	गुरुअंतं, गुरुअमाणं गुरुएंतं, गुरुएमाणं	गुरुअंती, गुरुअंता गुरुएंती, गुरुएंता गुरुअमाणी, गुरुअमाणा गुरुएमाणी, गुरुएमाणा गुरुअई, गुरुएई
हो<भू—	होअंतो, होअमाणो होएंतो, होएमाणो	होअंतं, होअमाणं होएंतं, होएमाणं	होअंती, होअंता होएंती, होएंता होअमाणी, होअमाणा होएमाणी, होएमाणा होअई, होएई

भावि वर्तमान कृदन्त

भण् + इज्ज (भावि प्रत्यय) = भणिज्ज + न्त = भणिज्जंतं	भण्यमानं
भण् + इज्ज (भावि प्रत्यय) = भणिज्ज + माण = भणिज्जमाणं	"
भण् + ईअ (भावि प्रत्यय) = भणीअ + न्त = भणीअंतं	"
भण् + ईअ (भावि प्रत्यय) = भणीअ + माण = भणीअमाणं	"

कर्मणि वर्तमान कृदन्त

	पुल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
भण्—भणीअंतो, भणिज्जंतो		भणीअंतं, भणिज्जंतं	भणीअंती, भणीअंता
	भणीअमाणो, भणिज्जमाणो	भणीअमाणं, भणिज्ज-माणं	भणीअमाणी, भणीअमाणा
			भणिज्जमाणी, भणिज्जमाणा
			भणिज्जई, भणीअई
हन्—हम्मंतो, हम्ममाणो		हम्मंतं, हम्ममाणं	हम्मंती, हम्मंता
			हम्ममाणी, हम्ममाणा
			हम्मई

कर्त्तरि प्रेरक वर्तमान कृदन्त

कृ—कार (प्रेरक कर्त्तरि)—कार + न्त = कारंतो, करेंतो < कारयन्

करावि (प्रेरक कर्त्तरि)—करावि + अ + न्त = करावंतो, करावेंतो < कारयन्

कार (प्रेरक कर्त्तरि)—कार + माण = कारमाणो, कारेमाणो < कारयमाणः

करावि (प्रेरक कर्त्तरि)—करावि + अ + माण = करावमाणो, करावेमाणो < कारापयमानः

	पु०	नपुं०	स्त्री०
शुष्—सोसविंतो, सोसंतो		सोसविंतं, सोसंतं	सोसविंती, सोसविंता
	सोसेंतो, सोसावंतो	सोसेंतं, सोसावंतं	सोसंती, सोसंता
	सोसविमाणो सोसमाणो	सोसविमाणं, सोसमाणं	सोसेंती, सोसेंता
	सोसेमाणो, सोसावमाणो	सोसेमाणं, सोसावमाणं	सोसावंती, सोसावंता
	सोसावेमाणो	सोसावेमाणं	सोसविमाणी, सोसमाणा
			सोसमाणी, सोसविमाणा
			सोसेमाणी, सोसेमाणा
			सोसावमाणी, सोसावमाणा
			सोसावेमाणी, सोसावेमाणा

प्रेरक भावि—वर्तमान कृदन्त

भण—भणाविज्ज + न्त = भणाविज्जंतं < भणाप्यमानम्

भणावी + अ + न्त = भणावीअंतं < भणाप्यमानम्

प्रेरक कर्मणि वर्तमान कृदन्त

भण—भणाविज्ज + न्त = भणाविज्जंतो < भणाप्यमानः

भणाविज्ज + माण = भणाविज्जमाणो

भणावी + अ + न्त = भणावीअंतो

पु०	नपुं०	स्त्री०
भणाविज्जंतो, भणाविज्जमाणो	भणाविज्जंतं, भणाविज्जमाणं	भणाविज्जंती, भणाविज्जंता
भणावीअंतो, भणावीअमाणो	भणावीअंतं, भणावीअमाणं	भणाविज्जमाणी, भणाविज्ज-माणा, भणावीअंती, भणावीअंता, भणावीअमाणी, भणावीअमाणा
सुस्सूअंतो (शुश्रूषन्)	सुस्सूअंतं	सुस्सूअंती, सुस्सूअंता
सुस्सूसमाणो (शुश्रूषमाणः)	सुस्सूसमाणं	सुस्सूसमाणी, सुस्सूसमाणा
सुस्सूसिज्जंतो (शुश्रूष्यमाणः)	सुस्सूसिज्जंतं	सुस्सूसिज्जंती, सुस्सूसिज्जंता
सुस्सूसिज्जमाणो (शुश्रूष्यमाणः)	सुस्सूसिज्जमाणं	सुस्सूसिज्जमाणी, सुस्सूसिज्जमाणा
सुस्सूसीअंतो ,,	सुस्सूसीअंतं	सुस्सूसीअंती, सुस्सूसीअंता
सुस्सूसीअमाणो ,,	सुस्सूसीअमाणं	सुस्सूसीअमाणी, सुस्सूसीअमाणा
चंकमंतो < चङ्क्रमत्	चंकमंतं	चंकमती, चंकमंता
चंकममाण < चङ्क्रममाणः	चंकममाणं	चंकममाणी, चंकममाणा
चंकमिज्जंतो < चङ्क्रम्यमाणः	चंकमिज्जंतं	चंकमिज्जंती, चंकमिज्जंता
चंकमीअंतो < चङ्क्रम्यमाण.	चंकमीअंतं	चंकमीअंती, चंकमीअंता
चंकमीअमाणो < चङ्क्रम्यमाणः	चंकमीअमाणं	चंकमीअमाणी, चंकमीअमाणा
कर—करावीअंतो, करावीअमाणो	करावीअंतं, करावीअमाणं	करावीअंती, करावीअंता
कराविज्जंतो, कराविज्जमाणो	कराविज्जंतं, कराविज्जमाणं	करावीअमाणी, करावीअमाणा
कारीअंतो, कारीअमाणो	कारीअंतं, कारीअमाणं	कराविज्जंती, कराविज्जंता
कारिज्जंतो, कारिज्जमाणो	कारिज्जंतं, कारिज्जमाणं	कराविज्जमाणी, कराविज्जमाणा
		कारीअंता, कारीअंती
		कारीअमाणी, कारीअमाणा
		कारिज्जंती, कारिज्जंता
		कारिज्जमाणी, कारिज्जमाणा

भूतकृदन्त

(४४) धातु में अ, द और त प्रत्यय जोड़ने से भूतकालीन कृदन्त के रूप बनते हैं।

(४५) धातु में अ, द और त प्रत्यय जोड़ने पर भूतकाल में धातु के अन्त्य अ का इ होता है। यथा—

गम्—गम + अ = गमिओ (धातु के अन्त्य अ को इ किया) < गतः—गया
गम + द = गमिदो „ < गतः—गया
गम + त = गमितो „ < गतः—गया
चल्—चल + अ = चलिओ „ < चलितः—चला
चल + द = चलिदो „ < चलितः—चला
चल + त = चलितो „ < चलितः—चला
कृ०—कर + अ = करिओ „ < कृतः—किया
कर + द = करिदो „ < कृतः—किया
कर + त = करितो „ < कृतः—किया
पठ्—पढ + अ = पढिओ „ < पठितः—पढा
पढ + द = पढिदो „ < पठितः—पढा
पढ + त = पढितो „ < पठितः—पढा
हस्—हस + अ = हसिअं „ < हसितम्—हँसा
हस + द = हसिदं „ < हसितम्—हँसा
हस + त = हसितं „ < हसितम्—हँसा
लस्—लस + अ = लसिअं „ < लसितम्—चमका, लसा—चिपका
लस + द = लसिदं „ < लसितम्— „ „
लस + त = लसितं „ < लसितम्— „ „
त्वर्—तुर + अ = तुरिअं „ < त्वरितम्—शीघ्रता की
तुर + द = तुरिदं „ < त्वरितम्— „
तुर + त = तुरितं „ < त्वरितम् „
शुश्रूष्—सुस्सूस+अ = सुस्सूसिअं „ < शुश्रूषितम्—सेवा की, शुश्रूषा की
सुस्सूस + द = सुस्सूसिदं „ < शुश्रूषितम्— „ „
सुस्सूस + त = सुस्सूसितं „ < शुश्रूषितम्— „ „
क्रम्—चंकम + अ = चंकमिअं „ < चङ्क्रमितम्—घूमा या बहुत चला
चंकम + द = चंकमिदं „ < चङ्क्रमितम्— „ „
चंकम + त = चंकमितं „ < चङ्क्रमितम्— „ „
ध्यै—झा + अ = झाअं—झायं < ध्यातम्—ध्यान किया
झा + द = झादं < ध्यातम्—ध्यान किया
झा + त = झातं < ध्यातम्—ध्यान किया
लू—लु + अ = लुअं < लूनम्—काटा
लु + द = लुदं < लूनम्—काटा
लु + त = लुतं < लूनम्—काटा

हू—भू—हु + अ = हुअं < भूतम्—हुआ
हु + इ = हुइं < भूतम्—हुआ
हु + त = हुतं < भूतम्—हुआ

प्रेरणार्थक भूतकृदन्त

(४६) धातु में प्रेरणासूचक आवि और इ प्रत्यय जोड़ने के उपरान्त भूतकृत् प्रत्यय जोड़ने से प्रेरणार्थक भूतकृदन्त के रूप होते हैं। यथा—

कर—करावि + अ = कराविअं < कारितम्—कराया, करवाया
करावि + द = कराविदं < कारितम्—कराया, करवाया
करावि + त = करावितं < कारितम्—कराया, करवाया

कर—कार + इ = कारि (इ प्रत्यय होने पर उपान्त्य अ को दीर्घ हो जाता है)—
कारि + अ = कारिअं < कारितम्
कारि + द = कारिदं, कारि + त = कारितम्—कराया, करवाया
हस् + आवि = हसावि + अ = हसाविअं, हसावि + द = हसाविदं, हसावि + त = हसावितं < हासितम्—हँसाया, हँसवाया

अनियमित भूतकृदन्त

(४७) कुछ ऐसे भी भूतकालीन कृदन्त रूप मिलते हैं, जिनमें उपर्युक्त नियम लागू नहीं होता। ध्वनिपरिवर्तन के नियमों के आधार पर संस्कृत से निष्पन्न कृदन्त रूपों को प्राकृत रूप बनाया जाता है। यथा—

गयं < गतम्—मध्यवर्ती त का लोप हो गया है, और अवशेष स्वर के स्थान पर य श्रुति हुई है।

मयं < मतम्—„ „ „

कडं < कृतम्—ककारोत्तर ऋ के स्थान पर अ और त के स्थान पर 'प्रत्यादौ डः' (८।१।२०६) सूत्र से ड हुआ है।

हडं < हृतम्— हकारोत्तर ऋकार को अ और त के स्थान पर ड।

मडं < मृतम्—मकारोत्तर ऋकार को अ और त को ड हुआ है।

जिअं < जितम्—मध्यवर्ती तकार का लोप और अ स्वर शेष।

तत्तं < तप्तम्—संयुक्त प् का लोप और त को द्वित्व।

कयं < कृतम्—विकल्प से मध्यवर्ती त का लोप होने से अ स्वर शेष और अ को य श्रुति।

दट्ठं < दृष्टम्—संयुक्त ष् का लोप और ट को द्वित्व तथा ट को ठ, दकारोत्तर ऋ को अ।

मिलाणं, मिलानं < म्लानं—स्वरभक्ति के नियम द्वारा म और ल का पृथक्करण और इकारागम।

अक्खायं < आख्यातम्—दीर्घ अ को ह्रस्व, ख्या के स्थान पर क्ख, त का लोप और अ स्वर शेष को य श्रुति।

निहियं < निहितम्—तकार का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति।

आणत्तं < आज्ञप्तम्—ज्ञ के स्थान पर ण, संयुक्त प का लोप और त को द्वित्व।

संखयं < संस्कृतम्—स्कृ के स्थान पर ख, त का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति।

आकुट्ठं < आक्रुष्टम्—क्रु में से संयुक्त रेफ का लोप, संयुक्त ष् का लोप, ट को द्वित्व, द्वितीय ट को ठ।

विणट्ठं < विनष्टम्—न के स्थान पर ण, ष्ट के स्थान पर ट्ठ।

पणट्ठं < प्रणष्टम्—प्र के स्थान पर प, ष्ट के स्थान पर ट्ठ।

मट्ठं < मृष्टम्—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ष्ट के स्थान पर ट्ठ।

हयं < हृतम्—मध्यवर्ती त का लोप, अ स्वर शेष, य श्रुति।

जायं < जातम् — „ „ „

गिलाणं, गिलानं < ग्लानम्—स्वर भक्ति के नियम से ग्ला का पृथक्करण, अकार के स्थान पर इत्व।

पकुविअं < प्रकुपितम्—प्र के स्थान प, मध्यवर्ती प को व, त का लोप और अ स्वर शेष।

ठियं < स्थितम्—स्थ के स्थान पर ठ, त लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति।

विहियं < विहितम्—त लोप, अ स्वर शेष और अ के स्थान पर य।

पन्नत्तं, पण्णत्तं < प्रज्ञप्तम्—प्र के स्थान पर प, ज्ञ को ण्ण, संयुक्त प का लोप और त को द्वित्व।

पयासियं < प्रकाशितम्—प्र के स्थान पर प, श के स्थान पर स, प को य, त लोप और अ शेष तथा य श्रुति।

सक्कयं < संस्कृतम्—स्कृ के स्थान पर क्क, त लोप, य श्रुति तथा 'सं' के अनुस्वार का लोप।

सिलिट्ठं < श्लिष्टम्—स्वरभक्ति के नियमानुसार पृथक्करण, इकार का आगम, ष्ट के स्थानपर ट्ठ।

सुयं < श्रुतम्—श्रु के स्थान पर सु, तकार का लोप, य श्रुति।

संसट्ठं < संसृष्टम्—सकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ष्ट के स्थान पर ट्ठ।

पट्ठं < पृष्टम्—पकारोत्तर ऋ के स्थान पर अ, ष्ट के स्थान पर ट्ठ।

भविष्यत्कृदन्त

(४८) धातु में इस्संत, इस्समाण और इस्सई प्रत्यय जोड़ने से भविष्यसूचक कृदन्त के रूप बनते हैं।

कृ—कर् + इस्संत = करिस्संतो < करिष्यन्—करता होगा।

कर् + इस्समाण = करिस्समाणो < करिष्यमाणः—करता होगा।

कर् + इस्सई = करिस्सई < करिष्यन्ती—करती होगी।

कर् + आवि = करावि + इस्समाण = कराविस्समाणो < कारयिष्यमाणः।

करावि + स्संतो = कराविस्संतो < कारयिष्यन्—कराता होगा।

हेत्वर्थ कृत् प्रत्यय

(४९) धातु में तुं, दुं और अप् हेत्वर्थ कृत् प्रत्यय जोड़ने से हेत्वर्थ कृदन्त के रूप बनते हैं।

(५०) उपर्युक्त हेत्वर्थ कृत्प्रत्ययों के जोड़ने पर पूर्ववर्ती अ को इ और ए हो जाता है।

तुं (उं), दुं

भण्—भण + तुं (उं) = भणिउं (प्रत्यय जोड़ने के पूर्व अकार को इत्व हुआ)।

भण + तुं (उं) = भणेउं—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को एत्व हुआ।

भण + तुं = भणितुं, भणेतुं—अकार को इत्व एवं एत्व होने से दोनों रूप बनेंगे।

भण + दुं = भणिदुं, भणेदुं— „ „ < भणितुम्।

हस—हस + तुं (उं) = हसिउं, हसेउं—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को इत्व और एत्व।

हस + तुं = हसितुं, हसेतुं, हसिदुं, हसेदुं < हसितुम्।

हो < भू—होअ + तुं (उं) = होइउं—अकार के स्थान पर इकार।

होअ + तुं (उं) = होएउं— „ „ एत्व।

होअ + तुं, होअ + दुं = होइतुं, होएतुं, होइदुं होएदुं < भवितुं।

प्रेरणार्थक हेतु कृदन्त

(५१) धातु में प्रेरणार्थक प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् तुं, दुं प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा—

भण्—भण + आवि = भणावि + तुं (उं) = भणाविउं

भण + आवि = भणावि + दुं = भणाविदुं

कर्—कर + आवि = करावि + तुं (उं) = कराविउं

कर + आवि = करावि + दुं = कराविदुं, करावितुं

कर्—कार + तु (उं) = कारिउं, कारितुं, कारिदुं
हस्—हास + तु (उं) = हासिउं, हासेउं, हासिदुं, हासितुं
शुश्रूष्—सुस्सूस + तुं (उं) = सुस्सूसिउं, सुस्सूसेउं, सुस्सूसिदुं, सुस्सूसितुं
• चङ्क्रम्य—चंकम + तुं (उं) = चंकमिउं, चंकमेउं, चंकमिदुं, चंकमितुं

त्तए

कृ–कर्—कर < त्तए = करेत्तए, करित्तए < कर्तुम्—अकार को ए होने पर करेत्तए और ह्रस्व होने पर करित्तए रूप बने हैं।

सिज्झ—सिज्झ + त्तए = सिज्झित्तए, सिज्झेत्तए < सेद्धुम्
उववज्ज्—उववज्ज + त्तए = उववज्जित्तए, उववज्जेत्तए < उपपत्तुम्
विहर्—विहर + त्तए = विहरित्तए, विहरेत्तए < विहर्तुम्
पास्—पास + त्तए = पासित्तए, पासेत्तए < द्रष्टुम्
गम्—गम + त्तए = गमित्तए < गन्तुम्
प्र + व्रज् पव्वज्—पव्वज + त्तए = पव्वइत्तए, पव्वएत्तए < प्रव्रजितुम्
आ + हृ–आहर—आहार + त्तए = आहारित्तए, आहारेत्तए—आहर्तुम्
दा—दल्—दल + त्तए = दलइत्तए, दलएत्तए < दातुम्
अच्चासाद्—अच्चासाद + त्तए = अच्चासादेत्तए < अत्याशातयितुम्
समभिलोक्—समहिलोक + त्तए = समहिलोइत्तए, समहिलोएत्तए < समभिलोकयितुम्

अनियमित हेत्वर्थ कृदन्त

(९२) कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनमें हेत्वर्थक कृत्प्रत्यय नहीं जोड़े जाते हैं; बल्कि जिनकी सिद्धि ध्वनिपरिवर्तन के नियमों के आधार पर होती है। यथा—

कृ–कृ + तुं = का + तुं (उं) = काउं < कर्तुं—ककारोत्तर अ के स्थान पर आ आदेश होने से।

ग्रह् + तुं = घेत् + तुं = घेत्तुं < ग्रहीतुम्—संस्कृत की ग्रह् धातु के स्थान पर घेत् आदेश हुआ है और प्रत्यय का संयोग होने से घेत्तुं रूप बना है।

त्वर + तुं = तुर + तुं (उं) = तुरिउं, तुरेउं < त्वरितुम्—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को इत्व और एत्व होने से।

दृश् + तुं—दट्ठ + तुं (उं) = दट्ठुं—दृश् के स्थान पर दट्ठ आदेश हुआ है।
भुज् + तुं—भोत् + तुं = भोत्तुं < भोक्तुम्
मुच् + तुं = मोत् + तुं = मोत्तुं < मोक्तुम्
रुद् + तुं = रोत् + तुं = रोत्तुं < रोदितुम्

वच् + तुं = वोत् + तुं = वोत्तुं < वक्तुम्
रुद् + तुं = रुद्धं < रुदितुम्
रुध् + तुं = रोद्धुं < रोद्धुम्
युध + तुं = योद्धुं, जोद्धुं < योद्धुम्

सम्बन्ध भूतकृदन्त

(९३) धातु में तुं, तूण, तुआण, अ, इत्ता, इत्ताण, आय और आए प्रत्यय जोड़ने से सम्बन्धसूचक भूतकृदन्त के रूप बनते हैं।

(९४) तुं, अ, इत्ता और आय प्रत्यय होने पर प्रत्यय के पूर्ववर्ती अ को विकल्प से इ और ए आदेश होते हैं।

(९५) तूण, तुआण और इत्ताण प्रत्ययों में ण के स्थान पर सानुस्वार णं आदेश होता है।

उदाहरण—

हो < भू—होअ + तुं (उं) = होइउं, होएउं < भूत्वा—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार के स्थान पर इत्व तथा एत्व किया है।

होअ + अ = होइअ, होएअ < भूत्वा—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार के स्थान पर इत्व तथा एत्व किया है।

होअ + तूण (ऊण) = होइऊण, होइऊणं, होएऊण, होएऊणं < भूत्वा—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार के स्थान पर इत्व एवं एत्व के अनन्तर विकल्प से ण के ऊपर अनुस्वार किया गया है।

होअ + तुआण (उआण) = होइउआण, होइउआणं, होएउआणं, होएउआणं < भूत्वा—प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को इत्व एवं एत्व तथा ण के ऊपर विकल्प से अनुस्वार किया है।

हस्—हस + तुं (उं) = हसिउं, हसेउं < हसित्वा—विकल्प से इत्व तथा एत्व।
हस + अ = हसिअ, हसेअ < हसित्वा ” ”

हस्—हस + तूण (ऊण) = हसिऊण, हसिऊणं, हसेऊण, हसेऊणं < हसित्वा—विकल्प से इत्व एवं एत्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार।

हस + तुआण(उआण) = हसिउआण, हसिउआणं, हसेउआण, हसेउआणं < हसित्वा—विकल्प से इत्व एवं एत्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार।

भण्—भण + तुं (उं) = भणिउं, भणेउं < भणित्वा

भण + अ = भणिअ, भणेअ—प्रत्यय के पूर्ववर्त्ती अ को इत्व एवं एत्व ।
भण + तूण (ऊण) = भणिऊण, भणिऊणं, भणेऊण, भणेऊणं
भण + तुआण (उआण) = भणिउआण, भणिउआणं, भणेउआण, भणेउआणं < भणित्वा ।

प्रेरणार्थक सम्बन्धसूचक कृदन्त

(९९) प्रेरणार्थक बनाने के लिए प्रेरणासूचक प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर ही सम्बन्धक भूत कृत्प्रत्ययों को जोड़ना चाहिए ।

उदाहरण—

भण्—भण + आवि = भणावि + तुं (उं) = भणाविउं, भणावेउं;
भणावि + अ = भणाविअ, भणावेअ < भाणयित्वा
भणावि + तूण (ऊण) = भणाविऊण, भणाविऊणं
भणावि + तुआण (उआण) = भणाविउआण, भणाविउआणं < भाणयित्वा—
कहलाकर या कहलवाकर
भाण + तुं (उं) = भाणिउं, भाणेउं
भाण + अ = भाणिअ, भाणेअ
भाण + तूण (ऊण) = भाणिऊण, भाणिऊणं, भाणेऊण, भाणेऊणं
भाण + तुआण (उआण) = भाणिउआण, भाणिउआणं, भाणेउआण, भाणेउआणं

कर—कर + आवि = करावि + तुं (उं) = कराविउं, करावेउं
करावि + अ = कराविअ, करावेअ
करावि + तूण (ऊण) = कराविऊण, कराविऊणं < कारयित्वा
कार + तुं (उं) = कारिउं, कारेउं
कार + अ = कारिअ, कारेअ
कार + तूण (ऊण) = कारिऊण, कारिऊणं, कारेऊण, कारेऊणं
कार + तुआणं (उआणं) = कारिउआण, कारिउआणं, कारेउआण, कारेउआणं ।

शुश्रूष्—सुस्सूस + तुं (उं) = सुस्सूसिउं सुस्सूसेउं
सुस्सूस + अ = सुस्सूसिअ, सुस्सूसेअ
सुस्सूस + तूण (ऊण) = सुस्सूसिऊण, सुस्सूसिऊणं, सुस्सूसेऊण, सुस्सूसेऊणं
सुस्सूस + तुआण (उआण) = सुस्सूसिउआण, सुस्सूसिउआणं, सुस्सूसेउआण, सुस्सूसेउआणं ।

चङ्क्रम—चंकम + तुं (उं) = चंकमिउं, चंकमेउं
चंकम + अ = चंकमिअ, चंकमेअ

चंकम + तूण (ऊण) = चंकमिऊण, चंकमिऊणं, चंकमेऊण, चंकमेऊणं
चंकम + तुआण = चंकमिउआण, चंकमिउआणं, चंकमेउआण, चंकमेउआणं

इत्ता प्रत्यय

हस् + इत्ता = हसित्ता, हसेत्ता < हसित्वा—विकल्प से इत्व और एत्व
कर् + इत्ता = करित्ता, करेत्ता, < कृत्वा— ,, ,,
कह + इत्ता = कहित्ता, कहेत्ता < कथयित्वा— ,, ,,
गम + इत्ता < गमित्ता, गमेत्ता < गत्वा— ,, ,,

इत्ताण प्रत्यय

हस + इत्ताण = हसित्ताण, हसेत्ताण, हसित्ताणं, हसेत्ताणं < हसित्वा—विकल्प से इत्व, एत्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार

कर + इत्ताण = करित्ताण, करित्ताणं, करेत्ताण, करेत्ताणं < कृत्वा—विकल्प से इत्व, एत्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार

गम + इत्ताण = गमित्ताण, गमित्ताणं, गमेत्ताण, गमेत्ताणं < गत्वा—विकल्प से इत्व, एत्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार

आय प्रत्यय

गह + आय = गहाय

आए प्रत्यय

संपेह + आए = संपहाए < संप्रेक्ष्य
आया + आए = आयाए < आदाय

अनियमित सम्बन्धक भूत कृदन्त

कृ + तुं = काउं—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर आकार।
कृ + तूण = काऊणं— ,, ,, ,,
कृ + तुआण = काउआण, काउआणं— ,,
ग्रह – घेत् + तुं = घेत्तुं—ग्रह के स्थान पर घेत् आदेश होता है।
ग्रह—घेत् + तूण = घेत्तूण, घेत्तूणं— ,, ,,
ग्रह—घेत् + तुआण = घेत्तुआण, घेत्तुआणं—,, ,,
त्वर्—तुर् + तुं (उं) = तुरिउं, तुरेउं—विकल्प से अ को इत्व तथा एत्व
तुर + अ = तुरिअ, तुरेअ—,, ,,
तुर + तूण (ऊण) = तुरिऊण, तुरिऊणं, तुरेऊण, तुरेऊणं—विकल्प से इत्व, एत्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार।

कृत्य प्रत्यय या विध्यर्थ प्रत्यय

अंग्रेजी में जो कार्य (Potential Participle) पोटेंशल् पार्टीसिपुल से लिया जाता है, वही कार्य प्राकृत में कृत्य या विध्यर्थ प्रत्ययों से लिया जाता है। हिन्दी में विध्यर्थ प्रत्ययों का कार्य 'चाहिए' या 'योग्य' द्वारा प्रकट किया जाता है।

(९७) धातु में तव्व, अणिज्ज और अणीअ प्रत्यय जोड़ने से विध्यर्थ कृदन्त रूप बनते हैं।

(९८) तव्व या दव्व प्रत्यय जोड़ने पर प्रत्यय के पूर्ववर्ती अकार को इ तथा ए आदेश होता है।

(९९) संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में 'ज्ज' प्रत्यय होता है।

उदाहरण

धातु	तव्व	अणिज्ज, अणीअ
ज्ञा—जाण	जाणिअव्वं, जाणेअव्वं	जाणणिज्जं, जाणणीअं
ज्ञा—मुण	मुणिअव्वं, मुणेअव्वं	मुणणिज्जं, मुणणीअं
स्था—थक्क	थक्किअव्वं, थक्केअव्वं	थक्कणिज्जं, थक्कणीअं
स्था—चिट्ठ	चिट्ठिअव्वं, चिट्ठेअव्वं	चिट्ठणिज्जं, चिट्ठणीअं
पा—पिज्ज	पिज्जिअव्वं, पिज्जेअव्वं	पिज्जणिज्जं, पिज्जणीअं
श्रु—सुण	सुणिअव्वं, सुणेअव्वं	सुणणिज्जं, सुणणीअं
हन्—हण	हणिअव्वं, हणेअव्वं	हणणिज्जं, हणणीअं
धू—धुण	धुणिअव्वं, धुणेअव्वं	धुणणिज्जं, धुणीणअं
धू—धुव	धुविअव्वं, धुवेअव्वं	धुवणिज्जं, धुवणीअं
भू—हुव	हुविअव्वं, हुवेअव्वं	हुवणिज्जं, हुवणीअं
हु—हुण	हुणिअव्वं, हुणेअव्वं	हुणणिज्जं, हुणणीअं
स्रु—सव	सविअव्वं, सवेअव्वं	सवणिज्जं, सवणीअं
स्तु—थुण	थुणिअव्वं, थुणेअव्वं	थुणणिज्जं, थुणणीअं
लू—लुण	लुणिअव्वं, लुणेअव्वं	लुणणिज्जं, लुणणीअं
पु—पुण	पुणिअव्वं, पुणेअव्वं	पुणणिज्जं, पुणणीअं
कृ—कुण	कुणिअव्वं, कुणेअव्वं	कुणणिज्जं, कुणणीअं
कृ—कर (काम)	कायव्वं,	करणिज्जं, करणीअं
जृ—जर	जरिअव्वं, जरेअव्वं	जरणिज्जं, जरणीअं
धृ—धर	धरिअव्वं, धरेअव्वं	धरणिज्जं, धरणीअं

तुर + तुआण (उआण) = तुरिउआण, तुरिउआणं, तुरेउआण, तुरेउआणं—विकल्प से ह्रस्व, एत्व तथा ण के ऊपर अनुस्वार।

दश् + तुं = दट्ठुं; दट्ठ + तूण = दट्ठूण, दट्ठूणं, दट्ठ + तुआण = दट्ठुआण, दट्ठुआणं
भुज् + तुं = भोत् + तुं = भोत्तुं—भुज् के स्थान पर भोत्।
भोत् + तूण = भोत्तूण, भोत्तूणं; भोत् + तुआण = भोत्तुआण, भोत्तुआणं
मुच् + तुं = मोत् + तुं = मोत्तुं
मुच् + तूण = मोत् + तूण = मोत्तूण, मोत्तूणं
मुच् + तुआण = मोत् + तुआण = मोत्तुआण, मोत्तुआणं
रुद् + तुं = रोत् + तुं = रोत्तुं
रुद् + तूण = रोत् + तूण = रोत्तूण, रोत्तूणं
रुद् + तुआण = रोत् + तुआण = रोत्तुआण, रोत्तुआणं
वच् + तुं = वोत् + तुं = वोत्तुं
वच् + तूण = वोत् + तूण = वोत्तूण, वोत्तूणं
वच् + तुआण = वोत् + तुआण = वोत्तुआण, वोत्तुआणं

(९६) संस्कृत के कृदन्त रूपों में ध्वनि परिवर्तन करने से प्राकृत के कृदन्त रूप बन जाते हैं। ध्वनिपरिवर्तन के नियम प्रथम अध्याय के ही प्रवृत्त होते हैं।

आदाय > आयाय—मध्यवर्ती द का लोप, आ स्वर शेष तथा यश्रुति।

गत्वा > गत्ता, गच्चा—संयुक्त व का लोप और त को द्वित्व, त्वा के स्थान पर संयुक्त ध्वनि परिवर्तन के नियमानुसार च।

ज्ञात्वा > नच्चा, णच्चा—ज्ञ को ह्रस्व तथा ज्ञ के स्थान पर न या ण और त्वा को च्चा।

बुद्ध्वा > बुज्झा—संयुक्त व का लोप और द्ध के स्थान ज्झ।

भुक्त्वा > भोच्चा—भकारोत्तर उकार के स्थान पर ओकार, और क्त्वा के स्थान पर च्चा।

मत्वा > मत्ता, मच्चा—संयुक्त व का लोप और त को द्वित्व, त्व के स्थान पर च।

वन्दित्वा > वंदित्ता—संयुक्त व का लोप और त को द्वित्व।

विप्रजहाय > विप्पजहाय—प्र में से र का लोप और प को द्वित्व।

सुप्त्वा > सुत्ता—संयुक्त प और व का लोप, त को द्वित्व।

संहृत्य > साहट्टु—अनुस्वार का लोप, अ को आत्व, हकारोत्तर ऋकार को अ तथा त्य के स्थान पर ट्टु आदेश।

हत्वा > हता—हन् धातु के नकार को अनुस्वार और संयुक्त व का लोप।

हृष्—हरिस	हरिसिअव्वं, हरिसेअव्वं	हरिसणिज्जं, हरिसणीअं
मुह्—मुज्झ	मुज्झिअव्वं, मुज्झेअव्वं	मुज्झणिज्जं, मुज्झणीअं
इष्—इच्छ	इच्छिअव्वं, इच्छेअव्वं	इच्छणिज्जं, इच्छणीअं
भिद्—भिन्द	भिन्दिअव्वं, भिन्देअव्वं	भिन्दणिज्जं, भिन्दणीअं
युध्—जुज्झ	जुज्झिअव्वं, जुज्झेअव्वं	जुज्झणिज्जं, जुज्झणीअं
बुध्—बुज्झ	बुज्झिअव्वं, बुज्झेअव्वं	बुज्झणिज्जं, बुज्झणीअं
पत्—पड	पडिअव्वं, पडेअव्वं	पडणिज्जं, पडणीअं
सद्—सड	सडिअव्वं, सडेअव्वं	सडणिज्जं, सडणीअं
शद्—झड	झडिअव्वं, झडेअव्वं	झडणिज्जं, झडणीअं
वृध्—वड्ढ	वड्ढिअव्वं, वड्ढेअव्वं	वड्ढणिज्जं, वड्ढणीअं
नृत्—नच्च	नच्चिअव्वं, नच्चेअव्वं	नच्चणिज्जं, नच्चणीअं
रुद्—रुव	रुविअव्वं, रुवेअव्वं	रुवणिज्जं, रुवणीअं
नम्—नव	नविअव्वं, नवेअव्वं	नवणिज्जं, नवणीअं
विसृज्—वोसिर	वोसिरिअव्वं, वोसिरेअव्वं	वोसिरणिज्जं, वोसिरणीअं
अद्—अट्ट	अट्टिअव्वं, अट्टेअव्वं	अट्टणिज्जं, अट्टणीअं
कुप्—कुप्प	कुप्पिअव्वं, कुप्पेअव्वं	कुप्पणिज्जं, कुप्पणीअं
नद्—नट्ट	नट्टिअव्वं, नट्टेअव्वं	नट्टणिज्जं, नट्टणीअं
सिव—सिव्व	सिव्विअव्वं, सिव्वेअव्वं	सिव्वणिज्जं, सिव्वणीअं
मृग्—मग्ग	मग्गिअव्वं, मग्गेअव्वं	मग्गणिज्जं, मग्गणीअं
वन्द्—वन्द	वन्दिअव्वं, वन्देअव्वं	वन्दणिज्जं, वन्दणीअं
ग्रह—घेत्	घेत्तव्वं	
वच्—वोत्	वोत्तव्वं	
रुद्—रोत्	रोत्तव्वं	
भुज्—भोत्	भोत्तव्वं	
मुच्—मोत्	मोत्तव्वं	
दृश्—दट्ठ	दट्ठव्वं	
हस्—हस	हसिअव्वं, हसेअव्वं	हसिणिज्जं, हसणीअं

प्रेरक विध्यर्थ कृदन्त

(६०) धातु में प्रेरक प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर विध्यर्थक तव्व, अणिज्ज और अणीअ प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा—

हस—हस + आवि = हसावि + तव्वं = हसावितव्वं, हसाविअव्वं < हसापयितव्यम्

हसावि + अणिज्जं = हसावणिज्जं, हसावणीअं < हसापनीयम्

तृ—तर	तरिअव्वं, तरेअव्वं	तरणिज्जं, तरणीअं
हृ—हर	हरिअव्वं, हरेअव्वं	हरणिज्जं, हरणीअं
सृ—सर	सरिअव्वं, सरेअव्वं	सरणिज्जं, सरणीअं
स्मृ—सुमर	सुमरिअव्वं, सुमरेअव्वं	सुमरणिज्जं, सुमरणीअं
जागृ—जग्ग	जग्गिअव्वं, जग्गेअव्वं	जग्गणिज्जं, जग्गणीअं
शक्—तीर	तीरिअव्वं, तीरेअव्वं	तीरणिज्जं, तीरणीअं
शक्—सक्क	सक्किअव्वं, सक्केअव्वं	सक्कणिज्जं, सक्कणीअं
पच्, क्षिप्—सोल्ल	सोल्लिअव्वं, सोल्लेअव्वं	सोल्लणिज्जं, सोल्लणीअं
मुच्—मेल्ल	मेल्लिअव्वं, मेल्लेअव्वं	मेल्लणिज्जं, मेल्लणीअं
सिच्—सिञ्च	सिञ्चिअव्वं, सिञ्चेअव्वं	सिञ्चणिज्जं, सिञ्चणीअं
गर्ज्—बुक्क	बुक्किअव्वं, बुक्केअव्वं	बुक्कणिज्जं, बुक्कणीअं
राज्—छज्ज	छज्जिअव्वं, छज्जेअव्वं	छज्जणिज्जं, छज्जणीअं
लस्ज्—जीह	जीहिअव्वं, जीहेअव्वं	जीहणिज्जं, जीहणीअं
भुज्—भुंज	भुंजिअव्वं, भुंजेअव्वं	भुंजणिज्जं, भुंजणीअं
कथ्—बोल्ल	बोल्लिअव्वं, बोल्लेअव्वं	बोल्लणिज्जं, बोल्लणीअं
सिध्—हक्क	हक्किअव्वं, हक्केअव्वं	हक्कणिज्जं, हक्कणीअं
खिद्—खिज्ज	खिज्जिअव्वं, खिज्जेअव्वं	खिज्जणिज्जं, खिज्जणीअं
कुध्—कुज्झ	कुज्झिअव्वं, कुज्झेअव्वं	कुज्झणिज्जं, कुज्झणीअं
स्वप्—लोट्ट	लोट्टिअव्वं, लोट्टेअव्वं	लोट्टणिज्जं, लोट्टणीअं
लिप्—लिम्प	लिम्पिअव्वं, लिम्पेअव्वं	लिम्पणिज्जं, लिम्पणीअं
लुभ्—लुब्भ	लुब्भिअव्वं, लुब्भेअव्वं	लुब्भणिज्जं, लुब्भणीअं
क्षुभ्—खुब्भ	खुब्भिअव्वं, खुब्भेअव्वं	खुब्भणिज्जं, खुब्भणीअं
भ्रम—ढुंढुल्ल	ढुंढुल्लिअव्वं, ढुंढुल्लेअव्वं	ढुंढुल्लणिज्जं, ढुंढुल्लणीअं
गम्—वोल	वोलिअव्वं, वोलेअव्वं	वोलणिज्जं, वोलणीअं
रम्—मोट्टाअ-य	मोट्टाइअव्वं, मोट्टायअव्वं	मोट्टायणिज्जं, मोट्टायणीअं
भ्रंश्—भुल्ल	भुल्लिअव्वं, भुल्लेअव्वं	भुल्लणिज्जं, भुल्लणीअं
नश्—नस्स	नस्सिअव्वं, नस्सेअव्वं	नस्सणिज्जं, नस्सणीअं
दृश्—देक्ख	देक्खिअव्वं, देक्खेअव्वं	देक्खणिज्जं, देक्खणीअं
स्पृश्—फास	फासिअव्वं, फासेअव्वं	फासणिज्जं, फासणीअं
स्पृश्—छिव	छिविअव्वं, छिवेअव्वं	छिवणिज्जं, छिवणीअं
भष्—बुक्क	बुक्किअव्वं, बुक्केअव्वं	बुक्कणिज्जं, बुक्कणीअं
पुष्—पूस	पूसिअव्वं, पूसेअव्वं	पूसणिज्जं, पूसणीअं

हृष्—हरिस	हरिसिअव्वं, हरिसेअव्वं	हरिसणिज्जं, हरिसणीअं
मुह्—मुज्झ	मुज्झिअव्वं, मुज्झेअव्वं	मुज्झणिज्जं, मुज्झणीअं
इष्—इच्छ	इच्छिअव्वं, इच्छेअव्वं	इच्छणिज्जं, इच्छणीअं
भिद्—भिन्द	भिन्दिअव्वं, भिन्देअव्वं	भिन्दणिज्जं, भिन्दणीअं
युध्—जुज्झ	जुज्झिअव्वं, जुज्झेअव्वं	जुज्झणिज्जं, जुज्झणीअं
बुध्—बुज्झ	बुज्झिअव्वं, बुज्झेअव्वं	बुज्झणिज्जं, बुज्झणीअं
पत्—पड	पडिअव्वं, पडेअव्वं	पडणिज्जं, पडणीअं
सद्—सड	सडिअव्वं, सडेअव्वं	सडणिज्जं, सडणीअं
शद्—झड	झडिअव्वं, झडेअव्वं	झडणिज्जं, झडणीअं
वृध्—वड्ढ	वड्ढिअव्वं, वड्ढेअव्वं	वड्ढणिज्जं, वड्ढणीअं
नृत्—नच्च	नच्चिअव्वं, नच्चेअव्वं	नच्चणिज्जं, नच्चणीअं
रुद्—रुव	रुविअव्वं, रुवेअव्वं	रुवणिज्जं, रुवणीअं
नम्—नव	नविअव्वं, नवेअव्वं	नवणिज्जं, नवणीअं
विसृज्—वोसिर	वोसिरिअव्वं, वोसिरेअव्वं	वोसिरणिज्जं, वोसिरणीअं
अद्—अट्ट	अट्टिअव्वं, अट्टेअव्वं	अट्टणिज्जं, अट्टणीअं
कुप्—कुप्प	कुप्पिअव्वं, कुप्पेअव्वं	कुप्पणिज्जं, कुप्पणीअं
नट्—नट्ट	नट्टिअव्वं, नट्टेअव्वं	नट्टणिज्जं, नट्टणीअं
सिव—सिव्व	सिव्विअव्वं, सिव्वेअव्वं	सिव्वणिज्जं, सिव्वणीअं
मृग्—मग्ग	मग्गिअव्वं, मग्गेअव्वं	मग्गणिज्जं, मग्गणीअं
वन्द्—वन्द	वन्दिअव्वं, वन्देअव्वं	वन्दणिज्जं, वन्दणीअं
ग्रह्—घेत्	घेत्तव्वं	
वच्—वोत्	वोत्तव्वं	
रुद्—रोत्	रोत्तव्वं	
भुज्—भोत्	भोत्तव्वं	
मुच्—मोत्	मोत्तव्वं	
दृश्—दट्ठ	दट्ठव्व	
हस्—हस	हसिअव्वं, हसेअव्वं	हसणिज्जं, हसणीअं

प्रेरक विध्यर्थ कृदन्त

(६०) धातु में प्रेरक प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर विध्यर्थक तव्व, अणिज्ज और अणीअ प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा—

हस—हस + आवि = हसावि + तव्व = हसावितव्वं, हसाविअव्वं < हसापयितव्यम्

हसावि + अणिज्ज = हसावणिज्जं, हसावणीअं < हसापनीयम्

अनियमित विध्यर्थ कृदन्त

कज्जं < कार्यम्—आकार को ह्रस्व, संयुक्त रेफ का लोप, य को ज और द्वित्व।

किचं < कृत्यम्—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इकार, त्य के स्थान पर च।

गेज्झं < ग्राह्यम् - ग्राह्य के स्थान पर गेज्झ आदेश होता है।

गुज्झं < गुह्यम् — ह्य के स्थान पर ज्झ।

वज्जं < वर्ज्यम् संयुक्त रेफ का लोप, य लोप और ज को द्वित्व।

वज्जं < वद्यम्—संयुक्त द का लोप, य के स्थान प ज और ज को द्वित्व।

वचं < वाच्यम्—संयुक्त का लोप और च को द्वित्व।

वक्कं < वाक्यम्—सयुक्त य का लोप और क को द्वित्व।

जन्नं < जन्यम्—संयुक्त य का लोप और न को द्वित्व।

भव्वं < भव्यम्—संयुक्त य का लोप और व को द्वित्व।

पेज्जं < पेयम्—संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में ज्ज होता है।

गेज्जं < गेयम्— " " "

पच्चं < पाच्यम्—पकारोत्तर आकार को ह्रस्व, सयुक्त यकार का लोप और च को द्वित्व।

जज्जं < जय्यम्—य्य के स्थान पर ज्ज हुआ है।

सज्झं < सह्यम्—ह्य के स्थान पर ज्झ।

देज्जं, देअं < देयम्—संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में ज्ज, द्वितीय रूप में य का लोप और अ स्वर शेष।

शीलधर्म वाचक

शील, धर्म तथा भली प्रकार सम्पादन इन तीनों में से किसी एक अर्थ को व्यक्त करने के लिए प्राकृत में इर प्रत्यय होता है।

उदाहरण—

हस + इर = हसिरो < हसनशीलः

नव + इर = नविरो < नमनशीलः

हसाव + इर = हसाविरो < हासनशील.

हस + इर + आ (स्त्री प्र०) = हसिरा } हसनशीला
हस + इर + ई (स्त्री प्र०) = हसिरी }

अनियमित शीलधर्म वाचक कृदन्त

पायगो, पायओ < पाचकः—चकार का लोप, अ स्वर शेष और य श्रुति, ककार का लोप और विसर्ग का ओत्व, विकल्प से क के स्थान पर ग।

नायगो, नायओ < नायकः—विकल्प से क के स्थान पर ग तथा विकल्पाभाव पक्ष में क का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

नेआ, नेता < तकार का लोप और आ स्वर शेष।

विज्जं < विद्वान्—द्व के स्थान पर ज्ज, आकार को ह्रस्व।

कत्ता < कर्त्ता—संयुक्त रेफ का लोप और त को द्वित्व।

विकत्ता < विकर्त्ता—संयुक्त रेफ का लोप और त को द्वित्व।

वत्ता < वक्ता—संयुक्त ककार का लोप और त को द्वित्व।

छेत्ता < छेत्ता

कुंभआरो < कुम्भकारः—ककार का लोप, आ स्वर शेष, विसर्ग को ओत्व।

कम्मगरो < कर्मकरः—संयुक्त रेफ का लोप, म को द्वित्व, क को ग और विसर्ग का ओत्व।

भारहरो < भारहरः—विसर्ग के स्थान पर ओत्व।

थणंधयो < स्तनंधयः—स्तन के स्थान पर थण आदेश हुआ है।

परंतवो < परंतपः—प के स्थान पर व और विसर्ग को ओत्व।

लेहओ < लेखकः—ख के स्थान पर ह, ककार का लोप, अ स्वर शेष और विसर्ग को ओत्व।

हंता < हन्ता—हन् धातु के नकार के स्थान पर अनुस्वार।

अनियमित विध्यर्थ कृदन्त

कज्जं < कार्यम्—आकार को ह्रस्व, संयुक्त रेफ का लोप, य को ज और द्वित्व।

किच्चं < कृत्यम्—ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर इकार, त्य के स्थान पर च।

गेज्झं < ग्राह्यम् - ग्राह्य के स्थान पर गेज्झ आदेश होता है।

गुज्झं < गुह्यम्—ह्य के स्थान पर ज्झ।

वज्जं < वर्ज्यम् संयुक्त रेफ का लोप, य लोप और ज को द्वित्व।

वज्जं < वद्यम्—संयुक्त द का लोप, य के स्थान प ज और ज को द्वित्व।

वच्चं < वाच्यम्—संयुक्त का लोप और च को द्वित्व।

वक्कं < वाक्यम्—संयुक्त य का लोप और क को द्वित्व।

जन्नं < जन्यम्—संयुक्त य का लोप और न को द्वित्व।

भव्वं < भव्यम्—संयुक्त य का लोप और व को द्वित्व।

पेज्जं < पेयम्—संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में ज्ज होता है।

गेज्जं < गेयम्— " " "

पच्चं < पाच्यम्—पकारोत्तर आकार को ह्रस्व, संयुक्त यकार का लोप और च को द्वित्व।

जज्जं < जय्यम्—य्य के स्थान पर ज्ज हुआ है।

सज्झं < सह्यम्—ह्य के स्थान पर ज्झ।

देज्जं, देअं < देयम्—संस्कृत के य प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में ज्ज, द्वितीय रूप में य का लोप और अ स्वर शेष।

शीलधर्म वाचक

शील, धर्म तथा भली प्रकार सम्पादन इन तीनों में से किसी एक अर्थ को व्यक्त करने के लिए प्राकृत में इर प्रत्यय होता है।

उदाहरण—

हस + इर = हसिरो < हसनशील:

नव + इर = नविरो < नमनशील·

हसाव + इर = हसाविरो < हासनशील:

हस + इर + आ (स्त्री प्र०) = हसिरा } हसनशीला

हस + इर + ई (स्त्री प्र०) = हसिरी }

अग्घ	√राज्, √अर्ह्	शोभना, चमकना; योग्य होना लायक होना
अग्घा	आ + √घ्रा	सूँघना
अच्च	√अर्च्	पूजना, सत्कार करना
अच्चासाय	अत्या + √शातय्	अपमान करना, हैरान करना
अच्चीकर	अर्ची + कृ	प्रशंसा करना
अच्छ	√आस्	बैठना
अच्छिंद	आ + √छिद्	छेद करना, काटना
अच्छोड	आ + √छोटय्	पटकना, पछाड़ना, सींचना, छिटकना
अज्ज	√अर्ज्	पैदा करना, उपार्जन करना
अज्जाव	आ + √ज्ञापय्	आज्ञा करना, हुक्म करना
अज्झयाव	अधि + √आप्	पढ़ना, सीखना
अज्झवस	अध्य + √वस्	विचार करना, चिन्तन करना
अज्झस्स	आ + √क्रुश्	आक्रोश करना, अभिशाप देना
अज्झावस	अध्या + √वस्	रहना, वास करना
अज्झोववज्ज	अध्युप + √पद्	अत्यासक्त होना, आसक्ति करना
अट, अड	√अट्	भ्रमण करना, घूमना
अडसम्म	दे०	सँभालना, रक्षण करना
अडक्ख	√क्षिप्	फेंकना, गिरना
अण	√भण्	आवाज करना, जानना, समझना
अणुअंच	अनु √कृष्	पीछे खींचना
अणुकंप	अनु + √कम्प्	दया करना
अणुकड्ढ	अनु + √कृष्	खींचना, अनुसरण करना
अणुकर, अणुकुण	अनु + √कृ	अनुकरण करना, नकल करना
अणुकह	अनु + √कथ्	दुहराना, अनुवाद करना, पीछे बोलना
अणुकम	अनु + √क्रम्	अतिक्रमण करना
अणुगच्छ, अणुगम	अनु + √गम्	पीछे चलना, अनुगमन करना, अनुसरण करना
अणुगवेस	अनु + √गवेष्	खोजना, शोधना, तलाश करना
अणुगिल	अनु + √गॄ	भक्षण करना
अणुग्गह	अनु + √ग्रह	कृपा करना

धातुकोष

प्राकृत में उपसर्ग के साथ मिलने से धातु में अर्थ परिवर्तन तो होता ही है, पर उसकी आकृति भी नयी हो जाती है। उपसर्ग या उपपद सहित धातु का मूलरूप (Root) नया प्रतीत होता है। अतः सुविधा की दृष्टि से उपसर्ग सहित धातुकोष दिया जा रहा है।

अ

अइइ	अति + √इ	उल्लंघन करना
अइक्कम	अति + √क्रम्	अतिक्रमण या उल्लंघन करना
अइगच्छ	अति + √गम्	बीतना
अइच्छ	√गम्	जाना, गमन करना
अइट्ठा	अति + √स्था	उल्लंघन करना
अइयर	अति √चर्	,, ,,
अइवत्त	अति + √वृत्	अतिक्रमण करना
अइवय	अति + √व्रज्	उल्लंघन करना
अइसय	अति + √शी	मात करना
अंगीकर	अङ्गी + √कृ	स्वीकार करना
अंच	√कृष्, √अञ्च्	खींचना, जोतना, पूजना
अंबाड	√खरण्ट्; तिरस् + √कृ	लेप करना, खरादना, उपालम्भ देना, तिरस्कार करना
अक्कंद	आ + √क्रन्द्, आ + √क्रम्	रोना, चिल्लाना; आक्रमण करना
अक्कम	आ + √क्रम्	आक्रमण करना
अक्कस	√गम्	जाना
अक्कोस	आ + √क्रुश्	आक्रोश करना, गाली देना
अक्ख	आ + √ख्या	कहना, बोलना
अक्खंड	आ + √स्कन्द्	आक्रमण करना
अक्खिव	आ + √क्षिप्	आक्षेप करना, टीका करना, फेंकना, दोषारोपण करना
अक्खोड	√कृष्; आ √स्फोटय्	म्यान से तलवार खींचना; थोड़ा या एक बार झटकना

अणुरुंध	अनु + √रुध्	अनुरोध करना, स्वीकार करना, आज्ञा का पालन करना, प्रार्थना करना
अणुलिप	अनु + √लिप्	पोतना, लेप करना
अणुलिह	अनु + लिह्	चाटना, छूना
अणुवच, अणुवज्ज	अनु + √व्रज्	अनुसरण करना
अणुवज्ज	√गम्	जाना
अणुवय	अनु + √वद्	अनुवाद करना
अणुवास	अनु + √वासय्	व्यवस्था करना
अणुवूह	अनु + √बृंह्	अनुमोदन करना, प्रशंसा करना
अणुवेय	अनु + √विद्य्	अनुभव करना
अणुसंचर	अनु + √चर्	परिभ्रमण करना
अणुसध	अनुसं + √धा	खोजना, ढूढना, तलाश करना
अणुसंसर	अनुसं + √सृ, √स्मृ	गमन करना, स्मरण करना
अणुसज्ज	अनु + √संज्	अनुसरण करना
अणुसर	अनु + √सृ, √स्मृ	अनुवर्तन करना; याद करना, चिन्तन करना
अणुसील	अनु + √शीलय्	पालन करना, रक्षण करना
अणुसोय	अनु + √शुच्	सोचना, चिन्ता करना
अणुहर	अनु + √हृ	अनुकरण करना, नकल करना
अणुहव, अणुहो	अनु + √भू	अनुभव करना
अणुहुंज	अनु + √भुज्	भोग करना
अण्ण, अण्ह	√भुज्	खाना, भोजन करना
अण्णे	अनु + √इ	अनुसरण करना
अण्णेस	अनु + √इष्	खोजना, ढूँढना
अतिउट्ट	अति + √त्रुट्, √वृत्	पूरा टूटना, उल्लंघन करना
अत्थ	√अर्थय्	मांगना, याचना करना
अत्थम		अस्त होना, अदृश्य होना
अत्थीकर	अर्थी + √कृ	प्रार्थना करना, याचना करना
अत्थु	आ + √स्तृ	बिछाना, शय्या करना
अद्द	√अर्द्	मारना, पीटना
अद्दह	आ + √दह	उबालना
अपेक्ख	अप + √ईक्ष्	अपेक्षा करना, राह देखना
अपोह	अप + √ऊह्	निश्चय करना

अणुग्घास	अनु + √ग्रासय्	खिलाना, भोजन करना
अणुचर	अनु + √चर्	सेवा करना, अनुष्ठान करना, पीछे जाना
अणुच्चि	अनु + च्युत्	मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना
अणुचिंत	अनु + √चिंत्	विचारना, याद करना, सोचना
अणुचिट्ठ, अणुट्ठा	अनु + √स्था	अनुष्ठान करना, शास्त्रोक्त विधान करना
अणुजा	अनु + √या	अनुसरण करना, पीछे चलना
अणुजाण, अणुण्णव	अनु + √ज्ञा	अनुमति देना, सम्मति देना
अणुज्झा	अनु + √ध्या	चिन्तन करना, ध्यान करना
अणुणी	अनु + √नी	अनुनय-विनय करना
अणुतप्प	अनु + √तप्	अनुताप करना, पछताना
अणुपरियट्ट	अनुपरि + √अट्; वृत्	घूमना, परिभ्रमण करना, फिरना, फिरते जाना
अणुपविस	अनुप्र + √विश्	प्रवेश करना, पीछे प्रवेश करना
अणुपस्स	अनु + √दृश्	पर्यालोचन करना
अणुपाल	अनु + √पालय्	अनुभव करना, प्रतीक्षा करना
अणुप्पणी	अनुप्र + √णी	प्रणय करना
अणुप्पदा	अनुप्र + √दा	दान देना
अणुप्पवाय	अनुप्र + √वाचय्	पढ़ाना
अणुप्पसाद	अनुप्र + √सादय्	प्रसन्न करना
अणुप्पेह	अनुप्र + √ईक्ष्	चिन्तन करना, विचार करना
अणुवध	अनु + √बंध	अनुसरण करना
अणुभव	अनु + √भू	अनुभव करना
अणुभास	अनु + √भाष्	अनुवाद करना, कही हुई बात को दुहराना
अणुभुंज	अनु + √भुज्	भोग करना
अणुभूस	अनु + √भूष्	भूषित करना, शोभित करना
अणुमण्ण	अनु + √मन्	अनुमति देना, अनुमोदन करना
अणुमाण	अनु + √मानय्	अनुमान करना
अणुमाल	अनु + √मालय्	शोभित होना, चमकना
अणुमोय	अनु + √मुद्	प्रशंसा करना, अनुमति करना
अणुरज्ज	अनु + √रञ्ज्	अनुरक्त होना, प्रेमी होना

अभिद्दव	अभि + √द्रु	पीड़ा करना, दुःख उपजाना
अभिनिक्खम	अभि निर् + √क्रम्	दीक्षा लेना
अभिमंत	अभि + √मन्त्रय्	मन्त्रित करना
अभिमन्न	अभि + √मन्	अभिमान करना
अभिरम	अभि + √रम्	क्रीड़ा करना, संभोग करना, प्रीति करना
अभिरय	अभि + √रुच	पसन्द करना, रुचना
अभिरुह	अभि + √रुह्	रोकना, ऊपर चढ़ना
अभिलस	अभि + √लष्	चाहना, वांछना
अभिवंद	अभि + √वन्द्	नमस्कार करना, वन्दना करना
अभिवड्ढ	अभि+ √वृध्	बढ़ना, बड़ा होना, उन्नत होना
अभिसिच	अभि + √सिच्	अभिषेक करना
अभिहण	अभि + √हन्	मारना, हिंसा करना
अम	√अम्	जाना, आवाज करना
अय	√अय्	गमन करना, जाना
अयंछ	√कृष्	खींचना
अरिह	√अर्ह्	योग्य होना, पूजा करना
अरोअ	उत् + √लस	उल्लास करना, विकसित होना
अलंकर	अलं + √कृ	भूषित करना
अल्लिअ	उप + √ √सृप्	समीप में जाना
अल्लिव	√अर्पय्	अर्पण करना
अल्ली, अल्लीअ	आ + √ली	आना, प्रवेश करना, आश्रय करना
अव	√अव्	रक्षण करना
अवअक्ख,अवअज्झ	√दृश्	देखना
अवअच्छ	√ह्लाद्	आनन्द पाना, प्रसन्न होना
अवउज्झ	अप + √उज्झ	परित्याग करना
अवकंख	अव + √काङ्क्ष्	चाहना, देखना
अवकर	अव + √कृ	अहित करना
अवकस	अव + √कृष्	त्याग करना
अवकम	अव + √क्रम्	पीछे हटना, बाहर निकलना
अवखेर	दे०	खिन्न करना, तिरस्कार करना
अवगाह	अव + √गाह	अवगाहन करना
अवगुण	अव + √गुणय्	खोलना, उद्घाटन करना

अप्पाह	सं+ √दिश्, अधि+ √आपय्	संदेश देना, खबर पहुँचाना; पढ़ाना, सिखाना
अप्पिण	√अर्पय्	अर्पण करना
अप्फाल	आ + √स्फालय्	आस्फोटन करना
अप्फुंद	आ + √क्रम्	आक्रमण करना
अप्फोड	आ + √स्फोटय्	आस्फालन करना, हाथ से ताल ठोकना
अब्भंग	अभि + √अञ्ज्	तैल आदि से मर्दन करना, मालिश करना
अब्भत्थ	अभि + √अर्थय्	सत्कार करना
अब्भस, अब्भास	अभि + √अस्	सीखना, अभ्यास करना
अभाअच्छ, अभिगच्छ	अभ्या + √गम्	सम्मुख आना, सामने आना
अब्भिड	सं + √गम्	संगति करना, मिलना
अब्भुक्ख	अभि + √उक्ष्	सिंचन करना
अब्भुट्ठ	अभ्युत् + √स्था	आदर करने के लिए खड़ा होना
अब्भुत्त	√स्ना, प्र + √दीप्	स्नान करना, प्रकाशित करना
अब्भुद्धर	अभ्युद् + √धृ	उद्धार करना
अब्भुवगच्छ	अभ्युप + √गम्	स्वीकार करना, पास जाना
अभिकंख	अभि + √काङ्क्ष्	इच्छा करना, चाहना
अभिगज्ज	अभि + √गर्ज्	गर्जना, जोर से आवाज करना
अभिगिज्झ	अभि + √गृध्	अतिलोभ करना, आसक्त होना
अभिघट्ट	अभि + √घट्ट्	वेग से जाना
अभिजाण	अभि + √ज्ञा	जानना
अभिजुंज	अभि + √युज्	मन्त्र तन्त्रादि से वश करना
अभिणंद	अभि + √नन्द	प्रशंसा करना, स्तुति करना
अभिणिगिण्ह	अभिनि + √ग्रह्	रोकना, अटकना
अभिणिबुज्झ	अभिनि + √बुध्	इन्द्रियों द्वारा ज्ञान करना
अभिणी	अभि + √नी	अभिनय करना, नाट्य करना
अभितज्ज	अभि + √तर्ज्	तिरस्कार करना, डाँटना, ताड़न करना
अभिताव	अभि + √तापय्	तपाना, गर्म करना
अभितास	अभि + √त्रासय्	त्रास उपजाना, भयभीत करना
अभित्थु	अभि + √स्तु	स्तुति करना, प्रशंसा करना

अवहर	√नश्, √गम्, अप + √हृ	पलायन करना; जाना; छीन लेना, अपहरण करना
अवहस	अप + √हस्	उपहास करना, तिरस्कार करना
अवहार	अव + √धारय्	निर्णय या निश्चय करना
अवहाव	√कृप्	दया करना
अवहीर	अव + √धीरय्	अवज्ञा करना
अवहोल	अव + √डोलय्	झूलना, सन्देह करना
अवुक	वि + ज्ञपय्	विज्ञप्ति करना, प्रार्थना करना
अवे	अव + √इ, अप + इ	जानना; दूर होना, हटना
अवेक्ख	अप + √ईक्ष्	अपेक्षा करना, अवलोकन करना
अवोह	अप + √ऊह्	विचार करना
अस	√अश्, √अस्	भोजन करना, व्याप्त होना; होना
अससस, अस्सास	आ + √श्वस्, आ + √श्वासय्	आश्वासन लेना, आश्वासन देना
अस्साद	आ + √स्वादय्	आस्वादन करना
अहिगम	अधि + √गम्, अभि + √गम्	जानना, निर्णय करना, सामने जाना
अहिजाण	अभि + √ज्ञा	पहिचानना
अहिज्ज	अधि + √इ	पढ़ना, अभ्यास करना
अहिट्ठा	अधि + √स्था	ऊपर चढ़ना, रहना, निवास करना
अहिणिवस	अभिनि + √वस्	बसना, रहना
अहिणु	अभि + √नु	स्तुति करना
अहिद्दव	अभि + √द्रु	हैरान करना
अहिपच्चुअ	√ग्रह्, आ + √गम्	ग्रहण करना, आना
अहिरम	अभि + √रम्	क्रीड़ा करना
अहिलिह	अभि + √लिख्	चिन्ता करना, लिखना
अहिवड	अधि + √पत्	आना
अहिसर	अभि + √सृ	प्रवेश करना, अभिसरण करना
अहिहर	अभि + √हृ	लेना, उठाना
अही	अधि + √इ	पढ़ना

आ

आउंछ	√कृष्	खींचना, जोतना
आअक्ख	आ + √चक्ष्	कहना; बोलना, उपदेश देना

अवचि	अप + √चि, अव + √चि	हीन होना, कम होना, इकट्ठा करना
अवजाण	अप + √ज्ञा	अपलाप करना
अवट्ट	अप + √वृत्	घुमाना, फिराना
अवट्ठव, अवठंभ	अव + √स्तम्भ्	अवलम्बन करना
अवडाह	उत् + √क्रुश्	ऊँचे स्वर से रुदन करना
अवणम	अव + √नम्	नीचे नमना
अवणी	अप + √नी	दूर करना, हटाना
अवत्थाव	अव + √स्थापय्	स्थिर करना, ठहरना
अवदाल	अव + √दलय्	खोलना
अवधार	अव + √धारय्	निश्चय करना
अवधाव	अप + √धाव्	पीछे दौड़ना
अवधुण	अव + √धू	परित्याग करना
अवबुज्झ	अव + √बुध्	जानना, समझना
अवभास	अव + √भास्	चमकाना, प्रकाशित करना
अवमज्ज	अव + √मृज्	पोंछना, साफ करना, झाड़ना
अवमण्ण	अव + √मन्	तिरस्कार करना, अवज्ञा करना
अवयक्ख	अप + √ईक्ष्	अपेक्षा करना, राह देखना
अवयर, अवरुह	अव + √तृ, √रुह	नीचे उतरना, जन्म ग्रहण करना
अवयास	√श्लिष्, अव + √काश्	आलिंगन करना, प्रकट करना
अवरज्झ	अप + √राध्	अपराध करना
अवरुंड	दे०	आलिंगन करना
अवलंब	अव+ √लम्ब्, अप+ √लप्	सहारा लेना, आश्रय लेना, असत्य बोलना
अवलोअ	अव +√लोक्	देखना अवलोकन करना
अवयास	अव + √काश	अवकाश देना, जगह देना
अवसक्क	अव + √ष्वष्क्	पीछे हट जाना
अवसप्प	अव + √सृप्	पीछे हटना
अवसर	अव + √सृ	आश्रय करना
अवसिज्ज	अव + √सद्	हारना, पराजित होना
अवसीय	अव + √सद्	क्लेश पाना, खिन्न होना
अवसुअ	उद् + √वा	सूखना
अवह	√रच्	निर्माण करना, बनाना
अवहत्थ	अप + √हस्तय्	हाथ को,ऊँचा करना

आण	√ज्ञा, आ + √नी	जानना, लाना, आनयन करना
आणंद	आ + √नन्द्	आनन्द पाना
आणक्स		परीक्षा करना
आणम		श्वास लेना
आणव	आ + √ज्ञापय्	आज्ञा देना
आणाव	आ = √नायय्	मँगवाना
आणी, आणे	आ + √नी	लाना
आणे	√ज्ञा	जानना
आदिय	आ + √दा	ग्रहण करना
आधरिस	आ + √धर्षय्	परास्त करना, तिरस्कार करना
आपुच्छ	आ + √प्रच्छ	आज्ञा लेना, सम्पत्ति देना
आफाल	आ + √स्फालय्	आघात करना
आबंध	आ + √बन्ध	मजबूत बाँधना
आभोय	आ + √भोगय्	देखना, जानना
आमंत	आ + √मन्त्रय्	आह्वान करना, सम्बोधन करना
आमुय, आमिल्ल, आमुच	आ + √मुच्	छोड़ना, उतारना, त्यागना
आमुस	आ + √मृश्	थोड़ा स्पर्श करना
आमोअ	आ + √मुद्	खुश होना
आयंच	आ + √तञ्च्	सींचना, छिटकना
आयज्झ	√वेप्	काँपना, हिलना
आयण्ण	आ + √कर्णय्	सुनना, श्रवण करना
आयम	आ + √चम्	आचमन करना
आयर	आ + √चर्	आचरण करना, व्यवहार करना
आयल्ल	√लम्ब्	व्याप्त होना
आया	आ + √या, + √दा	आना, आगमन करना; ग्रहण करना
आयाम	आ + √यमय्	लम्बा करना
आयार	आ + √कारय्	बुलाना
आयास	आ + √यासय्	कष्ट देना, खिन्न करना
आरंभ	आ + √रभ्	आरम्भ करना
आरड	आ + √रट्	चिल्लाना
आराह	आ + √राधय्	सेवा करना, भक्ति करना
आरुस	आ + √रुष्	क्रोध करना, रोष करना

आअड्ड दे०,	व्या + √पृ	परवश होकर चलना, काम में लगना
आअर	आ + √दृ	आदर करना
आअल्ल	√वेप्	काँपना
आइ	आ + √दा	ग्रहण करना, लेना
आइग्घ	आ + √घ्रा	सूँघना
आइस	आ + √दिश्	आदेश करना, आज्ञा देना
आईव	आ + √दीप्	चमकना
आउंच	आ + √कुञ्चय्	संकुचित करना, समेटना
आउच्छ	आ + √प्रच्छ्	आज्ञा लेना, अनुज्ञा लेना
आउट्ट	आ + √वृत्, आ + √कुट्ट्	व्यवस्था करना, छेदन करना, हिंसा करना
आउड, आउड्ड	आ + √जोडय्, +कुट्ट्, √लिख्, √मस्ज्	जोडना, कूटना; लिखना, डूबना
आउस	आ + √वस्, + √क्रुश्, +मृश्, + √जुष्	रहना, शाप देना, स्पर्श करना, सेवन करना
आऊर	आ + √पूरय्	भरना, पूर्ति करना
आओड	आ + √खोटय्	प्रवेश करना, घुसेड़ना
आओध	आ + √युध्	लडना
आकंद	आ + √क्रन्द्	रोना, चिल्लाना
आकंप	आ + √कम्प्	काँपना
आकुंच	आ + √आकुञ्चय्	सकोच करना
आगल	आ + √कलय्	जानना, लगाना
आगार	आ + √कारय्	बुलाना, आह्वान करना
आघस	आ + √घृष्	घर्षण करना
आघस	आ + √घस्	घिसना
आघुम्म	आ + √घूर्ण्	डोलना, हिलना
आघोस	आ + √घोषय्	घोषणा करना
आडह	आ + √दह्	चारों ओर जलाना
आडुआल	दे०	मिश्रण करना, मिलाना
आडोव	आ + √टोपय्	आडंबर करना
आढव	आ + √रभ्	आरम्भ करना
आढा	आ + √दृ	आदर करना, मानना

आढ	√मृ	कहना
आढल	आ + √चल्	हिलना, चलना
आढा	आ + √धा, + √ज्ञा	स्थापन करना, कहना
आढार	आ + √हारय्	खाना, भोजन करना
आढिंड	आ + √हिण्ड्	गमन करना, जाना
आहु	आ + √हु	दान करना, त्याग करना
आहोड	√ताडय्	ताड़ना करना, पीटना

इ

इ	√इण्	जाना, गमन करना
इच्छ	√इष्	इच्छा करना, चाहना
इज्ज	आ + √इ	आना, आगमन करना

ई

ईर	√ईर्	प्रेरणा करना
ईस	√ईर्ष्	ईर्ष्या करना, द्वेष करना
ईह	√ईक्ष्	देखना, विचारना

उ

उअऊह	उप + √गूह्	छिपाना, आलिंगन करना
उइ	उद् + √इ, उप + √इ	उदित होना, समीप जाना
उंघ	नि + √द्रा	नींद लेना
उंज	√सिच्, √युज्	सींचना, प्रयोग करना, जोड़ना
उंभ	दे०	पूर्ति करना, पूरा करना
उकंप	उत् + √कम्प्	काँपना, हिलना
उकत्त	उत् + √कृत्	काटना, कतरना
उक्कम	उत् + √क्रम्	ऊँचा जाना, उल्टे क्रम से रखना
उक्कर, उक्किर	उत् + √कॄ	खोदना
उक्कुक्कुर	उत् + √स्था	उठना, खड़ा होना
उक्कुज्ज	उत् + √कुब्ज्	ऊँचा होकर नीचा होना
उक्कूव	उत् + √कूज्	अव्यक्त आवाज करना, चिल्लाना
उक्कोस	उत् + √क्रुश्	रोना, चिल्लाना
उक्खंड	उत् + √खण्डय्	तोड़ना, टुकड़ा करना
उक्खण, उक्खिण	उत् + √खन्	उखाड़ना, उच्छेद करना
उक्खिव	उत् + √क्षिप्	फेंकना

आरुह, आरोह, आरोव	आ + √रुह्, + √रोपय्	ऊपर चढ़ना
आलक्ख	आ + √लक्षय्	जानना
आलभ	आ + √लभ्	प्राप्त करना
आलिप	आ + √लिप्	लीपना, पोतना
आलिह	आ + √लिख्	विन्यास करना
आली	आ + √ली	लीन होना, आसक्त होना
आलुंख	√दह्, √स्पृश्	जलाना; स्पर्श करना
आलुंप	आ + √लुम्प्	हरण करना
आलोअ	आ + √लोच्	गुरु को अपना अपराध कहना
आलोड	आ + √लोडय्	मन्थन करना, हिलोरना
आलोव	आ + √लोपय्	आच्छादित करना
आव	आ + √या	आना, आगमन करना
आवज्ज	आ + √पद्	प्राप्त होना
आवट्ट, आवत्त	आ + √वृत्	चक्र की तरह घूमना, परिभ्रमण करना
आवर	आ + √वृ	आच्छादन करना
आवस	आ + √वस्	रहना, वास करना
आवह	आ + √वह्	धारण करना, वहन करना
आवा, आविअ	आ + √पा	पीना
आविध	आ + √व्यध्	विंधना
आविस	आ + √विश्	सम्बद्ध होना
आविहव	आविर् + √भू	प्रकट होना
आवीड	आ + √पीड्	पीड़ा देना, दबाना
आवेअ	आ + √वेदय्	निवेदन करना
आवेस	आ + √वेशय्	भूताविष्ट करना
आस	√आस्	बैठना
आसंक	आ + √शङ्क्	सन्देह करना
आसव	आ + √स्रु	धीरे-धीरे झरना, टपकना
आसस	आ + √श्वस्	विश्राम लेना
आसाअ	आ + √स्वाद्, + √सादय्, + √शातय्	स्वाद लेना; प्राप्त करना, अवज्ञा करना
आसास	आ + √शास्, + √श्वासय्	आशा करना, आश्वासन देना
आसेव	आ + √सेव	सेवन करना, पालन करना

आह	√ब्रू	कहना
आहल्ल	आ + √चल्	हिलना, चलना
आहा	आ + √धा, + √ख्या	स्थापन करना, कहना
आहार	आ + √हारय्	खाना, भोजन करना
आहिंड	आ + √हिण्ड्	गमन करना, जाना
आहु	आ + √हु	दान करना, त्याग करना
आहोड	√ताडय्	ताड़ना करना, पीटना

इ

इ	√इण्	जाना, गमन करना
इच्छ	√इष्	इच्छा करना, चाहना
इज्ज	आ + √इ	आना, आगमन करना

ई

ईर	√ईर्	प्रेरणा करना
ईस	√ईर्ष्य्	ईर्ष्या करना, द्वेष करना
ईह	√ईक्ष्	देखना, विचारना

उ

उअऊह	उप + √गूह्	छिपाना, आलिंगन करना
उइ	उद् + √इ, उप + √इ	उदित होना, समीप जाना
उंघ	नि + √द्रा	नींद लेना
उंज	√सिच्, √युज्	सींचना, प्रयोग करना, जोड़ना
उंभ	दे०	पूर्ति करना, पूरा करना
उक्कंप	उत् + √कम्प्	काँपना, हिलना
उक्कत्त	उत् + √कृत्	काटना, कतरना
उक्कम	उत् + √क्रम्	ऊँचा जाना, उल्टे क्रम से रखना
उक्कर, उक्किर	उत् + √कृ	खोदना
उक्कुक्कुर	उत् + √स्था	उठना, खड़ा होना
उक्कुज्ज	उत् + √कुब्ज्	ऊँचा होकर नीचा होना
उक्कूव	उत् + √क्रन्द्	अव्यक्त आवाज करना, चिल्लाना
उक्कोस	उत् + √क्रुश्	रोना, चिल्लाना
उक्खंड	उत् + √खण्डय्	तोड़ना, टुकड़ा करना
उक्खण, उक्खिण	उत् + √खन्	उखाड़ना, उच्छेद करना
उक्खिव	उत् + √क्षिप्	फेंकना

उक्खुड	√तुड्	तोड़ना, टुकड़ा करना
उग, उग्ग, उग्गम	उत् + √गम्, + √घाटय्	उदित होना; खोलना
उग्गह	√रचय्, उद् + √ग्रह्	रचना, निर्माण करना; ग्रहण करना
उग्गिल	उद् + √गृ	डकार लेना, बोलना, कहना
उग्गोव	उद् + √गोपय्	खोजना, प्रकट करना
उग्घड, उग्घाड	उद् + √घाटय्	खोलना
उग्घोस	उद् + √घोषय्	घोषणा करना
उच्चर	उत् + √चर्	पार जाना, उत्तीर्ण होना
उच्चल	उत् + √चल्	चलना, जाना
उच्चाड	दे०	रोकना, निवारण करना
उच्चार	उत् + √चारय्	बोलना, उच्चारण करना
उच्चाल	उत् + √चालय्	ऊँचा फेंकना
उच्चिट्ठ	उत् + √स्था	खड़ा होना
उच्चिण	उत् + √चि	एकत्र करना, इकट्ठा करना
उच्चुड	उत् + √चुड्	अपसरण करना, हटना
उच्चुप्प	√चट्	चढ़ना, आरूढ़ होना, ऊपर बैठना
उच्छुप्प	उत् + √सर्पय्	उन्नत करना, प्रभावित करना
उच्छल	उत् + √शल्	उछलना, ऊँचा जाना
उच्छह	उत् + √सह्	उत्साहित होना
उच्छाह	उत् + √साहय्	उत्साह दिलाना
उच्छिन्द	उत् + √छिद्	उन्मूलन करना
उच्छुभ	उत् + √क्षिप्	आक्रोश करना, गाली देना
उच्छेर	उत् + √श्रि	ऊँचा होना, उन्नत होना
उच्छोल	उत् + √मूलय्, + √क्षालय्	उन्मूलन करना; प्रक्षालन करना, धोना
उज्जम	उद् + √यम्	उद्यम करना, प्रयत्न करना
उज्जल	उद् + √ज्वल्	जलना, प्रकाशित होना
उज्जाल	उद् + √ज्वालय्	उजाला करना
उज्जोअ	उद् + √द्योतय्	प्रकाश करना
उज्झ	√उज्झ्	त्याग करना, छोड़ना
उट्ठ, उट्ठाव	उत् + √स्था, + √स्थापय्	उठना, खड़ा होना, उठाना
उट्टंभ	अव + √तम्भ्	आलम्बन देना, सहारा देना
उट्टुभ	अव + √ष्ठीव्	थूकना
उड्डाव	उद् + √डापय्	उड़ाना

उण्णम, उण्णाम	उद् + √नम्	ऊँचा होना, उन्नत होना; ऊँचा करना
उण्णी	उद् + √नी	ऊँचा ले जाना
उत्तम्म	उत् + √तप्	खिन्न होना, उद्विग्न होना
उत्तर	उत् + √तृ	बाहर निकलना, उतरना
उत्तस	उत् + √त्रस्	त्रास देना, पीड़ा देना
उत्ताड	उत् + √ताडय्	ताड़ना, ताड़न करना
उत्तुय	उत् + √तुद्	पीड़ा करना, परेशान करना
उत्थंघ	उद् + √नमय्, √रुध्	ऊंचा करना, उन्नत करना, रोकना
उत्थर, उत्थार	आ + √क्रम्, अव + √स्तृ	आक्रमण करना, दबाना, आच्छादन करना
उत्थल्ल	उत् + √शल्	उछलना, कूदना
उदाहर	उदा + √हृ	दृष्टान्त देना
उदि	उद् + √इ	ऊन्नत होना
उदीर	उद् + √ईरय्	प्रेरणा करना
उद्दा	उद् + √दा	बनाना, निर्माण करना
उद्दाल	आ + √छिद्	खींच लेना, हाथ से छीनना
उद्दिस	उद् + √दिश्	नाम निर्देश पूर्वक वस्तु का निरूपण करना
उद्दंस	उद् + √दृप्, उद् + √ध्वंस्	मारना, गाली देना, विनाश करना
उद्धम	उद् + √ध्मा	उड़ाना, वायु से भरना, शंख फूँकना
उद्धर	उद् + √धृ	फँसे हुए को निकालना
उद्धूल	उद् + √धूलय्	व्याप्त करना
उन्नंद	उद् + √नन्द्	अभिनन्दन करना
उप्पज्ज	उत् + √पद्	उत्पन्न होना
उप्पय, उप्पड, उप्पाड	उत् + √पत्	उड़ना, ऊँचा जाना, कूदना, उखाड़ना
उप्पण	उत् + √पू	फटकना, साफ करना
उप्पिय	उत् + √पा	आस्वादन करना
उप्पील	उत् + √पीडय्	कसकर बांधना
उप्पेक्ख	उत् प्र + √ईक्ष्	सम्भावना करना, कल्पना करना
उप्पेल	उद् + √नमय्	ऊँचा करना, उन्नत करना

उवनिक्खेव	उपनि + √क्षेपय्	धरोहर रखना
उवरंज	उप + √रञ्ज्	रक्त करना
उवरम	उप + √रम्	निवृत्त होना, विरत होना
उवरुंध	उप + √रुध्	अटकाव करना, रोकना
उवलंभ	उप + √लभ्	प्राप्त करना, उलाहना देना
उवलक्ख	उप + √लक्ष्	जानना, पहिचानना
उवला	उप + ला	ग्रहण करना
उवलोभ	उप + √लोभय्	लालच देना
उवल्लि	उप + ली	रहना
उववूह	उप + बृंह्	पुष्ट करना, प्रशंसा करना
उवसंघर	उपसं + √हृ	उपसंहार करना
उवसप्प	उप + √सृप्	समीप में जाना
उवसम, उवसाम	उप + √शम्, + √शामय्	क्रोध रहित होना, शान्त होना; शान्त करना
उवसोभ	उप + √शुभ्	शोभना, विराजना, शोभित होना
उवहत्थ		बनाना, रचना करना
उवहर	उप + √हृ	पूजा करना, उपस्थित करना
उवहुंज	उप + √भुज्	उपभोग करना, कार्य में लगना
उवाइण, उवादा	उपा + √दा	ग्रहण करना
उवाय	उप + √याच्	मनौती मनाना
उवालह	उपा + √लभ्	उलाहना देना
उवास	उप + √आस्	उपासना करना
उव्वम	उद् + √वम्	वमन करना, उल्टी करना
उव्वर	उद् + √वृ	शेष रहना, बच जाना
उव्वल	उद् + √वल्	उपलेपन करना
उव्वह	उप + √वह्	धारण करना, उठाना
उव्विय, उव्विव	उद् + √विज्	उद्वेग करना, उदासीन होना
उव्विल्ल	उद् + √वेल्, प्र + √सृ	चलना, काँपना, फैलना, पसरना
उव्वील	अव + √पीडय्	पीड़ा पहुँचाना
उस्सक्क	उत् + √ष्वष्क्	उत्कंठित होना
उस्सर, ऊसर	उत् + √सृ	हटना, दूर जाना
उस्सस, ऊसस	उत् + √श्वस्	उच्छ्वास लेना, ऊँचा श्वास लेना
उस्सिच	उत् + √सिच्	सींचना, सेक करना
उस्सिक्क	√मुच्	छोड़ना, त्याग करना

ऊ

ऊसल, ऊसुंभ	उत् + √लस्	उल्लसित होना
ऊसार	उत् + √सारय्	दूर करना
ऊह	√ऊह्	तर्क करना

ए

ए	आ + √इ	आना, आगमन करना
एड	√एड्	छोड़ना, त्याग करना
एस	आ + √इष्	खोजना, निर्दोष भिक्षा की खोज करना या ग्रहण करना
एह	√एध्	बढ़ना, उन्नत होना

ओ

ओअंद	आ + √छिद्	बलपूर्वक छीनना
ओअक्ख	√दृश्	देखना, अवलोकन करना
ओअग्ग	वि + √आप्	व्याप्त करना
ओअर	अव + √तॄ	जन्म ग्रहण करना, अवतार लेना
ओअल्ल	अव + √चल्	चलना
ओअव	√साधय्	साधना, वश में करना, जीतना
ओआर	अप + √वारय्	ढाँकना, रोकना
ओइंध	आ + √मुच्	छोड़ना, त्यागना
ओक्कस	अव + √कृष्	निमग्न होना, गड़ जाना
ओक्खंड	अव + √खण्डय्	तोड़ना
ओगाह	अव + √गाह्	अवगाहन करना
ओगिज्झ	अव + √ग्रह्	आश्रय लेना
ओग्गाल	√रोमन्थाय्	पगुराना, चराई हुई वस्तु को पुनः चबाना
ओच्छर	अव + √स्तृ	बिछाना, फैलाना
ओच्छाय	अव + √छादय्	आच्छादन करना
ओणंद	अव + √नन्द्	अभिनन्दन करना
ओणल्ल	अव + √लम्ब्	लटकना
ओणिअत्त	अव नि + √वृत्	पीछे हटना, वापस लौटना
ओद्धंस	अव + √ध्वंस्	गिराना, हटाना

ओधाव	अव + √धाव्	पीछे दौड़ना
ओवुज्झ	अव + √बुध्	जानना
ओमिण	अव + √मा	मापना, मान करना
ओमील	अव + √मील्	मुद्रित होना, बन्द होना
ओमुय	अव + √मुच्	पहनना
ओरस	अव + √तॄ	नीचे उतरना
ओरुम्मा	उद् + √वा	सूखना
ओलग्ग	अव + √लग्	पीछे लगना
ओलिप	अव + √लिप्	लीपना, लेप लगाना
ओल्हव	वि + √ध्यापय्	बुझाना, ठंडा करना
ओवत्त	अप + √वर्तय्	उल्टा करना, घुमाना
ओसुक्क	√तिज्	तीक्ष्ण करना, तेज करना
ओहट्ट	अप + √घट्	कम होना, ह्रास होना
ओहर, ओहिर	अप + √हृ, अव + √हृ	अपहरण करना; टेढ़ा होना, वक्र होना
ओहाम	√तुलय्	तौलना, तुलना करना
ओहार	अव + √धारय्	निश्चय करना
ओहाव	आ + √क्रम्	आक्रमण करना
ओहाव	अव + √धाव्	पीछे हटना
ओहीर	नि + √द्रा	सो जाना, निद्रा लेना

क

कंड	√कण्ड्	धान का छिलका अलग करना
कंडार	उत् + √कृ	खोदना, छील-छाल कर ठीक करना
कंद	√क्रन्द्	रोना, आक्रन्दन करना
कंप	√कम्प्	काँपना, हिलना
कज्जलाव	√बुड्	डूबना, बूड़ना
कट्ट, कत्त	√कृत्	काटना, छेदना
कडक्ख	√कटाक्षय्	कटाक्ष करना
कड्ढ	√कृष्	खींचना
कढ	√क्वथ्	क्वाथ करना, उबालना, गरम करना
कण	√कण्	शब्द करना, आवाज करना
कप्प	√कृप्	समर्थ होना, कल्पना करना
कम	√कम्	चाहना

कयत्थ	√कदर्थ्	हैरान करना
कर, कुण, कुव्व	√कृ	करना, बनाना
कराल	√दारय्	फाड़ना, छिद्र करना
कल	√कलय्	संख्या करना, जानना
कव	√कू	आवाज करना, शब्द करना
कस	√कष्	कसना, घिसना
कसाय	√कशाय्	ताड़न करना, मारना
कढ	√कथय्, √क्वथ्	कहना, बोलना; क्वाथ करना, उबालना
कार	√कारय्	कराना, बनवाना
कास	√कास्	कहरना, खाँसना
कित्त	√कीर्तय्	प्रशंसा करना, स्तुति करना
खिड्ड, कील	√क्रीड्	खेलना, क्रीड़ा करना
किर	√कॄ	फेंकना
किलाम	√क्लमय्	व्याप्त करना, मिश्र करना
किलिस	√क्लिश्	खेद पाना, थक जाना, दुःखी होना
कीण, के	√क्री	खरीदना, मोल लेना
कुंच	√कुञ्च्	जाना, चलना
कुच्छ	√कुत्स्	निन्दा करना, धिक्कारना
कुम्म	√क्रुध्	क्रोध करना
कुट्ट	√कुट्ट्	कूटना, पीसना, ताड़न करना
कुप्प	√कुप्, √भाष्	क्रोध करना, बोलना, कहना
कुरुकुरु	√कुरुकुराय्	कुड़कुड़ाना, बड़बड़ाना
कुरुल	√कु	आवाज करना, कौए का बोलना
कुह	√कुथ्	सड़ जाना, दुर्गन्ध देना, बदबू आना
केलाय	समा + √रच्	साफ करना, ठीक करना
कोक	व्या + √ह्वे	बुलाना, आह्वान करना

ख

खंच	√कृष्	खींचना, वश में करना
खंज	√खञ्ज्	लंगड़ा होना
खंड	√खण्डय्	तोड़ना, टुकड़े करना
खंप	√सिच्	सींचना, छिड़कना
खच	√पच्	पावन करना, पवित्र करना

खड्ड, खुड्ड	√मृद्	मर्दन करना
खण	√खन्	खोदना
खम	√क्षम्	क्षमा करना
खर, खिर	√क्षर्	झरना, टपकना, नष्ट होना
खरंट	√खरण्टय्	दुत्कारना, निर्भर्त्सना करना
खल	√स्खल्	पड़ना, गिरना
खव	√क्षपय्	नाश करना
खस	दे०	खिसकना, पड़ना
खा	√खाद्	खाना, भोजन करना
खाम	√क्षमय्	माफी माँगना
खाल	√क्षालय्	धोना, पखारना
खिल्ल, खेल	√खेल्	क्रीडा करना, खेल करना
खिव	√क्षिप्	फेंकना
खुट्ट, खुड	√तुड्	तोड़ना, टुकड़े करना, खंडित करना
खुडुक्क	दे०	नीचे उतरना
खुप्प	√मस्ज्	डूबना, निमग्न होना
खेअ	√खेदय्	खिन्न करना, खेद करना
खेड, खेड्ड	√कृष्, √रम्	खेती करना; क्रीडा करना, खेलना
खोट्ट	दे०	खटखटाना, ठोकना
खोभ	√क्षोभय्	विचलित करना, धैर्य से च्युत होना

ग

गंठ	√ग्रथ्	गूँथना, गठना
गच्छ	√गम्	जाना, गमन करना
गज्ज	√गर्ज्	गरजना, घड़घड़ाना
गडयड	दे०	गर्जन करना, आवाज करना
गण	√गणय्	गिनना, गिनती करना, गणना करना
गद	√गद्	बोलना, कहना
गम	√गम्	जाना, गति करना, चलना
गरह	√गर्ह्	निन्दा करना, घृणा करना
गरुअ, गरुआ	√गुरुकाय्	गुरु करना, बड़ा बनाना
गल	√गल्	गल जाना, सड़ना
गवेस	√गवेषय्	गवेषणा करना, खोज करना

गह	√ग्रह्	ग्रहण करना
गहगह	दे०	हर्ष से भर जाना
गा, गाअ	√गै	गाना, आलापना
गाल	√गालय्	गालना, छानना
गाह	√ग्राहय्	ग्रहण करना
गिज्झ	√गृध्	आसक्त होना, लम्पट होना
गिर, गिल	√गृ	बोलना, उच्चारण करना; निगलना
गुंठ	√गुण्ठ्	धूसरित करना, धूल के रंग का करना
गुभ, गुम्ह, गुंफ	√गुम्फ्	गूँथना
गुड	√गुड्	युद्ध के लिए तय्यार करना, सजाना
गुण	√गुणय्	गिनना
गुप्प	√गुप्	व्याकुल होना
गुम	√भ्रम्	घूमना, पर्यटन करना
गुम्म, गुम्मड	√मुह्	मुग्ध होना, घबड़ाना, व्याकुल होना
गुलुगुंछ	उत् + √क्षिप्, उत् + √नमय	ऊँचा फेंकना, ऊँचा करना, उन्नत करना
गुलगुल	√गुलगुलाय्	गुलगुल आवाज करना
गुलल	चाटु + √कृ	खुशामद करना
गूह	√गुह्	छिपाना, गुप्त रखना
गेण्ह	√ग्रह्	ग्रहण करना
गोवाय	√गोपाय्	छिपाना, रक्षण करना

घ

घट्ट	√घट्ट्	स्पर्श करना, छूना
घड, घडाव	√घट्	चेष्टा करना, बनाना, मिलाना, बनवाना
घत्त, घल्ल	√क्षिप्, √गवेष्	फेंकना, डालना, ढूँढना, खोजना
घत्त	√ग्रह्	ग्रहण करना
घाड	√भ्रंश्	भ्रष्ट होना, च्युत होना
घाय	√हन्	मारना, हिंसा करना
घिस	√ग्रस्	ग्रसना, निगलना, भक्षण करना
घुडुक	√गर्ज्	गर्जना

घुम्म	√घूर्ण	घूमना, चक्राकार फिरना
घुरुक्क	दे०	घुड़कना, घुड़की देना
घुरुघुर	√घुरुघुराय्	घुरघुराना
घुलघुल	√घुलघुलाय्	घुलघुल की आवाज करना
घुसल	√मथ्	मथना, विलोडन करना
घे	√ग्रह्	ग्रहण करना
घोर	√घुर्	निद्रा में घुरघुर की आवाज करना
घोल	√घोलय्	घिसना, रगड़ना
घोस	√घोषय्	घोषणा करना

च

चंकम	√चङ्क्रम्	बारम्बार चलना, इधर-उधर भ्रमण करना
चंछ, चच्छ	√तक्ष्	छीलना, तराशना, काटना
चंड	√पिष्	पीसना
चंप	दे०	चाँपना, दबाना
चंप	√चर्च्	चर्चा करना
चकम, चक्कम्म	√भ्रम्	घूमना, भटकना
चक्ख	आ + √स्वादय्	चखना, स्वाद लेना, चीखना
चच्चुप्प	√अर्पय्	अर्पण करना
चज्ज	√दृश्	देखना, अवलोकन करना
चट्ट	दे०	चाटना
चड	आ + √रुह्	चढ़ना, ऊपर बैठना
चड्ड	√मृद्, √पिष्, √भुज्	मर्दन करना, मसलना, पीसना; भोजन करना
चप्प	आ + √क्रम्	आक्रमण करना
चमक्क	चमत् + √कृ	विस्मित करना, आश्चर्यान्वित करना
चमड	√भुज्	भोजन करना
चय	√त्यज्, √शक्, √च्यु	छोड़ना, सकना, समर्थ होना; मरना
चर	√चर्	गमन करना, चलना
चल	√चल्	" "
चव	√कथय्, √च्यु	कहना, बोलना; मरना, च्युत होना

चाव	√चर्व्	चबाना
चाह	√वाञ्छ्	चाहना, वाञ्छा करना
चिइच्छ	√चिकित्स्	दया करना, चिकित्सा करना
चिंत	√चिन्तय्	चिन्ता करना, विचार करना
चिगिचिगाय	√चिकचिकाय्	चकचकाट करना
चिट्ठ	√स्था	बैठना, स्थिति करना
चित्त	√चित्रय्	चित्र बनाना
चु	√च्यु	मरना, जन्मान्तर में जाना
चुअ	√श्चुत्	झरना, टपकना
चुंट	√चि	पुष्पचयन करना
चुंब	√चुम्ब्	चुम्बन करना
चुक्क	√भ्रंश्	चूकना, भूलना
चुण्ण	√चूर्णय्	चूरना, टुकड़े-टुकड़े करना
चूर	√चूरय्	खण्ड करना
चूह	√क्षिप्	फेंकना, डालना
चेअ	√चित्	चेतना, सावधान होना
चोअ	√चोदय्	प्रेरणा करना, कहना

छ

छंद	√छन्द्	चाहना, वाञ्छना
छज्ज	√राज्	शोभना, चमकना
छड	आ + √रुह्	आरूढ होना, चढ़ना
छड्ड	√छर्दय्, √मुच्	वमन करना, छोड़ना, त्याग करना
छण	√क्षण्	हिंसा करना
छल	√छलय्	ठगना, वञ्चन करना, छल करना
छाय	√छादय्	आच्छादन करना, ढकना
छिंद	√छिद्	छेदना, विच्छेद करना
छिव, छुव, छिह	√स्पृश्	स्पर्श करना, छूना
छुंद	आ + √क्रम्	आक्रमण करना
छुर	√क्षुर्	लेप करना, लीपना
छेअ	√छेदय्	छिन्न करना
छोड	√छोटय्	छोड़ना, बन्धन मुक्त करना

ज

जअड	√त्वर्	त्वरा करना, शीघ्रता करना
जंप	√जल्प्	बोलना, कहना
जंभा	√जृम्भ्	जंभाई लेना
जग्ग	√जागृ	√जागना, नींद से उठाना
जज्जर	√जर्जरय्	जीर्ण करना, खोखला करना
जण	√जनय्	उत्पन्न करना
जम	√यमय	काबू में लाना, नियन्त्रण करना
जम्म	√जन्, √जम्	उत्पन्न होना; खाना, भक्षण करना
जय	√जि, √यत्	जीतना, पूजा करना
जर	√जॄ	जीर्ण होना, पुराना होना, बूढ़ा होना
जल	√ज्वल्	जलना, दग्ध होना
जव	√यापय्, √जप्	गमन कराना, भेजना; जाप करना
जह	√हा	त्यागना, छोड़ना
जा	√जन्, √या	उत्पन्न होना; जाना, गमन करना
जाण	√ज्ञा	जानना, समझना, ज्ञान प्राप्त करना
जाम	√मृज्	साफ करना, मार्जन करना
जाय	√याच्, √यातय्	प्रार्थना करना, मांगना; पीड़ना, यन्त्रणा करना
जिअ, जीव	√जीव्	जीना, प्राणधारण करना
जिण	√जि	जीतना, वश करना
जिम, जेम	√भुज्	जीमना, भोजन करना
जीह	√लस्ज्	लज्जा करना
जुह	√हु	देना, अर्पण करना
जूर	√क्रुध्, √खिद्, √जूर	क्रोध करना, गुस्सा करना; खेद करना; सूखना, झुरना
जो	√दृश्	देखना
जोअ	√द्युत्, √योजय्	प्रकाशित होना, जोड़ना, युक्त करना
जोह	√युध्	लड़ना, युद्ध करना

झ

झंख	सं + √तप्	संतप्त होना, संताप करना
झंख	वि + √लप्	विलाप करना, पश्चाद् करना

झंख	उपा + √लभ्	उपालंभ देना, उलाहना देना
झंख	निर् + √श्वस्	निश्वास लेना
झंझण	√झंझणाय्	झन-झन करना
झंप	√भ्रम्	घूमना, फिरना
झड	√शद्	झड़ना, टपकना
झडप्प	आ + √छिद्	झपटना, झपट मारना, छीनना
झण, झुण	√जुगुप्स्	घृणा करना
झर, झूर	√क्षर, √स्मृ	झरना, टपकना; याद करना
झा	√ध्यै	चिन्ता करना, ध्यान करना
झाम	√दह्	जलाना, भस्म करना
झिल्ल	√स्ना	स्नान करना, जल गिराना
झुण, झूर	√जुगुप्स्, √क्षि	घृणा करना, निन्दा करना, क्षीण होना
झोड	√शाट्य्	पेड़ आदि से पत्तों को गिराना
झोस	√गवेषय्	खोजना, अन्वेषण करना

ट

टिविडिक	√मण्डय्	मण्डित करना
टिट्टियाव	दे०	बोलने की प्रेरणा करना
टिरिटिल्ल	√भ्रम्	घूमना, फिरना
टुट्ट	√त्रुट्	टूटना, कट जाना

ठ

ठय	√स्थग्	बन्द करना, रोकना
ठव, ठाव	√स्थापय्	स्थापन करना
ठा	√स्था	बैठना, स्थिर रहना
ठिव्व	वि + √कुट्	मोड़ना

ड

डर	√त्रस्	डरना, भयभीत होना
डल्ल	√पा	पीना
डप	आ + √रभ्	आरम्भ करना
डह	√दह्	जलाना, दग्ध करना
डिभ	√स्रंस्	नीचे गिरना, ध्वस्त होना
डिक्क, ढिक्क	√गर्ज्	साँड का गर्जना करना
डिप्प	√दीप्, वि + √गल्	दीपना, चमकना; गलजाना, सड़ जाना

डुं, डुल	√भ्रम्	घूमना, चक्कर लगाना
डुल, डोल	√दोलय्	डोलना, हिलना, कांपना
डेव	उत् + √लंघ्	उल्लंघन करना, कूद जाना

ढ

ढंढल, ढुम	√भ्रम्	घूमना, भ्रमण करना
ढक्क	√छादय्	ढकना, आच्छादन करना
ढाल	दे०	टपकना, नीचे गिरना, नीचे पड़ना
ढुक्क	√ढौक्	भेंट करना, अर्पण करना

ण

णंद	√नन्द्	खुश होना, आनन्दित होना, समृद्ध होना
णच्च, णट्ट	√नृत्, √नट्	नाचना, नृत्य करना
णज्ज, णव्व, णा	√ज्ञा	जानना, समझना
णड	√गुप्	व्याकुल होना
णद	√नद्	नाद करना, आवाज करना
णस	नि + √अस्, √नश्	स्थापन करना; भागना, पलायन करना
णाम	√नमय्	नमाना, नीचा करना
णास, णासव	√नाशय्	नाश करना
णिअ, णिअच्छ	√दृश्	देखना
णिअच्छ	नि + √यम्	नियमन करना
णिअट्ट	नि + √वृत्	निवृत होना, बनाना
णिअद	नि + √गद्	कहना, बोलना
णिअम	नि + √यम्	नियन्त्रित करना
णिउंज	नि + √युज्	जोड़ना, संयुक्त करना
णिउड्ड	√मस्ज्, नि + √बुड्	मज्जन करना, डूबना
णिंद	√निन्द्	निन्दा करना
णिराय	नि + √क्राचय्	नियमन करना, नियन्त्रण करना
णिकिंत	नि + √कृत्	काटना, छेदना
णिकुट्ट	नि + √कुट्ट्	कूटना
णिक्कस	निर् + √कस्	निकासना, बाहर निकालना
णिक्किण	निर् + √क्री	निष्क्रय करना, खरीदना

णिगद	नि + √गद्	कहना
णिगिण्ह	नि + √ग्रह्	निग्रह करना, दण्ड करना, दण्ड देना
णिगुंज	नि + √गुञ्ज्	गूँजना, अव्यक्त शब्द करना
णिगूह	नि + √गुह्	छिपाना, गोपन करना
णिग्गच्छ	निर् + √गम्	बाहर निकलना
णिच्चल	√क्षर्, √मुच्	झरना, टपकना; दुःख को छोड़ना, दुःख का त्याग करना
णिच्छय	निस् + √चि	निश्चय करना, निर्णय करना
णिच्छल	√छिद्	छेदना, काटना
णिच्छुभ	नि + √क्षिप्	बाहर निकालना
णिच्छोड	निस् + √छोटय्	बाहर निकलने के लिए धमकाना
णिच्छोल	निस् + √तक्ष्	छीलना, छाल उतारना
णिज्जर	निर् + √जॄ	क्षय करना, नाश करना
णिज्जा	निर् + √या	बाहर निकालना
णिज्जिण	निर् + √जि	जीतना, पराभव करना
णिज्जूह	निर् + √यूह्	परित्याग करना, रचना, निर्माण करना
णिज्झर	√क्षि	क्षीण होना
णिज्झा	निर् + √ध्यै	विशेष चिन्तन करना
णिट्टुअ	√क्षर्	टपकना, चूना
णिट्ठय, णिट्ठव	नि + √स्थापय्	समाप्त करना, पूर्ण करना
णिट्ठा	नि + √स्था	समाप्त होना
णिट्ठुह	नि + √स्तम्भ्	निष्टम्भ करना, निश्चेष्ट होना
णिण्णास	निर् + √नाशय्	विनाश करना
णिण्हव	नि + √ह्नु	अपलाप करना
णित्थर	निर् + √तॄ	पार करना, पार उतरना
णिदंस	नि + √दर्शय्	उदाहरण बतलाना, दृष्टान्त दिखाना
णिद्दह	निर् + √दह्	जला देना, भस्म करना
णिद्दिस	निर् + √दिश्	उच्चारण करना, कथन करना
णिद्धाव	निर् + √धाव	दौड़ना
णिद्धुण	निर् + √धू	विनाश करना, दूर करना
णिप्पंख	निर् + √पक्षय्	पक्षरहित करना, पंख तोड़ना
णिप्पज्ज	निर् + √पद्	उपजना, सिद्ध होना

णिप्फिड	नि + √स्फिट्	बाहर निकलना
णिबंध	नि + √बंध्	बांधना
णिबुड्ड, णियोल	नि + √मस्ज्	निमज्जन करना, डूबना
णिब्भच्छ	निर् + √भर्त्स्	तिरस्कार करना, अपमान करना, अवहेलना करना
णिब्भर	निर् + √भृ	भरना, पूर्ण करना
णिब्भिद	निर् + √भिद्	तोडना, विदारण करना
णिभाल	नि + √भाल्य्	देखना, निरीक्षण करना
णिभेल	निर् + √भेल्य्	बाहर करना
णिम, णिस	नि + √अस्	स्थापन करना
णिमंत	नि + √मन्त्र्	निमन्त्रण देना
णिमज्ज	नि + √मस्ज्	डूबना, निमज्जन करना
णिमिल्ल	नि + √मील्	आंख मूँदना, आंख मींचना
णिमे	नि + √मा	स्थापन करना
णिम्म	निर् + √मा	बनाना, निर्माण करना
णिम्मच्छ	नि + √म्रक्ष्	विलेपन करना
णिम्मह	√गम्	जाना, गमन करना
णिरक्ख, णिरिक्ख	निर् + √ईक्ष्	निरीक्षण करना, देखना
णिरव	आ + √क्षिप्	आक्षेप करना
णिरस	निर् + √अस्	अपास्त करना
णिराकर	निरा + √कृ	निषेध करना, दूर करना
णिरिग्घ	नि + √ली	आश्लेष करना, भेंट करना
णिरिणास	√गम्, √पिष्, √नश्	गमन करना; पीसना; पलायन करना
णिरुंभ	नि + √रुध्	निरोध करना, रोकना
णिरुवार	√ग्रह्	ग्रहण करना
णिरूव	नि + √रूपय्	विचार कर कहना
णिलिज्ज	नि + √ली	भेंटना, मिलना
णिलीअ		दूर करना
णिलुक्क	√तुड्	तोडना
णिल्लस	उत् + √लस्	उल्लसना, विकसना
णिल्लुंछ	√मुच्	छोड़ना, त्यागना
णिवज्ज	निर् + √पद्, नि + √सद्	उपजना; बैठना
णिवट्ट	नि + √वृत्	निवृत्त होना, लौटना, हटना

णिगद	नि + √गद्	कहना
णिगिण्ह	नि + √ग्रह्	निग्रह करना, दण्ड करना, दण्ड देना
णिगुंज	नि + √गुञ्ज्	गूँजना, अव्यक्त शब्द करना
णिगूह	नि + √गुह्	छिपाना, गोपन करना
णिग्गच्छ	निर् + √गम्	बाहर निकालना
णिचल	√क्षर्, √मुच्	झरना, टपकना; दु:ख को छोड़ना, दु:ख का त्याग करना
णिच्छय	निस् + √चि	निश्चय करना, निर्णय करना
णिच्छल्ल	√छिद्	छेदना, काटना
णिच्छुभ	नि + √क्षिप्	बाहर निकालना
णिच्छोड	निस् + √छोटय्	बाहर निकलने के लिए धमकाना
णिच्छोल	निस् + √तक्ष्	छीलना, छाल उतारना
णिज्जर	निर् + √जॄ	क्षय करना, नाश करना
णिज्जा	निर् + √या	बाहर निकालना
णिज्जिण	निर् + √जि	जीतना, पराभव करना
णिज्जूह	निर् + √यूह्	परित्याग करना, रचना, निर्माण करना
णिज्झर	√क्षि	क्षीण होना
णिज्झा	निर् + √ध्यै	विशेष चिन्तन करना
णिट्टअ	√क्षर्	टपकना, चूना
णिट्ठय, णिट्ठव	नि + √स्थापय्	समाप्त करना, पूर्ण करना
णिट्ठा	नि + √स्था	समाप्त होना
णिट्ठुह	नि + √स्तम्भ्	निष्टम्भ करना, निश्चेष्ट होना
णिण्णास	निर् + √नाशय्	विनाश करना
णिण्हव	नि + √ह्नु	अपलाप करना
णित्थर	निर् + √तॄ	पार करना, पार उतरना
णिदंस	नि + √दर्शय्	उदाहरण बतलाना, दृष्टान्त दिखाना
णिदह	निर् + √दह्	जला देना, भस्म करना
णिद्दिस	निर् + √दिश्	उच्चारण करना, कथन करना
णिद्धाव	निर् + √धाव	दौड़ना
णिद्धुण	निर् + √धू	विनाश करना, दूर करना
णिप्पंख	निर् + √पक्षय्	पक्षरहित करना, पंख तोड़ना
णिप्पज्ज	निर् + √पद्	उपजना, सिद्ध होना

णिस्सम्म	निर् + √श्रम्	बैठना
णिस्सिच	निर् + √सिच्	प्रक्षेप करना, डालना
णिहण	नि + √हन्, + √खन्	मारना; गाड़ना
णिहम्म	नि + √हम्म्	जाना, गमन करना
णिहर	नि + √हृ, + √सृ	पाखाना जाना, बाहर निकलना
णिहस	नि + √घृष्	घिसना
णिहा	नि + √धा, + √हा, √दृश	स्थापन करना; त्याग करना; देखना,
णिहुव	√कामय्	संभोग की अभिलाषा करना
णिहोड	नि + √वारय्, √पातय्	निवारण करना; गिराना, नाश करना
णी, णीण	√गम्	जाना, गमन करना
णीरंज	√भञ्ज्	तोड़ना
णीरव	आ + √क्षिप्	आक्षेप करना
णीहर	आ + √क्रन्द्, नि + √सृ, नि + √हृ	आक्रन्दन करना, बाहर निकालना, प्रतिध्वनि करना
णुमज्ज	नि + √सद्	बैठना
णुव्व	प्र + √काशय्	प्रकाशित करना
णूम	√छादय्	ढकना, छिपाना
णोल्ल	√क्षिप्, √नुद्	फेंकना, प्रेरणा करना
ण्हव	√स्नपय्	नहलाना, स्नान कराना
ण्हा	√स्ना	स्नान करना, नहाना

त

तक्क	√तर्क्	तर्क करना
तक्ख	√तक्ष्	छीलना, काटना
तड, तड्ड, तण	√तन्	विस्तार करना
तडप्फड	दे०	तड़फड़ाना
तणुअ	√तनय्	पतला करना, कृश करना
तप्प, तव	√तप्	तप करना
तमाड	√भ्रमय्	घुमाना, फिराना
तम्म	√तम्	खेद करना
तर	√तॄ	तैरना
तल्लट्ट	√सिच्	सींचना

णिवड	नि + √पत्	नीचे पड़ना, नीचे गिरना
णिवस	नि + √वस्	निवास करना
णिवह	√गम्, √नश्, √पिष्	जाना, भागना, पलायन करना, पीसना
णिवार	नि + वारय्	निवारण करना, निषेध करना
णिविस	निर् + √विश्	बैठना
णिवेअ	नि + √वेदय्	सम्मानपूर्वक ज्ञापन करना
णिव्वड	√मुच्, √भू	दुःख को छोड़ना; पृथक् होना, जुदा होना
णिव्वण्ण	निर् + √वर्णय्	श्लाघा करना, प्रशंसा करना, देखना
णिव्वत्त	निर् + √वर्तय्, + √वृत्तय्	बनाना, करना; गोल बनाना, वर्तुल करना
णिव्वय	निर् + √वृ	शान्त होना
णिव्वर	√कथ्, √छिद्	दुःख कहना; छेदन करना, काटना
णिव्वल	निर् + √पद्	निष्पन्न होना
णिव्वव	निर् + √वापय्	ठंडा करना, बुझाना
णिव्वह	{ निर् + √वह्, उद् + √वह्	निभाना, निर्वाह करना; धारण करना, ऊपर उठाना
णिव्वा	वि + √श्रम्	विश्राम करना
णिव्विज्ज	निर् + √विद्	निर्वेद पाना, विरक्त होना
णिव्विस	निर् + √विश्	त्याग करना
णिव्वेढ	निर् + √वेष्टय्	नाश करना, क्षय करना
णिव्वेल	निर् + √वेल्	फुरना
णिव्वोल	√कृ	क्रोध से होठ काटना, होठ को मलिन करना
णिसम	नि + √शमय्	सुनना
णिसाण	नि + √शाणय्	शान पर चढ़ाना, तीक्ष्ण करना
णिसिर	नि + √सृज्	बाहर निकालना, त्याग करना
णिसीअ	नि + √षद्	बैठना
णिसुंभ	नि + √शुम्भ्	मार डालना, मारना
णिसुण	नि + √श्रु	सुनना
णिसेव	नि + √सेव्	सेवा करना
णिसेह	नि + √षिध्	निषेध करना, निवारण करना

दम	√दमय्	निग्रह करना
दय	√दय्	रक्षण करना, कृपा करना, देना
दल, दा, दल	√दा, √दल्, √दलय्	देना, दान करना, विकसना, फटना चूर्ण करना, टुकड़े करना
दलिद्दा	√दरिद्रा	दुर्गति होना, दरिद्र होना
दव	√द्रु	छोड़ना
दवाव	√दापय्	दिलाना
दह	√दह्	जलना, भस्म करना
दार	√दारय्	विदारना, तोड़ना
दिक्ख	√दीक्ष्	दीक्षा देना
दिगिच्छ	√जिघत्स्	खाने की इच्छा करना
दिप्प, दीव, धिप्प	√दीप्	चमकना, तेज होना
दिव, देव	√दिव्	क्रीड़ा करना, जीतने की इच्छा करना
दुक्खाव	√दु:खय्	दु:ख उपजाना, दु:खी करना
दुगुण	√द्विगुणय्	दुगुना करना
दुरुदुल	√भ्रम्	खोयी हुई वस्तु की तलाश में घूमना, भ्रमण करना
दुरुह	आ + √रुह्	आरूढ़ होना, चढ़ना
दुह	√दुह्	दुहना, दूध निकालना
दुहाव, दूभ	√छिद्, √दु:खय्	उड़ना, दु:खी करना
दू, दूम	√दू	उत्ताप करना, सन्ताप करना
दूइज्ज	√द्रु	गमन करना, विहार करना
दूस	√दुष्	दूषित होना, दूषण लगाना
देस	√देशय्	कहना, उपदेश देना
दोल	√दोलय्	हिलना, झूलना

ध

धम	√ध्मा	धमना, आग में तपाना
धर	√धृ	धारण करना, पृथ्वी का पालन करना
धरिस	√धृष	सहत होना, एकत्र होना
धवक्क	दे०	धड़कना, भय से व्याकुल होना
धवल	√धवलय्	सफेद करना
धस	√धस्	धसना, नीचे जाना

तव, ताव	√तप्, √तापय्	गर्म करना
तस	√त्रस्	डरना, त्रास पाना
ताड	√ताडय्	ताड़ना
तालिअंट	√भ्रमय्	घुमाना, फिराना
तिउट्ट	√त्रुट्	टूटना
तिप्प	√तर्प्, √तिप्	तृप्त करना; झरना, चूना
तिम्म	√तीम्	भीगना, आर्द्र होना
तीर	√शक्, √तीरय्	समर्थ होना; समाप्त करना, परिपूर्ण करना
तुआ	√तुद्	व्यथा करना, पीड़ा करना
तुअर	√त्वर्	शीघ्रता करना, त्वरा करना
तुट्ट, तुड	√त्रुट्	टूटना
तुयट्ट	त्वग् + √वृत्	पार्श्व को घूमना, करवट बदलना
तुल	√तोलय्	तोलना
तूस, तोस	√तुष्	खुश होना
तेअ	√तिजय्	तेज करना

थ

थंभ	√स्तम्भ्	रुकना, स्तब्ध होना, स्थिर होना
थक्क	√स्था, √फक्क्, √भ्रम्	रहना, बैठना; नीचे जाना; थकना, भ्रान्त होना
थगथग	√धगधगय्	फड़कना, कांपना
थण	√स्तन्	गर्जना, कांपना
थय	√स्थगय्	आच्छादन करना
थरथर	दे०	कांपना
थव, थुण	√स्तु	स्तुति करना
थिंप	√तृप्	तृप्त होना, सन्तुष्ट होना
थिप्प	नि + √गल्	गल जाना
थिम	√स्तिम्	आर्द्र करना, गीला करना
थिवथिव	दे०	थिवथिव आवाज करना
थुक्क	दे०	थूकना

द

दंस, दरिस, दाव	√दर्शय्	दिखलाना, बतलाना
दक्ख	√दृश्	देखना, अवलोकन करना

दम	√दमय्	निग्रह करना
दय	√दय्	रक्षण करना, कृपा करना, देना
दल, दा; दल	√दा, √दल्, √दलय्	देना, दान करना; विकसना, फटना चूर्ण करना, टुकड़े करना
दलिद्दा	√दरिद्रा	दुर्गति होना, दरिद्र होना
दव	√द्रु	छोड़ना
दवाव	√दापय्	दिखाना
दह	√दह्	जलना, भस्म करना
दार	√दारय्	विदारना, तोड़ना
दिक्ख	√दीक्ष्	दीक्षा देना
दिगिच्छ	√जिघत्स्	खाने की इच्छा करना
दिप्प, दीव, धिप्प	√दीप्	चमकना, तेज होना
दिव, देव	√दिव्	क्रीड़ा करना, जीतने की इच्छा करना
दुक्खाव	√दुःखय्	दुःख उपजाना, दुःखी करना
दुगुण	√द्विगुणय्	दुगुना करना
दुरुदुल्ल	√भ्रम्	खोयी हुई वस्तु की तलाश में घूमना, भ्रमण करना
दुरुह	आ + √रुह्	आरूढ होना, चढ़ना
दुह	√दुह्	दुहना, दूध निकालना
दुहाव, दूम	√छिद्, √दुःखय्	छेदना, दुःखी करना
दू, दूम	√दू	उत्ताप करना, सन्ताप करना
दूज्जइ	√द्रु	गमन करना, विहार करना
दूस	√दुष्	दूषित होना, दूषण लगाना
देस	√दिशय्	कहना, उपदेश देना
दोल	√दोलय्	हिलना, झूलना

ध

धम	√ध्मा	धमना, आग में तपाना
धर	√धृ	धारण करना, पृथ्वी का पालन करना
धरिस	√धृष	संहत होना, एकत्र होना
धवक्क	दे०	धड़कना, भय से व्याकुल होना
धवल	√धवलय्	सफेद करना
धस	√धस्	धसना, नीचे जाना

धा, धाव	√धा, √ध्यै, √धाव्	धारण करना; ध्यान करना; दौड़ना
धाड	निर् + √सृ, √धाड्	बाहर निकलना; प्रेरणा करना, नाश करना
धार	√धारय्	धारण करना
धिक्कार	धिक् + √कारय्	धिक्कारना, तिरस्कार करना
धीर, धीख	√धीरय्	धैर्य देना, सान्त्वना देना
धुअ	√धु	काँपना
धुव, धोअ; धुव	√धाव् , √धू	धोना, शुद्ध करना; कंपाना, हिलाना
धे	√धा	धारण करना

प

पउंज	प्र + √युज्	जोड़ना, युक्त करना
पउत्त	प्र + √वृत्	प्रवृत्ति करना
पउल	√पच्	पकाना
पउस	प्र + √द्विष्	द्वेष करना
पंस	√पांसय्	मलिन करना
पकत्थ	प्र + √कत्थ्	श्लाघा करना, प्रशंसा करना
पक्खर	सं + √नाहय्	सन्नद्ध करना, घोड़े को सजाना
पक्खल	प्र + √स्खल्	गिरना, पड़ना
पगंथ	प्र + √कथय्	निन्दा करना
पगड्ढ	प्र + √कृष्	खींचना
पगल	प्र + √गल्	झरना, टपकना
पग्ग	√ग्रह्	ग्रहण करना
पच	√पच्	पकाना
पच्चक्ख		त्याग करना, छोड़ना
पच्चाअ	प्रति + √आयय्	प्रतीति करना, विश्वास करना
पच्चाया	प्रत्या + √जन्	उत्पन्न होना, जन्म होना
पच्चोगिल	प्रत्यव + √गिल्	आस्वादन करना
पच्चोणिवय	प्रत्यव नि + √पत्	उछल कर नीचे गिरना
पच्चोयर	प्रत्यव + √तृ	नीचे उतारना
पच्छ	प्र + √अर्थय्	प्रार्थना करना
पजह	प्र + √हा	त्याग करना
पज्ज	√पायय्	पिलाना, पान कराना

पज्जर	√कथ्	कहना, बोलना
पज्जुवट्ठा	पर्युप + √स्था	उपस्थित होना
पज्झंझ	प्र + √झञ्झ्	झरना, टपकना
पट्ट	√पा	पीना, पान करना
पडिकप्प	प्रति + √कृप्	सजाना, सजावट करना
पडिक्ख	प्रति + √ईक्ष्	प्रतीक्षा करना, बाट जोहना
पडिरिज्ज	परि + √लिह्	लिप्त होना, संलग्न होना
पडिच्छ	प्रति + √इष्	ग्रहण करना
पडिदा	प्रति + √दा	पीछे देना, दान का बदला देना
पडिजंप	प्रति + √जल्प्	कहना
पडिपुच्छ	प्रति + √प्रच्छ्	पूछना
पडिबाह	प्रति + √बाध्	रोकना
पडिबुज्झ	प्रति + √बुध्	बोध पाना
पडिबोह	प्रति + √बोधय्	जगाना
पडिभंज	प्रति + √भञ्ज्	टूटना, भग्न होना
पडियच्च	प्रति + √गम्	वापस जाना
पडिसुण	प्रति + √श्रु	प्रतिज्ञा करना, स्वीकार करना
पडिसा	√शम्	शान्त होना, भागना, पलायन करना
पडिहण	प्रति + √हन्	प्रतिघात करना
पडिहा	प्रति + √भा	मालूम होना
पडुह	√क्षुभ्	क्षुब्ध होना
पढ	√पठ्	पढ़ना, अध्ययन करना
पणाम	√अर्पय्, प्र + √नमय्	अर्पण करना, नमाना
पणिहा	प्रणि + √धा	एकाग्र चिन्तन करना, ध्यान करना
पण्णव	प्र + √ज्ञापय्	प्ररूपण करना, उपदेश देना
पण्णा	प्र + √ज्ञा	प्रकर्ष से जानना
पण्हुअ	प्र + √स्नु	झरना, टपकना
पतार	प्र + √तारय्	ठगना
पत्ति	प्रति + √इ	जानना, विश्वास करना
पत्थ	प्र + √अर्थय्	प्रार्थना करना
पत्थर	प्र + √स्तृ	बिछाना
पन्नाड	√मृद्	मर्दन करना
पप्प	प्र + √आप्	प्राप्त करना

धा, धाव	√धा, √ध्यै, √धाव्	धारण करना; ध्यान करना; दौड़ना
धाड	निर् + √सृ, √धाड्	बाहर निकलना; प्रेरणा करना, नाश करना
धार	√धारय्	धारण करना
धिक्कार	धिक् + √कारय्	धिक्कारना, तिरस्कार करना
धीर, धीरव	√धीरय्	धैर्य देना, सान्त्वना देना
धुअ	√धु	काँपना
धुव, धोअ; धुव	√धाव् , √धू	धोना, शुद्ध करना, कपाना, हिलाना
धे	√धा	धारण करना

प

पउंज	प्र + √युज्	जोड़ना, युक्त करना
पउत्त	प्र + √वृत्	प्रवृत्ति करना
पउल	√पच्	पकाना
पउस	प्र + √द्विष्	द्वेष करना
पंसु	√पांसय्	मलिन करना
पकत्थ	प्र + √कत्थ्	श्लाघा करना, प्रशंसा करना
पक्खर	सं + √नाहय्	सन्नद्ध करना, घोड़े को सजाना
पक्खल	प्र + √स्खल्	गिरना, पड़ना
पगथ	प्र + √कथय्	निन्दा करना
पगड्ढ	प्र + √कृष्	खींचना
पगल	प्र + √गल्	झरना, टपकना
पग्ग	√ग्रह्	ग्रहण करना
पच	√पच्	पकाना
पच्चक्ख		त्याग करना, छोड़ना
पच्चाअ	प्रति + √आपय्	प्रतीति करना, विश्वास करना
पच्चाया	प्रत्या + √जन्	उत्पन्न होना, जन्म होना
पच्चोगिल	प्रत्यव + √गिल्	आस्वादन करना
पच्चोणिवय	प्रत्यव नि + √पत्	उछल कर नीचे गिरना
पच्चोयर	प्रत्यव + √तृ	नीचे उतारना
पच्छ	प्र + √अर्थय्	प्रार्थना करना
पजह	प्र + √हा	त्याग करना
पज्ज	√पायय्	पिलाना, पान कराना

पमज्ज	प्र + √मृज्	मार्जन करना, साफ सुथरा करना
पमा	प्र + √मा	सत्य-सत्य ज्ञान करना
पमाय	प्र + √मद्	प्रमाद करना
पमिलाय	प्र + √म्लै	मुरझाना
पम्हुअ, पम्हुस	प्र + √स्मृ	भूल जाना
पय	√पच्, √वद्	पकाना, जाना
पयल्ल	√कृ	शिथिलता करना, ढीला होना
पया	प्र + √या	प्रयाण करना, प्रस्थान करना
पयार	प्र + √चारय्	प्रचार करना, प्रसारण करना
पराइ	परा + √जि	हराना, पराजय करना
परामुस	परा + √मृश्	स्पर्श करना, छूना
परि	√क्षिप्	फेंकना
परिआल	√वेष्ट्	वेष्टन करना, लपेटना
परिक्कम	परि + √क्रम्	पांव से चलना, पैदल चलना
परिगिला	परि + √ग्लै	ग्लानि होना
परिजव	परि + √विच्	पृथक् करना
परित्ता	परि + √त्रै	रक्षण करना
परिथुव	परि + √स्तु	स्तुति करना
परिमइल	परि + √मृज्	मार्जन करना
परिल्हस	परि + √स्रस्	गिर पड़ना, सरक जाना
परिवड्ढ	परि + √वृध्	बढ़ना
परिवा	परि + √वा	सूखना
परिस्सअ	परि + √ष्वञ्ज्	आलिंगन करना
परिह	परि + √धा	पहिरना
परी	परि + √इ, √क्षिप्, √भ्रम्	जाना, फेंकना, भ्रमण करना
पलट्ट	परि + √अस्	पलटना, बदलना
पलाय	परा + √अय्	भाग जाना
पविणी	प्र वि + √नी	दूर करना
पहास	प्र + √भाष्	बोलना
पहुच्च	प्र + √भू	पहुँचना
पाए	√पायय्	पिलाना
पागड	प्र + √कटय्	प्रकट करना

पाढ, पाढाव	√पाठय्	पढ़ाना, अध्ययन कराना
पाण	प्र + √आनय्	जिलाना
पाणम		निःश्वास लेना
पाम		प्राप्त करना
पाधार		पधारना
पार	√शक् , √पारय्	सकना, करने में समर्थ होना, पार पहुँचना
पारंभ	प्र + √रभ्	आरम्भ करना, शुरू करना
पाल	पालय्	पालन करना, रक्षण करना
पाव	प्र + √आप्	प्राप्त करना
पाह		प्रार्थना करना
पाहर	प्र + √हृ	प्रहर्ष से लाना, ले आना
पिज	√पिञ्ज्	रूई धुनना, पींजना
पिड		एकत्रित करना, संश्लिष्ट करना
पिध		ढकना
पिज्ज, पिव	√पा	पीना
पिट्ट	√पीडय्	पीडा करना
पिडव	√अर्ज्	पैदा करना, उपार्जन करना
पिस, पीस	√पिष्	पीसना
पिह	√स्पृह्	इच्छा करना, चाहना
पुंज	√पुञ्ज्	इकट्ठा करना, फैलाना
पुंस	√मृज्	मार्जन करना, पोंछना
पुज्ज, पूअ	√पूजय्	पूजन करना, आदर करना
पुण	√पू	पवित्र करना
पेच्छ	√दृश्	देखना
पेर	प्र + √ईरय्	भेजना, प्रेषण करना
पेल्ल	√क्षिप्	फेंकना
पेस	प्र + √एषय्	भेजना, पठाना, प्रेषण करना
पोस	√पुष्	पुष्ट होना

फ

फंद	√स्पन्द्	थोड़ा हिलना, धड़कना
फंफ		उछलना

फंस—फसइ		असत्य प्रमाणित होना
फंस, फस, फास, फुस, फरिस	√स्पृश्	छूना, स्पर्श करना
फट्ट	√स्फट्	फटना, टूटना
फड	√स्फट्	खोदना
फल	√फल्	फलना, फलान्वित होना
फव्वीह	√लभ्	यथेष्ट लाभ प्राप्त करना
फाड	√स्फाटय्	फाड़ना
फिट्ट	√भ्रश्	नीचे गिरना, ध्वस्त होना
फिर	√गम्	फिरना, चलना
फुक्क—फुकइ		फुफकारना, फू फू की आवाज करना
फुट्	√स्फुट्	निकलना, खिलना
फुम, फुस	√भ्रम्, फूत्+√कृ	भ्रमण करना; फूँक मारना
फुर	√स्फुर्	फड़कना, हिलना, अपहरण करना
फुरफुर		थरथराना
फुल्ल	√फुल्ल्	फूलना, विकसित होना
फेल	क्षिप्	फेंकना, दूर करना
फेल्लुस	दे०	फिसलना, खिसकना, खिसक कर गिरना
फोड	स्फोट्	फोड़ना, विदारण करना

ब

बइस	उप+√विश्	बैठना
बध	√बन्ध्	बाँधना
बडबड	दे०	विलाप करना, बड़बड़ाना
बल	√ग्रह्	ग्रहण करना
बव, बुव, बू	√ब्रू	बोलना
बाह	√बाध्	विरोध करना, रोकना
बिंब	√बिम्ब्	प्रतिबिम्बित करना
बिह	√बृंह	पोषण करना
बीह	√भी	डरना, भयभीत होना
बुक्क	√गर्ज्, √बुक्क्	गर्जन करना, गरजना, कुत्ते का भूँकना

बुज्झ	√बुध्	जानना, ज्ञान करना
बुड्ड	√मस्ज्	डूबना
बुब्बुअ		बु,बु, की आवाज
बोट्ट	दे०	जूठा करना, उच्छिष्ट करना
बोल		बुझाना
बोल्ल		बोलना
बोह	√बोधय्	समझना, ज्ञान करना

भ

भंज	√भञ्ज्	तोड़ना, भग्न करना
भड	√भाण्डय्, √भण्ड्	भडारा करना, संग्रह करना, भर्त्सना करना
भस	√भ्रंश्	नीचे गिरना
भक्ख	√भक्षय्	भक्षण करना, खाना
भज्ज	√भ्रस्ज्	पकाना, भूनना
भण, भण्ण	√भण्	कहना, बोलना
भम	√भ्रम्	भ्रमण करना, घूमना
भय	√भज्	सेवा करना
भर	√भृ	भरना, धारण करना
भल	√भल्	सम्हालना
भव	√भू	होना
भस	√भष्	भूँकना
भा	√भा	चमकना
भा	√भी	डरना, भय करना
भाव	√भावय्, √भास्	वासित करना, चिन्तन करना, दिखाना
भास	√भाष्, √भास्	बोलना, शोभना, प्रकाशना
भिंद	√भिद्	भेदना, तोड़ना
भिक्ख	√भिक्ष्	भीख माँगना
भिट्ट	दे०	भेंटना
भिड	दे०	भिड़ना, मिलना, सटना
भिलिंग	दे०	मालिश करना
भिस	√प्लुष्	जलाना
भुज	√भुज्	भोजन करना

भुल्ल	√भ्रंश्	च्युत होना
भूस	√भूषय्	सजावट करना
भेल	√भेलय्	मिलाना, मिश्रण करना
भोअ	√भुज्	खिलाना, भोजन करना

म

मइल		मैला करना, मलिन बनाना
मइल	दे०	तेज रहित होना, फीका लगना
मउल		सकुचना, संकुचित होना
मंड	√मण्ड्	भूषित करना, सजाना
मंड	दे०	आगे धरना
मक्ख	√म्रक्ष्	चुपड़ना, स्निग्ध करना
मग्ग	√मार्गय्, √मग्	माँगना; गमन करना, चलना
मज्ज	√मस्ज्, √मद्	स्नान करना; अभिमान करना
मड्ड, मद्द	√मृद्	मर्दन करना, चूर्ण करना, मसलना
मण	√मन्	मानना; जानना
मर	√मृ	मरना
मरह	√मृष्	क्षमा करना
मल्ह	दे०	मौज करना, लीला करना
मव	√मापय्	नापना, माप करना
मह	√काङ्क्ष्, √मथ्, √मह्	चाहना, वांछना; मथना; पूजा करना
माण	√मानय्	सम्मान करना, आदर करना
मार	√मारय्	ताड़न करना, हिंसा करना
माल	√माल्	शोभना, वेष्टित होना
मिट	दे०	मिटाना, लोप करना
मिण	√मा, √मी	नापना, तौलना
मिल	√मिल्	मिलना
मिला	√म्लै	म्लान होना, निस्तेज होना
मिस	√मिस्	शब्द करना
मिसमिस	दे०	अत्यन्त चमकना, खूब जलना
मिसल, मिस्स	√मिश्रय्	मिश्रण करना, मिलाना
मिह	√मिष्	स्नेह करना
मील	√मील्	सकुचाना

मुअ, मुक्क, मुअ	√मोचय्, √मुच्	मुक्त होना; छोड़ना
मुंड	√मुण्डय्	मूँडना
मुच्छ	√मूर्च्छ्	मूर्च्छित होना
मुज्झ	√मुह्	मोह करना
मुण	√ज्ञा	जानना
मुद्द	√मुद्रय्	मोहर लगाना
मुर	√स्फुट्	विलास करना, जीभ चलाना, व्याप्त करना
मुस	√मुष्	चोरी करना
मेल	√मेलय्	मिलाना
मोड	√मोटय्	मोड़ना, टेढ़ा करना
मोह	√मोहय्	भ्रम में डालना

य

यंच	√यच्च्	गमन करना
याण	√ज्ञा	जानना

र

रंग	√रङ्ग्	इधर-उधर जाना
रंग	√रङ्गय्	रंगना
रंज	√रञ्जय्	रंग लगाना
रंध	√रध्	राँधना, पकाना
रंप	√तक्ष्	छीलना, पतला करना
रंभ	√गम्, आ + √रभ्	जाना, गति करना, आरम्भ करना
रक्ख	√रक्ष्	रक्षण करना, पालन करना
रच, रज्ज	√रञ्ज्	अनुराग करना, आसक्त होना
रड	√रट	रोना, चिल्लाना
रण्प	आ + √क्रम्	आक्रमण करना
रम	√रम्	क्रीड़ा करना, सभोग करना
रय	√रञ्, √रचय्	रंगना; बनाना, निर्माण करना
रव	√रु	कहना, बोलना
रव, राव	दे०	आर्द्र करना
रस	√रस्	चिल्लाना, आवाज करना
रह	दे०	रहना

रह	√रह्	त्यागना, छोड़ना
रा	√रा	देना, दान करना
राण	वि + √नम्	विशेष नमना
राम	√रमय्	रमण करना
राय	√राज्	चमकना, शोभित होना
रिअ	√री, प्र+√विश्	गमन करना, प्रवेश करना
रिग	√रिङ्ग्	रेंगना, चलना
रिड	मण्डय्	विभूषित करना
रुअ	√रुद्	रोना
रुंच	√रुञ्च्	कपास से उसके बीज अलग करने की क्रिया करना
रुज	√रु	आवाज करना
रुंध	√रुध	रोकना, अटकना
रुच	√रुच्	रुचना, पसंद होना
रेह	√राज्	शोभना, चमकना
रोंच	√पिष्	पीसना

ल

लघ	√लङ्घ्	लाघना, अतिक्रमण करना
लव	√लम्ब्	सहारा लेना
लंभ	√लभ्	प्राप्त करना
लक्ख	√लक्षय्	जानना
लग्ग	√लग्	लगना, सम्बन्ध करना
लढ	√स्मृ	स्मरण करना
लभ	√लभ्	प्राप्त करना
लय	√ला	ग्रहण करना
लल	√लल्	विलास करना, मौज करना
लव	√लू, √लप्	काटना; बोलना, कहना
लस	√श्लिष्	श्लेष करना
लाल	√लालय्	स्नेहपूर्वक पालन करना
लिअ, लिप	√लिप्	लेपन करना, लीपना
लिच्छ	√लिप्स्	प्राप्त करने की चाहना
लिस	√स्वप्, √श्लिष्	सोना, शयन करना, आलिंगन करना

लिह	√लिप्, √लिह्	लिखना; चाटना
लुंट, लुट्ट, लूड	√लुण्ट	लूटना
लुक्क	√नि + √ली, √लुङ्	लुकना, छिपना; टूटना
लुढ	√लुठ्	लुढ़कना, लेटना
लुब्भ	√लुभ्	लोभ करना
लूस	√रूषय्	वध करना, मार डालना
लुह	√मृज्	पोंछना
ले	√ला	लेना
लोढ	दे०	कपास निकालना

व

वंच	√वञ्च्	ठगना
वंज	वि + √अञ्ज्	व्यक्त करना
वंद	√वन्द्	प्रणाम करना
वंक	√काङ्क्ष्	चाहना, अभिलाषा करना
वग्ग	√वल्ग्	कूदना, जाना, वर्ग करना
वज्ज	√त्रस्, √वद्	डरना; वजना
वज्जर	√कथय्	कहना, बोलना
वट्ट	√वृत्	परोसना, व्यवहार करना, वरतना
वड्ढ	√वृध्	बढ़ना
वड्ढव	√वर्धय्	बढ़ाना, वृद्धि करना
वण्ण	√वर्णय्	वर्णन करना
वम	√वम्	उल्टी करना, वमन करना
वय	√वच्, √वद्	बोलना, कहना, गमन करना
वर	√वृ	सगाई करना, सम्बन्ध करना
वल	√वल्	लौटाना, वापस करना, ग्रहण करना
वह	√वह्, √वध्, √व्यथ्	पहुँचाना; मारना, पीड़ा करना
वा	√वा, √म्लै, √व्ये	गति करना, चलना; सूखना, बुनना
वाय	√वादय्	बजाना
वाल	√वालय्	मोड़ना, वापस लौटाना
वावर	व्या + √वृ	काम में लगना
वावाअ	व्या + √पादय्	मार डालना, विनाश करना
वास	√वाश्	पशु पक्षियों का बोलना
वाह	√वाहय्	वहन करना, चलाना

वाहर	व्या + √हृ	बोलना, कहना
विअ	√विद्	जानना
विअंभ	वि + √जृम्भ	उत्पन्न होना, निकलना
विअट्ट	विसं + √वद्, वि + √वृत्	अप्रमाणित करना, विचारना, विहरना
विअर	वि + √चर्, वि + √तॄ	विहरना, घूमना, देना, अर्पण करना
विअप्प	वि + √कल्पय्	विचार करना, संशय करना
विअल	√मुच्, वि + √गल्, √ओजय्	मोड़ना; गल जाना; मजबूत होना
विअल	वि + √चल्	क्षुब्ध होना
विअस	वि + √कस्	खिलना, विकसित होना
विआण	वि + √ज्ञा	जानना, मालूम करना
विआय	वि + √जनय्	जन्म देना, प्रसव करना
विआर	वि + √कारय्, + √चारय्, + √दारय्	विकृत करना; विचार करना; फाड़ना, चीरना
विउकम	व्युत् + √क्रम्	परित्याग करना, उल्लंघन करना
विउक्कस	व्युत् + √कर्षय्	गर्व करना, बड़ाई करना
विउज्झ	वि + √बुध्	जागना
विउट्ट	वि + √मोटय्, + √वृत्, √वर्तय्	तोड़ डालना, उत्पन्न होना; विच्छेद होना
विउस	वि + √वद्, विद्वस्य्	विशेष बोलना; विद्वान् की तरह आचरण करना
विओज	वि + √योजय्	अलग करना
विछ, विज्झ	वि + √घट्	अलग होना
विंट	√वेष्ट्	वेष्टन करना, लपेटना
विंध, विज्झ	√व्यध्	बींधना, छेदना, वेधना
विकंथ	वि + √कत्थ्	प्रशंसा करना
विकट्ट	वि + √कृत्	काटना
विकर	वि + √कृ	विकार पाना
विकिण, विक्क, विक्के	वि + √क्री	बेचना
विकिर, विक्खिर	वि + √कॄ	बिखरना
विकुप्प	वि + √कुप्	कोप करना
विकूड	वि + √कूटय्	प्रतिघात करना

विकूण	वि + √कूट्य्	घृणा से मुँह मोड़ना
विक्कोस	वि + √क्रुश	चिल्लाना
विक्खिव, विच्छुह	वि + √क्षिप्	दूर करना, फेंकना
विगण	वि + √गणय्	निन्दा करना, घृणा करना
विगत्त	वि + √कृत्	काटना, छेदना
विगरह	वि + √गर्ह्	निन्दा करना
विगाह	वि + √गाह्	अवगाहन करना
विगिच	वि + √विच्	पृथक् करना, अलग करना
विगिला, विगिलाअ	वि + √ग्लै	विशेष ग्लानि होना, खिन्न होना
विगोव	वि + √गोपय्	प्रकाशित करना
विघुम्म	वि + √घूर्णय्	डोलना
विच	वि + √व्यय्	व्यय करना
विच	दे०	समीप में आना
विच्छड्ड	वि + √छर्दय्	परित्याग करना
विच्छुह	वि + क्षुभ्	विक्षोभ करना, चंचल हो उठना
विज्ज	√विद्	होना
विट्टाल	दे०	अस्पृश्य करना, उच्छिष्ट करना
विडंब	वि + √डम्बय्	तिरस्कार करना, अपमान करना
विढप्प	व्युत् + √पद्	व्युत्पन्न होना
विढव	√अर्ज	उपार्जन करना, पैदा करना
विणड	वि + √नटय्, वि + √गुप्	व्याकुल करना, विडम्बना करना
विणभ	√खेदय्	खिन्न करना
विणिच्छ	विनिस् + √चि	निश्चय करना
विणिजुंज	विनि + √युज्	जोड़ना, कार्य में लगना
विणियट्ट	विनि + √वृत्	निवृत्त होना, पीछे हटना
विणिवाए	विनि + √पातय्	मार गिराना
विणिवार	विनि + √वारय्	रोकना, निवारण करना
विणिहा	विनि + √धा	व्यवस्था करना
विणोअ	वि + √नोदय्	खण्डित करना, खेल करना, कुतूहल करना
विण्णव	वि + √ज्ञापय्	विनती करना, प्रार्थना करना
विण्णस	वि + √न्यासय	स्थापन करना, रखना

वित्थर, वित्थार	वि + √स्तृ	फैलाना, बढ़ाना
विद्दा	वि + √द्रा	खराब होना
विद्ध	√व्यध्	बींधना, छेदना
विपरिणाम	विपरि + √णमय्	विपरीत करना
विपलाअ	विपरा + √अय्	दूर भागना
विप्पजह	विप्र + √हा	परित्याग करना, छोड़ देना
विप्पलंभ	विप्र + √लभ्	ठगना
विप्पसीअ	विप्र + √सद्	प्रसन्न होना
विप्फाल	दे०	पूछना
विम्हय	वि + √स्मि	चमत्कृत होना, आश्चर्यान्वित होना, विस्मित होना
विम्हर	√स्मृ	याद करना
विर	√भञ्ज्, √गुप्	तोड़ना; व्याकुल होना
विरमाल	प्रति + √ईक्ष्	राह देखना, बाट जोहना
विरल्ल	√तन्	विस्तारना, फैलाना
विरेअ	वि + √रेचय्	मल निकालना, दस्त लेना
विलस	वि + √लस्	मौज करना
विलुंप	√काङ्क्ष्	अभिलाषा करना, चाहना
विवर	वि + √वृ	बाल सँवारना, व्याख्या करना
विवह	वि + वह्	विवाह करना
विस	वि + √शृ	हिंसा करना, नष्ट करना
विसट्ट	वि + √कस् √दल्	फटना, टूटना; विकसित होना, खिलना
विसिस	वि + √शिष्	विशेषण युक्त करना
विसुज्झ	वि + √शुध्	शुद्धि करना
विसूर	√खिद्	खेद करना
वीसुंभ	दे०	पृथक् होना
वुज्ज	√त्रस	डरना
वुड्ढ	√वृध्, √वर्धय्	बढ़ना, बढ़ाना
वेअ	√विद्य्; √वेप्	अनुभव करना, भोगना, जानना; काँपना
वेआर	दे०	ठगना, प्रतारण करना

वेढ	√वेष्ट्	लपेटना
वेल्ल	√विल्ल्, √रम्	कांपना, लेटना; क्रीडा करना
वेह	√व्यध्	बींधना
वोल	√गम्	चलना, गति करना
वोल्ल	√आ + √क्रम्	आक्रमण करना
वोसर	व्युत् + √सृज्	परित्याग करना, छोड़ना

स

सअ	√स्वद्	चखना, स्वाद लेना, प्रीति करना
संक	√शङ्क्	संशय करना, सन्देह करना
संकल	सं + √कलय्	संकलन करना, जोड़ना
संकेअ	सं + √केतय्	इशारा करना
संखा	सं + √स्त्यै	आवाज करना, सान्द्र होना, निबिड बनना
संखुड्ड	√रम्	क्रीड़ा करना, संभोग करना
संगह	सं + √ग्रह्	संचय करना, संग्रह करना
संगा	सं + √गै	गान करना
संघ	√कथ्	कहना
संचाय	सं + √शक्	समर्थ होना
संचिक्ख	सं + √स्था	रहना, ठहरना
संछुह	सं + क्षिप्	एकत्र करना, इकट्ठा करना
संजत्त	दे०	तैयार करना
संझाअ	सं + √ध्यै, √सन्ध्याय्	ख्याल करना, चिन्तन करना सन्ध्या की तरह आचरण करना
संणज्झ	सं + √नह्	कवच धारण करना, बखतर पहनना
संद	√स्यन्द्	झरना, टपकना
संदाण	√कृ	अवलम्बन करना, सहारा देना
संध	सं + √धा	अनुसन्धान करना, खोजना, जोड़ना
संपाव	संप्र + √आप्	प्राप्त करना
संलुंच	सं + √लुञ्च्	काटना
संवर	सं + √वृ	निरोध करना, रोकना
संविज्ज	सं + √विद्	विद्यमान होना
संवेल्ल	दे०	समेटना, समेटना, संकुचित करना

संस	स्रंस्, √शंस्	खिसकना, गिरना; कहना, प्रशंसा करना
सक	√शक्, √सृप्, √ष्वष्क	सकना, समर्थ होना; जाना, गति करना
सज्ज	√सञ्ज्, √सस्ज्	आसक्ति करना, आलिंगन करना; तैयार होना
सड	√सद्, √शद्	सड़ना, विषाद करना, खेद करना
सड्ढ	√शद्	विनाश करना, कृश करना
सद्दह	श्रद् + √धा	श्रद्धा करना, विश्वास करना
सप्प	√सृप्	जाना, गमन करना
सम	√शम्, √शमय्	{ शान्त होना, उपशान्त होना; उपशान्त करना, दबाना
समत्थ	सम् + √अर्थय्	सिद्ध करना, पुष्ट करना
समर	√स्मृ	याद करना
समाण	√भुज्, सम् + √आप्	भोजन करना, खाना; समाप्त करना
समोसव	दे०	टुकड़ा-टुकड़ा करना
सम्म	√शम्	शान्त होना
सय	√शी, √स्वप्; √स्वद्	सोना, शयन करना; पचना, जीर्ण होना
सय	√स्रु, √श्रि	झरना, टपकना; सेवा करना
सर	√सृ, √स्मृ, √स्वर्	सरकना, खिसकना; याद करना; आवाज करना
सलह	√श्लाघ्	प्रशंसा करना
सव	√शप्, √सू, √स्रु	शाप देना, गाली देना; उत्पन्न करना; झरना, टपकना
सस	√श्वस्	श्वास लेना
सह	√राज्, √सह्, आ + √ज्ञा	शोभना; सहन करना; आदेश देना
सार	√सारय्, प्र + √हृ, √स्मारय्	ठीक करना; प्रहार करना; याद दिलाना
सार	√त्वरय्	जुतवाना
साराय, साराव	साराय्	सार रूप होना; चिपकवाना, लगवाना
सास, साह	√शास्, √कथय्	सजा करना, सीख देना; कहना
साह	√साध्	सिद्ध करना; बनाना
सिंगार	√शृङ्गारय्	सिंगार करना, सजावट करना

सिंघ	√शिङ्घ्	सूँघना
सिच	√सिच्	सींचना, छिड़कना
सिज	√शिञ्ज्	अस्फुट आवाज करना
सिक्ख	√शिक्ष्	सीखना, पढ़ना, अभ्यास करना
सिक्खाव	√शिक्षय्	सिखाना, पढ़ाना, अभ्यास कराना
सिज्ज	√स्विद्	पसीना होना
सिज्झ	√सिध्	निष्पन्न होना, बनना, मुक्त होना
सिणा	√स्ना, √स्नपय्	स्नान करना; स्नान कराना
सिणिज्झ	√स्निह्	प्रीति करना
सिर	√सृज्	बनाना, निर्माण करना
सिलाह	√श्लाघ्	प्रशंसा करना
सिलेस	√श्लिष्	आलिङ्गन करना, भेंटना
सिव्व, सीव	√सीव्	सीना
सिह	√स्पृह्	इच्छा करना, चाहना
सीअ	√सद्	विषाद करना, खेद करना
सीआव	√सादय्	शिथिल करना
सीमंत	दे०	बेचना
सील	√शीलय्	अभ्यास करना
सीस	√शिष्, √कथय्	वध करना, हिंसा करना; कहना
सुप्प, सुअ, सुव	√स्वप्, √श्रु	सोना; सुनना
सुआ	√शी	शयन करना, सोना
सुंघ	दे०	सूंघना
सुक, सुक्कव	√शुष्, √शोषय्	सूखना; सुखाना
सुज्झ	√शुध्	शुद्ध होना
सुढ, सुमर	√स्मृ	याद करना
सुण	√श्रु	सुनना
सुरह	√सुरभाय्	सुगन्धित होना
सुस्स	√शुष्	सूखना
सुस्सुयाय	√सुसुकाय्, √सूत्काराय्	सू सू आवाज करना, सत्कार करना
सुस्सूस	√शुश्रूष्	सेवा करना
सुह	√सुखय्	सुखी करना
सूअ	√सूचय्	सूचना करना, जानना
सूस, सोस	√शुष्	सूखना

सेव	√सेव्	आराधना करना, आश्रय करना
सो	√सु, √स्वप्	दारू बनाना, पीड़ा करना, सोना
सोभ, सोह	√शुभ्, √शोभय्	शोभना, चमकना, शोभा युक्त करना, चमकना
सोल्ल	√क्षिप्, √पच्, √ईर्	फेंकना, पकाना, प्रेरणा करना
सोह	√शोधय्	शुद्धि करना, खोजना

ह

हक्क	दे०	पुकारना, आह्वान करना
हकार	दे०	ऊँचे फैलाना
हक्खुव	उत् + √क्षिप्	ऊँचा करना, उठाना, फेंकना
हण, हम्म	√हन्	वध करना, मारना
हम्म	√हम्म्	जाना
हर	√हृ, √ग्रह्, √हृ	हरण करना, छीनना, ग्रहण करना, आदान करना
हरिस	√हृष्, √हर्ष्	खुशी होना, हर्ष से रोमाञ्चित होना
हरेस	√हेष्	गति करना
हव	√भू	होना
हस	√हस्, √ह्रस्	हँसना, हास्य करना, हीन होना कम होना
हा	√हा	त्याग करना, गति करना
हार	√हारय्	नाश करना, हारना, पराभव होना
हाव	√हापय्	हानि करना, त्याग करना
हास	√हासय्	हँसाना
हिरि	√ह्री	लज्जित होना
हील	√हीलय्	अवज्ञा करना, तिरस्कार करना
हुण	√हु	होम करना
हुल	√क्षिप्, √मृज्	फेंकना, मार्जन करना, साफ करना
हेर	√दे०	देखना, निरीक्षण करना
होम	√होमय्	होम करना

दशवाँ अध्याय

अन्य प्राकृत भाषाएँ

शौरसेनी

(१) शौरसेनी में जितने भी शब्द आते हैं, उनकी प्रकृति संस्कृत है।

(२) शौरसेनी में अनादि में वर्तमान असंयुक्त त का द होता है।[1] यथा—

मारुदिणा, मन्तिदो—त के स्थान पर द।

एदाहि, एदाओ < एतस्मात्।

विशेष—(क) संयुक्त होने पर त का द नहीं होता। यथा—अज्जउत्त और सउन्तले में त का द नहीं हुआ है।

(ख) आदि में होने पर भी त का द नहीं होता। यथा—

"तधाकरेध जधा तस्स राइणो अणुकम्पणीआ भोमि" में तधा और तस्स के तकारों को द नहीं हुआ।

(३) कहीं-कहीं शौरसेनी में वर्णान्तर के अध.—अनन्तर वर्तमान त का द होता है।[2] यथा—

महन्दो < महान्त—हकारोत्तर आकार को ह्रस्व और त को द।

निच्चिन्दो < निश्चिन्त.—श्च के स्थान पर च्च तथा त को द।

अन्देउरं < अन्त पुरम्—त को द और पकार का लोप।

(४) शौरसेनी में तावत् शब्द के आदि तकार को विकल्प से दकार होता है।[3] यथा—

दाव, ताव < तावत्—विकल्प से तकार को द तथा हलन्त्य त् का लोप।

(५) शौरसेनी में थ के स्थान पर विकल्प से ध होता है।[4] यथा—

कधं < कथम्—थ के स्थान पर विकल्प से ध।

कधेदि < कथयति— " "

कधिदं < कथितम्— " "

---

१. तो दोनादौ शौरसेन्यामयुक्तस्य ८।४।२६० हे०। २. अध. क्वचित् ८।४।२६१।

३. वादेस्तावति ८।४।२६२ हे०। ४. थो ध. ८।४।२६७।

नाधो, नाहो < नाथः—थ के स्थान पर विकल्प से ध और विकल्पाभाव में—थ को ह हुआ है।

राजपधो, राजपहो < राजपथ — " " "

(६) शौरसेनी में इन्नन्त शब्दों से आमन्त्रण—सम्बोधन की प्रथमा विभक्ति के एकवचन में विकल्प से इन् के न का आकार होता है।[1] यथा—

भो कञ्चुइआ < भो कञ्चुकिन्।

सुहिआ < सुखिन्।

अन्यत्र—भो तवस्सि < भो तपस्विन्

भो मणस्सि < भो मनस्विन्

(७) शौरसेनी में नकारान्त शब्दों में सम्बोधन एकवचन में विकल्प से न् के स्थान पर अनुस्वार होता है।[2] यथा—

भो रायं < भो राजन्—ज का लोप, अ स्वर शेष और अ को य, न् का विकल्प से अनुस्वार।

भो विअयवम्मं < भो विजयवर्मन्—जलोप, अ स्वर शेष और न् को अनुस्वार।

(८) शौरसेनी में भवत् और भगवत् शब्दों में प्रथमा विभक्ति के एकवचन में मकार के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है।[3] यथा—

एदु भवं, समणे भगवं महावीरे।

(९) शौरसेनी में र्य के स्थान पर विकल्प से य्य आदेश होता है और विकल्पाभाव में ज्ज आदेश होता है।[4] यथा—

अय्यउत्तो, अज्जउत्तो < आर्यपुत्रः—र्य के स्थान पर य्य तथा विकल्पाभाव में ज्ज और पकार का लोप, त्र को त्त।

कय्यं, कज्जं < कार्यम्—र्य को विकल्प से य्य, विकल्पाभाव में ज्ज।

पय्याकुलो, पज्जाकुलो < पर्याकुलः—" "

सुय्यो, सुज्जो < सूर्यः— " "

कज्जपरवसो < कार्यपरवशः— " "

(१०) शौरसेनी में इह और हच् आदेश के हकार के स्थान में विकल्प से ध होता है।[5] यथा—

इध < इह—ह के स्थान पर ध हुआ है।

होध < होह—भवथ—, "

परित्तायध < परित्तायह—परित्रायध्वे—त्र को त्त और ह को ध।

---

१. आ आमन्त्र्ये सौ वेनो नः ८।४।२६३। २. मो वा ८।४।२६४।
३. भवद्भगवतोः ८।४।२६५। ४. न वा र्यो य्यः ८।४।२६६।
५. इह-हचोर्हस्य ८।४।२६८।

(११) शौरसेनी में भू धातु के हकार को विकल्प से भ आदेश होता है।[1] यथा—

भोदि, होदि < भवति—प्राकृत में भू के स्थान पर हो आदेश होता है, शौरसेनी में विकल्प से भू के स्थान पर भ हुआ है।

(१२) शौरसेनी में पूर्व शब्द के स्थान पर विकल्प से 'पुरव' आदेश होता है।[2] यथा—

अपुरव नाड्यं < अपूर्व नाट्यम्—पूर्व के स्थान पर पुरव आदेश हुआ है।

अपुरवागदं, अपुव्वागदं < अपूर्वागतम्— ,, ,,

(१३) शौरसेनी में इत और एत् के पर में रहने पर अन्त्य मकार के आगे णकार का विकल्प से आगम होता है।

(१४) शौरसेनी में इदानीम् के स्थान पर दाणिं आदेश होता है।[3] यथा—

अनन्तर करणीयं दाणिं आणेवदु अय्यो।

प्राकृत—महाराष्ट्री प्राकृत में भी इदानीम् के स्थान पर दाणिं आदेश होता है।

(१५) शौरसेनी में तस्मात् के स्थान पर ता आदेश होता है।[4] यथा—

ता जाव पविसामि < तस्मात् तावत् प्रविशामि।

ता अलं एदिणा माणेण < तस्मात् अलं एतेन मानेन।

(१६) शौरसेनी में इत् और एत् के पर में रहने पर अन्त्य मकार के णकार का आगम विकल्प से होता है।[5] यथा—

जुत्तं णिमं, जुत्तमिमं—इकार के पर में रहने से।

सरिसं णिमं, सरिसमिमं— ,, ,,

किणेदं, किमेदं—एकार के पर में रहने से

एवं णेदं, एवमेदं— ,, ,,

(१७) शौरसेनी में एव के अर्थ में य्येव निपात से सिद्ध होता है।[6] यथा—

मम य्येव बम्भणस्स; सो य्येव एसो—एव के स्थान पर य्येव।

(१८) चेटी के आह्वान अर्थ में शौरसेनी में हञ्जे इस निपात का प्रयोग होता है।[7] यथा—

हञ्जे चदुरिके।

---

१. भुवो भः ८।४।२६९।   २. पूर्वस्य पुरव. ८।४।२७०।

३. इदानीमो दाणिं ८।४।२७७ हे०।   ४. तस्मात्ता. ८।४।२७८।

५. मोन्त्याण्णो वेदेतोः ८।४।२७९।   ६. एवार्थे य्येव ८।४।२८०।

७. हञ्जे चेट्याह्वाने ८।४।२८१।

तृ०	तइया	ण, णं	हि, हिं
च०	चउत्थी	स्स, आय	ण, णं
पं०	पंचमी	आदु, आदो	आदो, चो, हिंतो, सुंतो, हि
ष०	छट्ठी	स्स	ण, णं
स०	सत्तमी	सि, म्मि	सु, सुं

वीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	वीरो	वीरा
बी०	वीरं	वीरे, वीरा
त०	वीरेण, वीरेणं	वीरेहि, वीरेहिं
च०	वीराय, वीरस्स	वीराणं, वीराण
प०	वीरादो, वीरादु	वीरादो, वीराहिंतो, वीरासुंतो, वीरेहिंतो, वीरेसुंतो
छ०	वीरस्स	वीराण, वीराणं
स०	वीरंसि, वीरम्मि	वीरेसु, वीरेसुं

इसी प्रकार सभी अकारान्त शब्दों के रूप बनते हैं।

इकारान्त और उकारान्त शब्दों के विभक्ति चिन्ह

	एकवचन	बहुवचन
प०	दीर्घ	अउ, अओ, णो
बी०	अनुस्वार	णो, दीर्घ
त०	णा	हि, हिं
च०	णो, स्स	ण, णं
प०	दो, दु	त्तो, ओ, उ, हिंतो, सुंतो
छ०	णो, स्स	ण, णं
स०	सि	सु, सुं

शौरसेनी में इसि<ऋषि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	इसी	इसउ, इसओ, इसिणो
बी०	इसिं	इसिणो, इसी
त०	इसिणा	इसीहि, इसीहिं

एअ < एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	एस, एसो	एदे
बी०	एदं	एदे, एदा
त०	एदेस, एदेणं, एदिणा	एदेहि, एदेहिं
च०	एदस्स	एदेसिं, एदाण, एदाणं
पं०	एदादु, एदादो	एअत्तो, एआओ, एआहिंतो, एआसुंतो
छ०	एदस्स	एदेसिं, एदाण, एदाणं
स०	एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि एअम्मि, एअंस्सि	एएसु, एएसुं

क्रियारूप

(३५) शौरसेनी में ति के स्थान पर दि और ते के स्थान पर दे, दि आदेश होते हैं।

(३६) शौरसेनी में भविष्यत् अर्थ में विहित प्रत्यय के पर में रहने पर स्सि होता है। भविस्सिदि, करिस्सिदि, गच्छिस्सिदि, आदि।

(३७) शौरसेनी में भूधातु के स्थान पर भो आदेश होता है। यथा—भोवि।

(३८) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर दा धातु के स्थान में दे आदेश होता है और भविष्यत् में दइस्स होता है।

(३९) शौरसेनी में कृन् धातु के स्थान में कर आदेश होता है। यथा करेमि।

(४०) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर स्था धातु के स्थान में चिट्ठ आदेश होता है।

(४१) शौरसेनी में स्मृ, दृश और अन धातुओं के स्थान में क्रमशः सुमर, पेक्ख और अच्छ आदेश होते हैं।

(४२) तिप् के साथ अस् धातु के सकार के स्थान में त्थि आदेश होता है।

(४३) भविष्यत्काल में मिप् सहित अस के स्थान में विकल्प से स्सं आदेश होता है। विकल्पाभाव में धातु के स्वर का दीर्घ भी होता है। स्सं, आस्सं आदि।

(४४) बहुवचन में सकार का धकार भी होता है।

(४५) उत्तम पुरुष में म्ह होता है तथा मिप् के स्थान पर स्सन् होता है।

वर्तमान में शौरसेनी के धातु प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष (Thrid Person)	दि, दे	न्ति, न्ते, इरे
मध्यम पुरुष (Second Person)	सि, से	इत्था, ध, ह
उत्तम पुरुष (First Person)	मि	मो, मु, म

शौरसेनी के भविष्यत्काल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	(Thrid Person) स्सिदि, स्सिदे	स्सिन्ति, स्सिन्ते, स्सिइरे
म० पु०	(Second Person) स्सिसि, स्सिसे	स्सिइ, स्सिध, स्सिइत्था
उ० पु०	(First Person) स्सं, स्सिमि	स्सिमो, स्सिमु, स्सिम

भूतकाल, आज्ञा एवं विधि में प्राकृत के समान ही प्रत्यय होते हैं।

हस् धातु के रूप

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसदि, हसेदे	हसन्ति, हसंते, हसिरे, हसइरे
म० पु०	हससि, हससे	हसित्था, हसध, हसइ
उ० पु०	हसमि, हसेमि	हसमो, हसमु, हसम, हसिमो, हसिमु, हसिम, हसेमो, हसेमु, हसेम

भविष्यत्काल—भण

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भणिस्सिदि, भणेस्सिदि भणिस्सिदे, भणेस्सिदे	भणिस्सिन्ति, भणेस्सिन्ति, भणिस्सिन्ते भणेस्सिन्ते, भणिस्सिइरे, भणेस्सिइरे
म० पु०	भणिस्सिसि, भणिस्सिसे	भणिस्सिइ, भणिस्सिध, भणिस्सिइत्था
उ० पु०	भणिस्सं, भणिस्सिमि	भणिस्सिमो, भणिस्सिमु, भणिस्सिम

अन्य सभी धातुओं के रूप हस और भण के समान होते हैं।

कृत् प्रत्यय

(४६) शौरसेनी में क्त्वा प्रत्यय के स्थान पर इय, दूण और त्ता प्रत्यय होते हैं। यथा—

इय—

भू + क्त्वा—इय = भविय < भूत्वा
हविय < भूत्वा
पढ + इय = पढिय < पठित्वा

दूण—

भू + दूण = भोदूण < भूत्वा

हो + दूण = होदूण < भूत्वा

पढ + दूण = पढिदूण < पठित्वा

त्ता—

भू + त्ता = भोत्ता < भूत्वा

हो + त्ता = होत्ता < भूत्वा

पढ + त्ता = पढित्ता < पठित्वा

(४७) शौरसेनी में कृ और गम धातुओं से पर में आनेवाले क्त्वा प्रत्यय के स्थान में विकल्प से अडुअ आदेश होता है और धातु के रि का लोप होता है। यथा—

कृ + क्त्वा = क + अडुअ (रि—अ का लोप) = कडुअ < कृत्वा।

गम् + क्त्वा = गम् + अडुअ (रि—अम् का लोप) = गडुअ < गत्वा।

विकल्पाभाव पक्ष में कृ—कर + इय = करिय < कृत्वा।

कर + दूण = करिदूण; कर + त्ता = करित्ता।

गम्—गच्छ + इय = गच्छिय; गच्छ + दूण = गच्छिदूण।

(४८) अवशेष कृदन्त रूपों में त के स्थान पर द कर दिया जाता है। यथा—

भू + तव्वं—हो + तव्वं = होदव्वं < भवितव्यम्।

कुछ शौरसेनी धातु

संस्कृत	शौरसेनी	क्रियारूप
भू	भो या हो	भोदि, होदि
दृश्	पेच्छ	पेच्छदि
ब्रू	बुच्च	बुच्चदि
कथ	कध	कधेदि
घ्रा	जिग्घ	जिग्घदि
भा	भाअ	भाअदि
मृज्	फुस	फुसदि
घूर्ण	घुम्म	घुम्मदि
स्तु	थुण	थुणादि
भी	भा	भादि
सृज्	पस	पसदि
चर्च	चच्च	चच्चदि

मद्	गेण्ह	गेण्हदि
गृह्य	गेज्झ, घेप्प	गेज्झदि, घेप्पदि
शक	सक्कुण, सक्क	सक्कुणदि, सक्कदि
म्लै	मिआअ	मिआअदि
उद् + स्था	उत्थ	उत्थेदि
स्वप्	सुअ	सुअदि
शीङ्	सुआ	सुआदि
रुध्	रोव	रोवदि
रुद्	रोद	रोददि
मस्ज	बुड्ढ	बुड्ढदि
दुह्य	दुहीअ	दुहीअदि
वह्य	वहीअ	वहीअदि
लिह्य	लिहीअ	लिहीअदि

तद्धित, समास, कारक आदि सभी अनुशासन शौरसेनी में प्राकृत के समान ही होते हैं। वर्णपरिवर्तन के नियम भी शौरसेनी में प्राकृत के समान ही हैं। केवल त का द और थ का ध होना ही शौरसेनी की विशेषता है।

जैनशौरसेनी

नाटकीय शौरसेनी से भिन्न होने के कारण प्रवचनसार, कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा, गोम्मटसार, समयसार आदि ग्रन्थों की भाषा को पृथक् भाषा माना गया है। इस भाषा की मूलप्रवृत्ति शौरसेनी की होने पर भी इसके ऊपर प्राचीन अर्धमागधी का प्रभाव है। जैनशौरसेनी का साहित्य नाटकों की अपेक्षा पुरातन है। षट्खण्डागम के मूल सूत्र भी जैनशौरसेनी में लिखे गये हैं। कुन्दकुन्दाचार्य और स्वामिकार्त्तिकेय ईस्वी प्रथम शताब्दी के विद्वान् हैं। अतः हमारा अनुमान है कि जैन शौरसेनी का विकसित और परिवर्तित रूप ही नाटकीय शौरसेनी है। यही कारण है कि नाटकीय शौरसेनी में जैन शौरसेनी की अनेक प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। कुछ विद्वान् शौरसेनी के इस भेद को स्वीकार नहीं करते, पर हमारे विचार से यह नाटकीय शौरसेनी की अपेक्षा भिन्न है। जैनशौरसेनी की निम्न प्रमुख विशेषताएँ हैं।

(१) त के स्थान पर द और थ के स्थान पर ध का होना। यथा—

विगदरागो < विगतरागः —त के स्थान पर द (प्र० सा० गा० १४)
संजुदो < संयुतः — „ „ „

रहिया < रहिता — त के स्थान पर य (स्वा० का० गा० १२८)
पडियं < पतितम् — ,, ,, (स्वा० का० गा० ३९०)

थ = ध — तधप्पदेसा < तथाप्रदेशा — थ के स्थान पर ध (प्र० सा० गा० १३७)
जध < यथा — ,, ,, (प्र० सा० गा० १२७)
तधा < तथा — ,, ,, (प्र० सा० गा० १४६)
णाध < नाथ — ,, ,, (प्र० सा० गा० १९३)
अजधा < अयथा ,, ,, (प्र० सा० गा० ८९)
कधं < कथम् — ,, (प्रव० सा० गा० ९७, ११३, १०६)

(३) जैन शौरसेनी में अर्धमागधी के समान क के स्थान पर ग भी होता है। यथा—

वेदग < वेदक — क के स्थान पर ग (प० प्रा० सं०)
एग < एक —
सगं < स्वकं — ,, ,, (प्र० सा० गा० ९४)
एगंतेण < एकान्तेन — ,, ,, (प्र० सा० गा० ६६)
सोगप्पगेहिं < सामात्मकैः — ,, (प्र० सा० गा० ७३)
सागारो < साकारः — ,, ,, (गो० सा० जी० गा० ५)
अणगारो < अनाकार — ,, ,, ,, ,,
उवसामगे < उपशामके — ,, ,, (गो० सा० जी० ६६)
खवगे < क्षपके — ,, ,, ,, ,,
एगविगले < एकविकले — ,, ,, (गो० सा० जी० ७९)
वेदगा < वेदकाः — ,, ,, (गो० सा० जी० ९३)

(४) जैन शौरसेनी में क के स्थान पर क और य भी पाये जाते हैं। इसकी यह प्रवृत्ति भी अर्धमागधी से मिलती-जुलती है।

क = क
संतोसकरं < सन्तोषकरं (स्वा० का० गा० ३३५)
चिरकालं < चिरकालं — (स्वा० का० गा० २९३)
मणवयकाएहिं < मनोवचनकायैः (स्वा० का० गा० ३३२)
अणुकूलं < अनुकूलं (स्वा० का० गा० ४५९)
ओमकोट्ठाए < अवमकोष्ठया (गो० सा० जी० गा० १३८)
हीणकमं < हीनक्रमम् (गो० सा० जी० गा० १७९)
एकसमयम्हि < एकसमये (प्र० सा० गा० १४२)

क = य

सामाइयं < सामायिकम् (स्वा० का० गा० ३७२)

कम्मविवायं < कर्मविपाकं (स्वा० का० गा० ३७२)

सुहयरो < सुखकर: (स्वा० का गा० ३७२)

नेरइया < नैरयिका: (गो० सा० जी० ९३)

वियलिंदियेसु < विकलेन्द्रियेषु (गो० सा० जी ८९)

एयवियलक्खा < एकविकलाक्षा: (गो० सा० जी० ९०)

गाहया < ग्राहका: (गो० सा० जी १७३)

पत्तेयं < प्रत्येकं (गो० सा जी० १८४)

ओरालियं < औरालिकं (गो० सा० जी १८४)

क = अ—स्वरशेष

अलिअं < अलीकं (स्वा० का० गा० ४०६)

आलोओ < आलोक: (स्वा० का० गा० ३४४)

नरए < नरके (प्र० सा० गा० ११४)

पज्जयट्ठिएण < पर्यायार्थिकेन (प्र० सा० गा० ११४)

वेउव्विओ < वैक्रियिक: (प्र० सा० गा० १७१)

(५) जैन शौरसेनी में मध्यवर्ती क, ग, च, ज, त, द, और प का लोप विकल्प से पाया जाता है। अथवा यों कह सकते हैं कि इनका लोप अनियमित रूप से पाया जाता है। यथा—

सुयकेवलिमिसिणो < श्रुतकेवलिनमृषय: (प्र०सा०गा० ३३)—तकार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य श्रुति।

लोयप्पदीवयरा < लोकप्रदीपकरा—ककार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान में य श्रुति। (प्रवचनसार गा० २९)

वयणेहिं < वचनै: (प्र० सा० गा० ३४)—चकार का लोप अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य श्रुति।

सयलं < सकलम् (प्र०सा०गा० ५१)—क का लोप और अवशिष्टस्वर के स्थान पर य श्रुति।

उवओगो < उपयोग: (द्र० सं० गा० ४)—प के स्थान पर व।

पहुभेया < प्रभुभेदा (द्र० सं० गा० ३५)—दकार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य श्रुति।

पुग्गाव < पुद्गलाः (द्र० सं० गा० ३८)—यकार का लोप और उ स्वर शेष।

सायारं < सकारं (प्र०सं०गा० ४२)—ककार का लोप और अवशिष्ट आ स्वर के स्थान पर य श्रुति।

(६) जैन शौरसेनी में महाराष्ट्री के समान ही मध्यवर्ती व्यञ्जन का लोप होने पर अवशिष्ट अ या आ स्वर के स्थान में ही यश्रुति पायी जाती है। यथा—

तित्थयरो < तीर्थङ्कर.—यहाँ क का लोप होने पर अवशिष्ट अ स्वर के स्थान में ही य श्रुति हुई है।

पयत्थ < पदार्थः—दकार का लोप और अवशिष्ट आ स्वर के स्थान में य श्रुति।

वेयणा < वेदना—दकार का लोप और अवशिष्ट अ के स्थान मे आ को य श्रुति।

आहारया < आहारका—ककार का लोप और अवशिष्ट आ को य श्रुति।

(७) उ के पश्चात् लुप्त वर्ण के स्थान में बहुधा व श्रुति पायी जाती है। यथा—

बालुवा < बालुका—ककार का लोप और अवशिष्ट आ स्वर के स्थान में व श्रुति।

बहुवं < बहुकं—ककार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान में व श्रुति।

विहुव < विधूत—तकार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान में व श्रुति।

(८) जैन शौरसेनी में महाराष्ट्री के समान प्रथमा विभक्ति के एकवचन में ओ और अर्धमागधी के प्रभाव के कारण सप्तमी के एकवचन में म्मि और म्हि विभक्ति चिह्न पाये जाते हैं। षष्ठी और चतुर्थी के बहुवचन में सिं प्रत्यय जोड़ा जाता है। पञ्चमी के एकवचन में शौरसेनी के समान आदो, आदु प्रत्ययों का योग पाया जाता है।

दव्वसहावो < द्रव्यस्वभाव.—प्रथमा के एकवचन में ओ प्रत्यय जोड़ा गया है।

सदविसिट्ठो < सद्विशिष्टः— „ „

एक्कसमयम्हि < एकसमये—(प्र० सा० गा० १४२)—सप्तमी के एकवचन में म्हि प्रत्यय जोड़ा गया है।

एगम्हि < एकस्मिन् (प्र०सा०गा० १४३)—सप्तमी के एक वचन में म्हि प्रत्यय जोड़ा गया है।

अण्णदवियम्हि < अन्यद्रव्ये (प्र० सा० गा० १९१)— „ „

सुहम्मि < शुभे (प्र० सा० गा० ७९)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

चरियम्हि < चरिके (प्र० सा० गा० ७९)—सप्तमी के एकवचन में म्हि प्रत्यय जोड़ा गया है।

गब्भम्मि < गर्भे (स्वा० का० गा० ७४)—सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

ससरूवम्मि < स्वस्वरूपे (स्वा० का० गा० ४८३)—सप्तमी के एक वचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

जोगम्मि < योगे (स्वा० का० गा० ४८४)— „

एक्कम्मि, एक्कम्हि, एोवम्मि, एोवम्हि, जैसे वैकल्पिक प्रयोग भी जैन शौरसेनी में पाये जाते हैं।

तेसिं < तेभ्य: (प्र० सा० गा० ८२) चतुर्थी के बहुवचन में सिं प्रत्यय जोड़ा गया है।

सव्वेसिं < सर्वेषाम् (स्वा० का० १०३) षष्ठी के बहुवचन में सिं प्रत्यय जोड़ा गया है।

(९) कृ धातु का रूप जैन शौरसेनी में कुव्वदि भी मिलता है। इसका प्रयोग स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा गा० ३१३, ३२९, ३४०, ३९७, ३८४ आदि में देखा जाता है।

(१०) स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा और प्रवचनसार में शौरसेनीके समान करेदि का भी निम्न गाथाओं में प्रयोग मिलता है। यथा स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा—गा० ६१, २२६, २९६, ३२०, ३ २, ३५०, ३६१, ३७८, ४२०, ४४०, ४४९ और ९९१। प्रवचनसार में गा० १८९ में करेदि रूप आया है।

(११) जैन शौरसेनी में महाराष्ट्री के समान कृ धातु के रूप कुणेदि और कुणइ रूप भी निम्न गाथाओं में पाये जाते हैं। यथा—

कुणेदि—स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा गा० १८२, १८८, २०९, ३११, ३७०, ३८८, ३८९, ३९६ और ४२०। प्रवचनसार में गाथा ६६ और १४९ में कुणदि क्रिया व्यवहृत की गयी है।

स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा में गा० २०९, २२७, २८९ और ३१० में कृ धातु के कुणइ रूप का व्यवहार पाया जाता है।

जैन शौरसेनी में कृ धातु का करेइ रूप भी मिलता है। स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा गा० २२९ में यह रूप आया है।

(१२) जैन शौरसेनी में क्त्वा के स्थान में त्ता का व्यवहार होता है। यथा—

जाण + त्ता = जाणित्ता, वियाण + त्ता = वियाणित्ता।

णयस + त्ता = णपसित्ता, पेच्छ + त्ता = पेच्छित्ता।

(१३) जैन शौरसेनी में क्त्वा के स्थान पर य भी पाया जाता है। यथा—भवीय (प्रवचनसार गा० १२), संस्कृत के आपृच्छ्य के स्थान पर आपिच्छ रूप आया है। गहिय < गृहीत्वा (स्वा० का० गा० ३७३)।

(१४) स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा में क्त्वा के स्थान पर चा का व्यवहार मिलता है। यथा—किच्चा < कृत्वा, ठिच्चा < स्थित्वा।

शौरसेनी प्राकृत के तूण और महाराष्ट्री के ऊण प्रत्यय भी संस्कृत के क्त्वा के स्थान में जैन शौरसेनी में पाये जाते हैं। यथा—गमिऊण (गोम्मटसार गा० ९०),

मागधी

(१) मागधी की प्रकृति शौरसेनी मानी गयी है। साधारण प्राकृत भी मागधी का मूल मानी जा सकती है।

(२) मागधी में अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के प्रथमा के एकवचन में ओकारान्त रूप न होकर एकारान्त होते हैं[1]। यथा—

एशे मेशे < एष मेषः, एशे पुलिशे < एष पुरुषः, करोमि भन्ते < करोमि भदन्त।

(३) मागधी में रेफ के स्थान पर लकार और दन्त्य सकार के स्थान पर तालव्य शकार होता है[2]। यथा—

नले < नरः— र के स्थान पर ल और विसर्ग को एत्व

कले < करः — ,, ,,

विआले < विचारः— ,, ,,

हंशे < हंसः —दन्त्य के स्थान पर तालव्य श और विसर्ग को एत्व

शालशे < सारसः—आद्यन्त दन्त्य स के स्थान पर तालव्य श और रेफ को ल

शुदं < श्रुतम्—शुदं—दन्त्य स को तालव्य श और शौरसेनी के समान त को द।

शोभणं < सोहणं < शोभनम्—

(४) मागधी में यदि सकार और षकार—अलग अलग संयुक्त हों तो उनके स्थान में स होता है। ग्रीष्म शब्द में उक्त आदेश नहीं होता[3]। यथा—

पस्खलदि हस्ती < प्रस्खलति हस्ती—यहाँ स् और त संयुक्त हैं, अतः संयुक्त स के स्थान पर तालव्य श नहीं हुआ।

बुहस्पदी < बृहस्पतिः—संयुक्त स् को तालव्य श नहीं हुआ और दन्त्य स ज्यों का त्यों बना रहा।

---

१. अत एत्सौ पुंसि मागध्याम् ८।४।२८७।

२. र-सोर्ल-शौ ८।४।२८८।

३. स-षोः संयोगे सोऽग्रीष्मे ८।४।२८९।

मस्कली < मस्करी—संयुक्त स ज्यों का त्यों और रेफ को लत्व।

शुस्कदालुं < शुष्कदारुं—ष् और क संयुक्त हैं, अतः संयुक्त मूर्धन्य ष् के स्थान पर तालव्य श न होकर दन्त्य स हो गया है और रेफ को ल हुआ है।

कस्टं < कष्टम्—संयुक्त मूर्धन्य ष के स्थान पर दन्त्य स हुआ है।

विस्नुं < विष्णुम्— " "

निस्फलं < निष्फलम्— " "

धनुस्खंडं < धनुष्खण्डम्— " "

गिम्हवाशले < ग्रीष्मवासरः—ग्रीष्म शब्द में उक्त नियम लागू नहीं हुआ है।

(५) द्विरुक्त ट (ट्ट) और षकार से युक्त ठकार के स्थान पर मागधी में स्ट आदेश होता है।[1] यथा—

पस्टे < पट्टः—ट्ट के स्थान में स्ट।

भस्टालिका < भट्टारिका—ट्ट के स्थान में स्ट और रेफ के स्थान में ल।

शुस्टु कदं < सुष्ठु कृतम्—स के स्थान श, ष्ठु के स्थान पर स्टु तथा ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर अ एवं त के स्थान पर द।

कोस्टागालं < कोष्ठागारम्—ष्ठ के स्थान पर स्ट और र के स्थान पर ल हुआ।

(६) स्थ और र्थ इन दोनों वर्णों के स्थान में मागधी में सकार से संयुक्त तकार होता है।[2] यथा—

उवस्तिदे < उपस्थितः—प के स्थान पर व, स्थि के स्थान पर स्ति तथा त के स्थान पर द और विसर्ग को एत्व।

शुस्तिदे < सुस्थितः—दन्त्य स के स्थान पर तालव्य श, स्थ के स्थान पर स्त, त के स्थान पर द और विसर्ग को एत्व।

अस्तवदी < अर्थवती—र्थ के स्थान में स्त और त स्थान पर द होता है)

शस्तवाहे < सार्थवाहः—दन्त्य स के स्थान पर श, र्थ के स्थान पर स्त और विसर्ग को एत्व।

(७) मागधी में ज, द्य और य के स्थान में य आदेश होता है।[3] यथा—

यणवदे < जनपदः—ज के स्थान पर य और प के स्थान पर व हुआ है।

अय्युणे < अर्जुनः—र्जु के स्थान पर य्यु और न के स्थान पर ण।

याणादि < जानाति—ज के स्थान पर य, न को ण और त के स्थान पर द।

गय्यिदे < गर्जितः—र्ज के स्थान पर य्य और त को द, विसर्ग को एत्व।

---

१. ट्ट-ष्ठयोस्टः ८।४।२९० । २. स्थ-र्थयोस्तः ८।४।२९१ ।

३. ज-द्य-या यः ८।४।२९२ ।

दुय्यणे < दुज्जणो < दुर्जनः —र्ज के स्थान पर य्य और न को ण।

वय्यिदे < वर्जितः — „ „ त को द और विसर्ग को एत्व।

मय्यं < मद्यम्—द्य के स्थान में य्य।

अय्य किल विय्याहले आगदे < अद्य किल विद्याधर आगतः।

यादि < यादि—य के स्थान पर य।

(८) मागधी में न्य, ण्य, ज्ञ और ञ्ज इन संयुक्ताक्षरों के स्थान पर द्विरुक्त ञ्ञ होता है।[1] यथा—

अहिमञ्ञुकुमाले—अभिमन्युकुमारः —न्य के स्थान पर ञ्ञ।

कञ्ञकावलणं < कन्यकावरणम्—न्य के स्थान पर ञ्ञ; र को ल।

अवम्हञ्ञं < अब्रह्मण्यम्—ण्य के स्थान पर ञ्ञ आदेश।

पुञ्ञाहं < पुण्याहम्—ण्य के स्थान पर ञ्ञ।

पञ्ञाविशाले < प्रज्ञाविशालः —ज्ञ के स्थान पर ञ्ञ।

शव्वञ्ञे < सर्वज्ञः —दन्त्य स के स्थान पर श और ज्ञ के स्थान ञ्ञ।

अवञ्ञा < अवज्ञा—ज्ञ के स्थान पर ञ्ञ।

अञ्ञली < अञ्जलिः —ञ्ज के स्थान पर ञ्ञ।

धणञ्ञए < धनञ्जयः —ञ्ज के स्थान पर ञ्ञ।

पञ्ञले < पञ्जरः — „ „ और रेफ को लत्व।

(९) मागधी में अनादि में वर्तमान छ के स्थान में शकार संयुक्त च (श्च) होता है।[2] यथा—

गश्च < गच्छ—'च्छ' के स्थान पर श्च।

उश्चलदि < उच्छलति—च्छ के स्थान पर श्च और त को द।

तिरिश्चि पेस्कदि < तिरिच्छि पेच्छइ < तिर्यक् प्रेक्षते— च्छ के स्थान पर श्च और क्ष के स्थान पर स्क, त को द।

आवन्नवश्चले < आपन्नवत्सलः —लाक्षणिक होने से त्स के स्थान पर भी श्च आदेश।

(१०) मागधी में अनादि में वर्तमान क्ष के स्थान पर जिह्वामूलीय ≍क आदेश होता है।[3] यथा—

य≍के < यक्षः —क्ष के स्थान पर ≍क आदेश और विसर्ग को एत्व।

ल≍कशे < राक्षसः —रेफ के स्थान पर ल, अनियमित ह्रस्व, क्ष के स्थान पर ≍क, दन्त्य स के स्थान पर तालव्य श और विसर्ग को एत्व।

---

१. न्य-ण्य-ज्ञ-ञ्जां ञ्ञः ८।४।२९३। २. छस्य श्चोऽनादौ ८।४।२९५।

३. क्षस्य ≍कः ८।४।२९६।

(११) मागधी में प्रेक्ष और आचक्ष के स्थान पर स्क आदेश होता है।[1] यथा—

पेस्कदि < प्रेक्षते—संयुक्त रेफ का लोप होने से प्र के स्थान पर प, क्ष के स्थान पर स्क तथा त को द। मागधी में ति और ते इन दोनों के स्थान पर दि आदेश होता है।

(१२) मागधी में हृदय शब्द के स्थान पर हडक्क आदेश होता है।[2] यथा—

हडक्के आलके मम < हृदये आदरो मम—हृदय के स्थान पर हडक्के आदेश, तथा द और र के स्थान पर ल, प्रथमा एकवचन में विभक्ति ए का संयोग।

(१३) मागधी में अस्मद् शब्द को प्रथमा एकवचन में सु विभक्ति में हके, हगे और अहके ये तीन आदेश होते हैं।[3] यथा—

हके, हगे, अहके भणामि < अहं भणामि।

(१४) मागधी में शृगाल शब्द के स्थान पर शिआल और शिआलक आदेश होते हैं।[4] यथा—

शिआले आअच्छदि, शिआलके आअच्छदि < शृगाल आगच्छति।

शब्दरूपों के नियम

(१५) मागधी में प्रथमा एकवचन में एत्व होता है। यथा—पुलिशे < पुरुषः।

(१६) मागधी में अवर्ण से पर में आनेवाले ङस्—षष्ठी के एकवचन के स्थान में विकल्प से आह आदेश होता है। आह के पूर्ववर्ती टि का लोप होता है।[5] यथा—

हगे न ईदिशाह कम्माह काली < अहं न ईदृशस्य कर्मणः कारी; भगदत्त-शोणिदाह कुंभे; पक्ष में—भीमशेणस्स पश्चादो हिण्डीअदि।

(१७) मागधी में अवर्ण से पर में विद्यमान आम् के स्थान में विकल्प से आहँ आदेश होता है और पूर्व के टि का लोप हो जाता है।[6] यथा—

शाहँ—येषाम्; विकल्पाभाव से—याणं < येषाम्।

(१८) मागधी में अहम् और वयं के स्थान पर हगे आदेश होता है।[7] यथा—

हगे शक्कावदालतित्थणिवाशी धीवले < अहं शक्रावतारतीर्थनिवासी धीवरः।

(१९) मागधी में अकारान्त शब्दों को सु पर रहते इ, ए होते हैं और सु का लोप होता है।[8] यथा—

एशि लाआ < एष राजा—यहाँ ष को श और अकार को इकार।

एशे पुलिशे < एष पुरुषः—एत्व होने से एशे होता है।

---

१. स्कः प्रेक्षाचक्षोः ८।४।२९७। २. हृदयस्य हडक्कः ११।६ वर०।

३. अस्मदः सौ हके-हगे-अहके ११।९ वर०।

४. शृगालशब्दस्य शिआलशिआलकाः ११।१७ वर०।

५. अवर्णाद्वा ङसो डाहः ८।४।२९९ हे०। ६. आमो डाहँ वा ८।४।३०० हे०।

७. अहंवयमोर्हगे ८।४।३०१ हे०। ८. अत इदेतौ लुक्च ११।१० व०।

(२०) ह्रस्व अकारान्त शब्द के अन्तिम अकार को सम्बुद्धि पर रहते दीर्घ होता है।[1] यथा—

पुलिशा आगच्छ < हे पुरुष आगच्छ—सम्बोधन होने से अकार को दीर्घ।
माणुशा आगच्छ < हे मानुष आगच्छ " "

विभक्तिचिह्न

	एकवचन	बहुवचन
पढमा	ए	आ
बीआ	ं अनुस्वार	आ
तइआ	ण, णं	हि, हिं, हिँ
चउत्थी, छट्ठी	ह, स्स	हँ, ण, णं
पंचमी	आदो, आदु	त्तो, ओ, उ, हि, हिन्तो, सुंतो
सत्तमी	सि, म्मि	सु, सुं

वील—वीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पढमा	वीले	वीला
बीआ	वीलं	वीला
तइया	वीलेण, वीलेणं	वीलेहि, वीलेहिं, वीलेहिँ
चउत्थी	वीलाह, वीलस्स	वीलाहँ, वीलाण, वीलाणं
पंचमी	वीलादो, वीलादु	वीलत्तो, वीलओ, वीलउ, वीलाहिन्तो, वीलासुन्तो
छट्ठी	वीलाह, वीलस्स	वीलाहँ, वीलाण, वीलाणं
सत्तमी	वीलंसि, वीलम्मि	वीलेसु, वीलेसुं
संबोधन	हे वीले	हे वीला

अन्य अकारान्त शब्दों के रूप भी वील शब्द के समान होते हैं।

नपुंसक लिङ्ग में शौरसेनी के समान ही शब्दरूप बनते हैं।

सर्वनामवाची शब्द मागधी में वील < वीर के समान होंगे। यहाँ उदाहरण के लिए कुछ शब्द रूप प्रस्तुत किये जाते हैं।

शव्व < सर्व के शब्दरूप

	एकवचन	बहुवचन
पढमा	शव्वे	शव्वा
बीआ	शव्वं	शव्वा

१. अदीर्घः सम्बुद्धौ ११।१३ व०।

तइया	सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिँ
चउत्थी	सव्वाइ, सव्वस्स	सव्वाइँ, सव्वाण, सव्वाणं
पंचमी	सव्वादो, सव्वादु	सव्वत्तो, सव्वओ, सव्वउ, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो
छट्ठी	सव्वाइ, सव्वस्स	सव्वाइँ, सव्वाण, सव्वाणं
सत्तमी	सव्वंसि, सव्वम्मि	सव्वेसु, सव्वेसुं
संबोहण	हे सव्वे	हे सव्वा

त, ण—तत् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	से	ते, णे
बी०	तं, णं	ते, ता, णे, णा
त०	तेण, तेणं, तिणा णेण, णेणं	तेहि, तेहिं, तेहिँ, णेहि, णेहिं, णेहिँ,
च०	ताइ, तस्स	ताइँ, तेसिं, णेसिं, ताणं, ताण, णाण, णाणं
प०	तादो, तादु	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, तेहि, ताहिंतो, तेहिंतो, तासुंतो, तेसुंतो णत्तो, णाओ आदि
छ०	ताइ, तस्स	ताइँ, तेसिं, णेसिं, ताण, णाण
स०	ताहे, ताअ, तइआ तम्मि, तस्सि, तहिं, तत्थ, णम्मि, णस्सि, णत्थ	णेसु, णेसुं

एअ—एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	एसे, एस	एदे
बी०	एदं	एदे, एदा
त०	एदेण, एदेणं, एदिणा	एदेहि, एदेहिं, एदेहिँ
च०	से, एदाद	सिं, एदाइँ, एदाण, एदाणं
पं०	एदादु, एदादो	एअत्तो, एआउ, एआओ, एआहि, एएहि, एआहिंतो, एएहिंतो, एआसुंतो, एएसुंतो

छ०	ये, एदाह	शिं, एदाहँ
स०	एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि, एअम्मि, एअसिं	एएशु, एएशुं

इकारान्त और उकारान्त शब्दों के मागधी विभक्ति प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प०	दीर्घ	अउ, अओ, णो०
बी०	अनुस्वार	णो०
त०	णा	हि, हिं, हिँ
च०	ह	हँ, ण
प०	दो, दु	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, शुन्तो
छ०	ह	हँ, ण, णं
स०	शि	शु, शुं

इशि < ऋषि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	इशी	इशउ, इशओ, इशिणो, इशी
बी०	इशिं	इशिणो, इशी
त०	इशिणा	इशीहि, इशीहिं, इशीहिँ
च०	इशिह	इशिहँ, इशीण, इशीणं
प०	इशिदो, इशिदु	इशित्तो, इशिओ, इशीउ, इशिहिंतो, इशीशुंतो
छ०	इशिह	इशिहँ, इशीण, इशीणं
स०	इशिशि	इशीशु, इशीशुं
सं०	हे इशि, हे इशी	हे इशउ, हे इशओ, हे इशिणो

मागधी में इन्-अन्तवाले शब्दों में सम्बोधन एकवचन में विकल्प से न के स्थान पर अकार आदेश होता है।

हे दंडिआ, हे दण्डी < दण्डिन्

हे शुहिआ, हे शुहि < सुखिन्

हे तवस्शिआ, हे तवस्सि < तपस्विन्

उकारान्त—भाणु शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	भाणू	भाणुणो, भाणओ, भाणउ, भाणू
बी०	भाणुं	भाणुणो, भाणू

त०	भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिं, भाणूहिँ
च०	भाणुह	भाणुहँ
प०	भाणुदो, भाणुदु	भाणुत्तो, भाणूओ, भाणूउ
		भाणूहितो, भाणूसुंतो
छ०	भाणुह	भाणुहँ, भाणूण, भाणूणं
स०	भाणुंसि, भाणुम्मि	भाणूसु, भाणूसुं
सं०	हे भाणु, हे भाणू	हे भाणुणो, हे भाणओ, हे भाणू

इसी प्रकार वउ, गुलु<गुरु, शाहु, मेलु<मेरु, कालु<कारु, लाहु<राहु आदि उकारान्त शब्दों के रूप बनते हैं। उकारान्त या इकारान्त शब्दों के रूप मागधी की प्रवृत्ति के अनुसार ही वर्णविकृति कर बनाने चाहिए। व्यञ्जनान्त या शेष स्वरान्त शब्द प्राकृत की शब्दरूपावली में मागधी की प्रवृत्ति के अनुसार वर्णविकृति करने से निष्पन्न होते हैं।

मागधी में प्रथमा, चतुर्थी, पञ्चमी और षष्ठी विभक्ति में ही अन्तर पड़ता है। स्पष्टीकरण के लिए अकारान्त पितृ शब्द के रूप भी दिये जाते हैं।

पिउ, पिआ, पिआल<पितृ

	एकवचन	बहुवचन
प०	पिआ, पिअले	पिअला, पिउणो, पिअओ
बी०	पिअलं	पिअले, पिअला, पिउणो
त०	पिअलेण, पिअलेणं, पिउणा	पिअलेहि, पिअलेहिं, पऊहिं
च०, छ०	पिअलाह	पिअलाहँ, पिअलाण
प०	पिअलादो, पिअलादु	पिअलत्तो, पिअलाओ, पिअलाहितो,
		पिअलासुंतो
स०	पिअले, पिअलंशि,	पिऊसु, पिऊसुं
	पिअलम्मि, पिउशि, पिउम्मि	
सं०	हे पिअ, हे पिअले	हे पिअला, हे पिउणो

इसी प्रकार दाउ, दायाल<दातृ का प्रथमा के एकवचन में दायाले, चतुर्थी—षष्ठी के एकवचन में दायालाह और बहुवचन में दायालाहँ, पञ्चमी के एकवचन में दायालादो, दायालादु और सप्तमी के एकवचन में दायालशि तथा सप्तमी के बहुवचन में दायालेशु, दायालेशुं रूप बनते हैं।

मागधी के धातुरूप

मागधी की धातुरूपावली शौरसेनी के समान होती है। अतः मागधी के धातुचिह्न शौरसेनी के समान ही हैं।

(२१) मागधी में व्रज धातु के जकार को ञ आदेश होता है। यथा—
वञ्जदि < व्रजति।

(२२) प्रेक्ष और आचक्ष धातु के क्ष के स्थान पर स्क आदेश होता है। यथा—
पेस्कदि < प्रेक्षते, आचस्कदि < आचक्षते।

(२३) मागधी में स्था धातु के तिष्ठ के स्थान पर चिष्ठ आदेश होता है। यथा—
चिष्ठदि < तिष्ठति। मतान्तर से प्राकृत के समान चिट्ठ भी आदेश होता है।

हशधातु—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हशदि, हशेदि	हशंति, हशंते
म० पु०	हशशि, हशशे, हशेज्ज	हशइत्था, हशध, हशेध
उ० पु०	हशामि, हशमि, हशेमि, हशेज्ज	हशमो, हशामो, हशिमो, हशेमो, हशमु, हशम

भविष्यत्काल—भण

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भणिस्शिदि, भणेस्शिदि भणिस्शिदे, भणेस्शिदे	भणिस्शिंति, भणेस्शिंति, भणिस्शिंते भणिस्शिंते, भणेस्शिरे, भणेस्शिइरे
म० पु०	भणिस्शिशि, भणेस्शिशि भणिस्शिशे, भणेस्शिशे	भणिस्शिह, भणेस्शिह भणिस्शिध, भणेस्शिध, भणिस्शिइत्था
उ० पु०	भणिस्सं, भणेस्सं, भणेस्शिमि	भणिस्शिमो, भणेस्शिमो, भणिस्शिमु, भणेस्शिमु

शेष सभी धातुरूप और कृदन्त रूप शौरसेनी के समान मागधी में होते हैं।

मागधी के कतिपय विशेष शब्द

माशे < माष:	दुय्यणे < दुर्जन:
विलाशे < विलास:	लस्कशे < राक्षस:
यायदे < जायते	दस्के < दक्ष:
पलिचये < परिचय:	हग्गे, अहके, हगे < अहम्
गहिदच्छले < गृहीतच्छल:	एशिलाआ < एष राजा
वियले < विजल:	हशिदु, हशिदि, हशिद < हसित:
णिज्झले < निर्झर:	पुलिशे < पुरुष:
हडक्के < हृदय:	चिष्ठदि < तिष्ठति
आलुले < आदर:	कडे < कृत:
कय्ये < कार्यम्	मडे < मृत:
कालिदाणि < कृत्वा	सहिदाणि < सोढ्वा
गडे < गत:	शिआले, शिआलके < श्रगाल:

अर्धमागधी

साधारणतः अर्धमागधी शब्द की व्युत्पत्ति 'अर्धं मागध्याः' अर्थात् जिसका अर्धांश मागधी का हो वह भाषा 'अर्धमागधी' कहलायेगी। परन्तु जैनसूत्र ग्रन्थों की भाषा में उक्त व्युत्पत्ति सम्यक् प्रकार घटित नहीं होती। हाँ, नाटकीय अर्धमागधी में मागधी भाषा के अधिकांश लक्षण पाये जाते हैं।

अर्धमागधी शब्द की एक व्युत्पत्ति में "अर्धमगधस्येयं" अर्थात् मगध देश के अर्धांश की भाषा को अर्धमागधी कहा जायेगा। इस व्युत्पत्ति का समर्थन ईस्वी सन् सातवीं शताब्दी के विद्वान् जिनदासगणि महत्तर ने निशीथचूर्णि-नामक ग्रन्थ में—"पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं" द्वारा किया है। अर्धमगध शब्द की व्याख्या करते हुए 'मगहद्धविसयभासानिबद्धं अद्धमागहं" अर्थात् मगधदेश के अर्ध प्रदेश की भाषा में निबद्ध होने से प्राचीन सूत्रग्रन्थ अर्धमागध कहलाते हैं। अर्धमागधी में अट्ठारह देशी भाषाएँ मिश्रित मानी गयी हैं। बताया है—"अट्ठारसदेसीभासानियय वा अद्धमागहं"। अन्यत्र भी इसे सर्वभाषामयी कहा है[1]।

अर्धमागधी का मूल उत्पत्ति स्थान पश्चिम मगध और शूरसेन (मथुरा) का मध्यवर्ती प्रदेश अयोध्या है। तीर्थङ्करों के उपदेश की भाषा अर्धमागधी मानी गयी है। आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव अयोध्या के निवासी थे, अतः अयोध्या में ही इस भाषा की उत्पत्ति हुई मानी जायगी। पर भाषा की भौगोलिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण करने पर अवगत होता है कि शौरसेनी या पूर्वी हिन्दी के साथ इस भाषा का विशेष सम्बन्ध नहीं है। महाराष्ट्री प्राकृत या आधुनिक मराठी के साथ इस भाषा का घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है। इन्हीं विशेषताओं के आधार पर डॉ० हॉल्के[2] ने बताया है कि अर्धमागधी ही

---

१. सर्वार्धमागधीं सर्वभाषासु परिणामिनीम्।
सर्वेषां सर्वतो वाचं सार्वज्ञीं प्रणिदध्महे॥
—वाग्भट्ट काव्यानुशासन पृ० २

भारिसवयणे सिद्धं देवाणं अद्धमागहा वाणी।
—काव्यालंकार की नमिसाधुकृत टीका २, १२।

२. "It thus seems to me very clear, that the Prakrit of chanda is the Arsha or ancient (Porana) from the Ardhamagadhi, Maharashtra and Sauraseni"—Introduction to Prakrit Lakshana of chanda Page XIX

आर्ष प्राकृत है, और इसीसे परवर्ती काल में नाटकीय अर्धमागधी, महाराष्ट्री और शौरसेनी निकली हैं। आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत व्याकरण के अध्ययन से भी यही निष्कर्ष निकलता है कि एक ही भाषा के प्राचीन रूप को आर्ष प्राकृत और अर्वाचीन रूप को महाराष्ट्री कहा गया है। आर्ष प्राकृत से अर्धमागधी अभिप्रेत है। उन्होंने "आर्षम्" ८।१।३ सूत्र में 'आर्षं प्राकृतं बहुलं भवति' तथा 'आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते' कथन में आर्ष—ऋषिभाषित प्राकृत के अनुशासन की बात कही है।

अर्धमागधी के प्रथमा एकवचन में मागधी के समान ए प्रत्यय जोड़ा जाता है। क्त में समाप्त होनेवाले धातु के त स्थान में अर्धमागधी में ड होता है। अर्धमागधी की यह प्रवृत्ति भी मागधी से मिलती जुलती है। अर्धमागधी की वर्णपरिवर्तनसम्बन्धी निम्न विशेषताएँ है।

(१) अर्धमागधी में दो स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क के स्थान में सर्वत्र ग और अनेक स्थलों में त और य होते हैं। यथा—

ग—पगप्प < प्रकल्प—प्र के स्थान पर प, क को ग और संयुक्त ल का लोप तथा द को द्वित्व।

आगर < आकर—क के स्थान पर ग।

आगास < आकाश—क को ग और श के स्थान पर दन्त्य स।

पगार < प्रकार—प्र को प और क को ग।

सावग < श्रावक—संयुक्त रेफ का लोप, श को स और क के स्थान पर ग।

विवज्जग < विवर्जक—संयुक्त रेफ का लोप, ज को द्वित्व और क को ग।

अहिगरणं < अधिकरणं—ध के स्थान पर ह और क के स्थान पर ग।

णिसेवग < निषेवकः—न के स्थान पर ण, मूर्धन्य ष को स और क को ग।

लोगे < लोकः—क के स्थान पर ग और एकवचन का ए प्रत्यय।

आगइ < आकृतिः—क के स्थान पर ग, ककारोत्तर ऋ को अ, तकार का लोप।

त—आराहत < आराधक—ध के स्थान ह, क के स्थान पर त।

सामातित < सामायिक—य के स्थान पर त और क के स्थान पर त।

विसुद्धित < विशुद्धिक—तालव्य श को दन्त्य स और क को त।

अहित < अधिक—ध के स्थान पर ह और क को त।

साउणित < शाकुनिक—तालव्य श को दन्त्य स, ककार का लोप और उ स्वर शेष, न को ण तथा अन्तिम क के स्थान पर त।

णेसज्जित < नैषधिक—ऐकार के स्थान पर एकार, ष को स, ध के स्थान पर ज और क को त हुआ है।

वीरासणित < वीरासनिक—न को ण और क के स्थान पर त।

षड्वति < पर्यंकि—रेफ का लोप, य को द्वित्व और मूर्धन्य व, पूर्ववर्ती व को ड तथा क के स्थान पर त।

नेतित < नैरयिक—ऐकार का एकार, य को त और क को त।

सीमंतत < सीमंतक—क को त हुआ है।

नरताती < नरकात्—क के स्थान पर त।

माडंवित < माडम्बिक—क के स्थान पर त।

कोडुंबित < कौटुम्बिक—औकार को ओकार, ट को ड तथा क को त।

सचक्खुतेण < सचक्षुष्केण—क्ष के स्थान पर क्ख और क के स्थान पर त।

कूणित < कूणिक—क को त।

य—काइयं < कायिक—मध्यवर्ती यकार का लोप और क को य।

लोय < लोक—क को य हुआ है।

अवयारी < अवकारी—क के स्थान पर य।

(२) दो स्वरों के बीच का असंयुक्त ग प्रायः कायम रहता है। कहीं कहीं त और य भी होता है। यथा—

ग—आगम < आगम—ग के स्थान पर ग रह गया है।

आगमणं < आगमनं—ग के स्थान पर ग और न को ण हुआ है।

अणुगामिय < अनुगामिक—ग के स्थान पर ग, न के स्थान पर ण और क के स्थान पर य हुआ है।

आगामिस्स < आगमिष्यत्— ग के स्थान पर ग, संयुक्त य का लोप और स को द्वित्व; अन्तिम हल् त् का लोप।

भगवं < भगवन्— ग के स्थान पर ग और न् को अनुस्वार।

त—अतित < अतिग—ग के स्थान पर त।

य—सायर < सागर—ग के स्थान पर य।

(३) दो स्वरों के बीच में आनेवाले असंयुक्त च और ज के स्थान में त और य दोनों ही होते हैं। यथा—

त—णारात < नाराच—न के स्थान पर ण और च के स्थान पर त।

वति < वचस्—अन्त्य हल् स् का लोप और च के स्थान त तथा इकार।

पावतण < प्रवचन—प्र के स्थान पर प और च के स्थान पर त।

य—कयाती < कदाचित्—दकार का लोप, अ शेष और य श्रुति, च के स्थान पर य और अन्तिम व्यञ्जन त् का लोप एवं पूर्ववर्ती इ को दीर्घ।

वायणा < वाचना—च को य और न को ण।

आर्ष प्राकृत है, और इसीसे परवर्ती काल में नाटकीय अर्धमागधी, महाराष्ट्री और शौरसेनी निकली हैं। आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत व्याकरण के अध्ययन से भी यही निष्कर्ष निकलता है कि एक ही भाषा के प्राचीन रूप को आर्ष प्राकृत और अर्वाचीन रूप को महाराष्ट्री कहा गया है। आर्ष प्राकृत से अर्धमागधी अभिप्रेत है। उन्होंने "आर्षम्" ८।१।३ सूत्र में 'आर्ष प्राकृतं बहुलं भवति' तथा 'आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते' कथन में आर्ष—ऋषिभाषित प्राकृत के अनुशासन की बात कही है।

अर्धमागधी के प्रथमा एकवचन में मागधी के समान ए प्रत्यय जोड़ा जाता है। क्त में समाप्त होनेवाले धातु के त स्थान में अर्धमागधी में ड होता है। अर्धमागधी की यह प्रवृत्ति भी मागधी से मिलती जुलती है। अर्धमागधी की वर्णपरिर्वतनसम्बन्धी निम्न विशेषताएँ है।

(१) अर्धमागधी में दो स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क के स्थान में सर्वत्र ग और अनेक स्थलों में त और य होते हैं। यथा—

ग—पगप्प < प्रकल्प—प्र के स्थान पर प, क को ग और संयुक्त ल का लोप तथा द को द्वित्व।

आगर < आकर—क के स्थान पर ग।

आगास < आकाश—क को ग और श के स्थान पर दन्त्य स।

पगार < प्रकार—प्र को प और क को ग।

सावग < श्रावक—संयुक्त रेफ का लोप, श को स और क के स्थान पर ग।

विवज्जग < विवर्जक—संयुक्त रेफ का लोप, ज को द्वित्व और क को ग।

अहिगरणं < अधिकरणं—ध के स्थान पर ह और क के स्थान पर ग।

णिसेवग < निषेवकः—न के स्थान पर ण, मूर्धन्य ष को स और क को ग।

लोगे < लोकः—क के स्थान पर ग और एकवचन का ए प्रत्यय।

आगइ < आकृतिः—क के स्थान पर ग, ककारोत्तर ऋ को अ, तकार का लोप।

त—आराहत < आराधक—ध के स्थान ह, क के स्थान पर त।

सामावित < सामायिक—य के स्थान पर त और क के स्थान पर त।

विसुद्धित < विशुद्धिक—तालव्य श को दन्त्य स और क को त।

अहित < अधिक—ध के स्थान पर ह और क को त।

साउणित < शाकुनिक—तालव्य श को दन्त्य स, ककार का लोप और उ स्वर शेष, न को ण तथा अन्तिम क के स्थान पर त।

णेसज्जित < नैषधिक—ऐकार के स्थान पर एकार, ष को स, ध के स्थान पर ज्ज और क को त हुआ है।

वीरासणित < वीरासनिक—न को ण और क के स्थान पर त।

करेति < करोति—ओकार को एत्व, त ज्यों का त्यों।

तते < तत —विसर्ग को एत्व, „ „

सम्पति < संप्रति—प को व और „ „

पभिति < प्रभृति—प्र को प, भकारोत्तर ऋकार को इकार और त ज्यों का त्यों बना रहा।

करयल < करतल—मध्यवर्ती त के स्थान पर य हुआ।

(५) दो स्वरों के बीच में स्थित द का द और त ही अधिकांश में देखा जाता है, कहीं कहीं य भी होता है। यथा—

द—पदिसो < प्रदिश.—प्र को प, द के स्थान पर द और श को स हुआ है।

अणादियं < अनादिकं—न के स्थान पर ण, द को द और क के स्थान पर य।

वदमाण < वदत्—द के स्थान पर द और संस्कृत के शतृ प्रत्यय के स्थान पर माण हुआ है।

णदति < नदति—न के स्थान पर ण और द को द ही रह गया है।

जणवद < जनपद—न के स्थान पर ण, प के स्थान पर व और द को द।

वेदिदिती < वेदिष्यति—संयुक्त य का लोप, ष् को स और स के स्थान पर द तथा द और त के स्थान पर उक्त दोनों वर्ण ही विद्यमान हैं।

त—जता < यदा—य के स्थान पर ज और द को त।

पात < पाद—द के स्थान पर त।

निसात < निषाद—मूर्धन्य ष को स और द को त।

नती < नदी—द को त।

मुसाबात < मृषावाद—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर उ, ष को स और द के स्थान पर त हुआ है।

वातित < वादिक—द के स्थान पर त और क के स्थान पर भी त।

अन्नता < अन्यदा—संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व और द को त।

कताती < कदाचित्—द के स्थान पर त, च को त और अन्तिम हल् त् का लोप तथा त् के पूर्ववर्ती इकार को दीर्घ।

जति < यदि—य को ज और द को त।

चिरातीत < चिरादिक—द और क के स्थान पर त, इकार को दीर्घ।

य—पडिच्छायण < प्रतिच्छादन—प्रति के स्थान पर पडि, द को य और न को ण।

चउप्पय < चतुष्पद—तकार का लोप, उ स्वर शेष, संयुक्त ष का लोप, प को द्वित्व और द के स्थान पर य।

कयत्थी < कदर्थ—द के स्थान पर य, र्थ को त्थ।

उवयार < उपचार—प को व और च को य ।

लोय < लोच—च के स्थान पर य ।

आयरिय < आचार्य—च को य और स्वरभक्ति के नियमानुसार र् तथा य का पृथक्करण, इ स्वर का आगम ।

ज = त—भोति < भोजिन्—ज के स्थान पर त और अन्तिम न् का लोप ।

वतिर < वज्र—ज के स्थान पर त और र् का पृथक्करण तथा त में ह्रस्व इकार का संयोग ।

पूता < पूजा—ज के स्थान पर त ।

रातीसर < राजेश्वर—ज के स्थान पर त, ऐकार को ईत्व, संयुक्त व का लोप और तालव्य श को दन्त्य स ।

अत्तते < आत्मजः—संयुक्त म का लोप और त को द्वित्व तथा ज को त ।

पयाय < प्रजात—प्र के स्थान पर प, जकार को य और त का लोप, ऊ स्वर शेष तथा यश्रुति ।

कामज्झया < कामध्वजा—ध्व के स्थान पर ज्झ, ज के स्थान पर य ।

अत्तय < आत्मज—संयुक्त म का लोप, त को द्वित्व और ज को य ।

(४) दो स्वरों का मध्यवर्ती त प्रायः बना रहता है; कहीं-कहीं इसका थ होता है । यथा—

वंदति < वन्दते—त के स्थान पर त ही बना रहा । आत्मनेपद की क्रिया परस्मैपद में परिवर्तित हो गई ।

नमंसति < नमस्यति—संयुक्त य का लोप और म के ऊपर अनुस्वार ।

पज्जुवासति < पर्युपास्ते—संयुक्त रेफ का लोप, य को ज और द्वित्व । प के स्थान पर व और स्वरभक्ति के अनुसार पृथक्करण, ए का इत्व ।

जितिंदिय < जितेन्द्रिय—एकार को इत्व, संयुक्त रेफ का लोप और त ज्यों का त्यों बना हुआ है ।

सतत < सतत—तकार जैसे का तैसे बना हुआ है ।

अंतरित < अन्तरित—,, ,,

धेवत < धैवत— ,, ,,

जाति < जाति— ,, ,,

आगति < आहृति— क के स्थान पर ग, ऋकार को इ और त की स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है ।

विहरति < विहरति—त की स्थिति ज्यों की त्यों बनी है ।

पुरतो < पुरतः—विसर्ग को विकल्प से ओत्व और त ज्यों का त्यों बना है ।

करेति < करोति—ओकार को एत्व, त ज्यों का त्यों।

तते < तत —विसर्ग को एत्व, " "

संपत्रति < संप्रति—प को त्र और " "

पभिति < प्रभृति—प्र को प, भकारोत्तर ऋकार को इकार और त ज्यों का त्यों बना रहा।

करयल < करतल—मध्यवर्ती त के स्थान पर य हुआ।

(९) दो स्वरों के बीच में स्थित द् का द और त ही अधिकांश में देखा जाता है, कहीं कहीं य भी होता है। यथा—

द—पदिसो < प्रदिशः—प्र को प, द् के स्थान पर द और श को स हुआ है।

अणादियं < अनादिकं—न के स्थान पर ण, द को द और क के स्थान पर य।

वदमाण < वदत्—द के स्थान पर द और संस्कृत के शतृ प्रत्यय के स्थान पर माण हुआ है।

णदति < नदति—न के स्थान पर ण और द को द ही रह गया है।

जणवद < जनपद—न के स्थान पर ण, प के स्थान पर व और द को द।

वेदिद्दिती < वेदिष्यति—संयुक्त य का लोप, ष् को स और स के स्थान पर ह तथा द और त के स्थान पर उक्त दोनों वर्ण ही विद्यमान हैं।

त—जता < यदा—य के स्थान पर ज और द को त।

पात < पाद—द के स्थान पर त।

निसात < निषाद—मूर्धन्य ष को स और द को त।

नती < नदी—द को त।

मुसावात < मृषावाद—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर उ, ष को स और द के स्थान पर त हुआ है।

यातित < वादिक—द के स्थान पर त और क के स्थान पर भी त।

अन्नता < अन्यदा—संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व और द को त।

कताती < कदाचित्—द के स्थान पर त, च को त और अन्तिम हल् त् का लोप तथा त् के पूर्ववर्ती इकार को दीर्घ।

जति < यदि—य को ज और द को त।

चिरातीत < चिरादिक—द और क के स्थान पर त, इकार को दीर्घ।

य—पडिच्छायण < प्रतिच्छादन—प्रति के स्थान पर पडि, द को य और न को ण।

चउप्पय < चतुष्पद—तकार का लोप, उ स्वर शेष, संयुक्त ष का लोप, प को द्वित्व और द के स्थान पर य।

कयत्थो < कदर्थ—द के स्थान पर य, र्थ को त्थ।

उवयार < उपचार—प को व और च को य ।

लोय < लोच—च के स्थान पर य ।

आयरिय < आचार्य—च को य और स्वरभक्ति के नियमानुसार र् तथा य का पृथक्करण, इ स्वर का आगम ।

ज = त—भोति < भोजिन्—ज के स्थान पर त और अन्तिम न् का लोप ।

वतिर < वज्र—ज के स्थान पर त और र् का पृथक्करण तथा त में ह्रस्व इकार का संयोग ।

पूता < पूजा—ज के स्थान पर त ।

रातीसर < राजेश्वर—ज के स्थान पर त, ऐकार को ईत्व, संयुक्त व का लोप और तालव्य श को दन्त्य स।

अत्तते < आत्मजः—संयुक्त म का लोप और त को द्वित्व तथा ज को त ।

पयाय < प्रजात—प्र के स्थान पर प, जकार को य और त का लोप, अ स्वर शेष तथा यश्रुति ।

कामज्झया < कामध्वजा—ध्व के स्थान पर ज्झ, ज के स्थान पर य ।

अत्तय < आत्मज—संयुक्त म का लोप, त को द्वित्व और ज को य ।

(४) दो स्वरों का मध्यवर्ती त प्रायः बना रहता है; कहीं-कहीं इसका य होता है । यथा—

वंदति < वन्दते—त के स्थान पर त ही बना रहा । आत्मनेपद की क्रिया परस्मैपद में परिवर्तित हो गई ।

नमंसति < नमस्यति—संयुक्त य का लोप और म के ऊपर अनुस्वार ।

पज्जुवासति < पर्युपास्ते—संयुक्त रेफ का लोप, य को ज और द्वित्व । प के स्थान पर व और स्वरभक्ति के अनुसार पृथक्करण, ए का ह्रस्व ।

जितिंदिय < जितेन्द्रिय—एकार को ह्रस्व, संयुक्त रेफ का लोप और त ज्यों का त्यों बना हुआ है ।

सतत < सतत—तकार जैसे का तैसे बना हुआ है ।

अंतरित < अन्तरित—,, ,,

धेवत < धैवत— ,, ,,

जाति < जाति— ,, ,,

आगति < आकृति—क के स्थान पर ग, ऋकार को इ और त की स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है ।

विहरति < विहरति—त की स्थिति ज्यों की त्यों बनी है ।

पुरतो < पुरतः—विसर्ग को विकल्प से ओत्व और त ज्यों का त्यों बना है ।

करेति < करोति—ओकार को एत्व, त ज्यों का त्यों।

तते < ततः—विसर्ग को एत्व, ,, ,,

संलवति < संप्रति—प को व और ,, ,,

पभिति < प्रभृति—प्र को प, भकारोत्तर ऋकार को इकार और त ज्यों का त्यों बना रहा।

करयल < करतल—मध्यवर्ती त के स्थान पर य हुआ।

(९) दो स्वरों के बीच में स्थित द का द और त ही अधिकांश में देखा जाता है, कहीं कहीं य भी होता है। यथा—

द—पदिसो < प्रदिशः—प्र को प, द के स्थान पर द और श को स हुआ है।

अणादियं < अनादिकं—न के स्थान पर ण, द को द और क के स्थान पर य।

वदमाण < वदत्—द के स्थान पर द और संस्कृत के शतृ प्रत्यय के स्थान पर माण हुआ है।

णदति < नदति—न के स्थान पर ण और द को द ही रह गया है।

जणवद < जनपद—न के स्थान पर ण, प के स्थान पर व और द को द।

वेदिहिती < वेदिष्यति—संयुक्त य का लोप, ष् को स और स के स्थान पर ह तथा द और त के स्थान पर उक्त दोनों वर्ण ही विद्यमान हैं।

त—जता < यदा—य के स्थान पर ज और द को त।

पात < पाद—द के स्थान पर त।

निसात < निषाद—मूर्धन्य ष को स और द को त।

नती < नदी—द को त।

मुसावात < मृषावाद—मकारोत्तर ऋ के स्थान पर उ, ष को स और द के स्थान पर त हुआ है।

वातित < वादिक—द के स्थान पर त और क के स्थान पर भी त।

अन्नता < अन्यदा—संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व और द को त।

कताती < कदाचित्—द के स्थान पर त, च को त और अन्तिम हल् त् का लोप तथा त् के पूर्ववर्ती इकार को दीर्घ।

जति < यदि—य को ज और द को त।

चिरातीत < चिरादिक—द और क के स्थान पर त, इकार को दीर्घ।

य—पडिच्छायण < प्रतिच्छादन—प्रति के स्थान पर पडि, द को य और न को ण।

चउप्पय < चतुष्पद—तकार का लोप, उ स्वर शेष, संयुक्त ष का लोप, प को द्वित्व और द के स्थान पर य।

कयत्थो < कदर्थ—द के स्थान पर य, र्थ को त्थ।

उयरं < उदरम्—द को य।

पयाहिणा < पदक्षिणा—प्र को प, द के स्थान पर य और क्ष के स्थान पर ह हुआ है।

(६) दो स्वरों के मध्यवर्ती प के स्थान पर व होता है। यथा—

पावग < पापक—मध्यवर्ती प को व और अन्त्य क को ग हुआ है।

संलवति < संलपति— ,, ,,

सोवयार < सोपचार—प को व और च के स्थान पर य हुआ है।

अतिवात < अतिपात—प के स्थान में व हुआ है।

उवणीय < उपनीत—प के स्थान में व और न को ण, तथा त को य हुआ है।

अज्झोववयण्ण < अध्युपपन्न—ध्य के स्थान पर ज्झ, उ को ओत्व, उत्तरवर्ती दोनों पकारों को व तथा न को ण।

उवगूढ < उपगूढ— प को व हुआ है।

आहेवच्च < आधिपत्य—ध के स्थान पर ह, इकार को एत्व, प को व और त्य को च।

तवय < तपक—प को व और क को य।

ववरोपित < व्यपरोपित—संयुक्त य का लोप, प को व हुआ है।

(७) स्वरों का मध्यवर्ती य प्रायः ज्यों का त्यों रह जाता है और कहीं-कहीं उसका त भी हो जाता है। यथा—

वायव < वायव—य ज्यों का त्यों स्थित है।

पिय < प्रिय—प्र के स्थान पर प और य ज्यों का त्यों वर्तमान है।

निरय < निरय—य ज्यों का त्यों वर्तमान है।

इंदिय < इन्द्रिय—संयुक्त रेफ का लोप, और य ज्यों का त्यों।

गायइ < गायति—य ज्यों का त्यों, त लोप और इ शेष।

त—सिता < सिया—य के स्थान पर त।

सामातित < सामायिक—य के स्थान पर त और क को भी त हुआ।

पालतिस्संति < पालयिष्यन्ति—य के स्थान पर त और ष्य को स्स।

परिताल < पर्याय—स्वरभक्ति के नियम से र्य का पृथक्करण और इ का आगम दोनों य के स्थान पर त।

णातग < नायक—न के स्थान पर ण, य को त और क के स्थान पर ग।

गातति < गायति—य के स्थान पर त।

ठाति—स्थायिन्—स्था के स्थान पर ठा, य को त और अन्त्य न् का लोप।

साति < शायिन्—तालव्य श को स, य के स्थान पर त और अन्त्य न् का लोप।

नैरतित < नैरयिक—ऐकार को एकार, य के स्थान में त और क को भी त।
इंदित < इन्द्रिय—संयुक्त रेफ का लोप और य के स्थान पर त।

(८) दो स्वरों के मध्यवर्ती व के स्थान पर व, त और य होता है। यथा—

व—वायव < वायव—व के स्थान पर व ही रह गया है।
गारव < गौरव—औकार के स्थान पर आकार और व के स्थान पर व।
भवति < भवति—व के स्थान पर व ही रहा।
अणुवीति < अनुविचिन्त्य—न के स्थान पर ण, इ को ईत्व, व के स्थान पर व और चिन्त्य के स्थान पर ति।

त—परिताल < परिवार—व के स्थान पर त और र के स्थान ल।
कति < कवि—व के स्थान पर त।
य—परियट्टण < परिवर्तन—व के स्थान पर य, र्त के स्थान पर ट्ट और न को ण।
परियट्टणा < परिवर्तना— ,, ,,

(९) शब्द के आदि, मध्य और संयोग में सर्वत्र ण की तरह न भी स्थित रहता है। यथा—

नई < नदी—न ज्यों का त्यों और द का लोप, ई स्वर शेष।
नायपुत्त < ज्ञातपुत्र—ज्ञ के स्थान पर न, त को य और त्र के स्थान पर त्त।
आरनाल < आरनाल—न के स्थान पर न ही रह गया है।
अनिल < अनिल— ,, ,,
पन्ना < प्रज्ञा—प्र को प और ज्ञा के स्थान पर न्ना।
विन्नु < विज्ञ—ज्ञ के स्थान पर न्नु।
सव्वन्नु < सर्वज्ञ—संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व और ज्ञ के स्थान पर न्न और अकार को उत्व।

(१०) एव के पूर्व अम् के स्थान में आम् होता है। यथा—

जामेव < यमेव—य के स्थान पर ज और एव के पूर्ववर्ती अम् के स्थान पर आम्।
तामेव < तमेव—एव के पूर्ववर्ती अम् के स्थान पर आम्।
खिप्पामेव < क्षिप्रमेव—क्ष के स्थान पर ख, संयुक्त रेफ का लोप और प को द्वित्व तथा एव के पूर्ववर्ती अम् को आम्।
एवामेव < एवमेव—एव के पूर्ववर्ती अम् के स्थान पर आम्।
पुव्वामेव < पूर्वमेव—पूर्व के स्थान पर पुव्व और एव के पूर्ववर्ती अम् को आम्।

(११) दीर्घ स्वर के बाद इति वा के स्थान में ति वा और इ वा का प्रयोग होता है। यथा—

इंदमहे त्ति वा < इन्द्रमह इति वा—इति वा के स्थान में त्ति वा।

इंदमहे इ वा < इन्द्रमह इति वा— ,, ,, इ वा।

(१२) यथा और यावत् शब्द के य का लोप और ज दोनों ही देखे जाते हैं। यथा—

अहक्खाय < यथाख्यात—यथा के स्थान पर अह और ख्यात को क्खाय होता है।

अहाजात < यथाजात—यथा के स्थान पर अहा हुआ है।

जहाणामए < यथानामक—य के स्थान ज, थ को ह, न को ण और स्वार्थिक क के स्थान पर ए।

आवकहा < यावत्कथा—य का लोप, आ स्वर शेष, अन्त्य हल् त् का लोप और थ के स्थान पर ह।

जावज्जीव < यावज्जीव—य के स्थान पर ज हुआ है।

(१३) दिवस् शब्द में व और सकार के स्थान पर विकल्प से यकार और हकार आदेश होते हैं। यथा—

दियहं, दियसं < दिवसं—विकल्प से व के स्थान पर य और स के स्थान पर ह; स के स्थान पर ह न होने पर दियसं रूप बनेगा।

दिवहं, दिवसं < दिवसं—स के स्थान पर ह होने से प्रथम रूप और विकल्पाभाव में द्वितीय रूप बनता है।

(१४) गृह शब्द के स्थान पर गह, घर, हर और गिह आदेश होते हैं। यथा—

गहं < गृहम्—गृह के स्थान पर गह आदेश होने से।

घरं, हरं, गिहं < गृहम्—गृह के स्थान पर घर, हर और गिह आदेश होने से।

(१५) म्लेच्छ शब्द के च्छ के स्थान पर विकल्प से क्खु आदेश होता है तथा एकार के स्थान पर विकल्प से इकार और उकार होते हैं। यथा—

मिलेक्खू, मिलिक्खू, मिलुक्खू < म्लेच्छ—स्वर भक्ति के नियम से म और ल का पृथक्करण, इकार का आगम, च्छ के स्थान पर क्खु तथा एकार के स्थान पर विकल्प से इकार और उकार होते हैं।

(१६) पर्याय शब्द के र्याय भाग के स्थान पर विकल्प से रियाग, रिआग और ज्जाय आदेश होते हैं। यथा—

परियागो, परिआगो, पज्जायो < पर्याय।

(१७) क्षुधादिगण पठित शब्दों के धकार के स्थान पर विकल्प से हकार आदेश होता है। यथा—

पुरो < पुष्टे—ष के स्थान पर ह और विसर्ग को ए हुआ।
रुहिरं < रुधिरं—ध के स्थान पर ह आदेश हुआ है।
पर्हतो < पघ्नतो—घ के स्थान पर ह हुआ है।
पुहा < पुधा—ध के स्थान पर ह आदेश हुआ है।

(१८) वर्ज आदि शब्दों में व के स्थान पर विकल्प से उ आदेश होता है। यथा—

आउज्जो, आवज्जो < आवर्जः —व के स्थान पर विकल्प से उकार और संयुक्त रेफ का लोप तथा ज को द्वित्व।

आउज्जणं, आवज्जणं < आवर्जनम्— " " " "

(१९) धनु शब्द के स्थान पर विकल्प से धणुहं, धणुस्सं का आगम होता है।
धणुहं, धणुस्से, धणुं < धनुः

(२०) पुट और पुर शब्द के से पकार का लोप विकल्प होता है। यथा—
ताउडं, तालुडं < तालुपुटं—पकार का लोप, उ स्वर शेष और तकार के स्थान पर ड।

गोउरं, गोपुरं < गोपुरम्—विकल्प से पकार का लोप।

(२१) अर्धमागधी में ऐसे शब्द भी प्रचुर परिमाण में उपलब्ध हैं, जिनका प्रायः महाराष्ट्री में अभाव है। यथा—

अज्झत्थिय, अणुवीइ, अणुवीति, आगरवा, आघवेत्तए, आमाराए, आवीकम्म कण्डुइ, केमहालय, पच्चस्थिमिल्ल, पाउकुज्ज, पुरत्थिमिल्ल, पोरेवच्च, महतिमहालिया, वक्क, वियत्त।

(२२) अर्धमागधी में ऐसे शब्दों की संख्या भी बहुत अधिक है, जिनके रूप महाराष्ट्री से भिन्न होते हैं। उदाहरणार्थ कुछ शब्दों की तालिका दी जाती है।

अर्धमागधी	महाराष्ट्री	अर्धमागधी	महाराष्ट्री
अभियागम	अब्भागम	णितीय	णिच्च
आउंटण	आउंचण	णियय	णिअअ
आहरण	उआहरण	पडुप्पन्न	पच्चुप्पण्ण
उप्पि	उवरिं; अवरिं	पच्छेकम्म	पच्छाकम्म
किया	किरिआ	पाय	पत्त
कीस, केस	केरिस	पुढो (पृथक्)	पुहं, पिहं
केवच्चिर	किअच्चिर	पुरेकम्म	पुराकम्म
गेहि	गिद्धि	पुव्वि	पुव्वं
चियत्त	चइअ	माय	मत्त, मेत्त

छच्च	छक्क	माहण	बम्हण
जाया	जत्ता	मिलक्खु, मेच्छ	मिलिच्छ
णिगण, णिगिण	णग्ग	वग्गू	वाया
णिगिणिण	णग्गत्तण	वाहणा (उपानह्)	उवाणआ
तच्च (तृतीय)	तइअ	सेज्ज	सहाअ
तच्च (तथ्य)	तच्छ	सीआण, सुसाण	मसाण
तेगिच्छा	चिइच्छा	सुमिण	सिमिण
दुवालसग	बारसग	सुहम, सुहुम	सण्ह
दोच्च	दुइअ	सोहि	सुद्धि

दुवालस, बारस, तेरस, अउणाणोसइ, बत्तीस, पणतीस, इगयाल, तेयालीस पणयाल, अढयाल, एगट्ठि, बावट्ठि, तेवट्ठि, छावट्ठि, अढसट्ठि, अउणत्तरि, बावत्तरि, पण्णत्तरि, सत्तहुत्तरि, तेयासी, छन्नीइ, बाणउइ आदि संख्या-शब्दों के रूप अर्धमागधी में महाराष्ट्री से भिन्न हैं।

शब्दरूप

(२३) अर्धमागधी में पुलिङ्ग अकारान्त शब्द के प्रथमा एकवचन में प्राय सर्वत्र ए और क्वचित् ओ होता है।

(२४) सप्तमी एकवचन में स्सि प्रत्यय होता है।

(२५) चतुर्थी के एक वचन में आये या आते प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

(२६) अर्धमागधी में कुछ शब्दों में तृतीया के एकवचन में सा प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—

मणसा, वयसा, कायसा, जोगसा आदि। महाराष्ट्री में मणेण, वएण आदि रूप बनते हैं।

(२७) कम्म और धम्म शब्द के तृतीया के एकवचन में पालि की तरह कम्मुणा और धम्मुणा रूप होते हैं। महाराष्ट्री में कम्मेण और धम्मेण रूप बनते हैं।

(२८) अर्धमागधी में सत् शब्द के पञ्चमी के एकवचन में तेब्भो रूप भी पाया जाता है।

(२९) युष्मद् शब्द के षष्ठी के एकवचन में तव और अस्मद् शब्द के षष्ठी के बहुवचन में अस्साक रूप पाये जाते हैं। ये रूप महाराष्ट्री में नहीं होते हैं।

अर्धमागधी के विभक्ति प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	ए, ओ	आ
द्वि०	अनुस्वार	ए

तृ०	इण, सा	इहि, हिं
च०	आए, आते	आणं
प०	ओ, आतो	इहितो
ष०	स्स	आणं
स०	सि, मि	इसु

अकारान्त जिण शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जिणे	जिणा
द्वि०	जिणं	जिणे
तृ०	जिणेण, जिणेणं	जिणेहिं, जिणेहि
च०	जिणाए, जिणाते	जिणाणं
प०	जिणाओ, जिणातो	जिणेहितो
ष०	जिणस्स	जिणाणं
स०	जिणंसि, जिणम्मि	जिणेसु
सम्बो०	भो जिणे, भो जिणा	भो जिणे

इसी प्रकार गोयम, देव, वीर आदि अकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

अर्धमागधी में भगवत् (भगवन्त) शब्द का प्रथमा के एकवचन में भगवं और भगवन्तो; मतिमन्त का मतिमं और मतिमन्तो; कारवं और कारवन्तो; प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में भगवन्तो, मतिमन्तो, कारवन्तो एवं तृतीया के एकवचन में भगवया और भगवता रूप बनते हैं। षष्ठी के एकवचन में भगवओ और भगवतो रूप होते हैं। इन शब्दों के शेष रूप जिण शब्द के समान होते हैं।

(३०) तार प्रत्ययान्त शब्दों में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में एकार और ओकार आदेश होते हैं। यथा—

पसत्थारे, पसत्थारो; कत्तारे, कत्तारो, भत्तारे, भत्तारो एवं तृतीया के एकवचन में तार के स्थान पर तु आदेश होने से पसत्थुणा, कत्तुणा, भत्तुणा रूप भी विकल्प से बनते हैं। शेष शब्द रूप जिण शब्द के समान होते हैं।

राय शब्द के रूप (राजन् शब्द)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	राया	राये
द्वि०	रायं, रायाणं	रायाणो
तृ०	रन्ना	राईहिं

च०	रायाए, रायाते	राईणं
प०	रायाओ, रायातो	रायेहिंतो
ष०	रन्नो	राईणं
स०	रायंसि, रायम्मि, राये	रायेसु

संस्कृत के आत्मन् शब्द के स्थान पर अर्धमागधी में अत्त और अप्प आदेश होते हैं। अत: इस शब्द के रूप निम्न प्रकार चलते हैं।

अत्त, अप्प < आत्मन्

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	अत्ता, अप्पा	अत्ते, अप्पे
द्वि०	अत्ताणं, अप्पाणं	अत्ते, अप्पे, अप्पा
तृ०	अत्तणा, अप्पणा	अत्तेहिं, अप्पेहिं
च०	अत्ताए, अप्पाए	अत्ताणं, अप्पाणं
प०	अत्ताओ, अप्पाओ	अत्ताहिंतो, अप्पाहिंतो
ष०	अत्तणो, अप्पणो	अत्ताणं, अप्पाणं
स०	अत्तंसि, अप्पंसि, अत्तम्मि, अप्पम्मि	अत्तेसु, अप्पेसु

जस, मण, वय, काय, तेय, चक्खु और जोग शब्द के तृतीया एकवचन में जससा, मणसा, वयसा, कायसा, तेयसा, चक्खुसा; जोगसा; षष्ठी के एकवचन में जससो, जसस्स; मणसो, मणस्स; वयसो, वयस्स, कायसो, कायस्स; तेयसो, तेयस्स; चक्खुसो, चक्खुस्स; जोगसो, जोगस्स एवं सप्तमी विभक्ति एकवचन में मणसि, मणंसि, मणंमि, वयसि, वयंसि, वयंमि, कायसि, कायंसि, कायमि; तेयसि; तेयंसि, तेयंमि; चक्खुसि चक्खुंसि, चक्खुमि और जोगसि, जोगंसि, जोगंमि रूप बनते हैं।

इकारान्त मुणि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	मुणी	मुणिणो, मुणी
द्वि०	मुणिं	मुणिणो, मुणी
तृ०	मुणिणा, मुणिस्स	मुणीहिं, मुणीहि
च०	मुणिणो, मुणिस्स	मुणीणं
प०	मुणिणो, मुणीओ	मुणीहिंतो
ष०	मुणिणो, मुणिस्स	मुणीणं
स०	मुणिंसि, मुणिंमि, मुणी	मुणीसु
सं०	भो मुणि, भो मुणी	भो मुणिणो

इकारान्त शब्दों के अतिरिक्त उकारान्त शब्दों के रूप भी प्राकृत—महाराष्ट्री प्राकृत के समान चलते हैं।

पितृ शब्द का प्रथमा के एकवचन में पिता, पिया, पितरो, पियरो, द्वितीया के एकवचन में पितरं, पियरं एवं चतुर्थी के एकवचन में पिउए, पिउस्स और पिउणो रूप बनते हैं।

सव्व शब्द के रूप प्राकृत के समान ही होते हैं।

क < किम् के शब्दरूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	के, को	के
द्वि०	कं	के
तृ०	केणं, केण	केहिं, केहि
च०	काए	केसिं
पं०	कम्हा, काओ	कओहिन्तो
ष०	कस्स	केसिं
स०	कस्सिं, कसि, कम्मि, के	केसु

अय < इदम्

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	अयं, इमे	इणमो, इमो
द्वि०	इणं, इय	इमे
तृ०	अणेण, इमेण, इमेण	इमेहिं, इमेहिं
च०	इमाए	इमेसिं
पं०	इमाओ, इमा	इमेहिंतो
ष०	अस्स, इमस्स	इमेसिं
स०	अस्सिं, इमंसि, इमंमि	इमेसु

एस < एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एसो, एसे, ए	एए
द्वि०	एय	एए
तृ०	एएण, एएण	एएहिं, एएहि
च०	एयाए	एएसिं
पं०	एयाओ, एया	एएहिंतो
ष०	एएस्स	एएसिं

स०	एएसिं, एएंसि, एएंमि	एएसु

इसी प्रकार अन्य सर्वनाम शब्दों के रूप होते हैं।

अकारान्त स्त्रीलिंग माला शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	माला	मालाओ, माला
द्वि०	मालं	मालाओ, माला
तृ०	मालाए	मालाहि
च०	मालाए	मालाणं
पं०	मालाओ	मालाहिंतो
ष०	मालाए	मालाणं
स०	मालाए	मालासु
सं०	भो माले	भो माला

स्त्रीलिंग इकारान्त दिट्ठि < दृष्टिः

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	दिट्ठि	दिट्ठीओ, दिट्ठी
द्वि०	दिट्ठिं	दिट्ठीओ, दिट्ठी
तृ०	दिट्ठीए	दिट्ठीहिं
च०	दिट्ठीए	दिट्ठीणं
पं०	दिट्ठीओ	दिट्ठीहिन्तो
ष०	दिट्ठीए	दिट्ठीणं
स०	दिट्ठिंसि	दिट्ठीसु
सं०	भो दिट्ठी	भो दिट्ठीओ

ईकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के रूप भी प्राकृत के समान ही होते हैं।

स्त्रीलिंग में जा < यद् सर्वनाम शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जा	जाओ
द्वि०	जं	जाओ
तृ०	जीए, जाए	जाहिं
च०	जीसे, जाए	जासिं
पं०	जाए, जाओ	जाहिंतो

प०	जीसे, जाए	जासि
स०	जीसे, जाए	जासु
सं०	हे जा	हे जाओ

नपुंसकलिङ्ग में शब्दों के रूप प्राकृत के समान ही होते हैं।

तद्धित

अर्धमागधी में संस्कृत के समान तद्धित प्रत्ययों को अपत्यार्थक, देवतार्थक, समूहार्थक, अध्ययनार्थक, विकारावयवार्थक, अनेकार्थक, मतुवर्थक और स्वार्थिक इन आठ भागों में विभक्त किया जा सकता है। शैषिक प्रत्यय भी अर्धमागधी में पाये जाते हैं।

अपत्यार्थक और समूहार्थक

(३१) समूह, सम्बन्ध और अपत्यार्थक बतलाने के लिए इय, अण् और इज्ज प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा—

कविलस्स इयं—काविलियं < कापालिकम्—कविल + इय—लकारोत्तर अकार का लोप और वृद्धि होने से, विभक्ति चिह्न जोड़ने से उक्त रूप बनता है।

उत्तरस्स इमं—उत्तरिज्जं < औत्तरेयम्—उत्तर + इज्ज—रकारोत्तर अकार का लोप और विभक्ति चिह्न जोड़ने से उक्त रूप बना है।

कोसस्स इमं—कोसेज्जं < कौशेयम्—कोस + इज्ज—गुण और विभक्ति चिह्न जोड़ने से।

समूहार्थ—

सगडाणं समूहो—सागडं < शाकटम्—सगड + अ—वृद्धि और विभक्ति चिह्न।

वेसालीए अवच्चं—वेसालिओ < वैशालिकः — वेसालिअसावए < वैशालिकश्रावकः —इय (अ) प्रत्यय जोड़ा गया है।

पण्डवस्स अवच्चाणि—पाण्डवा—पाण्डव + अण् (अ) पाण्डवा, पण्डवा; इसी प्रकार अण् प्रत्यय जोड़ देने से—छावयं, अजयं, मद्दयं आदि रूप भी बनते हैं।

व्यापार या वृत्ति अर्थ—

चोरस्स वावारो—चोज्जं < चौर्यम्—चोरियं में इज्ज और इय प्रत्यय जोड़े गये हैं।

वणियस्स वावारो—वाणिज्जं < वाणिज्यम्—व्यापार अर्थ में इज्ज प्रत्यय।

(३२) अप्पण शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए इच्चिय और इज्जिय प्रत्यय होते हैं। यथा—

अप्पणस्स इयं—अप्पणिच्चियं < आत्मीयम्—अप्पण + इच्चिय = अप्पणिच्चियं, अप्पण + इज्जिय = अप्पणिज्जियं।

पयातीणं समूहो—पायत्तं < पदातम्—पयत्त + अण = पायत्तं।

पडिहारीए इयं—पाडिहेरं < प्रातिहार्यम्—पडिहारी + अण्—पडिहारी शब्द में हा के स्थान पर हे आदेश हुआ है और रकारोत्तर इकार का लोप।

मम + इय—ममाई, ममाइए < ममत्वी, ममायित:।

(३३) पर शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए कीय प्रत्यय होता है। यथा—
पर + कीय—परकीयं।

(३४) राय शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए ण्ण प्रत्यय होता है। यथा—
राय + ण्ण—राइण्णं, रायण्णं—य कार के स्थान पर इकार।

(३५) कम्म शब्द से सम्बन्ध बताने के लिए ण और अ प्रत्यय जोड़े जाते हैं।
कम्म + ण = कम्मणं < कार्मणम्, कम्म + अ = कम्मअं

भवार्थक प्रत्यय

(३६) भवार्थ में इम, इल्ल, इज्ज, इय, इक, क आदि प्रत्यय जोड़े होते हैं।

अब्भंतरे भवो—अब्भंतरिए, अब्भंतरगो < आभ्यन्तरक: —अब्भतर + इय = अब्भंतरिए; विकल्पाभाव में अब्भंतर + क (ग) = अब्भंतरगो। अवरिल्लं < आपरम्

पुरा भवं—पुरच्छिमं, पुरत्थिमं < पौरस्त्यम्—पुरत्थ + इम = पुरत्थिमं, पुरत्थ के स्थान पर पुरच्छ होने से पुरच्छिमं रूप बनता है। अन्ते भवं—अन्तिमं—अन्त + इम = अन्तिमं।

उवरि भवं—उवरिल्लं—उवर + इल्ल = उवरिल्लं < उपरितनं; उवरि + इम = उवरिमं।

भंडारे अहिगओ—भाण्डारिए < भाण्डारिक: —भण्डार + इयण् (इए)= भाण्डारिए।

स्वार्थिक

(३७) स्वार्थ बतलाने के लिए अण्, इक, इज्ज, इजन्, इय, इयण्, इम, इल्ल, क और मेत्त प्रत्यय होते हैं।

जायमेत्तं, जायमित्तं < जातमात्रम्—जाय + मेत्त = जायमेत्तं—एको ह्रस्व होने से जायमित्तं रूप बनता है।

णियडिल्ला < निकृतिमत्ता—णियड + इल्ल = णियडिल्ल स्त्रीलिङ्गवाची आ प्रत्यय जोड़ने से णियडिल्ल्या। उवर + इल्लं = उवरिल्लं < औपरेयम्, आण + इल्ल + इय = आणिल्लियं < आनीतकम्; छ + च = छच, छ + इल्लं < षट्कम्।

(३८) पोत्त शब्द से उल्ल और पद तथा मुह शब्द से स्वार्थिक इल्लग प्रत्यय होता है। यथा—

पोत्त + उल्ल = पोत्तुल्लओ < पोतक', पद + इल्लग = पदेल्लगो < पदक; मुह + इल्लग = मुहेल्लगो < मुखक।

(३९) लोभादि शब्दों से स्वार्थिक त्ता प्रत्यय होता है और त्ता के स्थान पर विकल्प से या हो जाता है। यथा—

गवेसग + त्ता = गवेसणत्ता < गवेषणिका; लोभ + त्ता = लोभत्ता, लोभया < लोभकः, सील + त्ता = सीलत्ता, सीलया < शीलकम्, लीण + त्ता = लीणत्ता, लीणया < लीनकम्; अणुकंपण + त्ता = अणुकंपणत्ता, अणुकंपणया < अनुकम्पनकम्; दुक्खण + त्ता = दुक्खणत्ता, दुक्खणया < दुःखनकम्; लिप्पण + त्ता = लिप्पणत्ता लिप्पणया < लिम्पनकम्; पिट्टण + त्ता = पिट्टणत्ता, पिट्टणया < पिट्टनकम्।

मड + इल्लि = मइल्लिओ < मृतकः —यहां ड का लोप हुआ है और विभक्ति का ओ चिह्न जोड़ दिया है।

(४०) पढम शब्द से स्वार्थ में इल्लु प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—

पढम + इल्लु = पढमिल्लुए < प्रथमकः

(४१) एग (एक) शब्द से स्वार्थ में आगि, इणिय, इय प्रत्यय होते हैं।

एग + आगि = एगागी < एकाकी, एग + अणिय = एगाणिए, एकाणिए; एक + इय—एक्किया—क को द्वित्व हुआ है।

(४२) नीसीहि शब्द से स्वार्थ में क प्रत्यय होता है। यथा—

नीसीहि + क = निसीहिगा, क के स्थान पर य होने से निसीहिया < निशीथिका, नैषेधिकी वा।

(४३) अपेक्षा कृत अतिशय—विशिष्ट अर्थ बतलाने के लिए तर प्रत्यय होता है। यथा—अइसएण तुच्छं—तुच्छतरं

(४४) तर के स्थान पर तराए आदेश होता है। यथा—बहुतराए, अप्पतराए

(४५) धम्मादि शब्दों को अतिशय अर्थ बतलाने के लिए इट्ठ प्रत्यय होता है। यथा—अइसएण धम्मी—धम्मिट्ठो < धर्मिष्ठः, अइसएण अधम्मी—अहम्मिट्ठो < अधर्मिष्ठः।

(४६) थेर, धीर, पिय शब्दों से अतिशय अर्थ प्रकट करने के लिए इज्ज प्रत्यय होता है और थेर के स्थान पर थ, धीर के स्थान पर ध और पिय के स्थान पर प आदेश होते हैं। यथा—

थेर + इज्ज—थ + इज्ज = थेज्जं < स्थैर्यम्

धीर + इज्ज—ध + इज्ज = धेज्जं < धैर्यम्

पिय + इज्ज—प + इज्ज—पेज्जं < प्रियतरम्

(४७) अर्हति और करोति अर्थ में इय और क प्रत्यय होते हैं तथा अलंकार शब्द में विकल्प से आदि स्वर की वृद्धि होती है। यथा—

अभिसेकमर्हति—अभिसिक्को—अभिसेद+क = अभिसिक्क < आभिषिक्य:; अलंकारं करेइ त्ति—अलंकार + इय = आलंकारिए, अलंकारिए < अलंकार्य:; पसिणं करेइ त्ति—पासणिए < प्राश्निक: ।

अनेकार्थक प्रत्यय

(४८) तृतीयान्त से निर्वृत्त, क्रीत, चरति, व्यवहरति और जीवित अर्थ में इत्ता, इय, इम, आउ, इल्ल और अ प्रत्यय होते हैं । यथा—

अब्भोवगमेन निव्वत्ता—अब्भोवगम + इत्ता = अब्भोगमिया (त्त के स्थान पर य हुआ है) < आभ्युपगमिकी; अहिगरण + इत्ता—या + अहिगरणिया < आधिकरणिकी; दण्डेण निव्वत्तं दण्डिनं—दण्ड + इय = दण्डियं < दण्डिमम्; सतेण कीयं—सतियं; सइयं—सत + इय = सतियं, तकार का लोप होने पर सइयं < शतरम् ।

णाएणं ववहरति—णेयाउओ, णेयाइयो < नैयायिक:

तेल्लेणं जीवइ—तेल्लिओ—तेल + ल्लिअ = तेल्लिओ < तैलिक: ।

आहारयणं ववरइ = आहारायणियं < यथारात्निकम्; तेयट्टियं < तैजोद्विकम् ।

चक्खुणा णिग्गिहज्जइ—चक्खुसं < चाक्षुषम् ।

अस्सिणिए जुत्ता पुण्णमासी—आसोई, अस्सोई < अश्विनी ; आसाढी < आषाढी, कत्तिया < कार्त्तिकी, जेट्ठामूला < ज्येष्ठामूली, फग्गुणी < फाल्गुनी, विसाही < वैशाखी, मगसिरा < मार्गशीर्षा, साविट्ठी < श्राविष्ठा, पोट्ठवती < प्रोष्ठपदी, पोसी < पौषी, माही < माघी, चेती < चैत्री ।

आसोइ पुण्णमासी अत्थि मासंमि—आसोओ मासो—असोइ + अण् = आसोओ मासो < आश्विनो मास: ; वातेण उवहयं—वातीणं, वाईणं—वात + इन = वातीणं, वाईणं—तकार का लोप होने पर ।

पसंगाओ आगयं—पासङ्गियं < प्रासंगिकम् । पारितोसियं < पारितोषिकम् ।

(४९) पाई शब्द से भवार्थ में ण प्रत्यय होता है । यथा—

पाई + ण = पाईणं, पाडीणं < प्राचीनम्

(५०) पहादि सप्तम्यन्त शब्दों से साधु अर्थ में एज्जण् प्रत्यय होता है । यथा—

पहे साहू—पाहेज्जं < पाथेय: ।

(५१) सप्तम्यन्त पास शब्द से इक्क प्रत्यय होता है । यथा—

पास + इक्क—पासिक्कओ < पार्श्विक: ।

(५२) बहि शब्द को अण् प्रत्यय के परे म और र का आगम होता है । तथा—

बहि + अ = बहिमं, बहिरं < बाह्यम् ।

(५३) मज्झ शब्द से म और इल प्रत्यय होते हैं । यथा—

मज्झमं, मज्झिमं, मज्झिल्लं < मध्यमम् ।

मतुबर्थक प्रत्यय

(९४) हिन्दी में जो अर्थ वान् या वाला आदि प्रत्ययों के द्वारा सूचित किया जाता है, अर्धमागधी में वह अर्थ मन्त, न्त, इण् आदि प्रत्ययों से। मन्त प्रत्यय जोड़ते समय म के स्थान पर विकल्प से व आदेश होता है। यथा—

वण्ण + मन्त = वण्णवन्तो—विकल्प से त का लोप न् का अनुस्वार होने से वण्णवं < वर्णवान् रूप बनेगा।

भग + मन्तो = भगवन्तो, भगवं < भगवान्; वीइ + मन्तो = वीइमन्तो < वीचिमान्; जाति + मन्तो = जातिमन्तो < जातिमान्; तिसूलो इमस्स अत्थि—तिसूलिओ—तिसूल + इय = तिसूलिओ < त्रिशूलिक:, गंठी अत्थि अस्सि—गंठिलो—गंठि + छ = गंठिछो < ग्रन्थिमान्; माया अत्थि इमस्स—माइछो—माया + इछ-यकार का लोप = माइछो < मायावी; कलुणा अत्थि इमस्स—कलुणो < करुण:; आउस + न्त—आउसन्तो < आयुष्मान्।

गो + मन्त — गोमी, गोमिणी—मन्त प्रत्यय के स्थान पर मी और मिणी आदेश होता है।

जस + मन्त—जसवन्तो, जसमन्तो < यशस्वीन्

आयार + मन्त—आयारवन्तो, आयारमन्तो < आचारवान्; णति + मन्त = णतिवन्तो, णाइवं < ज्ञातिवान्; वुसि + मन्त = वुसिमन्तो < वशी।

जय + इण—जइणो < जयी; दोसि + इणो = दोसिणो < दोषी; वरहि + इण = वरहिणो < बर्ही; किमि + ण = किमिणो < कृमिमान्; पंक + मन्त—स्त्रीलिङ्ग विवक्षा में आकारान्त आदेश और म के स्थान पर व, न का लोप तथा ङीप् प्रत्यय होने से पंकावती रूप बनता है।

(९५) गन्ध, तुन्द आदि शब्दों से इल प्रत्यय होता है। यथा—

गन्ध + इल = गन्धिलो, तुन्द + इल = तुन्दिलो < तुन्दिल:।

(९६) जडा शब्द को इल प्रत्यय होने से प्रत्यय सहित विकल्प से जडुल और जडियाल का निपातन होता है। यथा—

जडा + इल = जडुलो, जडियालो, जडिलो < जटिल:।

(९७) रय शब्द से विकल्प से स्सल प्रत्यय होता है। यथा—

रय + स्सला = रयस्सला, रइला—विकल्प से इल प्रत्यय होने पर; < रजस्वला।

(९८) पम्हादि शब्दों से मतुबर्थ में विकल्प से छ प्रत्यय होता है। यथा—

पम्ह + छ = पम्हलो < पक्ष्मल:, पत्त + छ = पत्तलो < पत्रल:, वगु + छ = वगुलो < वतुल:।

(५९) दया आदि शब्दों से मतुवर्थ में आलु प्रत्यय होता है। यथा—
दया + आलु = दयालू < दयालुः; वीसरण + आलु = विसरणालु—विनाशीकः।

(६०) मतुवर्थ के लज्जा शब्द से उ प्रत्यय होता है।
लज्ज + उ = लज्जू < लज्जालुः।

(६१) मतुवर्थ में जसादि शब्दों से अंसी और स्सी प्रत्यय होते हैं। यथा—
जस + अंसी = जसंसी, जस + स्सी = जसस्सी < यशस्वी, तेय + अंसी = तेयंसी, तेयस्सी < तेजस्वी; वचंसी, वचस्सी < वर्चस्वी; ओयंसी, ओयस्सी < ओजस्वी।

भावार्थ तथा कर्मार्थ

(६२) किसी शब्द से भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए अर्धमागधी में त्त और त्तण प्रत्यय होते हैं। यथा—

अपर + त्त = अपरत्तं < अपरत्वम्; उस्सुग + त्त = उस्सुगत्तं < उत्सुकत्वम्, अंब + त्तण = अंबत्तणं < आम्रत्वम्, तीय + त्तण = तीयत्तणं < तृतीयत्वम्, पहु + त्तण = पहुत्तणं < प्रभुत्वम्, अंध + त्तण = अंधत्तणं < अन्धत्वम्।

(६३) भाव अर्थ में त्ता, अद् और इयण् प्रत्यय भी होते हैं। जैसे—अरि + त्ता = अरित्ता < अरिता।
उप्पलकंद + त्ता = उप्पलकंदत्ता < उत्पलकन्दता।
आहत्तहियं, आहातहियं < याथातथिकम्—इयण् प्रत्यय हुआ है।
जहातहं < यथातथम्—अद् प्रत्यय हुआ है।

(६४) जडादि शब्दों से भाव अर्थ में इण प्रत्यय होता है। यथा—
जडा + इण = जडिणो < जडत्वम्; णग + इण = णगिणो, णिगिणो < नग्नत्वम्।
मुंड + इण = मुंडिणो < मुण्डत्वम्; संघाउ + इण = संघाडिणो < संघाटत्वम्।

(६५) इस्सरादि शब्दों से भाव अर्थ में इय प्रत्यय होता है।
इस्सर + इय = इस्सरियं < ऐश्वर्यम्।
अज्जव + इय = अज्जवियं < आर्जवम्; सामग्ग + इय = सामग्गियं < सामग्र्यम्।
अप्पाबहु + क + अप्पाबहुगं, अप्पाबहुकं, अप्पाबहुयं, अप्पबहुत्तं < अल्पबहुत्वम्। (भावार्थ में क प्रत्यय हुआ है।)

(६६) उवमादि शब्दों से भाव अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। यथा—
उवमा + अण् = ओवम्मं < औपम्यम्;
आहिक्कं < आधिक्यम्, दोहग्गं < दौर्भाग्यम्, सोहग्गं < सौभाग्यम्, तेलुक्कं < त्रैलोक्यम्, तेलोक्कं < त्रैलोक्यम्।

जुवाण + अण् = जुव्वणं, जोव्वणं, जोवणं, जोव्वणं < यौवनम्—वकार के आकार को ह्रस्व और व को विकल्प से द्वित्व हुआ है।

दूय + अण् = दोच्चं < दौत्यम्—य के स्थान पर च्च आदेश हुआ है।

अह्वाकच्चं < याथातथ्यम्, वेसारच्चं < वैशारद्यम्।

वियावड + इयण् = वेयावडियं < वैयावृत्तिकम्।

कलुण + अण् = कोलुण्णं < कारुण्यम्।

सह + अण् = साहल्लं, साफल्लं < साफल्यम्।

सुउमार + अण् = सोगमल्लं < सौकुमार्यम्—सुकुमार के स्थान पर सुगमल आदेश होता है।

विकारार्थक और सम्बन्धार्थक प्रत्यय

(६७) विकार अर्थ में प्रधानरूप से अण और मय प्रत्यय होते हैं। यथा—

अयो + मय = अयोमयम्, फलिह + मयं = फलिहमयं < स्फटिकमयम्; वओ + मय = वओमयं < वयोमयम्।

वई + मय = वईमयं < वाङ्मयम्; रयय + मय = रययामयं, रययमयं < रजतमयं—विकल्प से अकार आदेश हुआ है।

(६८) संख्यावाचक शब्दों से पूर्ण अर्थ में म प्रत्यय होता है। यथा—

सत्त + म = सत्तमं < सप्तमम्, अट्ठ + म = अट्ठमं < अष्टमम्, नव + म = नवमं, अट्ठारस + सम = अट्ठारसमं < अष्टादशम्, वीसइ + म = वीसइमं < विंशतिमम्।

(६९) दु और ति शब्दों से इय, तिय और तीय प्रत्यय होते हैं। यथा—

वि + इय = बिइयं, बि + तीय = बितीयं,

बितिज्जं, दोच्च < द्वितीयम्—य के स्थान पर ज्ज आदेश।

ति + इय = तीयं, तइयं, ततीयं, तच्चं—तृतीयम्।

(७०) छ शब्द से पूर्णार्थ में ट्ठ प्रत्यय होता है। यथा—

छ + ट्ठ = छट्ठं < षष्ठम्।

(७१) चतु शब्द से पूर्णार्थ में त्थं प्रत्यय होता है। यथा—

चतु + त्थं = चतुत्थं, चउ + त्थ = चउत्थं < चतुर्थम्।

(७२) कादि शब्दों से निर्धारण अर्थ में तर प्रत्यय होता है। यथा—

क + तर = कयरो < कतरः, एगयरो < एकतर, अन्नयरो < अन्यतरः।

बहु + सो—बहुसो < बहुशः।

कम + सो = कमसो < क्रमशः पगाम + सो = पगामसो < प्रकामशः, एगन्त + सो = एगन्तसो < एकान्तशः। कुंभग + सो = कुंभगसो < कुम्भशः। एक्क + सि = एक्कसि < एकशः। एगय + तो = एगयओ, एगयतो < एकतः।

दव्व + ओ = दव्वओ, दव्वतो = द्रव्यतः, पिट्ठओ, पिट्ठतो < पृष्ठत, कम्म+तो = कम्मओ, कम्मतो < कर्मतः ।

अत्थ + तो = अत्थतो, अत्थओ < अर्थत ।

धम्म + तो = धम्मतो, धम्मओ < धर्मतः ; दुह + तो = दुहओ, दुहतो < द्विधा ।

(७३) संख्यावाचक शब्दों से बारंबार अर्थ बतलाने के लिए क्खुत्तो प्रत्यय होता है । यथा—

दु + क्खुत्तो < द्विकृत्वः ; ति + क्खुत्तो = तिक्खुत्तो < त्रिकृत्वः ; सहस्स + क्खुत्तो = सहस्सक्खुत्तो < सहस्रकृत्वः ; अणंत + क्खुत्तो = अणंतक्खुत्तो < अनन्तकृत्वः ।

सि—एक्कसि < एकशः ।

(७४) प्रकार अर्थ में हा प्रत्यय होता है । यथा—

सव्व + हा = सव्वहा < सर्वथा; अण्ण + हा = अण्णहा < अन्यथा ;

अट्ठ + हा = अट्ठहा < अष्टधा ; ज + हा = जहा < यथा; त+हा = तहा < तथा ।

(७५) ज और त शब्दों से इ और इं प्रत्यय होते हैं । यथा—

ज + इ = जइ, ज + इं = जइं < यथा; त + इ = तइ, त + इं = तइं < तथा ।

(७६) प्रकार अर्थ में धा प्रत्यय होता है । यथा—

त + धा = तधा < तथा ।

(७७) इयर शब्द से प्रकार अर्थ में इहरा शब्द का विकल्प से निपातन होता है । यथा—

इहरा, इयरहा < इतरथा ।

(७८) प्रकार अर्थ में क शब्द से अह, अहं, इह और इण्णा प्रत्यय होते हैं । यथा—

क + अह = कह, क + अहं = कहं, क + इह = किह, क + इण्णा = किण्णा < कथम् ।

(७९) इदं शब्द से प्रकार अर्थ में एत्थं का निपातन होता है । यथा—

इदं—एत्थं, इत्थं < इत्थम् ।

(८०) एक शब्द से ध प्रत्यय होता है । यथा—एग+ध = एगध ।

(८१) इम शब्द से त्थ प्रत्यय होता है । यथा—

इम + त्थ = इत्थ—इम के स्थान पर इ आदेश ।

इम + त्थ = एत्थ—इम के स्थान पर ए आदेश ।

इम + त्थ = इयरत्थ < इतरत्र—इम के स्थान पर इयर आदेश ।

इम + इ = इइ—मकार का लोप ।

इम + इं = इइं— ,, ,,

दव्व + ओ = दव्वओ, दव्वतो = द्रव्यतः, पिट्ठओ, पिट्ठतो < पृष्ठतः, कम्म+तो = कम्मओ, कम्मतो < कर्मतः ।

अत्थ + तो = अत्थतो, अत्थओ < अर्थतः ।

धम्म + तो = धम्मतो, धम्मओ < धर्मतः ; दुह + तो = दुहओ, दुहतो < द्विधा ।

(७३) संख्यावाचक शब्दों से बारंबार अर्थ बतलाने के लिए क्खुत्तो प्रत्यय होता है । यथा—

दु + क्खुत्तो < द्विकृत्वः , ति + क्खुत्तो = तिक्खुत्तो < त्रिकृत्वः ; सहस्स + क्खुत्तो = सहस्सक्खुत्तो < सहस्रकृत्वः ; अणंत + क्खुत्तो = अणंतक्खुत्तो < अनन्तकृत्वः ।

सिं—एकसिं < एकशः ।

(७४) प्रकार अर्थ में हा प्रत्यय होता है । यथा—

सव्व + हा = सव्वहा < सर्वथा; अण्ण + हा = अण्णहा < अन्यथा ,

अट्ठ + हा = अट्ठहा < अष्टधा ; ज + हा = जहा < यथा; त+हा = तहा < तथा ।

(७५) ज और त शब्दों से ह और हं प्रत्यय होते हैं । यथा—

ज + ह = जह, ज + हं = जहं < यथा; त + ह = तह, त + हं = तहं < तथा ।

(७६) प्रकार अर्थ में धा प्रत्यय होता है । यथा—

त + धा = तधा < तथा ।

(७७) इयर शब्द से प्रकार अर्थ में इहरा शब्द का विकल्प से निपातन होता है । यथा—

इहरा, इयरहा < इतरथा ।

(७८) प्रकार अर्थ में क शब्द से अह, अहं, इह और इण्णा प्रत्यय होते हैं । यथा—

क + अह = कह, क + अहं = कहं, क + इह = किह, क + इण्णा = किण्णा < कथम् ।

(७९) इदं शब्द से प्रकार अर्थ में एत्थं का निपातन होता है । यथा—

इदं—एत्थं, इत्थं < इत्थम् ।

(८०) एक शब्द से त्त प्रत्यय होता है । यथा—एग+त्त = एगत्त ।

(८१) इम शब्द से त्थ प्रत्यय होता है । यथा—

इम + त्थ = इत्थ—इम के स्थान पर इ आदेश ।

इम + त्थ = एत्थ—इम के स्थान पर ए आदेश ।

इम + त्थ = इयरत्थ < इतरत्र—इम के स्थान पर इयर आदेश ।

इम + ह = इहव—मकार का लोप ।

इम + हं = इहं—„ „

धातुप्रत्यय

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इ	न्ति
म० पु०	सि	ह
उ० पु०	मि	मो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्सइ, हिइ	स्सन्ति, हिन्ति
म० पु०	स्ससि, हिसि	स्सह, हिह
उ० पु०	स्सामि, हामि	स्सामो, हामो

भूतकाल

भूतकाल के सभी पुरुष और सभी वचनों में ईअ प्रत्यय होता है। महाराष्ट्री में इसका अभाव है।

विध्यर्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इज्ज, एज्ज, इज्जा एज्जा, ए	इज्ज, एज्ज इज्जा, एज्जा, ए
म० पु०	इज्ज, एज्ज, एज्जासि	इज्ज, एज्ज, एज्जाह
उ० पु०	इज्ज, एज्ज, एज्जामि	इज्ज, एज्ज, एज्जामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उ	न्तु
म० पु०	हि	ह, एह
उ० पु०	मि	मो

कर्मणि में इज्ज प्रत्यय और प्रेरणा में आवि प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर धातु प्रत्यय जोड़ने से कर्मणि और प्रेरणा के रूप होते हैं।

गच्छ—गमन करना

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छइ	गच्छन्ति
म० पु०	गच्छसि	गच्छह
उ० पु०	गच्छामि	गच्छामो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिस्सइ, गच्छिहिइ	गच्छिस्सन्ति, गच्छिहिन्ति
म० पु०	गच्छिस्ससि, गच्छिहिसि	गच्छिस्सह, गच्छिहिह
उ० पु०	गच्छिस्सामि, गच्छिहामि	गच्छिस्सामो, गच्छिहामो

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिअ	गच्छिअ
म० पु०	गच्छिअ	गच्छिअ
उ० पु०	गच्छिअ	गच्छिअ

विधि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिज्ज, गच्छेज्ज (ज्जा) गच्छे	गच्छिज्ज, गच्छेज्ज (ज्जा) गच्छे
म० पु०	गच्छिज्ज, गच्छेज्ज (ज्जा) गच्छे, गच्छेज्जासि	गच्छिज्ज, गच्छेज्ज (ज्जा) गच्छे, गच्छेज्जाह
उ० पु०	गच्छिज्ज, गच्छेज्ज (ज्जा) गच्छे, गच्छेज्जामि	गच्छिज्ज, गच्छेज्ज (ज्जा) गच्छे, गच्छेज्जामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छउ	गच्छन्तु
म० पु०	गच्छाहि, गच्छ	गच्छह, गच्छेह
उ० पु०	गच्छामि	गच्छामो

कर्मणि रूप

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिज्जइ	गच्छिज्जन्ति
म० पु०	गच्छिज्जसि	गच्छिज्जइ
उ० पु०	गच्छिज्जामि	गच्छिज्जामो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिज्जिस्सइ, गच्छिज्जिहिइ	गच्छिज्जिस्सन्ति, गच्छिज्जिहिन्ति
म० पु०	गच्छिज्जिस्ससि, गच्छिज्जिहिसि	गच्छिज्जिस्सह, गच्छिज्जिहिह
उ० पु०	गच्छिज्जिस्सामि, गच्छिज्जिहामि	गच्छिज्जिस्सामो, गच्छिज्जिहामो

भूतकाल

भूतकाल के सभी वचन और सभी पुरुषों में गच्छिज्जिअ रूप बनता है।

विधि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिज्जिज्ज, गच्छिज्जेज्ज (ज्जा) गच्छिज्जे	गच्छिज्जिज्ज, गच्छिज्जेज्ज (ज्जा) गच्छिज्जे
म० पु०	गच्छिज्जिज्ज, गच्छिज्जेज्ज (ज्जा) गच्छिज्जेज्जासि	गच्छिज्जिज्ज, गच्छिज्जेज्ज (ज्जा) गच्छिज्जेज्जाह
उ० पु०	गच्छिज्जिज्ज, गच्छिज्जेज्ज (ज्जा) गच्छिज्जेज्जामि	गच्छिज्जिज्ज, गच्छिज्जेज्ज गच्छिज्जेज्जामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छिज्जउ	गच्छिज्जन्तु
म० पु०	गच्छिज्जाहि, गच्छिज्ज	गच्छिज्जह, गच्छिज्जेह
उ० पु०	गच्छिज्जामि	गच्छिज्जामो

प्रेरणार्थक

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छावेइ	गच्छाविन्ति, गच्छावेन्ति
म० पु०	गच्छावेसि	गच्छावेह
उ० पु०	गच्छावेमि	गच्छावेमो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छाविस्सइ, गच्छाविहिइ	गच्छाविस्सन्ति, गच्छाविहिन्ति
म० पु०	गच्छाविस्ससि, गच्छाविहिसि	गच्छाविस्सह, गच्छाविहिह
उ० पु०	गच्छाविस्सामि, गच्छाविहामि	गच्छाविस्सामो, गच्छाविहामो

भूतकाल

भूतकाल के सभी पुरुष और सभी वचनों में गच्छाविंसु रूप होता है।

विधि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छावेज्ज, गच्छावेज्जा	गच्छावेज्ज, गच्छाविज्ज
	गच्छाविज्ज, गच्छाविज्जा	गच्छावेज्जा, गच्छाविज्जा
म० पु०	गच्छावेज्ज, गच्छाविज्ज	गच्छावेज्ज, गच्छाविज्ज
	गच्छावेज्जा, गच्छाविज्जा	गच्छावेज्जा, गच्छाविज्जा
	गच्छावेज्जासि	गच्छावेज्जाह
उ० पु०	गच्छावेज्ज, गच्छाविज्ज	गच्छाविज्ज, गच्छावेज्ज
	गच्छावेज्जा, गच्छाविज्जा	गच्छाविज्जा, गच्छावेज्जा
	गच्छावेज्जामि	गच्छावेज्जामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छावेउ	गच्छाविन्तु, गच्छावेन्तु
म० पु०	गच्छावेहि	गच्छावेह
उ० पु०	गच्छावेमि	गच्छावेमो

अस—सत्ता

वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
अत्थि	सन्ति
सि	ह
असि, मि	मो

आज्ञा में सभी पुरुष और सभी वचनों में अत्थु और भूतकाल में प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष के सभी वचनों में आसि और आसी तथा उत्तम पुरुष के एक वचन में आसि, आसी और बहुवचन में आसिमो रूप बनते हैं।

कुछ धातुरूपों का संकेत

धातु	अर्थ	कर्त्तरिरूप	कर्मणि	प्रेरणा
अच्छ	बैठना	अच्छइ	अच्छिज्जइ	अच्छावेइ
अण	जानना, आवाज करना	अणइ	अणिज्जइ	आणावेइ
आ + अण	उच्छ्वास ग्रहण करना	आणमइ	आणमिज्जइ	आणमावेइ

अय	गमन करना	अयइ	अइज्जइ	आयावेइ
उव + अय	उपासना करना	उवायइ	उवाइज्जइ	उवायावेइ
इ	गमन करना	इइ	इज्जइ	इआवेइ
अइ + इ	उल्लंघन करना	अईति	अईज्जइ	अईवेइ
उव + इ	उदय होना	उवेइ	उविज्जइ	उवावेइ
प + इ	परलोक गमन	पेचइ	पेचिज्जइ	पेचावेइ
पति + इ	विश्वास करना	पत्तिपइ	पत्तिज्जइ	पत्तिआवेइ
वि + इ	व्यय करना	वेइ	वेइज्जइ	वेआवेइ
अहि + इ	अध्ययन करना	अहिज्जइ, अहीयइ	अहिज्जइ	अज्झावेइ
इच्छ	इच्छा करना	इच्छइ	इच्छिज्जइ	इच्छावेइ
पडि + इच्छ	स्वीकृति करना	पडिच्छइ	पडिच्छिज्जइ	पडिच्छावेइ
उंच	कुटिलता करना	उंचइ	उंचिज्जइ	उंचावेइ
पलि + उञ्च	अपलाप करना	पलिउंचइ	पलिउंचिज्जइ	पलिउंचावेइ
उंज	योग करना	उंजइ	उंजिज्जइ	उंजावेइ
उव + उंज	उपयोग	उवउंजइ	उवउंजिज्जइ	उवउंजावेइ
वि + उंज	वियोग-वियुक्त करना	विउंजइ	विउंजिज्जइ	विउंजावेइ
आयण्ण	सुनना	आयन्नइ	आयन्निज्जइ	आयन्नावेइ
कस	आकर्षण	कसइ	कसिज्जइ	कसावेइ
का	करना	काइ	काइज्जइ	कावेइ
कुण	करना	कुणइ	कुणिज्जइ	कुणावेइ
खा	खाना	खाइ, खायइ	खाइज्जइ	खावेइ
खम	सहना	खमइ	खमिज्जइ	खामेइ
गम	चलना	गमइ	गम्मइ	गमावेइ
आ + गम	आगमन	आगमइ	आगम्मइ	आगमावेइ
गा	गाना	गाइ	गिज्जइ, गीयइ	गावेइ
गिज्झ	आसक्ति	गिज्झइ	गिज्झिज्जइ	गिज्झावेइ
गिला	ग्लानि	गिलाइ	गिलाइज्जइ	गिलावेइ
गुर	उद्यम करना	गुरइ	गुरिज्जइ	गुरावेइ
घा	सूँघना	जिग्घइ	घाइज्जइ	घावेइ
चिगिच्छ	चिकित्सा	चिगिच्छइ	चिगिच्छिज्जइ	चिगिच्छावेइ
चिणइ	चयन करना	चिणइ	चिज्जइ	चिणावेइ
उव + चिण	उपचयन	उवचिणइ	उवचिज्जइ	उवचिणावेइ

सम् + चिण	संचय करना	संचिणइ	संचिणिज्जइ	संचिणावेइ
जंप	बोलना	जंपइ	जंपिज्जइ	जंपावेइ
जय	जय—जीतना	जयइ	जयिज्जइ	जयावेइ
परा + जय	हारना	पराजयइ	पराजयिज्जइ	पराजयावेइ
वि + जय	विजय करना	विजयइ	विजयिज्जइ	विजयावेइ
जहा	त्याग करना	जहइ, जहाइ	जहाइज्जइ	जहावेइ
जा	जाना, उत्पन्न होना	जाइ, जायइ	जाइज्जइ	जावेइ, जवेइ
उद् + जा	ऊपर गमन करना	उज्जाइ	उज्जाइज्जइ	उज्जावेइ
पति + आ + जा	प्रत्यागमन	पच्चाजाइ	पच्चाजाइज्जइ	पच्चाजावेइ
जाण	अवबोधन—जानना	जाणाइ, जाणइ	जाणिज्जइ	जाणावेइ
झा, झिया	ध्यान करना	झाअइ, झायइ	झाइज्जइ	झावेइ
डंस	काटना	डसइ	डंसिज्जइ	डंसावेइ
डी	आकाश में चलना	डीइ	डीइज्जइ	डीआवेइ
उड्ड + डी	,, ,,	उड्डीइ	उड्डीइज्जइ	उड्डीआवेइ
ठा	ठाना	ठाइ	ठाइज्जइ	ठावेइ
तिप्प	दुःख देना, तृप्ति तर्पण करना	तिप्पइ तिप्पाइ	तिप्पिज्जइ	तिप्पावेइ
तुस	सन्तोष करना	तुसइ	तुसिज्जइ	तोसेइ
तस	उद्वेग करना	तसइ	तसिज्जइ	तासेइ
थुण	स्तुति	थुणइ	थुणिज्जइ	थुणावेइ
दल	दान देना	दलइ	दलिज्जइ	दलावेइ
दह	धारण करना	दहइ	दहिज्जइ	दहावेइ
सद् + दह	श्रद्धा करना	सद्दहइ	सद्दहिज्जइ	सद्दहावेइ
दिस	देखना, देना	देसए	दिसिज्जइ	दिसावेइ
दुस	विकृति, द्वेष	दुसइ	दुसिज्जइ	दुसावेइ
देव	विलाप	देवइ	देविज्जइ	देवावेइ
धुण	कँपना, कम्पन	धुणइ,	धुणए	धुणावेइ
नम	नम्र होना, प्रणाम करना	नमइ, णमइ	नमिज्जइ	नामेइ
नस्स	नाश होना	नस्सइ	नासिज्जइ	नासेइ
ने	ले जाना	नेइ	निज्जइ	नेआवेइ
न्हा	स्नान करना	ण्हाइ	ण्हाइज्जइ	ण्हावेइ

पज्ज	गमन करना	पज्जइ	पज्जिज्जइ	पज्जावेइ
उद् + पज्ज	उत्पत्ति होना	उप्पज्जइ	उप्पज्जिज्जइ	उप्पज्जावेइ
णि + पज्ज	निष्पत्ति	णिप्फज्जइ	णिप्फज्जिज्जइ	निप्फज्जावेइ
पड	पतन—गिरना	पडइ	पडिज्जइ	पाडेइ
पा	पीना	पिवइ	पाइज्जइ	पज्जेइ
पुच्छ	पूछना	पुच्छइ	पुच्छिज्जइ	पुच्छेइ
बंध	बंधन	बंधइ	बंधिज्जइ	बंधावेइ
बीह	भयभीत होना	भीमइ	बीहिज्जइ	बीहावेइ
भव	सत्ता—होना	भवइ	भविज्जइ	भावेइ
भिंद	विदीर्ण करना	भिंदइ	भिंदिज्जइ	भिंदावेइ
भुंज	भोजन करना	भुंजइ	भुज्जइ	भुंजावेइ
माद	प्रमाद करना	मादइ	मादिज्जइ	मादावेइ
मिल	मिलना	मिलइ	मिलिज्जइ	मिलावेइ
रंभ	आरंभ करना	रंभइ	रंभिज्जइ	रंभावेइ
रिम	गमन करना	रिमइ	रिइज्जइ	रियावेइ
रुद	रोना	रोवइ	रुदिज्जइ	रुदावेइ
लभ	प्राप्त करना	लभइ	लब्भइ	लाभेइ
लुण	छेदना, काटना	लुणइ	लुणिज्जइ	लुणावेइ
लुभ	लोभ करना	लुब्भइ	लुभिज्जइ	लोभेइ
सुण	सुनना	सुणेइ, सुणइ	सुव्वइ	सुणावेइ
वच	बोलना	वचइ	उच्चइ	वचावेइ
वह	पहुँचाना	वहइ	वुज्झइ	वहावेइ
वा	हवा चलना	वाइ	वाइज्जइ	वावेइ
सास	अनुशासन	सासइ	सासिज्जइ	सासावेइ
सिर	बनाना, निर्माण करना	सिरइ	सिरिज्जइ	सिरावेइ
सिव्व	सीना, बाँधना	सि वइ	सिव्विज्जइ	सिव्वावेइ
सीय	शोक करना, विषाद करना	सीयइ	सीइज्जइ	सीयावेइ
सुय	सोना	सुवइ, सुयइ	सुइज्जइ	सुयावेइ
सुस्सुस	सेवा करना	सुस्सूसइ	सुस्सुसिज्जइ	सुस्सुसावेइ
हण	हिंसा करना	हणइ	हम्मइ	हणावेइ

कर	करना	करेइ	किज्जइ, कज्जइ	कारेइ, करावेइ
अच्च	पूजा	अच्चेइ	अच्चिज्जइ	अच्चावेइ
कास	प्रकाश, चमकना	कासेइ	कासिज्जइ	कासावेइ
किलाम	ग्लानि करना	किलामेइ	किलामिज्जइ	किलामावेइ
तक्क	कल्पना करना	तक्केइ	तक्किज्जइ	तक्कावेइ
ताड	ताडना करना	ताडेइ, ताळेइ	ताडिज्जइ	ताळावेइ, ताडावेइ
दा	देना	देइ	दिज्जइ	दाणेइ
दीव	दीप्ति	दीवेइ	दीविज्जइ	दीवावेइ
धार	धारण करना	धारेइ	धारिज्जइ	धारावेइ
उस	निन्दा करना	उसेइ, उसइ	उसिज्जइ	उसावेइ
कह	कहना	कहेइ, कहइ	कहिज्जइ	कहावेइ
वि + कीर	विकीर्ण करना	विक्खिरइ	विक्खीरिज्जइ	विक्खीरावेइ
किण	खरीदना	किणेइ, किणइ	किणिज्जइ	किणावेइ
वि + किण	बेचना	विक्कणेइ	विक्कणिज्जइ	विक्कणावेइ
खिव	प्रेरणा	खिवेइ	खिप्पइ	खेवावेइ
खुभ	क्षुब्ध होना	खुब्भइ	खुभिज्जइ	खोभेइ
गिण्ह	ग्रहण करना	गेण्हइ	घेप्पइ, घिप्पइ	गिण्हावेइ
चल	हल-चल करना	चलइ,चलेइ	चलिज्जइ	चालेइ
चिट्ठ	ठहरना	चिट्ठइ	चिट्ठिज्जइ	चिट्ठावेइ
जर	जीर्ण होना	जेरइ, जरइ	जरिज्जइ	जरावेइ
धा	धारण, पोषण	धाइ	धीयए	धावेइ
पास	देखना	पासेइ	पासिज्जइ	पासावेइ
भास	भाषण करना	भासइ	भासिज्जइ	भासावेइ
मन्न	समझना	मन्नेइ	मन्निज्जइ	मन्नावेइ

कृदन्त

(८७) अर्धमागधी में सम्बन्धार्थक क्त्वा प्रत्यय के स्थान में त्ता, त्तु, तूण टु, उं, ऊण, इय, इत्ता, इत्ताणं, एत्ताणं, इत्तु, च आदि प्रत्यय होते हैं। यथा—

इत्ता—कर + इत्ता = करित्ता, च + इत्ता = चइत्ता, पास + इत्ता = पासित्ता, विउट्ट + इत्ता = विउट्टित्ता, लभ + इत्ता = लभित्ता।

एत्ता—कर + एत्ता = करेत्ता, पास + एत्ता = पासेत्ता।

एत्ताणं—पास + एत्ताणं = पासेत्ताणं, कर + एत्ताणं = करेत्ताणं।

इत्ताणं—पास + इत्ताणं = पासित्ताणं, कर + इत्ताणं = करित्ताण, चइ + इत्ताणं = चइत्ताणं, भुंज + इत्ताणं = भुंजित्ताणं।

इत्तु—दुरुह + इत्तु = दुरुहित्तु, जाण + इत्तु = जाणित्तु, वध + इत्तु = वधित्तु।

च्चा—कि + च्चा = किच्चा, ण + च्चा = णच्चा, सो + च्चा = सोच्चा, भुज + च्चा = भोच्चा, चय + च्चा = चेच्चा।

इया—परिजाण + इया = परिजाणिया, दुरुह + इया = दुरुहिया।

ट्टु—क + ट्टु, साह + ट्टु = साहट्टु, अवह + ट्टु = अवहट्टु।

उं—सुण—सो + उं = सोउं, दट्ठ + उं = दट्ठुं, छोढ + उं = छोढुं।

तूण—भुज + तूण—भोत्तूण, मुंच + तूण = मोत् + तूण = मोत्तूण, मुत्तूण। घ्रह + तूण—घेत्तूण।

ऊण—अभिवाइ + ऊण = अभिवाइऊण, लभ + ऊण = लद्धूण, सुण + ऊण = सोऊण, छुभ + ऊण = छोढूण, नि + जिण = निज्जिऊण; गम + ऊण = गमिऊण, निः + चिण + ऊण = निच्छिऊण।

हेत्वर्थ कृदन्त

(८८) हेत्वर्थक तुमुन् के अर्थ में इत्तए, इत्तते, तुं, उं प्रत्यय होते हैं।

इत्तए—कर + इत्तए = करित्तए, प+ कर + एत्तए = पकरेत्तए, वागर+एत्तए = वागरित्तए, विआगरित्तए, कारवेत्तए, काराविंत्तए, कारावेत्तए।

इत्तते—उवसाय + इत्तते = उवसमित्तते।

तुं—वच् + तुं = वत्तुं।

उं—वास + उं = वास + उं = वासिउं, वरिसेउं

वर्तमानकृदन्त

वर्तमान अर्थ में प्राकृत के समान न्त और माण प्रत्यय अर्धमागधी में भी होते हैं। यथा—

न्त—कर + न्त = करिन्तो, करेन्तो; गाय + न्त = गायन्तो, उणय + न्त = उणयन्तो, समावयन्तो।

माण—पउज + माण = पउजमाणो, विक्काय + माण = विक्कायमाणो, चिप्प + माण = चिप्पमाणो, परिगिज्झ + माण = परिगिज्झमाणो, जाय + माण = जायमाणो, आदिय + माण = आढियमाणो।

(८९) ऋकारान्त धातु के त प्रत्यय के स्थान में ड होता है। यथा—

कृ + त = कड, मृ + त = मड, अभिहड, वावड, संवुड, वियड, वित्थड।

जैन महाराष्ट्री

अर्धमागधी के आगम ग्रन्थों के अतिरिक्त चरित, कथा, दर्शन, तर्क, ज्योतिष, भूगोल और स्तोत्र आदि विषयक प्राकृत का विशाल साहित्य है। इस साहित्य की की भाषा को वैयाकरणों ने जैन महाराष्ट्री नाम देकर महाराष्ट्री और अर्धमागधी से पृथक् इस भाषा का अस्तित्व बताया है। यद्यपि काव्य और नाटकों की भाषा से यह भाषा बहुत कुछ अंशों में मिलती-जुलती है, फिर भी यह एक स्वतन्त्र भाषा है। इसका रूप महाराष्ट्री और अर्धमागधी के मिश्रण से निर्मित हुआ है। आगम ग्रन्थों पर रचे गये बृहत्कल्पभाष्य, व्यवहारसूत्रभाष्य, विशेषावश्यकभाष्य एवं निशीथचूर्णि प्रभृति टीका और भाष्य ग्रन्थों में भी इस भाषा का प्रयोग पाया जाता है। धर्मसंग्रहणी, समराइच्चकहा, कुवलयमाला वसुदेवहिण्डी, पउमचरिय प्रभृति ग्रन्थों में भी इसी भाषा का प्रयोग हुआ है। हमें ऐसा लगता है कि काव्यों और नाटकों की भाषा से यह जैन महाराष्ट्री प्राचीन है। अर्धमागधी की भाषागत प्रवृत्तियों में थोड़ा-सा परिवर्तन होकर जैन महाराष्ट्री का विकास हुआ होगा और इसी जैन महाराष्ट्री से व्यंजन वर्णों का लोप होकर काव्य और नाटकों की महाराष्ट्री का प्रादुर्भाव हुआ है। जैन महाराष्ट्री की मूल-प्रवृत्ति अर्धमागधी से सम्बन्ध रखती है। इसमें अधिक व्यञ्जनों का लोप नहीं होता है। य और व जैसे मृदुल व्यञ्जनों को अत्यधिक स्थान प्राप्त है। अर्धमागधी और शौर-सेनी के समान इस भाषा की मूलप्रवृत्ति पर संस्कृत का पर्याप्त प्रभाव लक्षित होता है।

ध्वनिपरिवर्तन सम्बन्धी जैन महाराष्ट्री की निम्न विशेषताएँ हैं :—

(१) क के स्थान में अनेक स्थलों में ग पाया जाता है। यथा—

सावग < श्रावक—क के स्थान पर ग हुआ है।
णिगरं < निकरम्—मध्यवर्ती क के स्थान पर ग।

तित्थगरो < तीर्थंकरः —क के स्थान पर ग।
लोगो < लोकः — „ „
आगरिसो < आदर्शः — „ „
आगारो < आकारः — „ „
उवासगो < उपासकः — „ „
दुगुल्लं < दुकूलम्— „ „
गेंदुअं < कन्दुकम्— „ „ इस शब्द का विकल्प से जैन महाराष्ट्री में कन्दुक रूप भी पाया जाता है।

(२) लुप्त व्यञ्जनों के स्थान पर य श्रुति होती है। यथा—

कहाणयं < कथानकम्—यहाँ लुप्त क के स्थान पर य श्रुति।
भगवया < भगवता—लुप्त त के स्थान पर य।

चेयणा < चेतना—लुप्त त के स्थान पर य।
भणियं < भणितम्— „ „
विसायं < विषादं—लुप्त द के स्थान पर य।
महारायस्स < महाराजस्य—लुप्त ज के स्थान पर य।
रययं < रजतम्—लुप्त ज और त के स्थान पर य।
पयावई < प्रजापतिः —लुप्त ज के स्थान पर य।
गया < गदा—लुप्त द के स्थान पर य।
कयग्गहो < कचग्रहः —लुप्त च के स्थान पर य।
कायमणी < काचमणिः — „ „ „
लायण्णं < लावण्यम्—लुप्त व के स्थान पर य।
मयणो < मदनः —लुप्त द के स्थान पर य।

यह प्रवृत्ति काव्य और नाटकों की भाषा में नहीं पायी जाती है और न अर्धमागधी में सार्वत्रिक मिलती है। महाराष्ट्री में व्यञ्जनों का लोप होने पर मात्र स्वर शेष रह जाते हैं। य श्रुति की प्रवृत्ति जैन महाराष्ट्री का प्रमुख चिह्न है।

(३) शब्द के आदि और मध्य में भी ण की तरह न रह जाता है। यह प्रवृत्ति अर्धमागधी की देन है। यथा—

नाणुमयमेएसिं < नानुमतमेतयोः —आदि न ज्यों का त्यों स्थित है।
नियमोववसिहिं < नियमोपवासैः — „ „
नियट्टीए < निहृत्य— „ „
नूणमेसा < नूनमेषा— „ „
भत्तिनिब्भरा < भक्तिनिर्भरा—मध्य न ज्यों का त्यों स्थित है।
अणुन्नविय < अनुज्ञाप्य— „ „
कहमन्नहा < कथमन्यथा— „ „
अप्पहनिद्दा < अल्पकनिद्रा— „ „
उववन्नाओ त्ति < उपपन्ने इति— „ „
अन्नहा < अन्यथा— „ „
कन्नयाए < कन्यकायाः— „ „
पडिवन्ना < प्रतिपन्ना—अन्तिम न ज्यों का त्यों स्थित है।
नुवन्ना एसा < निपन्ना एषा—आदि और अन्तिम न ज्यों का त्यों स्थित है।
नुवन्नो < निपन्नः — „ „ „
समुप्पन्ना < समुत्पन्ना—अन्तिम न ज्यों का त्यों स्थित है।
उप्पन्नो < उत्पन्नः — „ „ „
विराहजन्नो < विरहपन्नः — „ „

(४) यथा और यावत् के स्थान में क्रमशः जहा और जाव की तरह अहा और आव भी होते हैं।

(५) कुछ पदों में समास होने पर उत्तरपद के पूर्व म् का आगम हो जाता है। यथा—

अन्नमन्न < अन्न + अन्न—उत्तर पद के अन्त के पूर्व मकारागम।

एगमेग = एग + एग—उत्तर पद एग के पूर्व मकारागम।

चित्तमाणंदियं = चित्त + आणंदियं = उत्तर पद आणंदियं के पूर्व मकारागम।

(६) पाय, माय, तेगिच्छिग, पडुप्पण, साहि, सुहुम आदि शब्दों का पत्त, मेत्त चेइच्छय आदि की तरह उपयोग होता है।

(७) तृतीया के एकवचन में अर्धमागधी के समान कहीं-कहीं सा का प्रयोग भी पाया जाता है। और प्रथमा विभक्ति के एकवचन में महाराष्ट्री के समान ओ पाया जाता है। यथा—

मन + सा = मणसा < मनसा;—जिण—जिणो।

वय + सा = वयसा < वचसा; वीर—वीरो।

काय + सा = कायसा < कायेन; गोयम = गोयमो।

(८) आइक्खइ, कुव्वइ, सडइ, सोछइ, वोसिरइ प्रभृति धातुरूप उपलब्ध होते हैं।

(९) क्त्वा प्रत्यय के रूप अर्धमागधी के च्चा और त्तु प्रत्यय जोड़ने से भी बनाये जाते हैं। महाराष्ट्री तूण और ऊण भी पाये जाते हैं। यथा—

सुण + च्चा = सो + च्चा = सोच्चा < श्रुत्वा।

कृ + च्चा = कि + च्चा = किच्चा < कृत्वा।

वंदित्तु—वंदि + त्तु = वंदित्तु < वंदित्वा।

आलोचि + ऊण = आलोचिऊण < आलोच्य।

चवि + ऊण = चविऊण < च्युत्वा।

मुच् + तूण—मोत् + तूण = मोत्तूण < मुक्त्वा।

(१०) त प्रत्ययान्त रूप ड में परिवर्तित दिखलायी पड़ते हैं। यथा—

कडं < कृतम्—त के स्थान पर ड।

वावडं < व्यापृतम्— " "

संवुडं < संवृत्तम्— " "

(११) अस् धातु का सभी काल, वचन और सभी पुरुषों में अर्धमागधी के समान आसी रूप पाया जाता है। सभी कालों के बहुवचन में महाराष्ट्री के समान अहेसी रूप भी उपलब्ध होता है।

अवशेष नियम प्राकृत के समान ही जैन महाराष्ट्री में प्रवृत्त होते हैं।

पैशाची

पैशाची एक बहुत प्राचीन प्राकृत भाषा है। इसकी गणना पालि, अर्धमागधी और शिलालेखीय प्राकृतों के साथ की जाती है। चीनी-तुर्किस्तान के खरोष्ट्री शिलालेखों में पैशाची की विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। डा० जार्ज ग्रियर्सन के अनुसार पैशाची पालि का एक रूप है, जो भारतीय आर्यभाषाओं के विभिन्न रूपों के साथ मिश्रित हो गयी है।

पैशाची की प्रकृति शौरसेनी है। मार्कण्डेय ने पैशाची भाषा को कैकय, शौरसेन और पञ्चाल इन तीन भेदों में विभक्त किया है। अतः सिद्ध होता है कि पैशाची भाषा पाण्ड, काञ्ची और कैकय आदि प्रदेशों में बोली जाती थी। अब यहाँ यह आशंका उत्पन्न होती है कि इतने दूरवर्ती इन तीनों प्रदेशों में एक ही भाषा का व्यवहार क्यों और कैसे होता था? इसका उत्तर यह हो सकता है कि पैशाची भाषा एक जातिविशेष की भाषा थी। यह जाति जिस जिस स्थान पर गयी, उस उस स्थान पर अपनी भाषा को भी लेती गयी। अनुमान है कि यह कैकय देश में उत्पन्न हुई और बाद में उसीके समीपस्थ शूरसेन और पञ्जाब तक फैल गयी। डा० सर जार्ज ग्रियर्सन के अनुसार पैशाची का आदिम स्थान उत्तर-पश्चिम पञ्जाब अथवा अफगानिस्तान प्रान्त है। यहीं से इस भाषा का अन्यत्र विस्तार हुआ है। डा० हार्नेलि का मत है कि अनार्य लोग आर्यजाति की भाषा का जिस विकृत रूप में उच्चारण करते थे,वह विकृत रूप ही पैशाची भाषा का है। दूसरे शब्दों में यों कहा जा सकता है कि द्राविड भाषा से प्रभावित आर्यभाषा का एक रूप पैशाची प्राकृत है। पंजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान और काश्मीर की भाषाओं पर इसका प्रभाव आज भी लक्षित होता है।

वाग्भट्ट ने पैशाची को भूतभाषा कहा है। पिशाच नाम की एक जाति प्राचीन भारत में निवास करती थी। उसकी भाषा को पैशाची कहा गया है। पैशाची की व्याकरण सम्बन्धी निम्न विशेषताएँ है—

(१) पैशाची शब्दों में आदि में न रहने पर, वर्गों के तृतीय और चतुर्थ वर्णों के स्थान पर उसी वर्ग के क्रमशः प्रथम और द्वितीय वर्ण हो जाते हैं।[1] यथा—

गकनं < गगनम्—ग के स्थान पर क हुआ है।

मेखो < मेघ—कवर्ग के चतुर्थ वर्ण घ के स्थान पर उसी वर्ग का द्वितीय वर्ण ख हुआ है।

---

१. वर्गाणां तृतीयचतुर्थयोरयुजोरनाद्योराद्यौ १०।३ वर०।

राचा < राजा—चवर्ग के तृतीय वर्ण ज के स्थान पर उसी वर्ग का प्रथम वर्ण च हुआ है।

णिच्छरो < णिज्झरो < निर्झरः—ज्झ के स्थान पर च्छ।

दसवतनो < दसवदनो < दशवदनः—मध्यवर्ती द के स्थान पर त।

सलफो < सलभो < शलभः—भ के स्थान पर फ।

(२) पैशाची में ज्ञ के स्थान पर ञ्ञ आदेश होता।[1] जैसे—

पञ्ञा < प्रज्ञा—ज्ञ के स्थान पर ञ्ञ हुआ है।

सञ्ञा < संज्ञा— ,, ,,

सव्वञ्ञो < सर्वज्ञः— ,, ,,

विञ्ञानं < विज्ञानम्— ,, ,,

(३) राजन् शब्द के रूपों में जहाँ-जहाँ ज्ञ रहता है, वहाँ-वहाँ ज्ञ के स्थान में विकल्प से चिञ् आदेश होता है।[2] यथा—

राचिञा लपितं, रञ्ञा लपितं < राज्ञा लपितम्—विकल्प से ज्ञ के स्थान में चिञ् आदेश होने पर राचिञा और विकल्पाभाव में ज्ञ के स्थान पर ञ्ञ आदेश होने से रञ्ञा रूप बना है।

राचिञो धनं, रञ्ञो धनं < राज्ञो धनम्।

(४) पैशाची में न्य और ण्य के स्थान में ञ्ञ आदेश होता है।[3] यथा—

कञ्ञका, अभिमञ्ञू < कन्या, अभिमन्युः—न्य के स्थान पर ञ्ञ।

पुञ्ञाहं < पुण्याहम्— ,, ,,

(५) पैशाची में णकार का नकार होता है।[4] यथा—

गुनगनयुत्तो < गुणगणयुक्तः—शौरसेनी के ण के स्थान पर न।

गुनेन < गुणेन— ,, ,,

(६) पैशाची में तकार और दकार के स्थान में तकार हो जाता है।[5] यथा—

भगवती, पव्वती < भगवती, पार्वती—तकार के स्थान त हुआ है।

मतनपरवसो < मदनपरवशः—द के स्थान पर त आदेश हुआ है।

सतनं < सदनम्— ,, ,,

तामोतरो < दामोदरः— ,, ,,

होतु < होदु—शौरसेनी के दु के स्थान पर तु हुआ है।

(७) पैशाची में ल के स्थान ळकार हो जाता है।[6] यथा—

---

१. ज्ञो ञ्ञ पैशाच्याम् ८।४।३०३ हे० २. राज्ञो वा चिञ् ८।४।३०४।

३. न्य-ण्योर्ञ्ञः ८।४।३०५। ४. णो नः ८।४।३०६।

५. तदोस्तः ८।४।३०७। ६. लो ळः ८।४।३०८।

सळिळं < सलिलम्—ल के स्थान पर ळ हुआ है।

कमळं < कमलम्— ,, ,,

(८) पैशाची श और ष के स्थान स आदेश होता है।[1] यथा—

सोभति < शोभते—श के स्थान पर स हुआ है।

सोभनं < शोभनं— ,, ,,

ससी < शशी— ,, ,,

विसमो < विषमः —मूर्द्धन्य ष के स्थान पर स हुआ है।

विसानो < विषाणः — ,, ,,

(९) पैशाची में हृदय शब्द के यकार के स्थान में पकार हो जाता है।[2] यथा—

हितपकं < हृदयकम्—द के स्थान पर त और य के स्थान प आदेश होता है।

(१०) पैशाची में टु के स्थान पर विकल्प से तु आदेश होता है। यथा—

कुतुम्बकं, कुटुंबकं < कुटुम्बकम्।

(११) पैशाची में कहीं-कहीं र्य, स्न और ष्ट के स्थान में रिय, सिन और सट आदेश होते हैं। यथा—

भारिया < भार्या—स्वरभक्ति के नियमानुसार र और य का पृथक्करण होकर इत्व हो गया है।

सिनातं < स्नातम्— ,, ,, ,,

कसटं < कष्टम्— ,, ,, ,,

सनानं < स्नानम्—स्वरभक्ति के नियमानुसार स और न का पृथक्करण।

सनेहो < स्नेहः— ,, ,,

(१२) पैशाची में यादृश, तादृश आदि के दृ के स्थान पर ति आदेश होता है। यथा—

यातिसो < यादृशः—दृ के स्थान पर ति और श को स।

तातिसो < तादृशः— ,, ,,

भवातिसो < भवादृशः— ,, ,,

अञ्ञातिसो < अन्यादृशः—न्य के स्थान पर ञ्ञ और दृ को ति।

युम्हातिसो < युष्मादृशः—ष्म के स्थान पर म्ह और दृ के स्थान पर ति।

अम्हातिसो < अस्मादृशः—स्म ,, ,,

(१३) पैशाची में शौरसेनी के ज्ज के स्थान में च्च आदेश होता है। यथा—

कच्चं < कज्जं < कार्यम्—शौरसेनी के ज्ज के स्थान पर च्च।

---

१. शषोः सः ८।४।३०९। २. हृदये यस्य पः ८।४।३१०

(१४) पैशाची में शौरसेनी का सुज्ज शब्द ज्यों का त्यों रह जाता है।

सुज्जो < सूर्यः—शौरसेनी में र्य के स्थान में ज्ज आदेश होता है और पूरवर्ती ऊकार को ह्रस्व होने से सुज्ज बनता है। पैशाची में भी यही रूप पाया जाता है।

(१५) पैशाची में स्वरों के मध्यवर्ती क, ग, च, ज, त, द, प और व का लोप नहीं होता। यथा—

लोक < लोक—क का लोप नहीं हुआ।

इंगार < अंगार—ग का लोप नहीं हुआ है।

पतिभास < प्रतिभास—प्र के स्थान पर प और त का लोप नहीं हुआ।

करणीय < करणीय—य ज्यों का त्यों रह गया है।

सपथ < शपथ—प का लोप नहीं हुआ।

(१६) पैशाची में ख, भ, और थ के स्थान पर ह नहीं होता। यथा—

साखा < शाखा—श के स्थान पर स और ख के स्थान पर ह नहीं हुआ।

पतिभास < प्रतिभास—भ के स्थान ह नहीं हुआ।

सपथ < शपथ—प के स्थान में व भी नहीं हुआ और न थ को ह ही हुआ।

(१७) पैशाची में ट के स्थान पर ड और ठ के स्थान पर ढ नहीं होता। यथा—भट < भट—ट के स्थान पर ट ही रह गया है।

मठ < मठ—ठ के स्थान पर ठ ही रह गया है।

(१८) पैशाची में रेफ के स्थान में ल और ह के स्थान में घ नहीं होता। यथा—गरुड < गरुड—र के स्थान में ल नहीं हुआ।

रेफ < रेफ— ,, ,,

दाह < दाह—ह के स्थान में घ नहीं हुआ।

शब्दरूप

(१९) पञ्चमी के एकवचन में आतो और आतु प्रत्यय होते हैं। यथा—

जिनातु, जिनातो।

(२०) पैशाची में तद् और इदम् शब्दों में टा प्रत्यय सहित पुंल्लिङ्ग में नेन और स्त्रीलिंग में नाए आदेश होते हैं। यथा—

नेन कतसिनानेन < तेन कृतस्नानेन अथवा अनेन।

पूजितो च नाए < पूजितश्चानया।

वीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	वीरो	वीरा
बी०	वीरं	वीरे, वीरा
त०	वीरेन, वीरेनं	वीरेहि, वीरेहिं

च०	वीराय, वीरस्स	वीराण; वीराणं
प०	वीराओ, वीराउ	वीराओ, वीराहिंतो; वीरासुन्तो, वीरेहिंतो, वीरेसुन्तो
छ०	वीरस्स	वीराण, वीराणं
स०	वीरंसि, वीरम्मि	वीरेसु, वीरेसुं

इकारान्त इसि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	इसी	इसउ, इसओ, इसिनो
बी०	इसिं	इसिणो, इसी
त०	इसिना	इसीहि, इसीहिं
च०	इसिनो, इसिस्स	इसीन, इसीनं
प०	इसितो, इसिस्स	इसीओ, इसीउ, इसीहिंतो, इसीसुंतो
छ०	इसिनो, इसिस्स	इसीन, इसीनं
स०	इसिंसि	इसीसु, इसीसुं

इसी प्रकार अग्गि, मुनि, बोहि और कवि आदि इकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

भानु शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	भानू	भानुनो, भानवो, भानूओ
बी०	भानुं	भानुनो, भानू
त०	भानुना	भानूहि, भानूहिं
च०	भानुनो, भानुस्स	भानून, भानूनं
पं०	भानुतो, भानुतु	भानुत्तो, भानूओ, भानूउ भानुहिंत्तो, भानुसुंतो
छ०	भानुनो, भानुस्स	भानून, भानूनं
स०	भानुंसि, भानुम्मि	भानूसु, भानूसुं

नपुंसकलिङ्ग के शब्दरूप शौरसेनी के समान होते हैं।

सर्वादि गण के शब्दों के रूप पञ्चमी विभक्ति एकवचन को छोड़, अवशेष रूप शौरसेनी के समान ही होते हैं। पञ्चमी विभक्ति एक वचन में अतो और अतु प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

इम < इदम् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	अयं, इमो	इमे
बी०	इमं, इनं, नं	इमे, इमा, ने, ना

त०	इमेन, इमेनं, नेन	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ
च०	इमस्स, अस्स, से	सिं, इमेसिं, इमान, इमानं
पं०	इमातु, इमातो	इमत्तो, इमाउ, इमाओ इमाहितो, इमासुंतो
छ०	इमस्स, अस्स, से	इमान, इमानं
स०	इमस्सि, इमम्मि, अस्सि, इह	इमेसु, इमेसुं

एअ < एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	एस, एसो	एते
बी०	एतं	एते, एता
त०	एतेन, एतिना	एतेहि, एतेहिं, एतेहिँ
च०	एतस्स	एतेसि, एतान
पं०	एतातो, एतातु	एआउ, एआओ, एआहि, एआहितो, एएहितो
छ०	एतस्स	एतेसि, एतान
स०	एत्थ, अयम्मि, एअस्सि	एतेसु, एएसुं

राया < राजन्

	एकवचन	बहुवचन
प०	राया	रायानो, राइनो
बी०	राइनं रायं	राये, राया, राचिनो, रञ्ञो
त०	राचिना, राचिञ्ञा	राईहि, राईहिं, राईहिँ
च०	राचिनो, रञ्ञो	राईन, राईनं, रायान, रायानं
पं०	रायातो, रायातु, राचिओ, रञ्ञो	राइनो, राईओ, राईहितो, राईसुंतो
छ०	राचिनो, रञ्ञो	राईन, राईनं, रायान; रायानं
स०	राचिनि, रञ्ञि	रायेसु, रायेसुं, राईसु, राईसुं
सं०	रायं, राया, रायो	रायानो, राइनो

क्रियारूप

(२०) पैशाची में शौरसेनी के दि और दे प्रत्ययों के स्थान पर ति और ते प्रत्यय होते हैं।

(२१) पैशाची में भविष्यत्काल में स्सि प्रत्यय के स्थान पर एय्य प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—हुवेय < भविष्यति।

(२२) पैशाची में भाव और कर्म में ईअ तथा इज्ज के स्थान में इय्य प्रत्यय होता है।

हस धातु—वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसति, हसेते	हसन्ति, हसंते, हसिरे, हसेइरे
म० पु०	हससि, हससे	हसित्था, हसध, हसद
उ० पु०	हसमि, हसेमि	हसमो, हससु, हसम

कृदन्त

क्त्वा प्रत्यय के स्थान में तून, त्थून और द्धून प्रत्यय होते हैं। यथा—

पठितून < पठित्वा—पठ धातु में तून प्रत्यय जोड़ने से।

गन्तून < गत्वा—गम् धातु में तून प्रत्यय जोड़ने से।

नत्थून < नष्ट्वा—नश् धातु में त्थून प्रत्यय जोड़ने से।

तत्थून < दृष्ट्वा—दश् धातु में त्थून प्रत्यय जोड़ने से।

नद्धून < नष्ट्वा—नश् धातु में द्धून प्रत्यय जोड़ने से।

तद्धून < दृष्ट्वा—दश् धातु में द्धून प्रत्यय जोड़ने से।

पैशाची के कुछ शब्द

पैशाची	संस्कृत	ध्वनिपरिवर्तन
मेखो	मेघः	घ के स्थान पर ख हुआ है।
गकनं	गगनम्	ग के स्थान पर क।
राचा	राजा	ज के स्थान पर च।
णिच्छरो	निर्झरः	र्झ के स्थान पर च्छ।
वटिसं	वडिशम्	ड के स्थान पर ट।
दसवतनो	दशवदनः	द के स्थान पर त।
माधवो	माधवः	ध के स्थान पर थ।
गोविन्तो	गोविन्दः	द के स्थान पर त।
केसवो	केशवः	श के स्थान पर स।
सरफसं	सरभसं	भ के स्थान पर फ।
सल्फो	शलभः	,, ,,
संगामो	संग्रामः	ग्र के स्थान पर ग।
पिव	इव	इव के स्थान पर पिव आदेश।
तलुनी	तरुणी	र के स्थान पर ल।
कसटं	कष्टम्	स्वरभक्ति के नियम से ष्ट का पृथक्करण।
सनानं	स्नानम्	,, स्न का ,,
सनेहो	स्नेहः	,, ,, ,,
भारिया	भार्या	,, र्या का ,,

विञ्ञातो	विज्ञातः	ज्ञ के स्थान पर पालि के समान ञ्ञ।
सव्वञ्ञो	सर्वज्ञ.	,, ,,
कञ्ञा	कन्या	न्य के स्थान पर ञ्ञ।
कच्चं	कार्यम्	र्य के स्थान पर च्च।
दातूनं	दत्त्वा	त्वा के स्थान पर तून।
घेत्तूनं	गृहीत्वा	,, ,,
हितअकं	हृदयकम्	हृदयक के स्थान पर हितअकं आदेश।

चूलिका पैशाची

यद्यपि वररुचि आदि वैयाकरणों ने पैशाची के लक्षणों के अन्तर्गत ही चूलिका पैशाची का अनुशासन बताया है; पर हेमचन्द्र और षड्भाषाचन्द्रिका के कर्त्ता पं० लक्ष्मीधर ने इस भाषा का भी स्वतन्त्र अस्तित्व मानकर इसकी विशेषताओं का निर्देश किया है। चूलिका पैशाची के कुछ उदाहरण हेमचन्द्र के कुमारपाल और जयसिंह सूरि के हम्मीरमर्दन नामक नाटक तथा षड्भाषा स्तोत्रों में पाये जाते हैं। यह सत्य है कि चूलिका पैशाची पैशाची का ही एक भेद है। इसमें पैशाची की अपेक्षा अधिक विशेषताएँ दृष्टिगोचर नहीं होतीं। ध्वनि परिवर्तन सम्बन्धी निम्न विशेषताएँ हैं।

(१) चूलिका पैशाची में र के स्थान में विकल्प से ल होता है। यथा—

गोली < गोरी—र के स्थान पर ल।

चलन < चरण—र के स्थान पर ल और ण को न।

लुद्द < रुद्र—र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ का लोप और द को द्वित्व।

लाचा < राजा—र को ल और ज को च।

लामो < रामो—र के स्थान पर ल।

हलं < हरं—र के स्थान पर ल।

(२) चूलिका पैशाची में वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान पर प्रथम और द्वितीय अक्षर होते हैं। यथा—

मक्कनो < मार्गणः—संयुक्त रेफ का लोप और ग के स्थान में क तथा क को द्वित्व और ण को न।

नको < नगः—ग के स्थान पर क।

मेखो < मेघः—घ के स्थान पर ख।

वखो < व्याघ्रः—संयुक्त य का लोप तथा संयुक्त रेफ का लोप और घ को ख।

चीमूतो < जीमूतः—ज के स्थान में च।

छलो < झरः—झ के स्थान पर छ और रेफ को ल।

तटाकं < तडाकं—ड के स्थान में ट।

टमलुको < डमरुकः—ड को ट और रु के स्थान में लु।

काढं < गाढम्—ग के स्थान में क।

ठक्का < ढक्का—ढ के स्थान में ठ।

मतनो < मदनः—द के स्थान में त।

तामोतलो < दामोदरः—द के स्थान में त और रेफ को ल।

मथुलो < मधुरो—ध के स्थान थ और रेफ को ल।

थाला < धारा—ध के स्थान में थ और रेफ को ल।

पाटपो < बाडवः—ब के स्थान में प और ड को ट।

पालो < बालः—ब के स्थान पर प।

लफसो < रभसः—र के स्थान पर ल और भ के स्थान पर फ।

लंफा < रंभा— „ „

फवो < भवः—भ के स्थान पर फ।

फकवती < भगवती—भ के स्थान पर फ और ग को क।

पनमथ < प्रणमत—ण के स्थान में न और त को थ।

नखतप्पनेसु < नखदर्पणेषु—दर्प के स्थान पर तप्प और ण को न।

चलनग्ग < चरणाग्र—र को ल, ण को न और संयुक्त रेफ का लोप और ग को द्वित्व।

एकातस < एकादश—द को त और श को स।

तनुथलं < तनुधरं—ध के स्थान पर थ और र को ल।

पातुक्खेवेन < पादोत्क्षेपेण—द को त, क्ष के स्थान पर क्ख।

वसुथा < वसुधा—ध को थ।

नमथ < नमत—त को थ।

(३) चूलिका पैशाची में आदि अक्षरों में उक्त नियम लागू नहीं होता। यथा—

गती < गतिः—ग के स्थान पर हेमचन्द्र के मत से क नहीं हुआ।

धम्मो < धर्मः—ध के स्थान पर थ नहीं हुआ।

जीमूतो < जीमूतः—ज के स्थान पर च नहीं हुआ।

डमरुको < डमरुकः—ड के स्थान पर ट नहीं हुआ।

नियोजितं < नियोजितम्—युज धातु में भी उक्त नियम नहीं लगा।

घनो < घनः—घ के स्थान पर ख नहीं हुआ।

जनो < जनः—ज के स्थान पर च नहीं हुआ।

झल्लरी < झल्लरी—झ के स्थान पर छ नहीं हुआ।

(४) शब्दरूप और धातुरूप चूलिका पैशाची में पैशाची के समान ही होते हैं, परन्तु वर्णपरिवर्तन सम्बन्धी नियमों का प्रयोग कर लेना आवश्यक है। यथा—

फोति < भवति—भ को फ हुआ है।

फवते < भवते— „

फवति < भवति— „

फोइय्य < भोइय्य— „

ग्यारहवाँ अध्याय

अपभ्रंश

प्राकृत वैयाकरणों ने अपभ्रंश को प्राकृत का एक भेद माना है। काव्यालंकार की टीका में नमिसाधु ने "प्राकृतमेवापभ्रंशः" (२।१२) अर्थात् शौरसेनी, मागधी आदि की तरह अपभ्रंश को प्राकृत का एक भेद बताया है। महर्षि पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में लिखा है "भूयांसोऽपशब्दाः अल्पीयांसः शब्दा इति। एकैकस्य हि शब्दस्य बहवोऽपभ्रंशाः। तद्यथा गौरित्यस्य शब्दस्य गावी गोणी गोता गोपोतलिकेत्यादयो बहवोऽपभ्रंशाः।"[1] अर्थात् संस्कृत व्याकरण में असिद्ध शब्दों को अपभ्रंश बताया है। दण्डी ने अपने काव्यादर्श में प्राकृत और अपभ्रंश का अलग-अलग निर्देश किया है। पतञ्जलि के भाष्यवाले उपर्युक्त कथन से भी स्पष्ट है कि संस्कृत से भिन्न सभी प्राकृत भाषाएँ अपभ्रंश के अन्तर्गत हैं। उनके गावी, गोणी, गोता और गोपोतलिका आदि उदाहरण उक्त अर्थ में ही चरितार्थ हैं।

डा० हार्नलि का मत है कि आर्यों की बोलचाल की भाषाएँ भारत के आदिम निवासी अनार्य लोगों की भिन्न-भिन्न भाषाओं के प्रभाव से जिन रूपान्तरों को प्राप्त हुई थीं, वे ही भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषाएँ हैं और ये महाराष्ट्री की अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं। सर जार्ज ग्रियर्सन प्रभृति विद्वान् डा० हार्नलि के मत को नहीं मानते। इनका मत है कि साहित्यिक प्राकृतों को व्याकरण के नियमों में आबद्ध हो जाने पर जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई, वे भाषाएँ अपभ्रंश कहलायीं। अपभ्रंश भाषा का साहित्य में प्रयोग ईस्वी सन् की पाँचवी शताब्दी के पहले ही होने लगा था। अपभ्रंश भाषा के बहुत भेद हैं। प्राकृत चन्द्रिका में इसके सत्ताईस भेद बतलाये गये हैं। व्राचड, लाटी, वैदर्भी, उपनागर, नागर, वार्बर, अवन्ती, पञ्चाली, टाक्क, मालवी, कैकेयी, गौडी, कौन्तली औढ्री, पाश्चात्या, पाण्ड्या, कौन्तली, सैंहली, कालिङ्गी, प्राच्या, कार्णाटी, काञ्ची, द्राविडी, गौर्जरी, आभीरी, मध्यदेशीया एवं वैतालिकी इन २७ भेदों का उल्लेख मार्कण्डेय ने भी अपने प्राकृतसर्वस्व में किया है।[2] प्रधान रूप से अपभ्रंश को नागर, उपनागर और व्राचड इन तीन भेदों में ही विभक्त किया गया है।

---

१. पातञ्जल-महाभाष्यम् (प्रदीपोद्द्योतसमन्वितम्) पृ० १७; सन् १९३५।

२. टाक्कं टक्कभाषानागरोपनागरादिभ्योऽवधारणीयम्। तुन्वहुला मालवी। वाडोबहुला पाञ्चाली। उल्लप्राया वैदर्भी। संबोधनाढ्या लाटी। ईकारोकारबहुला औढ्री। सवीप्सा कैकेयी। समासाढ्या गौडी। डकारबहुला कौन्तली। एकारिणी च पाण्ड्या। युक्ताढ्या

आचार्य हेमचन्द्र ने सामान्य अपभ्रंश के नाम से अनुशासनसम्बन्धी नियम लिखे हैं। अतः इस प्रकरण में भी सामान्य अपभ्रंश के अनुशासन सम्बन्धी नियम दिये जाते हैं।

(१) अपभ्रंश में अ, इ, उ, एँ और ओँ ये पाँच ह्रस्व स्वर और आ, ई, ऊ, ए और ओ ये पाँच दीर्घ स्वर माने गये हैं। ऋ, ऌ, ऐ और औ का अभाव है।

(२) ऋ स्वर के स्थान पर अपभ्रंश में अ, इ, उ, आ, ए, और रि आदेश हो जाता है। कुछ स्थानों में ऋ ज्यों का त्यों भी पाया जाता है। यथा—

ऋ = अ	तणु<तृण, पट्ठि<पृष्ठ, कच्चु<कृत्य
ऋ = आ	काच्चु<कृत्य;
ऋ = इ	तिणु<तृण, पिट्ठि<पृष्ठ।
ऋ = उ	पुट्ठि<पृष्ठ
ऋ = ए	गेह<गृह
ऋ = रि, री	रिण<ऋण; रिसहो<ऋषभ; रीछ<ऋक्ष

(३) ऌ के स्थान पर अपभ्रंश में इ और इलि आदेश होता है। यथा—
किन्नो, किलिन्नो<क्लृप्त।

(४) ऐ के स्थान पर अपभ्रंश में एँ, ए और अइ तथा औ के स्थान पर ओ, ओँ और अउ आदेश होते हैं। यथा—

ऐ = एँ	अवरेँक<अपरैक
ऐ = ए	देव<दैव
ऐ = अइ	दइव<दैव
औ = ओँ	गोरी<गौरी
औ = ओ	जोँव्वण<यौवन
औ = अउ	पउर<पौर, गउरी<गौरी

(५) अपभ्रंश में पद के अन्त में स्थित उं, हुं, हिं और हं का भी लघु—ह्रस्व उच्चारण होता है। यथा—

(क) अन्नु जु तुच्छउं तें घनहे।
(ख) दइवु घडावइ वणि तरहुं।
(ग) तणहुँ तइज्जी भंगि नवि।

सैंहली। हिवुक्ता कालिङ्गी। प्राच्या तद्देशीयभाषाढ्या। च (भ) हादिबहुला पाञ्चोरी। वर्णविपर्ययात् कार्णाटी। मध्यदेशीया तद्देशीयाढ्या। संस्कृताढ्या च गौर्जरी। चकारात् पूर्वोक्तढक्कभाषाग्रहणम्। रव (ल) हमो व्यत्ययेन पाश्चात्या। रेफव्यत्ययेन द्राविडी। टकारबहुला वैतालिकी। एओबहुला काञ्ची।

(६) अपभ्रंश में एक स्वर के स्थान पर प्रायः दूसरा स्वर हो जाता है[1]। यथा—

अ = इ	किविण < कृपण।
अ = उ	मुणइ < मनुते।
अ = ए	वेल्लि < वल्ली।
आ = अ	सीय < सीता।
आ = उ	उल्ल < आर्द्र।
आ = ए	देइ < दा, लेइ < ला, मेत्त < मात्र।
इ = अ	पडिवत्त < प्रतिपत्ति।
इ = ए	बेल्ल < बिल्व, एत्थु < इत्थु।
ई = अ	हरडइ < हरीतिकी।
ई = आ	कम्हार < काश्मीर।
ई = ऊ	विहूण < विहीन।
ई = ए	एरिस < ईदृश। वेण < वीणा।
ई = ऍ	खेँड्डअ < क्रीडा।
उ = अ	मउड < मुकुट; बाह < बाहु; सउमार < सुकुमार।
उ = इ	पुरिस < पुरुष।
उ = ओँ	मोँग्गर < मुद्गर, पोँत्थय < पुस्तक, कोँन्त < कुन्त।
ऊ = ए	नेउर < नूपुर।
ऊ = ओँ	मोँल्ल < मूल्य।
ऊ = ओ	थोर < स्थूल; तंबोल < ताम्बूल।
ए = इ, ई, ए	लिह, लीह, लेह < लेखा।

(७) अपभ्रंश में स्वादि विभक्तियों के आने पर प्रायः कभी तो प्रतिपादिक के अन्त्य स्वर का दीर्घ और कभी ह्रस्व हो जाता है[2]। यथा—

ढोला सामला < विट श्यामल —विट में रहनेवाले अ को ढोला में दीर्घ कर दिया है। सामला में भी ल को दीर्घ हुआ है।

धण < धन्या—दीर्घ को ह्रस्व हुआ है।

सुवण्णरेह < सुवर्णरेखा— दीर्घ को ह्रस्व हुआ है।

विट्टीए < पुत्रि—स्त्रीलिङ्ग में ह्रस्व का दीर्घ हुआ है।

पइट्ठि < प्रविष्टा—स्त्रीलिंग में दीर्घ का ह्रस्व हुआ है।

निसिआ खग्ग < निशिता खड्गा ,, ,,

---

१. स्वराणं स्वराः प्रायोऽपभ्रंशे ८।४।३२९ हे०।

२. स्यादौ दीर्घ-ह्रस्वौ ८।४।३३०।

(८) अनुस्वारयुक्त ह्रस्व स्वर के आगे र श ष स और ह हो तो ह्रस्व को दीर्घ और अनुस्वार का लोप हो जाता है। यथा—

वीस < विंशति; सीह < सिंह।

(९) अपभ्रंश में छन्द के कारण ह्रस्व को दीर्घ और दीर्घ को ह्रस्व हो जाता है। कई स्थानों पर ह्रस्व को दीर्घ न करके अनुस्वार कर देते हैं।

दंसण < दर्शन।
फंस < स्पर्श।
अंसु < अश्रु।

व्यञ्जनविकार

सामान्यतः शब्द के आदि व्यञ्जन में विकार नहीं होता। पर ऐसे भी कुछ अपवाद हैं जिनमें आदि व्यञ्जन में परिवर्तन पाया जाता है। यथा—

दिट्ठि < धृति—यहाँ शब्द के आदि ध के स्थान पर द हो गया है।

धुअ या धुआ < दुहिता—शब्द के आदि व्यञ्जन ध के स्थान पर द हुआ है।

यादि < जाति—शब्द के आदि में ज के स्थान पर अपभ्रंश में य होता है।

(१०) अपभ्रंश में पद के आदि में वर्तमान किन्तु स्वर से पर में आनेवाले और असंयुक्त क, ख, त, थ, प और फ वर्णों के स्थान में प्रायः ग, घ, द, ध, ब और भ होते हैं[1]। यथा—

विभमाणुसविच्छोहगरु < प्रियमनुष्यविक्षोभकरम्—क के स्थान पर ग।
सुघिँ चिन्तिज्जइ माणु < सुखं चिन्त्यते मानः—ख के स्थान पर घ।
कधिदु < कथितम्—थ के स्थान पर ध और त के स्थान पर द।
सबधु < शपथम्—प के स्थान पर ब और थ के स्थान पर ध।
सभलउ < सफलम्—फ के स्थान पर भ।

(११) कुछ शब्दों में अपभ्रंश में दो स्वरों के बीच में स्थित ख, घ, थ, ध, फ और भ को ह होता है। यथा—

साहा < शाखा—तालव्य श के स्थान पर स और ख को ह।
पहुल < पृथुल—पकारोत्तर ऋ को अकार और थ के स्थान पर ह।
अहर < अधर—ध के स्थान पर ह।
मुत्ताहल < मुक्ताफल—संयुक्त क् का लोप, त् को द्वित्व और फ को ह।

(१२) अपभ्रंश में प्राकृत के समान ट के स्थान पर ड, ठ के स्थान पर ढ और प के स्थान पर व होता है। यथा—

---

१. अनादौ स्वरादसंयुक्तानां क-ख-त-थ-प-फां ग-घ-द-ध-ब-भाः ८।४।३९६।

तड<तट, कवड<कपट, सुहड<सुभट—ट के स्थान में ड हुआ है।

मढ<मठ, वीढ<पीठ—ठ के स्थान पर ढ हुआ है।

दीव<द्वीप, पाव<पाप—प के स्थान पर व हुआ है।

(१३) अपभ्रंश में कुछशब्दों में अल्पप्राण वर्णों के स्थान पर महाप्राण वर्ण हो जाते हैं।

खेल्लइ<क्रीड, खप्पर<कर्पर, नोक्खि<नवक्की—अल्पप्राण क के स्थान पर महाप्राण ख हुआ है।

भारथ<भारत, वसथि<वसति—अल्पप्राण त के स्थान पर थ हुआ है।

फंसइ<स्पृशति, फासु<परशु—अल्पप्राण प के स्थान पर महाप्राण फ हुआ है।

(१४) अपभ्रंश में दन्त्य व्यञ्जनों में मूर्धन्य व्यञ्जन हो जाते हैं। यथा—

पडिउ<पतित—त दन्त्य वर्ण के स्थान पर मूर्धन्य ड हुआ है।

पडाय<पताका— ,, ,, और क के स्थान पर य।

गंठिपाल<ग्रन्थिपाल—थ के स्थान पर ठ हुआ है।

डहइ<दहति—दन्त्य द के स्थान पर मूर्धन्य ड हुआ है।

खुडिय<क्षुधित—दन्त्य ध के स्थान पर मूर्धन्य ड हुआ है।

डोलइ<दोलायते— ,, द के ,, ,,

डुक्कर<दुष्कर ,, ,, ,,

वियड्ढ<विदग्ध—दन्त्य ध के स्थान पर मूर्धन्य ढ हुआ है।

(१५) अपभ्रंश में पद के आदि में अवर्तमान असंयुक्त मकार के स्थान में विकल्प से अनुनासिक वकार होता है[1]। यथा—

कवँलु<कमलम्—म के स्थान में विकल्प से सानुनासिक वँ हुआ है।

भवँरु<भ्रमरः— ,, ,,

जिवँ<जिम— ,, ,,

तिवँ<तिम— ,, ,,

(१६) अपभ्रंश में संयोग के बाद में आनेवाले रेफ का विकल्प से लुक् होता है[2]। यथा—

जइ केवँइ पावीसु पिउ<यदि कथञ्चित् प्राप्स्यामि प्रियम्—संयुक्त रेफ का लोप हुआ है।

(१७) अपभ्रंश में कहीं-कहीं सर्वथा अविद्यमान रेफ भी होता देखा जाता है[3]। यथा—

---

१. मोऽनुनासिको वो वा ८।४।३९७। २. वाधो रो लुक् ८।४।३९८।

३. अभूतोऽपि क्वचित् ८।४।३९९।

प्रिय < पउ—र का लोप और य को उ।

पेम्म < प्रेम— " "

सर < स्वर—व का लोप।

दीव < द्वीप— " और प को व।

(२२) अपभ्रंश में प्राकृत के समान त्य के स्थान पर च, थ्य के स्थान पर च्छ और द्य के स्थान पर ज्ज आदेश होता है। यथा—

अच्चंत < अत्यन्त—त्य के स्थान पर च्च।

मिच्छत्त < मिथ्यात्व—थ्य के स्थान पर च्छ।

अज्जु < अद्य—द्य के स्थान पर ज्ज।

(२३) अपभ्रंश में क्ष के स्थान पर ख, छ, झ, घ, क्ख और ह आदेश होते हैं। यथा—

खार < क्षार; खवण < क्षपण—क्ष के स्थान पर ख।

छण < क्षण—प्राकृत के समान क्ष के स्थान पर छ।

झिज्जइ < क्षीयते—क्ष के स्थान पर झ आदेश।

कडक्ख < कटाक्ष—ट को ड और क्ष को क्ख आदेश हुआ है।

निहित्त < निक्षिप्त—क्ष के स्थान पर ह और संयुक्त प का लोप और त को द्वित्व।

अपभ्रंश में वर्णागम, वर्णविपर्यय (Metathesis), वर्णलोप और स्वरभक्ति आदि भी उपलब्ध हैं।

(२४) वर्णागम में स्वर या व्यञ्जन का आदि, मध्य और अन्त्य स्थान में आगम होता है। यथा—

इत्थी < स्त्री—स्त्री का त्थी हो जाता है और आदि में इ स्वर का आगम होजाने से इत्थी पद बनता है।

वासु < व्यास—मध्य में र व्यञ्जन का आगम हुआ है।

मध्य में स्वर के आगम को स्वरभक्ति (Anaptyxis) कहा जाता है। यथा—

समासण < श्मशान—पृथक्करण होकर मध्य में आकार का आगम हुआ है।

सलहइ < श्लाघते—पृथक्करण होकर अ स्वर का मध्य में आगम हुआ है।

दीहर < दीर्घ— " " "

(२५) स्वर भक्ति का एक भेद अपनिहिती (Epenthesis) है, जिस शब्द के अन्त में इ, उ, ए और ओ में से कोई एक हो तो बीच में इ या उ का आगम हो जाता है तथा तृतीय स्वर भी परिवर्तित हो जाता है। यथा—

वेल्लि < वल्लि—वल्ल + इ—इस स्थिति में ल्ल के पहले इ का आगम होने पर व + इ + ल्ल + इ = वेल्लि—पूर्ववर्ती इ का अ के साथ गुण हुआ है।

अपभ्रंश में वर्णविपर्यय (Metathesis) के भी उदाहरण पाये जाते हैं। यथा—

हर < गृह—वर्णविपर्यय।

रहस < हर्ष— „

वर्णविकार में समीकरण (Assamilation) और विषयी (Disassamilation) के भी उदाहरण मिलते हैं। यथा—

जुत्त < युक्त—य के स्थान पर ज और त के संयोग से क ध्वनि भी त में परिवर्तित है।

रत्त < रक्त—त के संयोग से क् ध्वनि त् में परिवर्तित है।

सद्द < शब्द—द के संयोग से ब् ध्वनि द में परिवर्तित है।

अग्गि < अग्नि—ग के संयोग से न ध्वनि ग में परिवर्तित।

सवत्ति < सपत्नी—प को व और त के संयोग से न ध्वनि त में परिवर्तित।

वर्णलोप में भी आदि, मध्य और अन्त्य वर्ण का लोप होताहै। यथा—

वि < अपि—आदि स्वर का लोप (Aphaerasis)

रण्ण < अरण्य— „ „

पोप्फल < पूगफल—मध्य वर्ण का लोप (Syncope)

भविसत्तकहा < भविष्यदत्तकथा—यहाँ अक्षर लोप (Haplology) है।

शब्दरूपावलि

(२६) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के एकवचन में अकारान्त शब्दों के अन्तिम अ को उ होता है।[1] यथा—

दहमुहु < दशमुखः —स को ह और ख को ह, प्रथमा एकवचन में उ विभक्तिचिह्न।

तोसिअ-संकरु < तोषित-शंकर: —प्रथमा एकवचन में उ विभक्तिचिह्न।

चउमुहु < चतुर्मुखम्—द्वितीया के एकवचन में उ विभक्तिचिह्न।

छमुहु < षण्मुखम्—षट् के स्थान पर छ और द्वितीया के एकवचन में उ विभक्तिचिह्न।

जिणु < जिनः —प्रथमा के एकवचन में उ विभक्तिचिह्न।

(२७) अपभ्रंश में पुंल्लिङ्ग में वर्तमान अकारान्त शब्दों के प्रथमा के एकवचन में विकल्प से अन्तिम अ के स्थान में ओ होता है।[2] यथा—

जो < यः —य के स्थान पर ज और विभक्ति प्रत्यय ओ।

सो < सः —विभक्ति प्रत्यय ओ जोड़ा गया है।

---

१. स्यमोरस्योत् ८।४।३३१। २. सौ पुंस्योद्वा ८।४।३३२।

(२८) अपभ्रंश में तृतीया विभक्ति के एकवचन में अन्तिम अ के स्थान पर ए हो जाता है।[1] यथा—

पवसन्ते < प्रवसता—तृतीया के एकवचन में अ को ए हुआ है।

नेहे < नहेन— ,, ,,

अपभ्रंश में तृतीया एकवचन में ण और अनुस्वार दोनों होते हैं। अतः तृतीया एकवचन में तीन रूप बनते हैं। यथा—

देवे, देवें, देवेण < देवेन।

(२९) अपभ्रंश में शब्द के अन्त्य अकार और ङि—सप्तमी एकवचन के स्थान में इकार और एकार होते हैं।[2] यथा—

तलि घल्लइ, तले घल्लइ < तले क्षिपति।

(३०) अपभ्रंश में तृतीया विभक्ति के बहुवचन में अन्त्य अकार के स्थान में विकल्प से एकार आदेश होता है और हिं प्रत्यय जुड़ जाता है।[3] यथा—

लक्खेहिं, गुणहिं < लक्षैः, गुणैः।

(३१) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों से पञ्चमी विभक्ति के एकवचन में हे और हु प्रत्यय जोड़े जाते हैं।[4] यथा—

वच्छहे गृण्हइ < वृक्षात् गृह्णाति—हे प्रत्यय जुड़ने से।

वच्छहु गृण्हइ < वृक्षात् गृह्णाति—हु प्रत्यय जुड़ने से।

(३२) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों में पञ्चमी विभक्ति के बहुवचन में हुं प्रत्यय जोड़ा जाता है।[5]

यथा—गिरिसिंगहुं < गिरिशृंगेभ्यः।

(३३) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों से, पर में आनेवाले षष्ठी के बहुवचन में सु, हो और स्सु ये तीन प्रत्यय होते हैं।[6] यथा—

तसु < तस्य— सु प्रत्यय जोड़ा गया है।

दुल्लहहो < दुर्लभस्य—हो ,, ,,

सुअणस्सु < सुजनस्य—स्सु प्रत्यय जोड़ा जाता है।

(३४) अपभ्रंश में अकारान्त शब्दों से पर में आनेवाली षष्ठी विभक्ति के बहुवचन में हं प्रत्यय जोड़ा जाता है।[7] यथा—

---

१. एहि ८।४।३३३। २. ङिनेच्च ८।४।३३४।
३. भिस्येद्वा ८।४।३३५। ४. ङसेर्हेहू ८।४।३३६।
५. भ्यसो हुं ८।४।३३७। ६. ङसः सु-हो-स्सवः ८।४।३३८।
७. आमो हं ८।४।३३९।

तणहं < तृणानाम्—ऋकार का अ होकर तण शब्द बना है, इसमें षष्ठी विभक्ति के बहुवचन में हं प्रत्यय जोड़ दिया गया है।

(३५) अपभ्रंश में इकारान्त और उकारान्त शब्दों से पर में आनेवाले आम् प्रत्यय—षष्ठी के बहुवचन में हुं और हं दोनों आदेश होते हैं।[1] यथा—

सउणिहं < शकुनीनाम्—षष्ठी विभक्ति के बहुवचन में हं प्रत्यय होता है।

सप्तमी विभक्ति बहुवचन में भी हं प्रत्यय होता है। यथा—

दुहुं < द्वयोः—

(३६) अपभ्रंश में इकारान्त और उकारान्त शब्दों से पञ्चमी के एकवचन, पञ्चमी बहुवचन और सप्तमी के एकवचन में क्रमशः हे, हुं और हि आदेश होते हैं।[2] यथा—

गिरिहे < गिरेः गिरि + ङे = गिरि + हे = गिरिहे।

तरुहे < तरोः —तरु + ङे = तरु + हे = तरुहे।

तरुहुं < तरुभ्यः —तरु + भ्यस् = तरु + हुं = तरुहुं।

कलिहि < कलौ—कलि + ङि = कलि + हि = कलिहि।

(३७) अपभ्रंश में इकारान्त और उकारान्त शब्दों से तृतीया विभक्ति के एकवचन में एं, ण और अनुस्वार आदेश होते हैं।[3] यथा—

अग्गिएं < अग्निना—अग्गि + एं = अग्गिएं।

अग्गिणं < अग्निना—अग्गि + णं = अग्गिणं।

अग्गिं < अग्निना—अग्गि + म् = अग्गिं।

(३८) अपभ्रंश में सु, अम्, जस् और शस् विभक्तियों का लोप हो जाता है[4]। यथा—

एइ ति घोडा < एते ते घोटकाः—जस् का लोप।

वालइ वग्ग < वालयति वल्गाम्—अम् का लोप।

अपभ्रंश में षष्ठी विभक्ति का प्रायः लुक् हो जाता है।[5] यथा—

गय कुम्भइं दारन्तु < गजानां कुम्भान् दारयन्तम्।

(३९) अपभ्रंश में यदि किसी शब्द के सम्बोधन में जस् विभक्ति आयी हो तो उसके स्थान में हो आदेश होता है[6]। यथा—

तरुणहो, तरुणिहो < हे तरुणाः, हे तरुण्यः —जस् के स्थान में हो आदेश हुआ है।

---

१. हुं चेदुद्भ्याम् ८।४।३४०। २. ङसि-भ्यस्-ङीनां हे-हुं-हयः ८।४।३४१।
३. एं चेदुतः ८।४।३४३। ४. स्यम्जस्शसां लुक् ८।४।३४४।
५. षष्ठ्याः ८।४।३४५। ६. आमन्त्र्ये जसो होः ८।४।३४६।

अपभ्रंश में भिस् और सुप् के स्थान में हिं आदेश होता है[१]। यथा—

गुणहिं < गुणैः, मग्गेहिं तिहिं < मार्गेषु त्रिषु ।

(४०) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले जस् और शस् के स्थान में उ और ओ आदेश होते हैं[२]। यथा—

अंगुलिउ < अङ्गुल्यः—यहाँ जस के स्थान में उ हुआ है ।

सव्वंगाउ < सर्वाङ्गी—यहाँ शस् के स्थान में उ हुआ है ।

विलासिणीओ < विलासिनीः—शस् के स्थान पर ओ हुआ है ।

(४१) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शब्द से पर में आनेवाले ङस् (षष्ठी एकवचन) और ङसि (पञ्चमी एकवचन) के स्थान में हे आदेश होता है[३]। यथा—

मज्झहे < मध्यायाः—पञ्चमी के एकवचन में हे प्रत्यय आदेश हुआ है ।

तहे < तस्याः—षष्ठी के एकवचन में हे प्रत्यय आदेश हुआ है ।

धणहे < धन्यायाः—पञ्चमी के एकवचन में हे आदेश ।

बालहे < बालायाः— „ „

(४२) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में भ्यस् (पञ्चमी बहुवचन) में और आम् (षष्ठी बहुवचन) के स्थान में हु आदेश होता है[४]। यथा—

वयंसिअहु < वयस्याभ्यः; अथवा वयस्यानाम्—हु प्रत्यय हुआ है ।

अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में सप्तमी एकवचन में हि आदेश होता है[५]। यथा—महिहि < मह्याम् ।

(४३) अपभ्रंश में नपुंसकलिंग में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में इं आदेश होता है[६]। यथा—

कमलइं < कमलानि ।

(४४) अपभ्रंश में नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान कान्त—जिसके अन्त में अ सहित क हो, शब्दों से पर में आनेवाले प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के एकवचन में उं आदेश होता है[७]। यथा—

तुच्छउं < तुच्छकम्; भग्गउं < भग्नकम् ।

(४५) अपभ्रंश में अकारान्त सर्वादि शब्दों को पञ्चमी के एकवचन में हां आदेश होता है[८]। यथा—

---

१ भिस्सुपोर्हि ८।४।३४७ ।
२ स्त्रियां जस्-शसोरुदोत् ८।४।३४८ ।
३ ङस्-ङस्योर्हे ८।४।३५० ।
४ भ्यसामोर्हुः ८।४।३५१ ।
५ ङेर्हि ८।४।३५२ ।
६ क्लीबे जस्-शसोरिं ८।४।३५३ ।
७ कान्तस्यात उं स्यमोः ८।४।३५४ ।
८ सर्वादेर्ङसेर्हां ८।४।३५५ ।

जहां होन्तउ आगदो, तहां होन्तउ आगदो <यस्मात् भवान् आगतः, तस्मात् भवान् आगतः।

कहां <कस्मात्।

(४६) अपभ्रंश में अकारान्त क (किम्) शब्द से पञ्चमी के एकवचन में इहे आदेश होता है और क के अकार का लोप होता है[1]। यथा—

किहे <कस्मात्; कहां <कस्मात्।

(४७) अपभ्रंश में अकारान्त सर्वादि शब्दों से सप्तमी के एकवचन में ङि के स्थान में हिं आदेश होता है[2]। यथा—

जहिं <यस्मिन्, तहिं <तस्मिन्, एकहिं <एकस्मिन्।

(४८) अपभ्रंशमें य, त, क (यद्, तद्, किम्) शब्दों को षष्ठी के एकवचन में आसु आदेश होता है[3]। यथा—

जासु <यस्य, तासु <तस्य, कासु <कस्य।

(४६) अपभ्रंश में स्त्रीलिङ्ग में या, ता, का (यद्, तद्, किम्) से षष्ठी के एकवचन में अहे आदेश और आ का लोप भी होता है[4]। यथा—

जहे केरउ <यस्याः कृते; तहे केरउ <तस्याः कृते; कहे करउ <कस्याः कृते।

(५०) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में यद् और तद् के स्थान में क्रमशः ध्रुं और त्रं विकल्प से आदेश होते हैं[5]। यथा—

प्रंगणि चिट्ठदि नाहु ध्रुं त्रं रणि करदि न भ्रंति—प्राङ्गणे तिष्ठति नाथः यद् यद् रणे करोति न भ्रान्तिम्।

(५१) अपभ्रंश में नपुंसकलिङ्ग में इदं शब्द के स्थान में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में इमु आदेश होता है[6]। यथा

इमु कुलु तुह तणउँ; इमु कुलु देक्खु <इदं कुलं।

(५२) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में एतद् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में एह, पुंल्लिङ्ग में एहो और नपुंसकलिङ्ग में एहु रूप होते हैं[7]। यथा—

एह कुमारी <एषा कुमारी, एहो नरु <एष नरः; एहु मणोरह-ठाणु <एतन्मनोरथस्थानम्।

---

१ किमो डिहे वा ८।४।३५६।
२ डेहिं ८।४।३५७।
३ यत्तत्किम्भ्यो ङसो डासुर्न वा ८।४।३५८।
४ स्त्रियां डहे ८।४।३५९।
५ यत्तदः स्यमोर्ध्रुं त्रं ८।४।३६०।
६ इदम इमुः क्लीबे ८।४।३६१।
७ एतदः स्त्री-पुं-क्लीबे एह एहो एहु ८।४।३६२।

(६३) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में अदस् शब्द के स्थान में ओइ आदेश होता है। यथा—

ओइ < अमूनि।

(६४) अपभ्रंश में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में एतद् शब्द के स्थान पर एइ आदेश होता है। यथा—

एइ पेच्छ < एतान् प्रेक्षस्व।

(६५) अपभ्रंश में इदम् शब्द के स्थान पर आय आदेश होता है। यथा—

आयइं < इमानि; आयेण < एतेन, आयहो < अस्य।

अपभ्रंश में सर्व शब्द के स्थान में विकल्प से साह आदेश होता है। यथा—

साहु वि लोउ, सव्वु वि लोउ < सर्वोऽपि लोकः।

(६६) अपभ्रंश में किम् शब्द के स्थान में विकल्प से काइं और कवण आदेश होते हैं। यथा—

काइं न दूरे देक्खइ < किं न दूरे पश्यति।

ताहँ पराई कवण घृण < < तयोः परकीया का घृणा।

किं गज्जहि खल मेह < किं गर्जसि खल मेघः।

पुल्लिङ्ग अकारान्त शब्दों में जोड़े जानेवाले विभक्ति प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प०	उ, ओ, ०	०
बी०	उ, ०	०
त०	ए, एं ण	हिं
च०	सु, स्सु, हो, ०	हं, ०
पं०	हु, हे	हु
छ०	सु, स्सु, हो, ०	हं, ०
स०	इ, ए	हिं
सं०	उ, ०	हो, ०

देव शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	देवु, देवो, देव	देव, देवा
बी०	देवु, देव, देवा	देव, देवा
त०	देवें, देवे, देवेण	देवहिं, देवेहिं
च०	देव, देवसु, देवस्सु, देवहो	देवहं

पं०	देवदे, देवदु	देवहुं
छ०	देव, देवसु, देवहो, देवस्सु	देव, देवहं
सं०	देवे, देवि	देव, देवा, देवहो

वीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	वीरु, वीरो वीर, वीरा	वीर, वीरा
बी०	वीरु, वीर, वीरा	वीर, वीरा
त०	वीरेण, वीरेणं, वीरें	वीरेहिं, वीराहिं, वीरहिं
च० छ०	वीरसु, वीरस्सु, वीरासु, वीराहो, वीरहो, वीर, वीरा	वीराहं, वीरहं, वीर, वीरा
पं०	वीराहु, वीरहु, वीराहे, वीरहे	वीराहुं, वीरहु
स०	वीरि, वीरे	वीराहिं, वीरहिं
सं०	वीरु, वीरो वीर, वीरा	वीराहो, वीरहो वीर, वीरा

पुल्लिङ्ग इकारान्त ओर उकारान्त शब्दों के विभक्ति-प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प०	०	०
बी०	०	०
त०	एं, ण, म्	हिं
च०	०	हु, हं
पं०	हे	हुं
छ०	०	०, हु, हं
स०	हि	हिं, हु
सं०	०	हो, ०

इसि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०, बी०	इसि, इसी	इसि, इसी
त०	इसिण, इसिणं, इसीण, इसीणं इसिएं, इसीएं, इसिं, इसीं	इसीहिं, इसीहिं

च० छ०	इसि, इसी	इसिहुं, इसीहुं इसिहं, इसीहं
पं०	इसिहे, इसीहे	इसिहुं, इसीहुं
स०	इसिहि, इसीहि	इसिहिं, इसीहिं, इसिहुं, इसिहो, इसीहो
सं०	इसि, इसी	इसि, इसी

गिरि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०, बी०	गिरि, गिरी	गिरि, गिरी
त०	गिरिएँ, गिरिण, गिरिं	गिरिहिं, गिरीहिं
च०, छ०	गिरि, गिरी	गिरीहिं, गिरिहं, गिरिहुं, गिरीहुं
पं०	गिरिहे, गिरीहे	गिरिहुं, गिरीहुं
स०	गिरिहि, गिरीहि	गिरीहुं, गिरिहुं, गिरिहिं
सं०	गिरि, गिरी	गिरि, गिरी, गिरिहो

उकारान्त भाणु शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०	भाणु, भाणू	भाणु, भाणू
बी०	,, ,,	,, ,,
त०	भाणुण, भाणुणं, भाणूण भाणूणं, भाणुएं, भाणूएं, भाणुं, भाणूं	भाणुहिं, भाणूहिं
च०, छ०	भाणु, भाणू	भाणुहुं, भाणूहुं, भाणुहं, भाणूहं
पं०	भाणुहे, भाणूहे	भाणुहुं, भाणूहुं
स०	भाणुहि, भाणूहि	भाणुहिं, भाणूहिं, भाणुहुं, भाणूहुं
सं०	भाणु, भाणू	भाणुहो, भाणूहो, भाणु, भाणू

स्त्रीलिङ्ग शब्द

स्त्रीलिङ्ग में प्रायः दीर्घ ईकारान्त शब्द ह्रस्व हो जाते हैं। ऊकारान्त शब्द उकारान्त हो जाते हैं और देव शब्द के समान उनके रूप बनते हैं।

स्त्रीलिङ्ग के विभक्तिचिह्न

	एकवचन	बहुवचन
प०	०	०, उ, ओ
बी०	०	,, ,,
त०	ए	हिं

च०,छ०	हे	हु
पं०	हे	हु
स०	हि	हिं
सं०	०	०, हो

माला शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प०,बी०	माला, माल	मालाउ, मालाओ, माल, माला
त०	मालाए, मालए	मालाहिं, मालहिं
च०,छ०	मालाहे, मालहे, माला, माल	मालाहुं, मालहुं
पं०	मालाहे, मालत्तो, मालादो, मालादु, मालाहिंतो	मालाहु, मालहु, मालत्तो, मालादो, मालादु, मालाहिंतो, मालासुन्तो
स०	मालाहि, मालहि	मालाहिं, मालहिं
सं०	माला, माल	मालाहो, मालहो

मइ शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०,बी०	मइ, मई	मइउ, मईउ, मइओ, मईओ, मइ, मई
त०	मइए, मईए	मइहिं, मईहिं
च०,छ०	मइहे, मईहे, मइ, मई	मइहु, मईहु, मइ, मई
पं०	मइहे, मईहे	मइहु, मईहु
स०	मइहि, मईहि	मइहिं, मईहिं
सं०	मइ, मई	मइ, मई

पइट्ठी < प्रविष्टा

	एकवचन	बहुवचन
प०,बी०	पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठिउ, पइट्ठीउ, पइट्ठिओ, पट्ठीओ, पइट्ठीओ, पइट्ठी, पइट्ठि, पइट्ठी, पइट्ठि
त०	पइट्ठिए, पइट्ठीए	पइट्ठिहिं, पइट्ठीहिं
च० छ०	पइट्ठिहे, पइट्ठीहे, पइट्ठी, पइट्ठि	पइट्ठिहु, पइट्ठीहु, पइट्ठी, पइट्ठि
पं०	पइट्ठिहे, पइट्ठीहे	पइट्ठिहु, पइट्ठीहु
स०	पइट्ठिहि, पइट्ठीहिं,	पइट्ठिहिं, पइट्ठीहिं
सं०	पइट्ठि, पइट्ठी	पइट्ठिहो, पइट्ठीहो, पइट्ठी, पइट्ठि

धेणु < धेनु

	एकवचन	बहुवचन
प०	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ धेणुओ, धेणूओ
वी०	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ, धेणूओ, धेणु, धेणू
त०	धेणुए, धेणूए	धेणुहिं, धेणूहिं
च० छ०	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु
प०	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु
स०	धेणुहि, धेणूहि	धेणुहिं, धेणूहिं
सं०	धेणु, धेणू	धेणुहो, धेणूहो

वहू < वधू

	एकवचन	बहुवचन
प०, वी०	वहु, वहू	वहूउ, वहुउ, वहुओ, वहूओ
त०	वहुए, वहूए	वहुहिं, वहूहिं
च० छ०	वहुहे, वहूहे	वहुहु, वहूहु
प०	वहुहे, वहूहे	वहुहु, वहूहु
स०	वहुहि, वहूनि	वहुहिं, वहूहिं
सं०	वहु, वहू	वहुहो, वहूहो

नपुंसकलिङ्ग के विभक्ति चिह्न

	एकवचन	बहुवचन
प०	०	०, इं
वी०	०	०, इं

शेष विभक्तिचिह्न पुंल्लिङ्ग के समान होते हैं।

कमल शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प०	कमलु, कमला, कमल	कमलाइं, कमलइं
वी०	कमलु, कमला, कमल	कमलाइं, कमलइं

शेष रूप पुंल्लिङ्ग के समान होते हैं।

हलन्त शब्द अपभ्रंश में नहीं होते। अतः उनके स्थान पर अजन्त हो जाते हैं। अन्तिम हल् होने से प्रायः हलन्त शब्द अकारान्त होते हैं।

सर्वनाम (Pronoun)

सव्व < सर्व—सव (अन्य पुरुष या प्रथम पुरुष)

	एकवचन	बहुवचन
प०	सव्वु, सव्वो, सव्व	सव्वे, सव्व, सव्वा
बी०	सव्वु, सव्व, सव्वा	सव्व, सव्वा
त०	सव्वें, सव्वेण	सव्वेहिं
च०, छ०	सव्वसु, सव्वस्सु, सव्वहो	सव्वहं, सव्व, सव्वा
प०	सव्वहां, सव्वाहां	सव्वहुं, सव्वाहुं
स०	सव्वहिं	सव्वहिं

सव्व के स्थान पर अपभ्रंश में साह आदेश होता है। अतः साह शब्द के रूप भी अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के समान बनते हैं।

तुम < युष्मद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	तुहुं	तुम्हे, तुम्हइ
बी०	पइं, तइं	तुम्हे, तुम्हइ
त०	पइं, तइं	तुम्हेहि
च०, छ०	तउ, तुज्झ, तुध्र (तुहु)	तुम्हहं
प०	तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं
स०	पइं, तइं	तुम्हासु

अहं < अस्मद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	हउं	अम्हे, अम्हइं
बी०	मइं	अम्हे, अम्हइं
त०	मइं	अम्हेहिं
च०, छ०	महु, मज्झु	अम्हहं
प०	महु, मज्झु	अम्हहं
स०	मइं	अम्हासु

एह < एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	एहो	एइ
बी०	,,	,,

शेष रूप सव्व के समान होते हैं।

जो < यत्—सम्बन्धी सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
प०	जु, जो	जे
बी०	जं	जे
त०	जेण, जिं, जें	जेहिं
च०, छ०	जासु, जसु, जस्स, जहो, जहे	जाहं, जाह
पं०	जउ, जहे	जहु
स०	जहिं, जम्मि	जहिं

सो < तद्—वह—निर्देशवाचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
प०	सो, सु, स	ते
बी०	तं	ते
त०	तेण, तइं, तें, तिं	तेहि, ताहँ, तेहिं
च०, छ०	तासु, तहो, तहि, तसु	तहु
पं०	तहे, तउ	तहु
स०	तहिं, तहि	तहिं

क < किम्—क्या, कौन—प्रश्नवाचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
प०, बी०	को, कु	के
त०	केण, कइं	केहिं
च०, छ०	कहो, कहु, कस्स, कासु	काहं
पं०	कउ, किहे, कहाँ	कहु
स०	कहि, कहिं	कहिं

कवण के रूप सव्व के समान होते हैं।

आय < इदम्—यह

	एकवचन	बहुवचन
प०	आयु, आयो, आय, आया	आये, आय, आया
बी०	आयु, आय, आया	आय, आया
त०	आयेण, आयेणं, आयें	आयेहिं, आयहिं, आयाहिं

शेष शब्दरूप सव्व के समान बनते हैं।

स्त्रीलिङ्ग में सव्वा शब्द के रूप माला के समान होते हैं। एतद् शब्द के स्थान पर स्त्रीलिङ्ग में एह आदेश होता है। अतः प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में एह और इन विभक्तियों के बहुवचन में एहउ, एहाऊ रूप बनते हैं।

स्त्रीलिङ्ग जा < यत्—जो

	एकवचन	बहुवचन
प०	जा	जाउ
बी०	जं	जाउ
त०	जाइं, जाएं, जिए	जेहिं
च०,छ०	जाहि	जाहिं
पं०	जाहे	जाहिं
स०	जाहि	जाहिं

सा < तद्—वह

	एकवचन	बहुवचन
प०	सा, स	ताउ, ति
बी०	तं	ताउ
त०	तइं, तिए, ताए, तए	तेहि
च०, छ०	तिहि, ताहि, तहे	ताहि
पं०	ताहँ, तहे	ताहिं
स०	ताहि, ताहिं	ताहिं

का < किम्—कौन, क्या ?

	एकवचन	बहुवचन
प०, बी०	का, क	कायउ, काउ
त०	काइं, काए	केहि, काहि
च०, छ०	काहिं, काहि	काहि
पं०	काहे	काहिं
स०	काहिं	काहिं

नपुंसकलिङ्ग—सव्व

	एकवचन	बहुवचन
प०, बी०	सव्व, सव्वु, सव्वा	सव्वाइं, सव्वइं

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

ज < यत्

	एकवचन	बहुवचन
प०	जं, ध्रुं	जाइं
बी०	जं, जु	जाइं

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

स<तद्

	एकवचन	बहुवचन
प०	तं, तु	ताइं
बी०	तं, तं	ताइं

शेष रूप पुंल्लिङ्ग के समान बनते हैं।

क<किम्

	एकवचन	बहुवचन
प० बी०	किं	काइं

अवशेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

इदम्

	एकवचन	बहुवचन
प०, बी०	इमु	आयाइं, आयइं

सर्वनाम शब्दों से निष्पन्न विशेषण

परिणामवाचक

जेवड्ड, केत्तुल—जितना केवड्ड, केत्तुल—कितना
तेवड्ड, तेत्तिल—उतना एवड्ड, एत्तुल—इतना

गुणवाचक

जइसो, जेहु—जैसा तइसो, तेहु—तैसा
कइसो, केहु—कैसा अइसो, एहु—ऐसा

सम्बन्धवाचक

एरिस—इस जैसा तुम्हारिस—तुम्हारे जैसा
हम्हारिस—हमारा जैसा तुम्हार<तुम्हारा

रीतिवाचक

जेम, जिम, जिह, जिध—जिस प्रकार केम, किम, किह, किध—किस प्रकार
तेम, तिम, तिह, तिध—तिस प्रकार

अव्यय

स्थानवाचक अव्यय

एत्थु—यहाँ जेत्थु, जत्तु—जहाँ
तेत्थु, तत्तु—वहाँ केत्थु—कहाँ
एत्तहे तेत्तहे—यहाँ वहाँ केत्तहे—कहाँ
तेत्तहे—वहाँ

समयवाचक अव्यय

जामहिं, जाम, जाउं—जब तक तामहिं, ताम, ताउं—तब तक
तो—तबसे

अन्य अव्यय

अन्न, अन्नह् < अन्यथा—	अन्य प्रकार से।
अवसें < अवशेन	वश में न होने से।
अवस < अवश्यम्	अवश्य ही।
अहवइ < अथवा—	
आइरजाइर, एहिरेयाहिरे—	
एम्वहि < इदानीम्	इस समय।
उट्ठवइस < उत्तिष्ठविश	उठने का इच्छुक।
इक्कसि < एकशः	एक बार।
एत्थहे < अत्र	यहाँ
एत्तहे < इतः	यहाँ से अथवा वाक्यारम्भ के लिए।
जि	जिससे।
एम्व < एवं	इस प्रकार, ऐसे या वाक्य जोड़ना।
एम्बइ < एवं	,, ,,
कहंतिहु < कुतः	कहाँ से।
किह, किध < कथम्	क्यों या किस तरह।
किर < किल	किल, निश्चय।
केत्थु < कुत्र	कहाँ।
केहि	तादर्थ्य बतलाने के लिए या किसके।
खाइं	निरर्थक वाक्य पूर्ति के लिए।
घइं	,, ,,
घुग्घ	चेष्टा का अनुकरण करने में।
छुडु < यदि	जो।
जणि, जणु	जानना या इव की सूचना के लिए।
जेत्थु, जत्तु < यत्र	जहाँ।
जेम, जिम, जेम्व, जिम्व < यथा	जैसा।
जिह, जिध	
जाम, जाउं, जामहिं < यावत्	जब तक।
तणेण	तादर्थ्य की सूचना के लिए।

तेम, तेम्व, तिम, तिम्व < तथा	इसी प्रकार, वैसे।
तिह, तिध	
ताउं, ताम, तामहिं < यावत्	तब तक।
तेत्थु, तत्तु, तेहिं < तत्र	वहाँ
तो < ततः, तदा	अनन्तर, तब।
दिवे < दिवा	दिवस।
ध्रुवु < ध्रुवम्	निश्चय
नउ, नाइ, नावइ, नं	जानने के अर्थ में।
नाहिं < नहि	निषेध अर्थ में, इवार्थ में।
पच्चलिउ < प्रत्युत	इसके विपरीत।
पच्छइ < पश्चात्	पीछे।
पर < परम्	परन्तु।
अवरोप्परं, अवरुप्परं < परस्परम्	आपस में।
पाडिक्कं, पाडिएक्कं < प्रत्येकम्	एक-एक।
प्राउ, प्राइव, प्राइम्व, पग्गिम्व < प्रायः	प्रायः, बहुधा।
पुणु < पुनः	फिर।
मणाउं < मनाक्	थोड़ा
मं < मा	निषेधार्थक, मत।
रेसि, रेसिं	तादर्थ्य बतलाने के लिए।
वहिल्ल < शीघ्रम्	शीघ्र।
विणु < विना	बिना।
समाणुं < समानम्	समान।
सव्वेत्तहे < सर्वत्र	सब जगह।
हुहुरु	आवाज करना।

तद्धित

(९७) अपभ्रंश में संज्ञा से परे स्वार्थ में अ, अड और उल्ल प्रत्यय होते हैं और स्वार्थिक क प्रत्यय का लोप होता है[1]। स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ई प्रत्यय जोड़ा जाता है[2]। यथा—

पथिउ—अ प्रत्यय जोड़ा गया है—

---

१. अ-डड-डुल्लाः स्वार्थिक-क-लुक् च ८।४।४२९। २. स्त्रियां तदन्ताड्डीः ८।४।४३१।

ये दोसड़ा < द्वौ दोषौ—यहाँ अड़ प्रत्यय हुआ है।
कुडुल्ली < कुण्डलिनी—डुल्ल प्रत्यय हुआ है।
हिअडउ—अड + अ प्रत्यय जोड़ा गया है।
चुडुल्लउ—डुल्ल + अ " "
चलुल्लड़ा—डुल्ल + अड " "
गोरड + ई—गोरडी—स्त्रीलिंग बनाने के लिए ई प्रत्यय जोड़ा है।

(५८) अपभ्रंश में भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए त्व और तल प्रत्यय के स्थान में प्पणु और त्तणु प्रत्य जोड़े जाते हैं[1]। त्तणु का त्तण भी हो जाता है। यथा—

वड्डप्पणु, वड्डत्तणु, वड्डत्तणहो < महत्त्वम्—बड़प्पन।

स्त्रीलिंग बनाने के लिए अपभ्रंश में आ और ई प्रत्यय में से कोई एक प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—

गोरडी, धूलडिआ।

क्रियारूप

(५९) अपभ्रंश में संस्कृत की व्यञ्जनान्त धातु में अ प्रत्यय जोड़ कर रूप बनाये जाते हैं। यथा—

कह + अ + इ = कहइ—अ विकरण के रूप में जोड़ा गया है।
पढ + अ + ई = पढइ— " "

(६०) उकारान्त धातुओं को उव, ईकारान्त को ए और ऋकारान्त धातुओं में ऋ स्वर को अर होता है। कुछ धातुओं में उपान्त्य स्वर को दीर्घ भी हो जाता है। यथा—

सु—सुवइ—सु = स + उव + इ = सुवइ—सोता है।
नी—नेइ—न + ए + इ = नेइ—ले जाता है।
कृ—करइ—कृ + अर् + इ = करइ—करता है।
हृ—हरइ—हृ + अर + इ = हरइ—हरता है।
तुष्—तूसइ—उपान्त्य स्वर उकार को दीर्घ हुआ है।
पुष्—पूसइ— " "

(६१) अपभ्रंश में कुछ धातुओं में एक स्वर का दूसरा स्वर हो जाता है। यथा—
चिन—चुनइ—चिनइ—चुनता है। इकार को उकार हुआ है।

(६२) अपभ्रंश की कुछ धातुओं में धातु के अन्तिम व्यञ्जन को द्वित्व हो जाता है। यथा—

---

१. त्वतलोः प्पणः ८।४।४३७।

फुट—फुट्टइ—फूटता है। यहाँ ट को द्वित्व हुआ है।

तुट्—तुट्टइ—तोड़ता है। " "

लग—लग्गइ—लगता है। ग को द्वित्व हुआ है।

कुप्—कुप्पइ—कुपित होता है। प को द्वित्व हुआ है।

(६३) अपभ्रंश में प्राकृत के समान संस्कृत के द्य के स्थान पर ज्ज होता है। यथा—

संपज्जइ < संपद्यते—संपादित होता है।

खिज्जइ < खिद्यते—खिन्न होता है।

(६४) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल के प्रथमपुरुष बहुवचन में विकल्प से हिं प्रत्यय जोड़ा जाता है।[1] यथा—

सहहिं < शोभन्ते।

धरहिं < कुरुतः।

(६५) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल के मध्यम पुरुष एकवचन में विकल्प से हि आदेश होता है। यथा—

रुअहि < रोदिषि—हि प्रत्यय जोड़ा गया है।

लहहि < लभसे— " "

(६६) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान के मध्यम पुरुष बहुवचन में विकल्प से हु आदेश होता है। यथा—

इच्छहु < इच्छथ—हु प्रत्यय जोड़ा गया है।

(६७) अपभ्रंश में धातु से वर्तमान काल उत्तमपुरुष एकवचन में विकल्प से उं प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—

कड्ढउं < कर्षामि—उँ प्रत्यय जोड़ा है। विकल्पाभाव में—कड्ढामि।

(६८) अपभ्रंश में धातु से पर में आनेवाले वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष बहुवचन में विकल्प से हुं आदेश होता है। यथा—

लहहुं < लभामहे, जाहुं < यामः, वलाहुं < वलामहे।

(६९) अपभ्रंश में हि और स्व के स्थान पर इ, उ और ए ये तीनों आदेश होते हैं। यथा—

सुमरि < स्मर; मेल्लि < मुञ्च; विलम्बु < विलम्बस्व; करे < कुरु।

(७०) अपभ्रंश में भविष्यत्काल में स्य के स्थान में स विकल्प से आदेश होता है। यथा—

होसइ, पक्ष में होहिइ < भविष्यति।

---

1. त्यादेराद्यत्रयस्य सम्बन्धिनो हिं न वा ८।४।३८२

अपभ्रंश का धात्वादेश

धातु	आदेश	उदाहरण
भू	हुच्च	अहरि पहुच्चइ नाहु < अधरे प्रभवति नाथः।
ब्रू	ब्रुव	ब्रुवह सुहासिउ किंपि < ब्रूत सुभाषितम् किञ्चित्।
ब्रू	ब्रोप्प	ब्रोप्पिणु < उक्त्वा।
व्रज	वुञ	वुञइ, वुञेप्पि, वुञेप्पिणु।
दृश	प्रस्स	प्रस्सदि।
ग्रह	गृण्ह	पढ गृण्हेप्पिणु व्रतु < पठ गृहीत्वा व्रतम्।
तक्ष	छोल्ल	ससि छोल्लिज्जन्तु < शशी अविक्षिप्यत।
तापि	झलक्क	सासानलजाल झलक्किअउ < श्वासानलज्वाला-सन्तापितम्।
शल्याय	खुडुक्क	हिअइ खुडुक्कइ < हृदयं शल्यायते।
गर्ज	घुडुक्क	घुडुक्कइ मेहु < गर्जति मेघः।
वंच	वंचइ	जाता है।
भज्ज	भज्जइ	भग्न करता है।
खुट्ठु	खुट्ठु अइ	व्यर्थ शब्द करता है।

क्रियाओं में जुड़ने वाले प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इ, ए	हिं
म० पु०	हि	हु
उ०पु०	उं	हुं

आज्ञार्थ एवं विध्यर्थक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	उ	हुं
म० पु०	इ, उ, ए	हु
उ० पु०	उ	उं

भविष्यत्काल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	इ	हिं
म० पु०	हि, सि	हु, हो
उ० पु०	मि, मो	हुं

कर धातु के रूप

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करइ, करेइ	करहिं, करन्ति
म० पु०	करहि, करसि	करहु, करह
उ० पु०	करिमि, करउं	करहुं, करिमु

आज्ञार्थ एवं विध्यर्थक

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करिज्जउ	करिज्जंतु, करिज्जहुं
म० पु०	करिज्जहि, करिज्जइ	करिज्जहु
उ० पु०	करिज्जउ	रिज्जउं

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करेसइ, करेहइ	करेसहिं, करेहिंति
म० पु०	करेसहि, करेससि, करिहिसि	करेसहु, करेसहो
उ० पु०	करेसमि, करोहिमि, करिसु	करेसहुं

भूतकाल के लिए भूतकृदन्त का ही प्रयोग होता है। यथा—

गयं < गतम्, कियं < कृतम्, पइट्ठं < प्रविष्टितम्।

कर्मणि प्रयोग के लिए इज्ज या इय प्रत्यय जोड़कर रूप बनाये जाते हैं।

इज्ज—गणिज्जइ, कहिज्जइ, वण्णिज्जइ।

इय—फिट्टियइ, वण्णियइ।

कृदन्त

(७१) वर्तमान कृदन्त अंत और माण प्रत्यय जोड़कर बनाया जाता है। अंत प्रत्यय परस्मैपद में और माण प्रत्यय आत्मनेपद में जुड़ता है। यथा—

अंत—इच्छ + अंत = इच्छंत—परस्मैपद में।

सिंच + अंत = सिंचंत— „

कर + अंत = करंत— „

पइस + अंत = पइसंत— „

वज्ज + अंत = वज्जंत— „

उग्गम + अंत = उग्गमंत— „

माण—पविस्स + माण = पविस्समाण—आत्मने पद में।

वट्ट + माण = वट्टमाण— „

भण + माण = भणमाण „

हुच + माण = हुचमाण— „

भूतकृदन्त

(७२) भूतकालिक कृदन्त बनाने के लिए अ, इअ, और इय प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा—

अ—हु + हुअ, मुक्क + अ = मुक्क, ग + अ = गअ।

इअ—गाल + इअ = गालिअ, भस्स + इअ = भस्सिअ।

इय—कह + इय = कहिय, छड्ड + इय = छड्डिय, उप्पाड + इय = उप्पाडिय।

सम्बन्धक कृदन्त

(७३) पूर्वकालिक क्रिया या सम्बन्धक कृदन्त के लिए संस्कृत में क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय होते हैं। अपभ्रंश में पूर्वकालिक क्रिया के लिए निम्न आठ प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

इ—छड्ड + इ = छड्डि < छर्दित्वा।

इउ—कर + इउ = करिउ < कृत्वा।

इवि—कर + इवि = करिवि < कृत्वा।

अवि—कर + अवि = करवि < कृत्वा।

एप्पि—कर + एप्पि = करेप्पि < कृत्वा।

एप्पिणु—कर + एप्पिणु = करेप्पिणु < कृत्वा।

एविणु—कर + एविणु = करेविणु < कृत्वा।

एवि—कर + एवि = करेवि < कृत्वा।

हेत्वर्थ कृदन्त

(७४) क्रियार्थक क्रिया या हेत्वर्थ कृदन्त के लिए अपभ्रंश में निम्न आठ प्रत्यय जोड़ने से रूप बनाये जाते हैं। संस्कृत में यह कार्य तुमुन् प्रत्यय से और हिन्दी में 'ना' प्रत्यय लगाकर चलाया जाता है। यथा—

एवं—चय् + एवं = चएवं < त्यक्तुम्—छोड़ना।

दा + एवं = देवं < दातुम्—देना

अण—भुंज् + अण = भुंजण < भोक्तुम्—भोगना।

कर + अण = करण < कर्तुम्—करना।

अणहं—सेव + अणहं = सेवणहं < सेवितुम्—सेवना।

भुंज + अणहं = भुंजणहं < भोक्तुम्—भोगना।

एप्पि—कर + एप्पि = करेप्पि < कर्तुम्—करना।

जि + एप्पि = जेप्पि < जेतुम्—जीतना।

एप्पिणु—कर + एप्पिणु = करेप्पिणु < कर्तुम्—करना।

चय् + एप्पिणु = चएप्पिणु < त्यक्तुम्—छोड़ना।

एवि—कर् + एवि = करेवि < कर्तुम्—करना।

पाल् + एवि = पालेवि < पालयितुम्—पालना।

एविणु—कर् + एविणु = करेविणु < कर्तुम्—करना।

ला + एविणु = लेविणु < लातुम्—लाना।

विध्यर्थ कृदन्त

(७५) अपभ्रंश में 'चाहिए' या किसी विधिविशेष के लिए इएव्वउं, एव्वउं एवं एवा प्रत्यय जोड़े जाते हैं। संस्कृत में जिस अर्थ में तव्य प्रत्यय जोड़ा जाता है या हिन्दी में 'चाहिए' जोड़ते हैं, उसी अर्थ में उक्त प्रत्यय लगाये जाते हैं। यथा—

इएव्वउं—कर + इएव्वउं = किरएव्वउं < कर्तव्यम्।

मर + इएव्वउं = मरिएव्वउं < मर्तव्यम्।

सह + इएव्वउं = सहिएव्वउं < सोढव्यम्।

एव्वउं—कर + एव्वउं = करेव्वउं < कर्तव्यम्।

मर + एव्वउं = मरेव्वउं < मर्तव्यम्।

सह + एव्वउं = सहेव्वउं < सोढव्यम्।

एवा—कर + एवा = करेवा < कर्तव्यम्।

मर + एवा = मरेवा < मर्तव्यम्।

सह + एवा = सहेवा < सोढव्यम्।

सो + एवा = सोएवा < स्वप्तव्यम्।

जग्ग + एवा = जग्गेवा < जागरितव्यम्।

शीलार्थक

(७६) संस्कृत में शीलधर्म को बतलाने के लिए तृ प्रत्यय लगाया जाता है; पर अपभ्रंश में शील, स्वभाव और साध्वर्थ में अणअ प्रत्यय जोड़ा जाता है।

अणअ—हस + अणअ = हसणअ—हसणउ—हसनशील।

भस + अणअ = भसणअ—भसणउ—भौंकनेवाला।

कर + अणअ = करणअ—करणउ—करनेवाला।

मार + अणअ = मारणअ—मारणउ—करनेवाला।

वज्ज + अणअ = वज्जणअ—वज्जणउ—वादनशील।

क्रियाविशेषण

वहिल्लउ—शीघ्र, निच्चट्टु—प्रगाढ़, कोड्ड—कौतिक, ढक्करि—अद्भुत, दवदव—शीघ्र एवं जुअंजुअ—अलग-अलग आदि है।

विहालु—नीच संसर्ग, अप्पणु—आत्मीय, सड्ढलु—असाधारण, रवण्ण—सुन्दर, नालिअ, वढ—मूर्ख और नवख—नया-विचित्र आदि विशेषण भी अपभ्रंश में उपलब्ध हैं।

परिशिष्ट १

उदाहृतशब्दानुक्रमणिका

परिशिष्ट २

लिंगानुशासन एवं स्त्रीप्रत्ययप्रयोगानुक्रमणिका

परिशिष्ट ३

अव्ययप्रयोगानुक्रमणिका

परिशिष्ट ४

कारकप्रयोगानुक्रमणिका

परिशिष्ट ५

समासप्रयोगानुक्रमणिका

परिशिष्ट ६

तद्धितप्रयोगानुक्रमणिका

परिशिष्ट ७

यङन्त, यङ्लुगन्त और नामधातु प्रयोगानुक्रमणिका

परिशिष्ट ८

कृदन्तप्रयोगानुक्रमणिका

परिशिष्ट ९

शौरसेनीशब्दानुक्रमणिका

परिशिष्ट १०

जैनशौरसेनीशब्दानुक्रमणिका

परिशिष्ट ११

मागधीशब्दानुक्रमणिका

परिशिष्ट १२

अर्धमागधीशब्दानुक्रमणिका

परिशिष्ट १३

जैनमहाराष्ट्रीशब्दानुक्रमणिका

परिशिष्ट १४

पैशाचीशब्दानुक्रमणिका

परिशिष्ट १५

चूलिकापैशाचीशब्दानुक्रमणिका

परिशिष्ट १६

अपभ्रंशशब्दानुक्रमणिका

अभिनव प्राकृत-व्याकरण

डा. नेमिचन्द्र शास्त्री

तारा पब्लिकेशन्स
वाराणसी